श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

क्रीडाकौशल्य ।

भाषाटीकासमेत ।

अथ क्रीडाकौशल्यवर्णनाध्यायः ।

मंगलाचरणम् ॥

वृषवाहनविघ्नेशौहंसवाहंसरस्वतीम् ।
स्वेष्टंश्रीबटुकंनत्वापितरंवेङ्कटंततः ॥ १ ॥

अर्थ–वृषवाहन जो शिव, विघ्नेश जो गणपति, हंसवाह जो ब्रह्मा, सरस्वती जो देवी, इष्टदेवता जो विष्ण्वंश बटुकनाथ और पिता वेंकटराम; इनको नमस्कार करके ॥ १ ॥

श्रीगौतमकुलोत्पन्नोज्योतिर्विद्वेङ्कटात्मजः ।
हरिकृष्णोऽत्रकुरुतेक्रीडाकौशल्यवर्णनम् ॥ २ ॥

अर्थ–गौतमगोत्रोत्पन्न ज्योतिःशास्त्रवेत्ता मैं (हरिकृष्ण) क्रीडाकौशल्यका वर्णन करताहूं ॥ २ ॥

अथानुबंधचतुष्टयमाह ।

अनुबंधंविनाग्रंथोनकैश्चिद्गृह्यतेबुधैः ।
तस्मादादौप्रवक्ष्यामिह्यनुबंधचतुष्टयम् ॥ ३ ॥

अर्थ–अब इस शास्त्रका अनुबंधचतुष्टय अर्थात् विषय १ प्रयोजन २ संबंध ३ अधिकारी ४ इन चार पदार्थोंका निरूपण करताहूं इस निरूपण करनेका कारण यह है कि यावत् कालपर्यंत कोई ग्रंथका विषय आदि चार पदार्थोंका वर्णन नहीं है तावत्कालपर्यंत पंडितलोग ग्रहण करते नहीं हैं इस वास्ते करताहूं ॥ ३ ॥

द्यूताद्यनेकक्रीडानांविषयःप्रतिपादनम् ।
प्रयोजनंचजगतोबुद्धिकौशल्यवर्द्धनम् ॥ ४ ॥

अर्थ–इस ग्रंथमें द्यूत आदि लेके अनेक क्रीडाके भेद लिखे हैं उसको विषय

कहना, इस शास्त्रका प्रयोजन यह है कि लोगोंकी बुद्धिमें कुशलताकी वृद्धि होवै ॥ ४ ॥

संबंधोऽस्यशिवादिभ्यःपुराणाद्यंगमेवच ।
विप्रादिसर्ववर्णानामधिकारोऽत्रकीर्तितः ॥ ५ ॥

अर्थ–इस शास्त्रका उत्पत्तिसंबंध शिव, विष्णु, श्रीकृष्णादिकोंसे है और पुराणका अंग है इस शास्त्रका अभ्यास करने, देखने और खेलनेको अधिकार ब्राह्मणादिक सब वर्णोंका है ॥ ५ ॥

अथ द्यूतक्रीडने निषेधं दोषांश्चाह ।

अक्षैर्मादीव्यादितिश्रुतिः । तथाचस्कांदे ।
द्यूतंनिषिद्धंसर्वत्रहित्वाप्रतिपदंबुधाइति ॥ ६ ॥

अर्थ–(द्यूतनिषेध) परंतु द्यूत क्रीडा नहींकरना कारण कि वेदश्रुतिमें लिखा है कि पांसेसे नहीं खेलना और स्कंदपुराणके सनत्कुमारसंहितामें लिखा है कि एक कार्त्तिक शुद्ध प्रतिपदा छोड़के और दिनोंमें द्यूत नहीं खेलना॥ ६ ॥

किंच ।

लोभोधर्मक्रियालोपःकर्मणामप्रवर्तनम् ।
सत्समागमविच्छित्तिरसद्भिःसहवर्तनम् ॥७॥

अर्थ–अब द्यूत खेलनेमें जो दोष होते हैं सो कहते हैं–जो कोईभी पुरुष द्यूतादि क्रीडामें जहां खेलनेको बैठा तो उसको लोभ होता है और धर्मका क्रियाका लोप होता है कर्ममार्गकी प्रवृत्तिसे छूटता है, सज्जन लोगोंकी संगति छूट जाती है और दुर्जनलोगोंकी संगति होती है ॥ ७ ॥

स्वल्पेऽप्यर्थेनिराशत्वमसत्यापिचसाशता ॥
प्रतिक्षणंक्रोधहर्षौविषादश्चप्रतिक्षणम् ॥ ८ ॥

अर्थ–अपने दिल सरीखा दांव न आया तो उदास होके आशा छोड़ना और यह खेलना मिथ्या है तथापि जैसी धनमें आशा रखता हैं वैसी आशा रखना, खेलते समय क्षणक्षणभरमें क्रोध, क्षणभरमें हर्ष, क्षणभरमें खेद करना ॥ ८ ॥

प्रतिक्षणंचसंश्लेषःसाक्षिप्रश्नःप्रतिक्षणम् ॥
अन्यावाचोंगदौर्बल्यंशास्त्रार्थाप्रत्यवेक्षणम् ॥ ९ ॥

अर्थ–क्षणक्षणमें आलिंगन करना क्षणक्षण साक्षिदारोंको पूंछना देखो भाई

मेरा दांव बरोबर पड़ा है सामने बैठे हैं उनको पूछना, हाहा हिही ऐसे अनेक शब्द निकालना दांव न पड़ा तो दुर्बल और उदास होके बैठना, उत्तम या नीच मनुष्यके साथ खेलनेको बैठे उसके मानापमानमें पुण्य पाप होगा सो कुछ शास्त्रमार्गका विचार न करना ॥ ९ ॥

गूहनंमूत्रशकृतोःक्षुत्पिपासोपपीडनम् ॥
इत्यादीञ्छास्त्रनिपुणाद्यूतेदोषान्प्रचक्षते ॥१०॥

अर्थ-खेलने बैठे हैं बीचमें मूतना या झाड़ा लगा होवे तथापि इन दोनोंको दबाना परंतु खेल छोड़ना नहीं भूख या तृषा लगी होवै तथापि उसको सहन करना इत्यादिक अनेक दोष द्यूतादिक खेलनेमें शास्त्रनिपुण लोग कहते हैं ॥ १० ॥

पांडवोधर्मराजस्तुलोकपालइवापरः ॥
द्यूतेनद्विषताविद्वान्कलत्राण्यपहारितः ॥ ११ ॥

अर्थ-देखो प्रत्यक्ष पांडुवंशी धर्मराजा देवसरीखा परंतु द्यूत खेलनेके व्यसनसे स्त्री और राज्यादिक सब हारगया ॥ ११ ॥

नलश्चराजाद्यूतेनहतेराज्यमहोदये ।
धर्मदारान्वनेत्यक्त्वापरकर्माकरोत्प्रभुः ॥ १२ ॥

अर्थ-और नलराजा द्यूत खेलनेमें राज्य गमायके अघोर वनमें धर्मपत्नी दमयंती रानीको छोड़के ऋतुपर्ण राजाके घर घोडोंकी नौकरीमें रहा॥१२॥

द्यूतादनर्थसंरंभोद्यूतात्स्नेहक्षयोमहान् ॥
पक्षाणांसंहतानांचद्यूताद्भेदःप्रवर्तते ॥ १३ ॥

अर्थ-इस वास्ते द्यूत खेलनेमें अनर्थ बहुत है और द्यूत खेलनेसे प्रेम छूटता है पक्षपाती लोगोंमें विभेदबुद्धि होती है ॥ १३ ॥

द्यूतेनक्षीयतेलक्ष्मीर्द्यूताद्धर्मोविनश्यति ॥
एवंदोषबहुत्वेऽपिखेलनंपरिकीर्तितम् ॥ १४ ॥

अर्थ-द्यूत खेलनेमें लक्ष्मी, धर्मका नाश होता है, ऐसे दोष बहुत हैं तथापि खेलनेकी प्रवृत्ति कही है ॥ १४ ॥

अथ द्यूतादिक्रीडाप्रवृत्तिकारणमाह

विद्याभ्यासायद्रव्यार्थेस्थापत्यार्थेकृतश्रमः ॥

---

१ स्थपतेरिदंस्थापत्यं स्थपतिःसौविदेऽधीशेबृहस्पतीष्टियज्वनोःकाञ्चुकेऽपीतिहैमः ।

सर्वकालंनरोदुःखीचिरकालाद्भविष्यति ॥ १५ ॥

अर्थ–इस ऊपरसे कोईको ऐसा मालूम होवेगा कि विद्यादि विषयोंके ऊपर प्रवृत्ति छोड़के ऐसे खेलनेके विषयके ऊपर प्रवृत्ति रखना उत्तम नहीं है, परंतु उसे पक्का समझके रखना कि निरंतर काल विद्याभ्यास कहते पढ़ना पढ़ाना पुस्तकोंका अवलोकन करना लिखना इत्यादि अथवा द्रव्य पैदा करनेके वास्ते अथवा स्थापत्य कहते सुनारकृत्य, लुहारकृत्य, सुतारकृत्य इत्यादिक कर्मके निमित्त परिश्रम उद्योगकर बैठे तो उससे आलस्य और त्रास उत्पन्न होवेगा इतना नहीं; परंतु एक सरीखा उद्योगका क्रम कितनेक दिन किया तो वह मनुष्य रोगग्रस्त होवेगा ॥ १५ ॥

तस्माच्छरीरसौख्यार्थं विश्रांतिकारयेद्बुधः ॥
तस्याःस्थानानिगांधर्वक्रीडाहास्यंविनोदकम् ॥ १६ ॥

अर्थ–इस वास्ते पंडितने शरीरसुखके वास्ते विश्रांति करना आवश्यक है सो विश्रांतिके स्थान चार हैं गायन स्वतः करना अथवा श्रवण करना १ खेलना २ हास्य कहते हँसनेकी वार्ता करना ३ विनोद थटामस्करी करना ऐसे हैं ॥ १६ ॥

गीतहास्यविनोदेनकालोगच्छतिधीमताम् ॥
निद्रयाकलहेनापिकालोगच्छत्यधीमताम् ॥ १७ ॥

अर्थ–सो बुद्धिमान पुरुषोंका काल गीत, हास्य, विनोद करनेमें जाता है और बुद्धिहीन पुरुषोंका काल निद्रा लेनेमें, लडाई कजियेमें और लोगोंकी निंदा करनेमें जाता है ॥ १७ ॥

सनत्कुमारसंहितायां पार्वतीं प्रति शिवः ।

कालक्षेपायकेषांचित्केषांचिद्धनवृद्धये ॥
केषांचिद्धननाशायपश्यद्यूतंकृतंमया ॥ १८ ॥

अर्थ–किसी समयमें महादेवने पार्वतीसे कहा कि हे पार्वती! कितनेक लोगोंका दिन जाता न होवे उनका दिन गमानेके वास्ते, कितनेक लोगोंकी धनवृद्धि होनेके वास्ते, कितनेकके धनहानि होनेके वास्ते मैंने द्यूतक्रीडा उत्पन्न की है सो देख ऐसा कहा तब यहां शंका भई कि द्यूत खेलनेमें धन मिलता है और जाता भी है यह दोनों बात कैसी घटे, उसका निर्णय ऐसा है कि जो निर्धन, दरिद्री, व्यापारहीन है वह अपनेको रुजगार

या नौकरी मिलना ऐसा मनमें संकल्प रखके चालीस दिनतक अखंडित रोज एक बाजी द्यूतकी खेलेगा तो उसको रोजी लगेगी और जो धनवान है वह अपने मनको विश्रांति देनेके वास्ते महीनेमें दश या पंद्रह बेर द्यूत खेले तो दोष नहीं है और जो अखंडित चालीस दिन खेलेगा तो धननाश पावेगा दरिद्री होवेगा ॥ १८ ॥

अथ द्यूतक्रीड़ाया आवश्यकतामाह तत्रैव ।

कार्त्तिकेशुक्लपक्षेतुप्रथमेहानिपार्वति ॥
तस्मिन्द्यूतेजयोयस्यतस्यसंवत्सरंजयः ॥ १९ ॥
द्यूतंनिषिद्धंसर्वत्रहित्वाप्रतिपदंबुधाः ॥
स्वस्योद्यमादिज्ञानायकुर्याद्द्यूतमतंद्रितः ॥ २० ॥

अर्थ-ऐसा द्यूतक्रीडाकी प्रवृत्तिका कारण कहके अब द्यूतक्रीडा अवश्य करना सो कहते हैं कार्तिकशुद्ध प्रतिपदाके दिन नवीन वर्षकी प्रवृत्ति बैठती है तब इस बरसमें मेरेको रुजगार लगेगा या नहीं, लाभ होवेगा या नहीं इसकी परीक्षा करनेके वास्ते द्यूतक्रीडा करना उस खेलनेमें जो जीता उसका वह वर्ष लाभकारक जानना उस प्रतिपदाके द्यूतमें जिसकी जय हुई उसकी सारे वर्षतक जय होवेगी और जो हारा उसको नुकसान जानना ॥ १९ ॥ २० ॥

अन्यच्च ।

आश्विनेशुक्लपूर्णायांरात्रौजागरणेकृते ॥
नालिकेरोदकंपीत्वाअक्षक्रीडांसमारभेत् ॥
इषस्यशुक्लपूर्णायांद्यूताल्लक्ष्मीःप्रसीदति ॥ २१ ॥

अर्थ- और आश्विनशुद्ध पौर्णिमांकी रात्रिको जागरण करके नारियलका पानी पीके पाश डालनेकी द्यूतक्रीड़ा करना यह केवल खेलनेसे लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, हारने जीतनेका प्रयोजन नहीं है ॥ २१ ॥

अथ पूर्वोक्तादन्यत्र क्रीडायां कालप्रमाणमाह ।

दिवसस्याष्टमेभागेक्रीडाकार्यानरोत्तमैः ।

तत्र याज्ञवल्क्यः ।

अहःशेषंसमासीतशिष्टैरिष्टैश्चबंधुभिः ॥ २२ ॥

अर्थ-अब खेलनेकी प्रवृत्ति निर्णयमें रोज खेलना ऐसा कहा तब कौनसे

समय खेलना सो कालप्रमाण कहते हैं सारे दिनमानका आठ भाग करना उसके आठवें भागमें उत्तम मनुष्योंने द्यूतादि क्रीडा करना,इसके ऊपर याज्ञ-वल्क्य महामुनीश्वरनेभी कहा है कि, दिनशेष जब बाकी रहे उससमय अपने इष्टमित्र भाई बंधु जो हैं इनके साथ हास्य विनोदादिक करते बैठे ॥ २२ ॥

दक्षश्च ।

इतिहासपुराणाद्यैःषष्ठसप्तमकौनयेत् ॥
अष्टमेलोकयात्रातुबहिःसंध्याततःपुनः ॥ २३ ॥

अर्थ–दक्षप्रजापतिकी स्मृतिमें वचन है कि दिनके छठे, सातवें भागमें भारत पुराणादिकका श्रवण करना अष्टमभागमें लोकयात्रा कहते बाग, तमासा, बजार, देवदर्शन, इष्टमित्रसमागम इत्यादिक कृत्य करना उसमें हास्यक्रीडादिकका अंतर्भाव जानना, ऐसी लोकयात्रा किये बाद सायंसंध्या घरके बाहर नदी, तलाव, कुंड, तीर्थ जो होवे वहां करना ऐसा क्रीडा कर-नेका कालप्रमाण कहके ॥ २३ ॥

अथक्रीडाभेदानाह ।

मौनिनौद्वौत्रयश्चोराश्चत्वारश्चविभांडकाः ॥
तदूर्ध्वंक्रीडनंयद्वैतत्सर्वंबालखेलनम् ॥ २४ ॥

अर्थ–अब खेलनेके भेदवर्णन करते हैं–दोउ मुके कहते सतरंजका खेल, तीन चोर कहते गंजीफा, चार भांड कहते चौरसका खेल, अब चार आद-मीके ऊपर जादा आदमीसे जो खेल, खेला जाता है उसकी गिनती बालखेलनेमें है ।

दोहा–दोउ बिचारि जानिये, तीनचोर कहलाय ।
चारकलहके मूल हैं, सखि देखे इकठाय ॥ १ ॥

अर्थ–दोनों बिचारि, तीनचोर और चार कलहके मूलपुरुष ऐसे हे सखी ! मैंने एकठिकाने देखे. तात्पर्य बिचारिकरके दांव लेना सो खेल सतरंज है. गंजीफेमें चोरी है सोकटी खेलनेमें कलह है ॥

दोहा–सतरंजतो बाश्याखेले, गंजिफा खेले काजी ।
कुकरियातो सब कोइ खेले, चौसर खेले पाजी ॥ २ ॥

अर्थ–बुदबलका खेल बादशाहराजा बडा अदमी खेलता है और गंजीफा काजी और नटखटोंको पिछाननेवाला ऐसा आदमी खेलता है और कुक-रिया कहते नवकंकरी सोल कंकरिका खेल जिनको श्मशानचौपट कहते हैं

वह सब लोग खेलतेहैं और चौसरका खेल पाजी नाम लुच्चा अदमी खेलता है, कारण, इस खेलमें कपट है ॥ २४ ॥

अक्षक्रीडाशिवोक्तायासाद्विधापरिकीर्तिता ॥
कपर्दिकासप्तकेनक्रीडासैवतृतीयका ॥ २५ ॥

अर्थ–दोफासेकी द्यूतक्रीडा और तीनफासेकी द्यूतक्रीडा सातकवडीसें खेलनेकी द्यूत चौसरका खेल ॥ २५ ॥

दुरोदराद्यूतभवाकितवानांधनप्रदा ॥
काष्ठस्पर्शमयीक्रीडाकाष्ठकीलयुगीतथा ॥ २६ ॥

अर्थ–कपटसे धन छीन लेनेका खेल जुवा काष्ठस्पर्श कहते लकडे तेरी बंबका खेल, गिलिदांडुका खेल ॥ २६ ॥

क्रीडानिलायनाख्यावैवाह्यवाहकलक्षणा ॥
बालक्रीडाचकौमाराक्रीडापौगंडसंभवा ॥ २७ ॥

अर्थ–आखा मिचनेका खेल, तीरघोड़िका खेल, बालकका पांचवर्षके मध्यका खेल जिसको कौमारलीला कहते हैं. दशवर्षके मध्यका खेल जिसको पौगंडलीला कहते हैं ॥ २७ ॥

रासक्रीडाऽतिरम्यायासातुपुण्यवतांस्मृता ॥
जलक्रीडावनक्रीडाक्रीडाकंदुकसंभवा ॥ २८ ॥

अर्थ–रासक्रीडा यह क्रीडा पुण्यात्मा पुरुषको होती है; कारण, अनेक स्त्रियोंके मनहरण करके उनकी तृप्ति करना सहज नहीं है. (वचनश्लोक) भोज्यंभोजनशक्तिश्च रतिशक्तिर्वरस्त्रियः । विभवोदानशक्तिश्च नाल्पस्यतपसः फलमिति । जलकी क्रीडा बगीचेकी क्रीडा गेंद खेलना ॥ २८ ॥

ज्ञानपट्टाभिधःखेलःकर्मपट्टाभिधस्तथा ॥
पत्रक्रीडात्रिधाप्रोक्तातत्राद्याचंगकांचना ॥ २९ ॥
दशावतारनाम्नायासाद्वितीयाप्रकीर्तिता ॥
तथैवहूणदेशीयाराशिक्रीडाततःपरम् ॥ ३० ॥

अर्थ–ज्ञानचौपटका खेल, कर्मपट्टका खेल, गंजीफेका खेल, तीन प्रकारका १ चंगकांचन २ दशावतारी ३ अंग्रेजीपत्तोंका४बारहराशिका॥२९॥३०॥

श्मशानद्यूतनाम्नायाक्रीडासातुचतुर्विधा ॥
चतुर्विधाव्याप्रमेषीसाक्षिक्रीडाद्विधामता ॥ ३१ ॥

अर्थ–श्मशानद्यूतमें नवकंकरी दोप्रकारकी सोलह कंकरी वा वीस कंकरी अट्ठावीस कंकरीका खेल वाघ बकरीका खेल चार प्रकारका साक्षिक्रीडा दोप्रकारकी ॥ ३१ ॥

पुरुषद्वयसंसाध्याक्रीडाकोष्ठात्मिकातथा ॥
मल्लक्रीडामहारम्यापुष्पप्रश्नाभिधातथा ॥ ३२ ॥

अर्थ–दो आदमीसे खेलनेकी क्रीडा कोष्टकक्रीडा मल्लक्रीडा मनमें कहा हुआ फूल कहनेका खेल ॥ ३२ ॥

क्रीडाबुद्धिबलाख्यायासात्रिधापरिकीर्तिता ॥
वाजिप्लुतिखेलनेतुचक्राण्यशीतिसंख्यया ॥
एवंनानाविधाक्रीडाग्रंथेऽस्मिन्वर्ण्यतेमया ॥ ३३ ॥

अर्थ–बुदबलकी क्रीडा तीन प्रकारकी उसमें चौसठ घरकी १,एकसौबयालीस घरकी २ एकसौ छयानवें घरकी ३ ऐसे भेद और घोडोंके गति चलानेमें गजबंध, विमानबंध, कामधेनुबंध, कल्पवृक्षबंध, नागपाशबंध आदि करके ऐसे ८० तरहके भेद हैं ऐसा इस ग्रंथमें क्रीडाका भेद मैंने बहुत वर्णन किया है ॥ ३३ ॥

अथ पाशकक्रीडनोत्पत्तिमाह–स्कांदोक्तसनत्कुमारसंहितायाम् ।

कैलासशिखरेरम्येकार्तिकेप्रथमेहनि ॥
शंकरस्तुतदाद्यूतंससर्जसुमनोहरम् ॥ ३४ ॥

अर्थ–अब पाशेकी द्यूतक्रीडाकी उत्पत्तिकी कथा कहते हैं एकसमयमें कैलासपर्वतके ऊपर कार्तिकशुद्ध प्रतिपदाके दिन शिवजीने द्यूतक्रीडा पैदा किये ॥ ३४ ॥

प्रत्युवाचवचश्चेदंदेवींप्रतिसदाशिवः ॥
कालक्षेपायकेषांचित्केषांचिद्धनहेतवे ॥ ३५ ॥

अर्थ–पीछे पार्वतीसे कहते हैं हे पार्वती! कितनेक लोगोंका काल गमानेके वास्ते, कितनेक लोगोंकी धनवृद्धिके वास्ते ॥ ३५ ॥

केषांचिद्धननाशायपश्यद्यूतंकृतंमया ॥
तस्यत्वंकौतुकंपश्यभुवनंलापयाम्यहम् ॥ ३६ ॥

अर्थ-कितनेक लोगोंकी धनहानिके वास्ते मैंने द्यूतक्रीडा करी है सो देख उसका कैसा चमत्कार है सारा घर छीन लेताहूं ॥ ३६ ॥

ऊह्येत्थंक्रीडितंताभ्यांभवान्याचजितंतदा ॥
एवंद्वितीयंतृतीयंचतुर्थादिजितंतया ॥ ३७ ॥

अर्थ-ऐसा कहके शिवपार्वती दोनों दो पासेकी क्रीडासे खेलने लगे तब पार्वती जीतीं फेर दूसेर समय खेलनेका आरंभ किया तौभी पार्वतीने दाव जीता ऐसे पांच वेर पार्वतीने जीते ॥ ३७ ॥

निर्गतस्तुहरोगेहाच्चीरवल्कलधारकः ॥
गंगातीरंसमागत्यतस्थौचिंतासमन्वितः॥ ३८ ॥

अर्थ-तब शिवजी सब हारगये केवल जीर्णवस्त्र पहिनके गंगातट पै जायके चिंताग्रस्त बैठे ॥ ३८ ॥

तस्मिन्क्षणेकार्त्तिकेयोदृष्ट्वोवाचशिवंतदा ।

स्कंदउवाच ।

कथंमात्राजितोदेवोवनंकस्माच्चगच्छति ॥ ३९ ॥

अर्थ-उतनेमें कार्त्तिकस्वामी आयके शिवको देखके कहते हैं हे पिता! मेरी माताने तुमको कैसे जीता और वनमें काहेको जाते हो ॥ ३९ ॥

मागच्छत्वंमहादेवद्यूतमार्गंप्रदर्शय ।
आनीयतेमयाजित्वासर्वंतवधनादिकम् ॥ ४० ॥

अर्थ-मुझे द्यूत खेलना दिखाओ तो मैं माताको जीतके तुम्हारा नंदि आदि लेके सब धन लायके देता हूं ॥ ४० ॥

शिवेनापितथेत्युक्त्वाद्यूतमार्गःप्रदर्शितः ।
स्कंदोपिगृहमागत्यपार्वतींवाक्यमब्रवीत् ॥ ४१ ॥

अर्थ-तब शिवने तथास्तु कहके द्यूतमार्ग दिखाया तब कार्त्तिकस्वामी माके पास आयके पूंछने लगे ॥ ४१ ॥

देविदेवोगतःक्वासौमातःसत्यंवदाद्यमे ।

देव्युवाच ।

स्वयमेवकृतंद्यूतंस्वयमेवपराजितः ॥ ४२ ॥

अर्थ-हे माता ! महादेव कहां गये सो सत्य कहो? पार्वती कहती है शिवने आपही द्यूत बनाया और आपही हारगये ॥ ४२ ॥

स्वयमेवगतःक्रोधात्प्रार्थ्यतांसकथंमया ।

स्कंदउवाच ।

मयासहक्रीडितव्यंकथंतत्क्रीडनन्त्विति ॥ ४३ ॥

अर्थ—और आपही क्रोधसे चले गये. तब मैंने कैसी प्रार्थना की कार्त्तिक स्वामी कहते हैं हे माता ! मेरे साथ खेलो वह खेल कैसा है देखूं ॥ ४३ ॥

देव्यक्रीडत्तेनसार्द्धंततःस्कंदेननिर्जितम् ।

मयूरेणवृषस्तस्याःशक्त्यापन्नगबंधनम् ॥ ४४ ॥

वृषेणेंदुस्ततोर्द्धंगंतत्सर्वंतेननिर्जितम् ॥

गंगातीरेयत्रशिवस्तत्रागत्यन्यवेदयत् ॥ ४५ ॥

अर्थ—तब पार्वती कार्त्तिकस्वामीके साथ खेलने लगी तो कार्त्तिकस्वामीने नंदि पन्नगबंधन अर्द्धचंद्र आदि सब पदार्थ जीतके गंगातीरपै आयके शिवको दिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

ततोदेवीसमीपेतुविघ्नराजःसमाययौ ॥

किमर्थंम्लानवदनादेविजातासितद्वद ॥ ४६ ॥

अर्थ—इतनेमें पार्वतीके पास गणपति आयके पूंछने लगे हे माता ! उदास कैसे बैठी हो सो कहो ॥ ४६ ॥

देव्युवाच ।

मयाजितोमहादेवःसतुगेहाद्विनिर्गतः ॥

आयास्यतिवृषाद्यर्थमितिसंचिंत्यसंस्थितम् ॥ ४७ ॥

अर्थ—पार्वती कहती है कि मैंने महादेवको जीता सो घर छोड़के बाहर चले गये; परंतु नंदि पन्नगभूषण अर्द्धचन्द्रादिक सब यहांहैं, तो इन पदार्थोंके वास्ते महादेव आवेंगे ऐसा विचार करके उनकी राह देखती बैठी हूं ॥४७॥

तवभ्रात्रातुतज्जित्वासर्वंतस्मैनिवेदितम् ॥

नायास्यत्यधुनादेवइतिचिंतापरास्म्यहम् ॥ ४८ ॥

अर्थ—तेरा भाई यहां आयके मुझको जीतके सब पदार्थ लेगया है सो अब महादेव नहीं आनेके इस लिये चिंतामें बैठी हूं ॥ ४८ ॥

गणेशउवाच ।

देविशिक्षयमांद्यूतंजेष्यामिभ्रातरंहरम् ॥

आनयिष्यामिसामग्रींयद्यहंस्यांसुतस्तव ॥ ४९ ॥

अर्थ-गणपति कहते हैं हे माता ! वह क्रीडा मुझको सिखावो मैं तेरा जो पुत्र हूं तो भाईको और शिवको जीतके सब पदार्थ लायके देता हूं ॥ ४९ ॥

इतिपुत्रवचःश्रुत्वातस्मैद्यूतमशिक्षयत् ॥
सगृहीत्वापाशयुगंसारिकाःशीघ्रमाययौ ॥ ५० ॥

अर्थ-ऐसा पुत्रका वचन सुनतै पार्वतीने द्यूत सिखाया सो दो पाँसे और खेलनेका पट लेके जलदीसे ॥ ५० ॥

पृष्ट्वापृष्ट्वायत्रदेवःस्कंदोयत्रव्यवस्थितः ॥

गणेशउवाच ।

मयानीताविमौपाशौसारिकाःपटएवच ॥ ५१ ॥

अर्थ-पूछते पूछते जहां शिव कार्त्तिकस्वामि बैठे हैं वहां आयके गणपति कहते हैं हे भ्राता ! मैं दो पाँसे और पट लाया हूं ॥ ५१ ॥

क्रीडत्वंतुमयासार्द्धंदेवस्याग्रेममाग्रज ॥
इतिभ्रातृवचःश्रुत्वाह्युभाभ्यांक्रीडितंतदा ॥ ५२ ॥

अर्थ-सो तुम शिवके सामने मेरे साथ खेलो, ऐसा गणपतिका वचन सुन दोनों खेलने लगे ॥ ५२ ॥

मूषकेणबलीवर्दंमयूरंचाप्यजीजनत् ॥
शिवस्यसर्वविषयंस्कंदस्यचतथैवच ॥ ५३ ॥
गृहीत्वासतुविघ्नेशस्तत्कालेपार्वतींययौ ॥
पार्वत्यपिचसंतुष्टागणेशंवाक्यमब्रवीत् ॥ ५४ ॥

अर्थ-तब गणपतिने अपने एक मूषकसे नंदी और मयूरको जीत लिया और दूसराभी सब शिवका कार्त्तिकस्वामीका धन जीत लेके पार्वतीके पास आये, पार्वती बहुत प्रसन्न होयके गणपतिसे कहती है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

सम्यक्कृतंत्वयापुत्रनानीतोसौमहेश्वरः ॥
सामदानादिकंकृत्वाआनयात्रमहेश्वरम् ॥ ५५ ॥

अर्थ-हे पुत्र ! सब अच्छा किया, परंतु शिवको लाया नहीं इस वास्ते कोईभी सामादिक मार्गसे शिवको समझायके यहां लाव ॥ ५५ ॥

तथेत्युक्त्वागणेशोसौसमारुह्यचमूषकम् ॥
त्वरितंचाययौतत्रगृहेनेतुंमहेश्वरम् ॥ ५६ ॥

अर्थ–गणपतिने बहुत अच्छा ऐसा कहके मूषकके ऊपर बैठकै जल्दीसे शिवके लानेको आने लगे ॥ ५६ ॥

ईश्वरस्तुसमुत्थायहरिद्वारंसमागतः ॥
नारदेरितवृत्तांतोविष्णुस्तत्रसमागतः ॥ ५७ ॥

अर्थ–तब शिव वहांसे उठके हरिद्वारको चले गये इतनेमें विष्णु नारद ऋषिके मुखसे वह सब वृत्तांत सुनके शिवके पास आयके कहते हैं ॥ ५७ ॥

विष्णुरुवाच ।

त्र्यक्षांविद्यांकुरुशिवएकाक्षोत्रभवाम्यहम् ॥

एकश्चासावक्षःपाशकइतिविग्रहेपिपरिनिष्ठितरूपत्वा-
त्काणोभवामीतिशब्दच्छलः ।

रावणेनतथेत्युक्तंकाणोभवजनार्दन ॥ ५८ ॥

अर्थ–हे शिव ! तुमने दो फासेकी क्रीडा उत्पन्न की सो विद्या सबोंको मालूम होगई है इस वास्ते अब तीन फासेकी विद्या निर्माण करो उसमें दो अक्ष (कहते फासे) तुह्मारे पास हैं और एक अक्ष (नाम फासा) मैं होताहूं तब अक्षशब्दसे शास्त्रमें नेत्रका और फासेका नाम है तब विष्णुने तो यथार्थ कहा परंतु वहां रावण जो बैठाथा सो कपटसे कहने लगा कि हे विष्णु ! तुम एकाक्ष होते हो सो काने हो ॥ ५८ ॥

विष्णुरुवाच ।

ओतुवत्पश्यसेमांत्वंतस्मादोतुर्भविष्यसि ॥

नारदउवाच ।

देवसिद्धंमहत्कार्यमायातिसगणेश्वरः ॥ ५९ ॥

अर्थ–विष्णु कहतेहैं हे रावण ! मार्जार सरीखा तू मुझको दीखताहै इसवास्ते मार्जार हो, नारद कहते हैं हे देव ! काम सिद्ध हुआ गणपति आते हैं॥५९॥

ज्ञातुमत्रभवद्वृत्तंमूषकस्तस्यधर्षताम् ।
इतिश्रुत्वानारदस्यवचनंरावणाग्रतः ॥ ६० ॥

अर्थ–तुम्हारा वृत्तांत देखनेके वास्ते उस समय मूषकको डरा देना. नारदका वचन सुनते रावण आगे आयके ॥ ६० ॥

कुर्वन्मार्जारवच्छब्दंमूषकोसौपलायितः ।
मूषकंत्यज्यगणपःशनैःशनैरुपाययौ ॥ ६१ ॥

अर्थ-मार्जार सरीखा शब्द करतेही मूषक भाग गया तब मूषकको छोडके पांवसे हौले हौले आने लगे ॥ ६१ ॥

जातोविष्णुःपाशइतिदूरतस्तद्विलोकितम् ।
प्रणिपत्यमहादेवंविनयानतकंधरः ॥ ६२ ॥

अर्थ-तीसरा फासा विष्णु हुवे हैं यह दूरसे देखके महादेवके पास आयके नमस्कारकरके नम्रतासे ॥ ६२ ॥

गणेशउवाच ।

आगम्यतांदेवगेहंदेवीमानपुरःसरम् ।

शिवउवाच ।

एषात्र्यक्षामहाविद्याऽधुनागणपनिर्मिता ॥ ६३ ॥

अर्थ-गणपति कहते हैं हे शिव ! देवीके बहुत मानपुरःसर घरको चलो शिव कहते हैं हे गणपति ! अभी मैंने तीन पांसेकी क्रीडा निर्माण की है६३॥

अनयाक्रीडतेदेवीआगमिष्येगृहंतदा ।

गणेशउवाच ।

सर्वथैवक्रीडितव्यंदेव्यानास्त्यत्रसंशयः ॥ ६४ ॥

अर्थ-तब इस विद्यासे पार्वती जो खेलें तौ मैं घरको आता हूं गणपति कहते हैं हे शिव ! देवीके साथ अवश्य क्रीडा होवेगी इसमें संशय नहीं है॥६४

आगम्यतांगृहंदेवभ्रात्रासहहिमाव्रज ।
इतितस्यवचःश्रुत्वाईश्वरःसगणोययौ ॥ ६५ ॥

अर्थ-इस वास्ते भाई सहवर्तमान आप घरको चलो ऐसा गणपतीका वचन सुनके शिवजी अपने गण सहवर्त्तमान ॥ ६५ ॥

नारदोपिगतस्तत्रमहोतुरपिचागतः ।
उपविष्टास्तुकैलासेदेवास्तत्रसमागताः ॥ ६६ ॥

अर्थ-और नारद बडा मार्जार और अन्य देवता सब कैलासके ऊपर आयके बैठे ॥ ६६ ॥

दृष्ट्वादेवींप्रहस्यादौमहेशोवाक्यमब्रवीत् ।

त्र्यक्षविद्यामहादेविगंगाद्वारेविनिर्मिता ॥ ६७ ॥

अर्थ-तब हास्य करके शिवजी पार्वतीसे कहते हैं कि गंगाद्वारके ऊपर मैंने यह तीन फासेकी क्रीडा निर्माण की है ॥ ६७ ॥

अनयाजयसेत्वंचतदात्वंसत्यभाषिणी ।

देव्युवाच ।

वृषादितवसामग्रीमयेयंलापिताशिव ॥ ६८ ॥

अर्थ-इस विद्यासे जो तू जीतेगी तो सत्य भाषण करनेवाली तूं खरी है । पार्वती कहती है हे शिव! तुम्हारा नंदी आदि लेके सब जिनस मैंने जीतलियी ॥ ६८ ॥

त्वयाकिंलाप्यतेब्रूहिदर्शयस्वसदोगतान् ।
इतिश्रुत्वावचस्तस्याःप्रैक्षताधोमुखंहरः ॥ ६९ ॥

अर्थ-अब पण रखनेको तुह्मारे पास जिनस क्या है सो सभासद लोगोंको बतावो तब खेलती हूं तब शिव अपना मुख लज्जासे नीचा किया ॥ ६९ ॥

तस्मिन्क्षणेनारदेनस्वकौपीनंसमर्पितम् ।
वीणादंडश्चोपवीतमनेनप्रीयतामिति ॥ ७० ॥

अर्थ-तब नारदने कहा कि मेरा कौपीन दंड वीणा जनेऊ रक्खा है इसके ऊपर खेलो ॥ ७० ॥

सदाशिवःप्रसन्नोभूत्क्रीडनंसंप्रचक्रतुः ।
यद्यद्याचयतेरुद्रस्तथाविष्णुःप्रजायते ॥ ७१ ॥

अर्थ-तब शिव प्रसन्न होके स्त्री पुरुष दोनों खेलने लगे, उस समय शिवजीने जो जो दांव मांगे वह वह दांव विष्णु देने लगे ॥ ७१ ॥

यद्यद्याचयतेदेवीविपरीतःपतत्यसौ ।
स्वकीयाभरणाद्यंचमहादेवेनानिर्जितम् ॥७२ ॥

अर्थ-और पार्वतीने जो दांव मांगे तो फासा उलटा पड़ने लगा
दोहा-कौन खिलाडी जीतले, जहां नसीबा खोत ॥
पव बारहकी आश मन, कच्चे बारह होत ॥ १ ॥
ऐसा शिवने अपने सब पदार्थ ॥ ७२ ॥

स्कंदालंकारिकंसर्वंपुनराप्तंहरेणच ॥
ततोगणेशःप्रोवाचवाक्यंसदसिगर्वितः ॥ ७३ ॥

अर्थ–और कार्त्तिकस्वामीके सब अलंकार जीतलिये तब सभामें गर्विष्ठ होके गणपति बोलते हैं ॥ ७३ ॥

नक्रीडितव्यंहेमातःपाशोलक्ष्मीपतिःस्वयमिति ॥ ७४ ॥

अर्थ–हे माता ! आगे अब तुम खेलो मत, कारण कि तीसरा फासा जो है वह विष्णु आप हुये हैं तब वहांसे खेलना वंद किया ऐसी दो पांसेकी और तीन पांसेकी क्रीड़ाकी उत्पत्ति कही ॥ ७४ ॥

पाशकक्रीडोत्पत्तिः ।

अथस्त्रीपुरुषयोर्मिथःद्यूतखेलनेदृष्टांतरूपंप्रमाणमाह–भागवते उषानिरुद्धप्रसंगे।

दीव्यंतमक्षैःप्रिययाभिनृम्णयातदंगसंगस्तनकुंकुमस्रजम् ।
बाह्वोर्दधानंमधुमल्लिकाश्रितांतस्याग्रआसीनमवेक्ष्यविस्मितः ॥

अर्थ–अब स्त्री पुरुष दोनोंको द्यूतक्रीडा करना उक्त है । श्रीभागवतमें अनिरुद्ध सर्व मंगलयुक्त अपनी स्त्री ऊखाके साथ पाशक्रीडासे खेलता रहा है स्त्रीके स्तनऊपरके केसरसे लिप्त ऐसी मल्लिकापुष्पकी मालाको दो भुजामें धारण किये हैं ऐसेको देखके बाणासुर विस्मित भया ॥ ७५ ॥

अन्यच्च ।

ततोन्यदाविशद्गेहंकृष्णपत्न्यासनारदः ।
दीव्यंतमक्षैस्तत्रापिप्रिययाचोद्धवेनच ॥ ७६ ॥

दूसरा दृष्टांत ।

अर्थ–एक समयमें नारद श्रीद्वारकामें कृष्णभगवान एक हैं और सोलह हजार स्त्रीसे कैसा व्यवहार करते हैं सो देखनेके वास्ते गये तो पहिले घरमें श्रीकृष्णका व्यवहार देखके दूसरे घरमें प्रवेश किया तब वहांभी अपनी स्त्री और उद्धव इन दोनोंके साथ पाशक्रीडा कर रहे हैं ऐसाभी देखा ॥ ७६ ॥

अथ राजसभायामपिद्यूतक्रीडाकार्यातत्रदृष्टांतरूपंप्रमाणमाह । तत्रैव ।

अक्षैःसभायांक्रीडंतंभगवंतंभयातुराः ।

अथ विवाहमंडपेद्यूतनिषेधः ।

निवृत्तेपिविवाहेविघ्नदर्शनात् तथाच तत्रैव ।

तस्मिन्निवृत्तउद्वाहेकालिंगप्रमुखानृपाः ॥ ७७ ॥

अर्थ–अब राजसभामेंभी द्यूतक्रीडा करना उसके ऊपर दृष्टांत कहते हैं

सुदक्षिणकी अभिचारविद्यासे उत्पन्न हुवा जो अग्नि उससे भयभीत हुई सब प्रजा सो सुधर्मा सभामें पाशक्रीडासे जो खेल रहेहैं भगवान्, उनकी प्रार्थना करने लगे तात्पर्य भगवाननेभी सभामें अक्षक्रीडा किये हैं तब दोष नहीं है विवाहमंडपमें द्यूतनहीं खेलना कारण कि विवाहकृत्यसमाप्त हुवा तो भी विघ्न देखनेमें आया इस वास्ते विवाहमें अवश्य त्याग है पूर्वकालमें अनिरुद्धके विवाह हुये पश्चात् बलरामजीसे युद्धमें तो जय मिलती नहींहै तब द्यूत युद्धमें जीतना ऐसा मनमें विचार करके कालिंग प्रमुख जो राजा है सो ॥ ७७ ॥

दृप्तास्तेरुक्मिणंप्रोचुरनक्षज्ञंबलंजय ॥
इत्युक्तोबलमाहूयतेनाक्षैरुक्म्यदीव्यत ॥ ७८ ॥

अर्थ–अहंकारयुक्त होयके रुक्मियासे कहते हैं हे मित्र ! बलरामको पाश क्रीडा नहीं आती है इस वास्ते इस क्रीडामें जीतले ऐसा राजाका वचन सुनतेही बलरामको बुलायके खेलना आरम्भ किया ॥ ७८ ॥

लक्षार्बुदादियद्द्वैपणंतत्राजयद्बलः ॥
जितवानहमित्याहरुक्मीकैतवमाश्रितः ॥ ७९ ॥

अर्थ–शतसहस्र पण रुक्मिया जीता तब रामने लक्ष अर्बुद पण रक्खा सो बलराम जीते तब रुक्मिया कपटसे कहने लगा कि येभी पण मैंने जीता ॥ ७९ ॥

रुक्मिणैवमधिक्षिप्तोराजभिश्चोपहासितः ।
बलःपरिघमुद्यम्यजघ्नेतंनृम्णसंसदीति ॥ ८० ॥

अर्थ–तुमने तो वनमें गाय चराइ यह खेल तो राजा खेलते हैं ऐसा तिरस्कार करते बलरामने परिघशस्त्र हाथमें लेके उस मंगलसभामें रुक्मियाको मारा तात्पर्य यह कि मंगलसभामें द्यूत नहीं खेलना ॥ ८० ॥

अक्षक्रीडायां व्यासयुधिष्ठिरसंवादः प्रचरति यथा ।

युधिष्ठिरउवाच ।

अष्टकोष्टयाचयाक्रीडातांमेब्रूहितपोधन ।
प्राप्तेगजद्वयेराजन्हंतव्योवामतोगजः ॥ ८१ ॥

अर्थ–यह क्रीडाकि प्रसंगमें व्यास युधिष्ठिरका संवाद प्रसिद्ध है युधिष्ठिर पूंछते हैं हे व्यास ! आठ कोठेकी जो क्रीडा है सो मुझसे कहो व्यास कहतेहैं हे राजन् ! दोनों बाजूसे जो दो हाथी आवे तो बाँये तरफका हाथी मारना ॥ ८१ ॥

प्रकर्षेणैवमेनाथचतुरंगीयतोभवेत् । इत्यादिपंचचत्वारिंश च्छ्लोकैःचतुरंगीक्रीडाउक्ताविस्तरभयान्नात्रोच्यते ॥८२॥

अर्थ-उससे चतुरंगिणी सेनाका रक्षण होवेगा ऐसा पैतालीस श्लोकसे चतुरंगिणी खेल कहा है ग्रंथविस्तारभयसे यहाँ नहीं लिखते ॥ ८२ ॥

अथ अक्षाविद्याशब्दप्रतिनिधिवेदमंत्रानाह ।

अथर्ववेदसंहितायां षष्ठेकांडे द्वादशानुवाके इदंतदग्नेअनृणो भवामित्वंपाशान्विचृतंवेत्थसर्वानित्यादि॰यद्धस्ताभ्यांचकृम किल्बिषाण्यक्षाणांगणमुपलिप्समानाः॥उग्रंपश्येउग्रजितौतद प्सरसावनुदत्तामृणंनः॥ऊग्रंपश्येराष्ट्रभृतिकिल्बिषाणियदक्ष वृत्तमनुदत्तं न एतद्दणान्नोनेर्णमेत्संमानोयमस्य लोकेअधिर ज्जुरायत्॥इत्यादियददीव्यन्नृणमहंकृष्णोमादास्यन्नुग्रउतसंगृ णामिसएतान्पाशान्विचृतंवेदसर्वानथपक्वेनसहसंभवेम ॥ इत्येतेलिंगमंत्राःएषांस्पष्टार्थस्तुभाष्येणैवावगंतव्यइति॥८३॥

इति श्रीज्योतिर्वित्कुलावतंसवेंकटरामात्मजहरिकृष्णविनिर्मितेबृहज्ज्यो-तिषार्णवेषष्ठेमिश्रस्कंधेविंशतिमेक्रीडाकौशल्याध्यायेअनुबंधच-तुष्टयनिरूपणं नाम प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

अर्थ-और यह क्रीडाके ऊपर लिंगमंत्र प्रतिनिधि वेदश्रुतिका प्रमाण दिखाते हैं-लिंगमंत्र प्रतिनिधिका अर्थ ऐसा है कि क्रीडामें अक्ष और पाशे हाथोंसे डालना पण बांधना ऐसे शब्द हैं वैसे शब्द वेदमंत्रमें हैं इस वास्ते यहां प्रमाण बताया है. परंतु इसका स्पष्टार्थ तो भाष्य देखनेसे होवे लिंग मंत्र प्रतिनिधिका दृष्टांत दिखाते हैं जैसा ॐ गणानांत्वा गणपतिं॒ हवामहे इत्यादि इस मंत्रसे गणपतिका ध्यान आवाहन करतेहैं परंतु महीधरभाष्यमें देखे तो इस मंत्रका अर्थ केवल अश्वमेध यज्ञमें यजमानपत्नीने संभोग-संबंधि अश्वकी प्रार्थना की है ऐसा मंत्रार्थ है; परंतु मंत्रमें गणपतिं॒ ऐसा शब्द है उससे गणपतिका ध्यानादिक करते हैं बाकी मंत्रार्थ भिन्न है भिन्न कोई भाष्यमें गणपतिकाभी अर्थ प्रतिपादन किया है वैसा यहांभी जानना ॥ ८३ ॥

इति क्रीडाकौशल्याध्यायमें विषयप्रयोजनसंबंध अधिकारिका प्रकरण पहिला संपूर्ण भया ।

अथ क्रीडार्थमुहूर्त्तप्रश्नविचारप्रकरणं समरसारे ।

स्वरच्छायाऽनिलार्केंदुयोगिनीराहुभूबलैः ।
अन्यैश्चद्यूतमाबध्नञ्जयत्येवधनंबहु ॥ ८४ ॥

॥ अथ संस्कृतटीका ॥

अर्थ-द्यूतादिक्रीडायां जयप्राप्तये मुहूर्त्तविचारं भविष्यजयपराजयज्ञानाय प्रश्ननिर्णयंच वक्तुं प्रथमंतावदावश्यकावलोकनपदार्थानाह-स्वरेति । स्वरः सौरादिः वा बालकुमारादिः छाया चंद्रसूर्ययोर्वामदक्षिणादिः अनिलोऽनुकूलादिवायुः अर्को दिग्ध्वननकर्त्ता इंदुश्च तादृक् योगिनी प्राच्यादिदिक्स्था पृष्ठे दक्षे शुभा राहुः षष्ठःषष्ठदिग्गतः भूबलोदिक्स्वराक्रांतः एषांबलान्यादाय अन्येषांच कालवारार्द्धप्रहरहोरादीनां बलान्यादाय तैर्बलैः सहायैर्द्यूतं क्रीडाविशेषमित्यनेन सर्वक्रीडाग्रहणम्।आबध्नन् कुर्वन् बहुधनं जयत्येव एवशब्दोऽत्र निश्चयाय क्लींहींरणाहुंफट्स्वाहा अयंक्रीडायां जयप्राप्तिकरो मंत्रःलक्षंपुरश्चरणमितिद्यूतविधिः ॥ ८४ ॥

अर्थ-(भाषा) अब द्यूतक्रीडाके विषे कौन कौन बल लेनेसे जीता जाता है उस बलका अनुक्रम वर्णन करते हैं, पहिले स्वरबल १ छायाबल २ वायुबल ३ सूर्य जिस दिशाको मारे नहीं वह दिशाबल ४ चंद्र जिस दिशाको मारे नहीं वह दिशाबल ५ योगिनीबल ६ राहुबल ७ राहुयुक्त योगिनीबल ८ भूबल ९ अन्यैः कहते कालार्धप्रहरबल १० कालहोरारहित होराबल ११ शनिकालबल १२ ऐसे कहे हुये बलोंमें अनुकूल लेके जो द्यूतादिक क्रीडा करेगा तो उसमें धन बहुत जीतेगा इसमें संशय नहीं है ॥ ८४ ॥

मुहूर्त्तगणपतौ ।

अधोवक्रेचनक्षत्रेवारेचोपचयावहे ।
चंद्रताराबलोपेतेकुमारेयूनिवास्वरे ॥ ८५ ॥

अर्थ-और द्यूतक्रीडा करनेके समय अधोमुख नक्षत्र लेना वे अधोमुख नक्षत्र मूल, मघा, कृत्तिका, विशाखा, भरणी, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा. वार उपचयके लेना अपनी जन्मराशिसे ३ । ६ । १० । ११ ॥ राशिके ऊपर ग्रह बलवान होवे, जिस ग्रहकी शुभफलदायक दशा होवे उस ग्रहके वारके दिन द्यूतादि खेलना और चंद्रताराबल लेना सो चंद्र १ । ३ । ६ । २ । १० । ११ । ७ । यह शुभ जानना और ४ । ५ । ८ । ९ । १२ यह चंद्र अशुभ जानना. अब ताराबल, अपने जन्मनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनती करके नवका भाग लेके शेष जो रहे १ । २ । ४ । ६ । ८ । ९ तो यह तारा शुभ जाननी और ३ । ५ । ७ तारा अशुभ जाननी, अब स्वर जो आगे कहेंगे उसमें कुमारस्वर अगर युवास्वर क्रीडाके समय आरंभमें लेना ॥ ८५ ॥

कालजेदिग्भवेवापिस्वस्यपूर्णबलेस्वरे ।
योगिनीकालदिक्छूलचंद्रतारानुकूलके ॥८६ ॥

अर्थ-कालस्वर कहते तत्कालस्वर दिक्स्वर कहते दिग्बल स्वर अच्छा होवे सीधीतरफकी नासिकाका सूर्यस्वर चलता होवे और योगिनी काल राहु दिक्छूल चंद्रतारानुकूलके कहते चंद्रहतराशिदिशा ॥ ८६ ॥

दशायामष्टवर्गेवागोचरेलाभगेखगे ।
युद्धोक्तजयदेयोगेशोभनेदेहजेस्वरे ।
द्यूतंकार्यविनोदायधनलाभायभूमिपैः ॥ ८७ ॥

अर्थ-यह पूर्वोक्त पदार्थ जिस समय अनुकूल होवे उस समय द्यूतादि क्रीडा करना अब ऊपर लिखेहुये योगोंका बल लेके क्रीडा करे तथापि जय न होवे उसका क्या कारण सो कहते हैं जन्मकालीन दशादिक बल अनुकूल न होवे उससे वर्तमानकालका मुहूर्तबल श्रेष्ठ लिया होवे तथापि जय न होवे इस वास्ते दशायां कहते उत्तमग्रहकी दशा होवे, अष्टवर्गमें गोचरमें ग्रहफल अच्छा होवे ग्यारहवें घरमें ग्रहबल अच्छा होवे और युद्ध यात्रामें जो जययोग सूक्ष्ममृतपक्ष जीवपक्षादिक राहु आदि चक्रोंसे अपना जययोग जब होवे और देहजस्वर जो हंसस्वर वो सूर्यका अग्नितत्त्व य वायुतत्त्वमें चलता होवे उस समयमें राजाने अथवा कोईभी मनुष्यने विनोदके लिये अथवा पण बांधके धनजीतनेके वास्ते द्यूतक्रीडा करना॥८७॥

अथ तत्रादौ हंसस्वरबलमाह ।

कुर्यात्सूर्यस्वरेयुद्धंव्यवहारंचभोजनम् ॥
मैथुनंविग्रहंद्यूतंस्नानंभंगंभयंतथा ॥ ८८ ॥
नाडीडावामगाचांद्रीपिंगलादक्षिणारवेः ।
चंद्रनाडीप्रवहेतुद्यूतकर्मनशोभनम् ॥ ८९ ॥
पृथ्वीजलेशुभेचंद्रेवह्निर्वायुश्चतौरवौ ।
अर्थसिद्धिःस्थिरंकार्यंशीघ्रंनभसिनिर्दिशेत् ॥ ९० ॥
अष्टांगुलोवहेद्वायुरनलश्चतुरंगुलः ।
द्वादशांगुलमाहेयोवारुणःषोडशांगुलः ॥ ९१ ॥

संस्कृतटीका ।

अर्थ–अथ हंसस्वरबलविचारमाह चतुर्भिः ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥

अर्थ–(भाषा) अपनी नासिकाके दक्षिण भागसे जो चलनेवाली नाडी उसको पिंगला सूर्यस्वरनाडी कहते हैं वह सूर्यस्वरनाडी चलती होवे उस समय युद्धव्यवहार, भोजन, मैथुन, विग्रह, द्यूतक्रीडा, स्नान इत्यादि कार्य करना ॥ ८८ ॥ डावी तरफकी जो इडा चंद्रस्वरनाडी है वह चंद्रस्वरनाडी चलती होवे उससमय ऊपर लिखेहुये द्यूतक्रीडादिक कार्य करना नहीं॥८९॥ पृथ्वीतत्व और जलतत्व यह दोनों चंद्रस्वरमें चले तो जय देनेवाले जानना सूर्यस्वरमें पराजय करेंगे और अग्नितत्व वायुतत्व,यह दोनों सूर्य स्वरमें चले तो जय देनेवाले जानना, चंद्रस्वरमें पराजय करेंगे आकाशतत्वमें सिद्धि जानना॥९०॥अब तत्वको पिछाननेका लक्षण कहते हैं नासिकामेंसे जो वायु चलता है सो देखना कितने अंगुल लंबा चलता है जो अंगुल ८ होवे तो वायुतत्व, अंगुल ४होवे तो अग्नितत्व, अंगुल १२ होवे तो पृथ्वीतत्व, अंगुल १६ चलता होवे तो जलतत्व जानना. इति हंसस्वरबलम् ॥ ९१ ॥

अथ पंचस्वरबलमाह समरसारे ।

पंचाणेङस्वराःकछडधभवमुखेष्वङ्णभव्यंजनेषु ।
स्युर्नंदादेस्तिथेस्तेतिथिकपि१ १लवतोप्यंतराभोगभाजः ॥
नाम्नोबालःकुमारोयुवसजरमृतास्त्वादिवर्णस्वरात्ते ।
सिद्ध्युत्कर्षोयुवांतोपचयइतरयोर्युध्यतांद्विण्मृताचि।।९२ ॥

अर्थ–अथ स्वरबलमाह–पंचाणेति । अण्एङ् एतौ प्रत्याहारौ तत्संगृहीता अइउएओ एते पंचस्वराः कछडधभवएतन्मुखेष्वेतदादिषु वर्णेषु ङकारणकारञकारवर्जितेषु स्वामिनः क्रमेण स्युर्यथा कछडधभवानाम् अकारः खजढनमशानामिकारः गझतपयषानामुकारः घठथफरसानामेकारः चठदबलहानामोकारः तेच अइउएओ एते पंचस्वराः पक्षद्वयसंबंधि नंदा भद्रा जया रिक्ता पूर्णानां तिथीनां क्रमात् स्वामिनः तथापि प्रतितिथिकापिलव ११ तः एकादशांशप्रमाणेनैकैकस्वरभोगः तत्रैकस्यां तिथावेकैकस्य स्वरस्य भोगघट्यः ५ पलानि २७ प्राणः१गुर्वक्षरोच्चारः ७ एवमहोरात्रव्यापिन्यां षष्टिघट्यात्मिकायां नंदायां प्रातरारभ्य (प्रातरारभ्येत्यत्रतिथेः प्रवेशकालमारभ्येत्यर्थः एवंसर्वत्र) पंचादिघट्यादिकाले अकारस्वरभोगः तदनु तावत्यैवकाले इकारस्य तथैव उएओ एतेषां तावति तावति काले भोगः एवं पंचस्वरभोगकालः घट्यः२७पलानि१७प्राणौ२गुर्वक्षरोच्चाराः७११पुनरकारादिपंचस्वराणामेतावत्येवकाले भोगः तेन भुक्तघट्यः ५४ पलानि ३२ प्राणाः४ गुर्वक्षरोच्चाराः१४२२पुनरकारभोगः तावत्येवपंचघट्यादिकाले तेनषष्टिघटिका

अहोरात्रजाः पूर्यते पुनर्भद्रायां तिथौ प्रातरार-
भ्य इकारस्य भोगः ततः उकारादीनामेवंजया-
यामुकारादीनांरिक्तायामेकारादीनां पूर्णायामो-
कारादीनां यस्य स्वरस्य या तिथिस्तस्य
त्रिर्भोगो अन्येषां द्विर्द्विरितिभावः।संप्रति स्वरा-
वस्था आह-नान्नइति। क्रीडाकर्तृनाम्नोः पंच आ-
द्योवर्णस्तत्स्वामीय अकारादिपंचमध्येस्वरः स-
बालः तदग्रिमः कुमारस्तदग्रिमोयुवा अग्योवृद्धः
अग्योमृतः यथारामनाम्नआदिवर्णो रेफस्तदीश
एकारस्वरो रामचंद्रस्य बालस्वर ओकुमारः अ-
युवाइवृद्ध उमृतः एवमन्येषां ग्राह्याः स्वरादीना-
मच्युतादि नाम्नामुवर्णाभावादकारादेरेववर्ण-
स्वरोग्राह्यः एतत्फलमाह सिद्धीति।बालस्वरभो-
गकालारब्धकार्यात्कुमारस्वरभोगकार्येऽधिका
सिद्धिः एवंकुमारकालाद्युवकालेसिद्ध्याधिक्य-
मिति युवस्वरांते सिद्धेरुत्कर्षः इतरयोर्वृद्धमृ-
तयोः स्वरयोः सिद्धिरपकर्षः इतिस्वयुवस्वरभो-
गकालं ज्ञात्वा क्रीडारंभः कार्यः एतत्कृत्यमाह।
द्विषतः शत्रोर्मृताचि मृतस्वरभोगकाले युध्यतां
द्यूतयुद्धंकुर्वतां स्वयुवस्वरेचतदाजयइतिभावः।
उपरितिथिभोगस्य पंचघटिका सप्तविंशति
पलादीनिउक्तानि तानितुषष्टिघटिकात्मकातिथि-
भोगविषये ज्ञेयानि यत्रतु तिथेःक्षयवृद्धिर्योगौ
तदा कपि ११ लवो न्यूनाधिकोभवति पंचघ-
टिकात्मकःपादोनषड्घटिकात्मकोभवतीत्यर्थः।
अतः गतैष्ययोगेनतिथिभोगस्य कपिलवः कर्त-
व्यइतिउत्तमः पक्षः। उक्तंच, तिथेर्गतैष्य-
योगस्य यः स्योदकादशांशकः॥ तात्कालिकः
स्वरश्चासौस्वाऽवस्थातः क्रमात्स्मृतः ॥ ९२ ॥

अथ पंचस्वरबलचक्रम् ।

अस्वरः	इस्वरः	उस्वरः	एस्वरः	ओस्वरः	स्वरकोष्ठकम् १
१	२	३	४	६	स्वरसंख्या.को० २
क छ ड ध भ व अ आ	ख ज ढ न म श इ ई	ग झ त प य ष उ ऊ	घ ट थ फ र स ए ऐ	च ठ द ब ल ह ओ औ	वर्णकोष्ठकम् ३
तिथि १ । ६ । ११	तिथि २ ।७ । १२	तिथि ३ । ८ । १३	तिथि ४ । ९ । १४	तिथि ५ । १० । १५।३०	तिथिकोष्ठकम् ४
घ.५पल. २७ प्रा.१अ.१	घ. ५ प.२७प्र१ अ. १	घ. ५ प.२७ प्रा.१ अ.१	घ. ५ प. २७ प्रा. १अ.१	घ.५ प. २७ प्रा. १ अ.१	तिथिभोगकोष्ठकं५
बालावस्था.	कुमारावस्था.	युवावस्था.	वृद्धावस्था.	मृतावस्था.	अवस्थाकोष्ठकम्६
किञ्चिल्लाभकरः	अर्धलाभकरः	सर्वसिद्धिकरः	मध्यमः	हानिकरः	फलकोष्ठकम् ७

अर्थ–अब वर्णादि स्वरबलचक्र देखनेकी रीति–जिस पुरुषको क्रीडारंभके समय स्वरबल लेना होवे तो उस पुरुषका जो प्रसिद्ध नाम है उसका पहिला अक्षर और सामनेवालेके नामकाभी पहिला अक्षर यह दोनों अक्षरस्वरबलचक्रमेंके तीसरे कोष्टकमें देखनाकि इन दोनोंके पहिले अक्षर कौनसे कोष्टकमें हैं पीछे जिस कोष्टकमें वर्ण होवे उस ऊपरका जो स्वर है वह वर्णस्वर दोनोंजनोंका जानना फिर जिस तिथिको क्रीडा करनेकी है उस समय चक्रमें तिथिका कोष्टक चौथा है उममें देखनाकि यह खेलनेकी तिथिका स्वर कौनसा है जो ऊपर लिखा है वह तिथिस्वर जानना अब अपने स्वरसे तिथिका स्वर तीसरा होवे तो बहुत बलवान् युवा जानना. दूसरा होवे तो आधा बलवान् कुमार जानना पहिला बाल जानना थोडा लाभ दिखावे अब इस उपरांत तात्कालिक स्वर देखनेकी रीति कहत हैं–जिस तिथिको तात्कालिक स्वर देखना होवे वह तिथि जहांसे बैठी वहांसे लेके तिथिके अंततककी घटिकाका ग्यारहवा भाग लेके जो घटिका पल होवे अगर स्थूलमानसे घटि ५ पल २७ एकादशांश होता है सो तिथि जहांसे बैठी वहांसे लेके खेलनेके समयतक घटी५पल२७वारंवार गिनती करते करते जितनी भरती होवे उतनी संख्याका तिथिस्वरसे तात्कालिक स्वर आया सो अपने स्वरसे तीसरा लेना तीसरा न आवे तो जिस इष्टघटीमें तीसरा स्वर आवे वैसी घटि कमज्यादा करके इष्टकाल क्रीडारंभको लेना यहां सब बल देखना सो क्रीडाके आरंभके समयका है घरमेंसे निकलते समयका नहीं है वास्ते युवास्वर आवे तो जय होवे उदाहरण केशवदत्तको चैत्रकृष्ण ८ मंगलके रोज इष्टघटी २ पल १० के समयमें दयादत्तके साथ द्यूतक्रीडा करनेकी है उनको स्वरबल देखनेकी रीति केशवदत्तका आद्यवर्ण के है उसका वर्णस्वर अ भया और खेलनेकी तिथि ८ है उसका स्वर उ है तब केशवदत्तका वर्णस्वर जो अकार वहांसे गिनती किये तो उकार तीसरा हुआ और अपने स्वरका बाल अवस्थासे गिनती करते तीसरी अवस्था युवा भई इस वास्ते केशवदत्तको तिथिस्वरबल उत्तम है अब तात्काल स्वरबलका विचार तिथि ८ सोमवारके

भुक्तघटी २ पल ७ मंगलको इष्टघटी २ पल १० है सर्वभुक्तघटी ४ पल २७ भई इसका अंतरोदय घटी ५ पल २७ है तब प्रत्येक स्वरको उकारसे आरंभ किये तो उकार यही वर्त्तमानस्वर पहिला भया सो केशवदत्तके वर्णस्वरसे तीसरा है वहभी युवा बलवान् भया इस वास्ते केशवदत्तको तात्काल स्वरबलभी उत्तम है अब दयादत्तका वर्णस्वर ओकार है और खेलनेकी तिथि ८ का स्वर उकार सो वर्णस्वरसे चौथा भया उसकी अवस्था वृद्ध है उसका फल मध्यम जानना और तत्काल स्वरभी उकार है सोभी वर्णस्वरसे चौथी अवस्था वृद्ध है फल मध्यम है इस वास्ते द्यूतक्रीडामें स्वरबलके प्रमाणसे केशवदत्तका जय होवेगा और दयादत्त हारेगा इति वर्णस्वरतिथिस्वरतत्कालस्वरबलम् ॥ ९२ ॥

अथ दिक्स्वरबलमाह गणपतौ ।

पूर्वादितश्चतुर्दिक्षुनंदाद्यास्तिथयःक्रमात् ॥
मध्येपूर्णाइमेपंचह्यकाराद्याःस्वरास्तथा ॥ ९३ ॥
तिथिदिक्स्वरतश्चैवंघटिषट्कप्रमाणतः ॥
तात्कालिकःक्रमाज्ज्ञेयोदिक्स्वरस्तत्त्ववेदिभिः ॥ ९४ ॥
बालप्रभृतयोऽवस्थास्तेषांज्ञेयाःक्रमाद्बुधैः ॥
पूर्णोजयःस्वरेयूनिबालेघाताज्जयोभवेत् ॥ ९५ ॥
ईषद्घातात्कुमारेचवृद्धेभंगोमृतौमृतिः ॥
स्वयंस्वरबलोपेतदिशिस्थित्वाऽथशात्रवम् ॥ ९६ ॥
कृत्वान्यत्रादिशिद्यूतयुद्धंकुर्वञ्जयेन्नृपः ॥ ९७ ॥

अर्थ-सं०टीका अथ दिक्स्वरबलमाह सार्द्धचतुर्भिःस्पष्टम् ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

अथ दिक्स्वरबलचक्रम्.

	पूर्व. तिथि १ । ६ । ११ अकार. बाल. घटी ६	
तिथि४।९।१५ उत्तर. एकार वृद्ध. घटी ६.	तिथि ५। १० ।१४ ओकार. मृत. घटी६ मध्य.	तिथि२।७।१२ इकार. दक्षिणा. कुमार. घटी ६
	तिथि ३ । ८ । १३ उकार. युवा. घटी ६ पश्चिम.	

अर्थ–अब दिक्स्वरबल कहते हैं श्लोकोक्तरीतिसे जो चक्र निकाला है उसके देखनेका क्रम जिस रोज तिथि स्वरबल देखनेका होवे उससमयकी इष्टघटी निश्चय करके युवास्वरकी दिशामें बैठना शत्रुको हीनस्वरबल दिशामें बिठायके द्यूतक्रीडा करना तो जय होवे उदाहरण–केशवदत्त द्यूतक्रीडा करनेको बैठा है सो उसको दिक्स्वरबल लेना है चैत्रकृष्ण ८ सर्वतिथि भुक्तघटी ४ पल १७ हैं तब तिथि ८ पश्चिममें है और इष्टघटी पूर्वादि क्रमसे एकेकदिशामें छै छै घटिका देना सो यहां इष्टघटी ४ पल १७ हैं सो तात्काल स्वरका उदय प्रथम पूर्वदिशामें आया सो तात्कालस्वर पूर्वदिशामें है अब केशवदत्तको द्यूतभूमिसे पश्चिमदिशामें बैठना कारण तिथि दिक्स्वर पश्चिममें है. उसकी बालअवस्था है तो फल यह है 'बाले घाताज्जयोभवेत्' थोडिक नरदा मरे बाद जय होवेगा और तात्कालस्वर पूर्वमें है उससे पश्चिम युवास्वरमें आया तो पूर्ण जय होवेगा और दयादत्तको उत्तरदिशामें बिठाना तो वह दोनों स्वरोंकी कुमार वृद्ध अवस्था भई बल मध्यम आया तो दयादत्त हारेगा केशवदत्त जीतेगा॥९३॥ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

अथ छायाबलमाह समरसारे ।

पृष्ठेर्कोयदिदक्षिणेऽपिपुरतश्छायाऽथवामेजयः ।
किंत्वर्केवहतीहयायिनिविधौवाहस्थितेस्थायिनि ॥
छायापृष्ठगदक्षिणानिशिशशीवामेऽग्रतोवाजयो ।
यातुश्चंद्रवहेपरस्यतुरवेर्वामःशशीष्टःक्षयी ॥ ९८ ॥

अथ द्यूतादिक्रीडायां दिवा रविछायाबलं रात्रौचंद्रछायाबलं तेन यायिस्थायिनोर्जयपराजयावाह–अत्रयायी नाम यः क्रीडार्थं परगृहे गच्छति सयायी यस्य गृहेएव क्रीडा भवति स स्थायी अत्र छायाबलंतु क्रीडारंभेएव विज्ञेयम् पृष्ठेइति।यायिनःस्थायिनोपि अर्को यदि दिने पृष्ठप्रदेशे दक्षिणप्रदेशे वा स्यात्तदा छाया पुरतःस्वाग्रप्रदेशे वामप्रदेशे वा चेत्तदाच यायिस्थायिनोर्जयः किंत्वयं विशेषः अर्के वहति दक्षिणभागस्थपिंगलाख्यरविनाड्यां प्राणवायौ वहत्यर्केच पृष्ठदक्षस्थे यायिनि जयो न स्थायिनि पृष्ठदक्षस्थेऽर्के विधौ चंद्रमसि वाहस्थे वहति वामभागस्थेडाख्यचंद्रनाड्यां प्राणवायौ वहति स्थायिनि जयः निशि रात्रौतु शशी चंद्रो निजवामेऽग्रतो वा चेत्तदा छाया स्वपृष्ठप्रदेशे स्वदक्षप्रदेशेच गच्छति तदा यायिस्थायिनोर्जयः अयंतु विशेषः वामाग्रगते चंद्रे चंद्रनाडीवहेच यायिनो जयः नस्थायिनः परस्परस्थायिनस्तु वामाग्रगे चंद्रमसि सूर्यनाडीवहेच जयः नयायिनः क्षयी क्षयपक्षे कृष्णपक्षे गतःशशी चंद्रो वामएवेष्टः अत्र विशेषः व्याख्यांतरे कृष्णपक्षजश्चंद्रःवामभागस्थःपरस्य स्थायिनःइष्टः अर्थादेवशुक्लपक्षजश्चंद्रोदक्षेशुभः तथैवयायिनोदक्षेकृष्णपक्षजश्चंद्रोवामेशुक्लजःइष्टःज्ञेयःउक्तंचसिद्धसेनेन " कृष्णेवामःशशीशुक्लेस्थायिनोदक्षिणेशुभः ॥ यायिनोविपरीतश्चसमरेजयदःशुभ"इति ॥ ९८ ॥

भाषा–दिनको सूर्यछाया बल देखना रात्रिको चंद्रछायाबल देखना खेलतेसमय सूर्यको पीछे या सीधीबाजू लिये तो छायाबल आताहै व जयकारकहै;परंतु सूर्यस्वर चले तो यायिका जय और चंद्रस्वर चले तो स्थायिका जय जानना. रात्रिको खेलतेसमय चंद्र सन्मुख या डावीबाजूलिये हो तो छायाबल आता है, वह जयकारक है; परंतु चंद्रस्वर चले तो स्थायिका जय होवेगा सूर्यस्वर चले तो स्थायिका जय होवेगा. और सूर्य सन्मुख डावीबाजूचंद्र पीछे होवे तो छायाबल नहीं जानना औरभी विशेष टीकामें दे-

खेलेना. उदाहरण—चैत्रकृष्ण ८ मंगलके रोज इष्टघटी २ प० १० उस समय केशवदत्त पश्चिममें बैठा है दयादत्त उत्तरमें बैठा है तब छायाबल दोनों-कोभी नहीं आया छायाबलसे दोनों समान हैं ॥ ९८ ॥

प्राचीमुदीचींवाचंद्रेगतेस्थायीजयीभवेत् ॥
प्रतीचींदक्षिणांप्राप्तेयायीविजयमाप्नुयात् ॥ ९९ ॥

अर्थ—अथप्राच्यादिगतचंद्रबलमनुष्टुभाह—प्राचीमिति । प्राचींपूर्वांवोदीचीमुत्तरांदिशं गतेचंद्रेस्थायीजयीभवेत् तथा प्रतीचींपश्चिमांदक्षिणांच दिशंप्राप्ते चंद्रे यायीविजयमाप्नुयात्।अत्रोत्तरदक्षिणेऽयनवशाद्गोलवशाद्वाज्ञेये प्राचीप्रतीच्यौतु स्वोदयास्तादिवशाच्चेति मुख्यमतंतुमेषादिद्विराशिगचंद्रवशेनादिशोज्ञेयाः।यथा मेषसिंहधनुर्भगइंदुःपूर्वे वृषकन्यामकरराशिस्थोदक्षिणे मिथुनतुलाकुंभराशिगो विधुःपश्चिमे कर्कवृश्चिकमीनभगउत्तरेज्ञेयइतिभावः ॥ " मेषादिषट्केखलुसौम्यगोलौतुलादिषट्केखलुयाम्यगोलौ । कर्कादिषट्केतरणौतुयाम्यंमृगादिषट्केप्ययनंतुसौम्यम् " इति ॥ ९९ ॥

भाषा—सूर्य चंद्र पूर्वदिशामें हैं सो उदयसे जानना सो घटी १२ तक पीछे घटी ६ दक्षिणायन होवे तो दक्षिणमें और उत्तरायण होवे तो उत्तरमें जानना पीछली घटी १२ पश्चिममें है सो अस्तसे जानना इति छायाबलम् ॥ ९९ ॥

अथ वायुबलम् ।

वायुःपृष्ठेदक्षिणेचवहन्सूचयतेबलम् ॥
सम्मुखीनश्चवामश्चभटानांभंगसूचकः ॥ १०० ॥

अर्थ—अथ वायुबलमाह— वायुरिति । पृष्ठे दक्षिणेच वहनः वायुः बलसूचयति यथा—प्राङ्मुखस्यपाश्चात्यो दाक्षिणात्यो वायुः बलसूचकः सम्मुखनिः सम्मुखं वहन् वामश्च भटानां भंगं पराजयं सूचयति ॥ १०० ॥

भाषा—द्यूतादिकखेलतेसमय वायु पीछेसे या सीधीबाजूसे आवै तो जय होवे और सामनेसे या डावी तरफसे आवै तो भंग होवेगा. उदाहरण—केशवदत्त द्यूतभूमिसे पश्चिममें पूर्वके तरफ मुख करके बैठा है वायु दक्षिणसे उत्तरमें जाता है तो केशवदत्तको जयकारक है और दयादत्तको वायु सामनेसे आता है सो भंग देनेवाला जानना. इति वायुबलम् ॥ १०० ॥

अथ रविहतदिग्ज्ञानम् ।

द्वितीययामार्द्धतएवयामेयामेतृतीयांचततस्तृतीयाम् ॥
अर्कःप्रतीचीप्रभृतिंनिहंतिप्रागंत्ययामार्द्धयुगेनयाम्याम्॥ १०१॥

अर्थ–अथ रविहतदिग्ज्ञानमाह– द्वितीययामार्द्धतइति । अर्कःसूर्योद्विती ययामार्द्धतएवारभ्य यामे यामे प्रहरे प्रहरे तृतीयांच पुनस्तृतीयां प्रतीचीप्रभृति पश्चिमाद्यां दिशं निहंति यथा द्वितीयतृतीययामार्द्धयोः पश्चिमां चतुर्थपंचम-यामार्द्धयोरुत्तरां षट्सप्तमयामार्द्धयोः प्रतीचीं तथाप्राक्पूर्वोन्योऽष्टमः एतयोरर्द्ध यामयोर्युगेनयुग्मेनयाम्यां दक्षिणांदिशं रविर्निहंति एतद्दिवैवविचार्यंनतु रात्रौ रविहतदिक्स्थस्यक्रीडायांघातइतिप्रयोजनम् ॥ १०१ ॥

भाषा-दिनको खेलतेसमय जिस दिशाको सूर्यने घात किया होवे उस दि-शाको छोडके अन्य दिशामें बैठकर खेलना. रविहतदिशाका ज्ञान चक्रमें स्पष्ट है. उदाहरण–केशवदत्त, दयादत्त दोनों प्रातःकालको खेलते हैं तब प्रातः-कालमें प्रथमयामार्द्धमें तो सूर्यदक्षिणदिशाको घातकरता है तब उस दिशामें तो ये दोनों बैठे नहीं हैं इस वास्ते सूर्यबल दोनोंको समान है ॥ १०१ ॥

अथ चंद्रहतविदिशाज्ञानमाह ॥

ईशाद्विदिशांचंद्रोयामेयामेनिहंतिवृषकुंभौ ॥
मृगसिंहौधन्वितथाकन्यामिथुनेक्रमेणैव ॥ १०२ ॥

अर्थ–ईशादिति । चंद्रो रात्रौ यामेयामे प्रहरेप्रहरे ईशादिविदिशांमध्येक्रमेणै-ववृषकुंभौ तथा मृगसिंहौ मकरसिंहौ तथा धन्वि तथा कन्यामिथुनेराशी निहंति यथारात्रेःप्रथमे यामे ईशानकोणे वृषकुंभौ राशीचंद्रोनिहंति द्वितीये-यामेऽग्निकोणे मकरसिंहौराशीनिहंति तृतीययामे नैर्ऋतिदिशि धनुर्निहंति चतुर्थयामे वायुदिशि कन्यामिथुनेनिहंति शेषराशयस्समस्तदिक्षुसदैवशुद्धा इतिभावः । तथाचंद्रोत्रपूर्वादिदिशोनोनिहंति एतद्दिवानोविचार्य चंद्रहतवि-दिशिस्थित्वा द्यूतयुद्धं न कुर्वीतेतिप्रयोजनम् ॥ १०२ ॥

भाषा–रात्रिको खेलतेसमय चंद्रहत विदिशाको छोड़के अन्य विदिशामें बैठना. चक्रमें अर्थ स्पष्ट है ॥ १०२ ॥

अथ रविहतदिग्ज्ञानका स्पष्टचक्र।

याम.	दिनमानके प्रमाणसे.	यामार्द्ध	१	इस समय दक्षिण दिशाको सूर्य घात करताहै इसवास्ते क्रीडाभूमिसे दक्षिण दिशामें बैठकर खेलना नहीं.
१	दिनमानके प्रमाणसे.	यामार्द्ध	२	इस समय पश्चिमदिशाको सूर्य घात करताहै इस वास्ते क्रीडाभूमिसे पश्चिम दिशामें बैठकर खेलना नहीं.
याम.	दिनमानके प्रमाणसे.	यामार्द्ध	३	इस समय पश्चिमदिशाको सूर्य घात करता है इसवास्ते क्रीडाभूमिसे पश्चिमदिशामें बैठना नहीं.
२	दिनमानके प्रमाणसे.	यामार्द्ध	४	इस समय उत्तर दिशाको सूर्य घात करता है इस वास्ते क्रीडाभूमिसे उत्तर दिशामें बैठकर खेलना नहीं.
याम.	दिनमानके प्रमाणसे.	यामार्द्ध	५	इस समय उत्तर दिशाको सूर्य घात करता है इस वास्ते क्रीडा भूमिसे उत्तरदिशामें बैठकर खेलना नहीं.
३	दिनमानके प्रमाणसे.	यामार्द्ध	६	इस समय पूर्वदिशाको सूर्य घात करता है इस वास्ते क्रीडाभूमिसे पूर्व दिशामें बैठकर खेलना नहीं.
याम.	दिनमानके प्रमाणसे.	यामार्द्ध	७	इस समय पूर्वदिशाको सूर्य घात करता है इसवास्ते क्रीडाभूमिसे पूर्व दिशामें बैठकर खेलना नहीं.
४	दिनमानके प्रमाणसे.	यामार्द्ध	८	इस समय दक्षिण दिशाको सूर्य घात करता है इस वास्ते क्रीडा भूमिसे दक्षिण दिशामें बैठकर खेलना नहीं.

अथ रात्रिको चंद्रहत विदिक् ज्ञानका स्पष्टचक्र ।

रात्रिका प्रहर	१	इस समय ईशानकोणमें चंद्र वृषभराशी और कुंभ राशीको घात करता है इस वास्ते वृषकुंभराशिवाले मनुष्य क्रीडा भूमिसे ईशान्यकोणमें बैठकर खेलना नहीं.
रात्रिका प्रहर	२	इस समय अग्निकोणमें चंद्र मकरराशि और सिंहराशिको घात करता हैं इस वास्ते मकरसिंहराशिवाले मनुष्य क्रीडा भूमिसे अग्निकोणमें बैठकर खेलना नहीं.
रात्रिका प्रहर	३	इस समय नैर्ऋत्यकोणमें चंद्र धनराशीको घात करता है इस वास्ते धनराशिवाले मनुष्य क्रीडा भूमिसे नैर्ऋत्य कोणमें बैठकर खेलना नहीं.
रात्रिका प्रहर	४	इस समय वायु कोणमें चंद्र मिथुनराशि और कन्याराशिको घात करता है इस वास्ते मिथुनकन्याराशी वाले मनुष्य क्रीडा भूमिसे वायुकोणमें बैठकर खेलना नहीं.

अथ रविचंद्रयोर्विशेषफलमाह ।

दक्षेपृष्ठेरविंकुर्याद्वामग्रेनिशाकरम् ॥
जयतीहनसंदेहएकोपिशतमाहवे ॥ १०३ ॥

अर्थ भाषा–खेलते समय सूर्यको पीछे अगर सीधी बाजू लेना और चंद्रको सामने अगर डावी तरफ लेके बैठे तो खेलमें जीतेगा संशय नहीं है; परंतु यहां एक संशय है कि सूर्य चंद्र दोनोंका एक समय बल कैसा आवेगा कारण पीछे ऐसा कहा है कि दिनको सूर्यबल रात्रिको चंद्र बल लेना तब यहां कैसा करना उत्तर यह सूर्य चंद्र बल अयन गोलके आधीनसे देखके बल लेना ॥ १०३ ॥

अथ योगिनीबलमाह।

प्राक्सोमानलरक्षोवाक्पाशीरेशदिक्षुदर्शातैः ॥
तिथिभिस्तिथिपदतोर्धप्रहरैरिनवत्तुयोगिनीशस्ता ॥ १०४॥

अर्थ–अथ योगिनीबलमाह–प्राक्सोमेति। योगिनी दर्शातैरमावास्यांतैस्तिथिभिः क्रमेण प्राक्पूर्वा सोमउत्तरा अनलआग्नेयी रक्षो नैर्ऋतिः अवाक् दक्षिण पाशी पश्चिमा इरा वायवी ईशैशानी एतासु दिक्षु याति दर्शातैरित्यत्राष्टमी पर्यंतप्रथमावृत्तिसमाप्तौ नवम्यादिपौर्णिमांतं द्वितीयावृत्तौ सप्ततिथी योंजयित्वाष्टमदिशिदर्शोयोज्यइत्यर्थः। यथा प्रतिपदि प्राचीं योगिनी याति द्वितीयायामुत्तरां तृतीयायामाग्नेयीम् चतुर्थ्यां नैर्ऋतिं पंचम्यांदक्षिणां षष्ठ्या पश्चिमांसप्तम्यां वायवीम् अष्टम्यामैशानींयातीतिप्रथमावृत्तिः। तथैव कि१स७ भ ४ ल ३ द ८ ल३ रा २ ग३ इत्युक्तरीत्या प्रथमसप्तमचतुर्थतृतीयाष्टम तृतीयद्वितीयतृतीयदिग्गमनेन नवम्यांप्राचीं दशम्यामुत्तराम् एकादश्यामाग्नेयी द्वादश्यांनैर्ऋतिं त्रयोदश्यांदक्षिणांचतुर्दश्यां पश्चिमां पौर्णिमायांवायवीममावास्यायामैशानीं दिशंयोगिनी याति इतिद्वितीयावृत्तिः।एवंदर्शातैस्तिथिभिर्योगिनी किसभलदलेरागइति रीत्या प्रागादिदिशोयाति अथार्द्धप्रहरयोगिनी लिख्यते–तिथिपदतइति। तिथिः यत्पदंस्थानं तस्मादष्टभिरर्द्धं प्रहरैर्द्धरावृत्त्या प्राक्सोमेति पठितप्रागादिदिशोयोगिनीयाति। यथाप्रतिपदि पूर्वस्यां योगिनी तेन प्राच्येव प्रतिपत्तिथेः स्थानंतत्रप्रतिपदोर्द्धयामे प्रथमे प्राच्यां योगिनी द्वितीयेऽर्द्धयामे उत्तरस्यांतृतीयेर्द्धयामे आग्नेयी ज्ञेया इत्थमपि द्वितीयादितिथिषुक्रमेणोत्तरादिदिग्भ्योयोगिनीयातीत्यर्थः। अत्रसर्वतिथिमानस्यषोडशांशोर्द्धप्रहरस्तथातिथेरारंभसमयादेवयोगिनीप्रारंभश्चबोध्यइति अथेयंयोगिनीइनस्सूर्यस्तद्वत्पृष्ठदक्षिणेशस्ताशुभेति ॥ १०४ ॥

भाषा–तिथि ऊपरकी योनी और यामार्द्धयोगिनी यह दोनों चक्र ऊपरसे स्पष्ट देख पडती हैं सो योगिनीको पीछे या सीधी बाजू लेके खेलनेको बैठना तो क्रीडामें जय पावेगा ॥ १०४ ॥

पृष्ठेदक्षेयोगिनीराहुयुक्तायस्यैकोयंशत्रुलक्षंनिहंति ।
श्रेष्ठंसर्वेभ्योबलेभ्यस्तदेवसंक्षेपोयंसर्वसारोभ्यधायि॥१०५॥

अर्थ–अथराहुयोगिनीबलप्रशंसामाह–यस्यक्रीडाकर्तुः पुरुषस्य पृष्ठेपृष्ठभागे दक्षेदक्षिणभागे वा राहुयुक्ता योगिनीभवेत् तर्ह्ययमेकएवशत्रूणांलक्षंलक्षसंख्याशत्रून्निहंति अत्रयुक्तेतिशब्देनैकदिक्स्थराहुयोगिन्योरतिप्राशस्त्यं सूचितं भिन्नदिक्स्थयोर्मध्यमत्वंचेति तथाचमुख्यौयोगिनीराहुयामार्द्धजावेवात्रग्राह्यौ नतुमुहूर्त्तजाविति तत्तस्माद्धेतोरेतद्राहुयोगिनीबलंसर्वेभ्योवायुरवींदुदिक्छायादिभ्योबलेभ्यःश्रेष्ठम् अयंयोगिनीराहुबलरूपसंक्षेपःसर्वेभ्यःशास्त्रेभ्यःसारःसारभूतोमयासम्यगभ्यधायिकृतइत्यर्थः ॥ १०५ ॥

अर्थ–और पीछे स्वर छायादिक बल कहा है, सो कुछ न होवे परंतु एक अर्द्धयाम राहुयुक्त अर्द्धयाम योगिनी बलको पीछे या सीधी तरफ लेवे तो क्रीडामें जय पावेगा यह राहुयुक्तयोगिनीबल सबका सारभूत है ॥ १०५ ॥

अथ राहुबलमाह ।

प्राग्वातांतकशंभुपाशिहुतभुक्पौलस्त्यरक्षोदिशो ।
यामार्द्धैरगुरह्निपाशिककुभोसौषष्टिषष्टिंनिशि ॥
पृष्ठेदाक्षिणतःशुभोद्विघटिकोसौतुर्यंतुर्यांव्रज-
न्नीशावाकपवनेंद्रराक्षसहिमग्वग्निप्रतीचीर्दिशः ॥१०६॥

अर्थ–अथ यामार्द्धमुहूर्त्ताभ्यांद्विधासमस्तबलमुख्यभूतं राहुबलमाह-प्राग्वातांतकेति । अगुःराहुःअह्निदिवा अर्कोदयादष्टभिर्यामार्द्धैःक्रमेणषष्टिषष्टिंषष्टिंषष्टिंदिशंव्रजन्सन् प्राक्प्राचीवातोवायुः अन्तकोदक्षिणाशंभुरैशानीपाशीपश्चिमाहुतभुगाग्नेयी पौलस्त्यउत्तरा रक्षोनैर्ऋत्यदिग्एतादिशोयाति यथापूर्वेर्द्धयामेराहुः पूर्वदिशंयाति द्वितीये ततःषष्टिंवायवींदिशंयाति एवमपितृतीयेदक्षिणां चतुर्थेशांभवीं पश्चिमेवारुणींषष्ठेआग्नेयीं सप्तमे उत्तराम् अष्टमेनैर्ऋतींयातीति भावः।तथासौराहुःनिशिरात्रौ यामार्द्धैःपाशिककुभःपश्चिमतःक्रमेणषष्टिंषष्टिंदिशंयाति यथारात्रेःपूर्वेर्द्धयामेपश्चिमांद्वितीयेतस्याःषष्टिमाग्नेयीम् एवमपितृतीये सौम्यांचतुर्थेनैर्ऋतींपंचमेपूर्वांषष्ठेवायवींसप्तमेदक्षिणामष्टमेईशानींदिशंयातीतितात्पर्यार्थः। अथमुहूर्त्तराहुस्तस्यात्रप्रयोजनाभावान्नव्याख्यायते ॥ १०६ ॥

भाषा–अर्द्धयाम राहु जिस दिशामें होवे उस दिशाको पीठ ऊपर अगर सीधी बाजु लेके खेलने बैठना तो जय होवे दिनमान या रात्रिमान उसको जो आठवा भाग उसको यामार्द्ध कहना ऐसा पहिले यामार्द्धमें राहु पूर्वदिशामें रहता है दूसरे यामार्द्धमें वायु दिशामें रहता है ऐसा राहुबलका निर्णय आगे चक्रमें स्पष्ट है ॥ १०६ ॥

गूढाख्योऽर्द्धप्रहरैराग्नेयीतस्तथादिवानिशिच ॥
षष्टिंपष्टिंहन्यात्तन्मुखयात्राशुभानरणः ॥ १०७ ॥

अर्थ–अथगूढाख्यराहुहतदिग्विदिश आर्ययाह–गूढाख्यइति । गूढाख्योगुप्तो राहुःदिवादिवसे तथा निशिचरात्रौषोडशांशैरर्द्धप्रहरैराग्नेयीतोऽग्निकोणादारभ्यषष्टिंषष्टिंदिशंक्रमेणवहन्याद्धंति यथार्कोदयात्पूर्वेर्द्धप्रहरे आग्नेयीं दिशंहंति तथा द्वितीयेअर्द्धप्रहरेआग्नेयीतःषष्टिमुत्तरांहंति ततःषष्टिंनैर्ऋतींतृतीयेऽर्द्धप्रहरे हंति एवमग्रेरात्रावपिचहंति तस्यागूढराहुहतदिशोमुखंसम्मुखंयात्रा न शुभात थारणःद्यूतादिक्रीडासंग्रामश्चनशुभः दिनस्यरात्रेर्वाऽष्टमोभागोयामार्द्धमानंषोडशांशश्चमुहूर्त्तमानमिदंयोगिनींविनासर्वत्रयोज्यंरात्रावपीदमेव ॥ १०७ ॥

अर्थ–गूढाख्यराहुका बल देखना सो चक्रसे स्पष्ट है ॥ १०७ ॥

अथतिथियोगिनीचक्रम् ।

तिथि	दिशा.	योगिनी पिछाडी और सीधि बाजू जयकारक है.
१।९	पूर्वमें	योगिनी रहती है.
२।१०	को उत्तरमें	योगिनी रहती है
३।११	को अग्निमें	योगिनी रहती है.
४।१२	को नैर्ऋत्यमें	योगिनी रहती है.
५।१३	को दक्षिणमें	योगिनी रहती है.
६।१४	को पश्चिममें	योगिनी रहती हैं.
७।१५	को वायुकोणमें	योगिनी रहती है.
८।३०	को ईशानमें	योगिनी रहती है.

अथअर्धयामयोगिनीज्ञानचक्रम् ।

संख्या	अर्ध-याम	१ ९	२ १०	३ ११	४ १२	५ १३	६ १४	७ १५	८ ३०
किं १	१ ९	पू.	उ	अ.	न.	द.	प	वा	इ
स. ७	२ १०	उ.	प	इ.	अ.	पू.	द	नै	वा
भ. ४	३ ११	अ.	इ.	द.	प.	नै.	वा	उ.	पू.
ल. ३	४ १२	नै.	अ.	प.	उ.	वा	इ.	पू.	द.
द ८	५ १३	द.	पू.	नै.	वा.	प.	उ.	इ.	अ.
ल ३	६ १४	प.	द.	वा.	इ.	उ.	पू.	अ.	नै.
रा २	७ १५	वा.	नै.	उ.	पू.	इ.	अ.	द.	प.
ग ३	८ १६	इ.	वा.	पू.	द.	अ.	नै.	प.	उ.

अथअर्धयामराहुज्ञानचक्रम् ।

अर्धयाम दिनका	१	इस समय राहु पूर्वादिशामें रहता है.
अर्धयाम दिनका	२	इस समय राहु वायुदिशामें रहता है.
अर्धयाम दिनका	३	इस समय राहु दक्षिणदिशामें रहता है.
अर्धयाम दिनका	४	इस समय राहु ईशान्यदिशामें रहता है.
अर्धयाम दिनका	५	इस समय राहु पश्चिमदिशामें रहता है.
अर्धयाम दिनका	६	इस समय राहु अग्निकोणमें रहता है.
अर्धयाम दिनका	७	इस समय राहु उत्तरादशेंमि रहता है.
अधयाम दिनका	८	इस समय राहुर्नैर्ऋत्य कोणमें रहता है.

अथ गूढार्धयामराहुचक्रम् ।

दिनरात्रिका अर्धयाम	१	इस समय अग्निकोणमें गूढ राहु रहताहै.
दिनरात्रिका अर्धयाम	२	इससमय उत्तरमें गूढ राहु रहताहै.
दिनरात्रिका अर्धयाम	३	इससमय नैऋतकोणमें गूढ राहु रहता है.
दिनरात्रिका अर्धयाम	४	इससमय पूर्वदिशामें गूढ राहु रहता है.
दिनरात्रिका अर्धयाम	५	इस समय वायुकोणमें गूढ राहु रहता है.
दिनरात्रिका अर्धयाम	६	इस समय दक्षिणदिशामें गूढ राहु रहताहै.
दिनरात्रिका अर्धयाम	७	इस समय ईशान्यकोणमें गूढ राहु रहता है.
दिनरात्रिका अर्धयाम	८	इस समय पश्चिम दिशामें गूढ राहु रहता है.

यह गूढ राहु खेलती समय पीछे या सीधी बाजूके ले बैठे तो क्रीडामें जय होवेगा सामने अगर डावी बाजू रह्या तो हार होवेगी,

अर्धयाम रात्रिका	१	इस समय राहु पश्चिम दिशामें रहता है.
अर्धयाम रात्रिका	२	इस समय राहु अग्निकोणमें रहता है.
अर्धयाम रात्रिका	३	इस समय राहु उत्तरदिशामें रहता है.
अर्धयाम रात्रिका	४	इस समय राहु नैर्ऋत्यकोणमें रहता है.
अर्धयाम रात्रिका	५	इस समय राहु पूर्वदिशामें रहता है.

अर्धयाम रात्रिका	६	इस समय राहु वायुकोणमें रहता है.
अर्धयाम रात्रिका	७	इस समय राहु दक्षिणदिशामें रहता है.
अर्धयाम रात्रिका	८	इस समय राहु ईशान्यकोणमें रहता है.

यह अर्धयाम राहु खेलती समय पीछे या सीधी बाजू लेके बैठे तो क्रीडामें जय होवेगा, सामने अगर डावी बाजू रहा तो हार होवेगी.

सम्मुखंवामसंस्थंवायस्येदंराहुमंडलम् ॥
पराजयोभवेत्तस्यवाद्यूतरणादिषु ॥ १०८
यस्यदक्षिणपृष्ठस्थाह्येषाराहुपरंपरा ॥
ससहस्त्रशतेनापिपरसैन्यंनिकृंतति ॥ १०९॥
सर्वेषांभूबलानांचराहुभूः प्रवरास्मृता ॥
तस्यांस्थित्वाविशेषेणचतुरंगेजयोभवेत् ॥ ११० ॥

संस्कृत टीका–स्पष्टाः ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

अर्थ–यह यामार्द्धराहु और गूढ राहु यह दोनोंसे जो हत हुई दिशा कहते जिस दिशामें राहु होवे वह दिशा खेलतीवखत सामने होवे अगर डावीतरफ होवे तो द्यूतादिकके विषे पराजय होवेगा ॥ १०८ ॥ और यह राहुयुक्त दिशा जो कभी खेलते समय सीधे हाथके तरफ अगर पीछे होवे तो वह एकही मनुष्य हजार सेनाको मारेगा जय होवेगा ॥१०९॥ सब बल कहे हैं उनमें उत्तम राहुबल है इस वास्ते राहुबल लेके जो खेलेगा उसका खेलनेमें जय होवेगा ॥ ११० ॥ इति राहुबलविचार पूरा भया ॥

अथभूबलमाह ।

पूर्वादिदिक्ष्वंतरगास्तुतेऽचःसुखंजयेद्यूनिजयस्तुघातात ॥
स्यादाद्ययोर्नातिमयोःस्वशत्रुबलाबलाभ्यांबलमाददीत ॥

सं०टीका-अथ बालकुमारादिस्वरवशाद्भूबलमाह-तेअकारादयोऽचःस्वराः पूर्वादिदिक्षु मध्ये च भागे युद्धस्थानादेश्वसन्निविष्टा ज्ञातव्याः । तत्र यूनि युवस्वरविषयेजयेत् निजयुवस्वरादिशमाश्रितो भटःसुखं जयेत् इतितात्पर्यार्थः।आद्ययोस्तु बालकुमारयोर्घातादनंतरंघाते प्रहारेलब्धे सति जयः सुखपूर्वजयः स्यादित्यर्थः । अंतिमयोर्वृद्धमृतयोर्जयो न स्यात् । स्वशत्रुबलाबलाभ्यां स्वंयुवस्वरदिशं शत्रुं मृतस्वरदिशंप्रापतंकृत्वा इत्थं स्वस्यस्वरबलेशत्रोस्तुबलाभावेक्रीडाद्यर्थेतांदिशमाददीततत्र।स्थित्वा युद्धादिकुर्यात् ॥ १११ ॥

भाषा-भूबल देखनेकी रीति ऐसी है कि पूर्वादिक चार दिशा और मध्यभाग ऐसे पांच कोष्टकमें अकारादि पांच स्वर और क छ ड ध भ वआदि वर्ण लिखेहैं तब क्रीडा करनेवाले मनुष्यने भूबल देखके बैठना खेलनेवाले मनुष्यके नामका जो पहिला अक्षर है वह अक्षर भूबलचक्रके कौनसे कोष्टकमेंहै और कौनसी दिशा है सो देखना जिस दिशाके कोष्टकमें नामाक्षर होवे वह दिशा बालावस्थाकी जाननी वहांसे दूसरी दिशाकी कुमारावस्था जाननी तीसरी दिशाकी युवावस्था चौथीकी वृद्धावस्था पांचवीकी मृतावस्था जाननी इस वास्ते खेलनेवाले अपनी नामाक्षर दिशासे तीसरी दिशामें जायके बैठे और शत्रुको वृद्ध या मृत दिशामें बिठावे तो जय होवे उदाहरण-केशवदत्तका नामाक्षर के है सो पूर्वदिशामें है वहांसे तीसरी दिशा पश्चिम भई उसकी अवस्था युवा है तब केशवदत्त पश्चिम दिशामें पूर्वाभिमुख बैठे और दयादत्तका नामाक्षर द है वह मध्यकोष्टकमें है वहांसे पांचवी मृत दिशा उत्तर भई वहां दयादत्तको बिठावे तो केशवदत्तका जय होवेगा ॥ १११ ॥

अथ द्वितीयम् ॥

ऐशानीतःसितकुजशनिरविग्रहराशयःप्रतीचींदोः ॥
गुरुग्रहयोरक्षउदग्दिशौज्ञग्रहयोस्तुवायव्याम् ॥ ११२ ॥

सं०टी-अथ राशिविहितं दिग्बलमाह-ऐशानीतइति।ऐशानीत ईशानकोण।दारभ्य सितःशुक्रःकुजोभौमःशनिरवीप्रसिद्धौएषांखगानांराशयःक्रमेणबलिनःस्युःयथैशान्यां सितराशी वृषतुलौ प्राच्यांकुजराशीमेषवृश्चिकौ आग्नेय्यां शनिराशीमकरकुंभौ बलिनौ अवाच्यां रविराशिः सिंहोबलीतिभावः तथा इंदोश्चंद्रस्यराशेः कर्कस्य प्रतीची पश्चिमा बलवती तथैव गुरुग्रहयोर्धनमीनयोः क्रमेण रक्षउदग्दिशौ नैर्ऋत्युत्तरदिशौ बलवत्यौ यथा धनुषो नैर्ऋतिः मीनस्योदक् तु पुनः ज्ञो बुधस्तद्ग्रहयोर्मिथुनकन्याराश्योर्वायव्यादिग्बलवती एतासु दिक्षु एतासांराः

शीनां यथाक्रमोक्तानां बलमस्तीत्यर्थः। प्रयोजनं च एतद्राशिस्थपुरुषाः स्वस्वबलसहितदिक्षु स्थित्वायोद्धुं प्रवृत्ताश्चेत्तदा ज्ञेयः दिगीशवशेन स्वराशीशंसम्मुखं दक्षिणं वा कृत्वा यदिक्रीडार्थं गच्छेत्कुर्याद्वा तदा जयो निश्चितम् ॥ ११२ ॥

अर्थ-अब राशि दिग्बल देखनेकी रीति खेलनेवाले मनुष्योंने अपनी नामराशि जिस दिशामें होवे उस दिशामें बैठकर द्यूतादि खेले तो जय होवेगा वहां उसका दिग्बल जानना वह दिशा न मिले तो अपनी राशिका जो स्वामी है उसको सन्मुख या सीधी बाजू लेके द्यूत युद्धादिक करे तो जय होवे ॥ ११२ ॥

अथ भूबलचक्रम् ।

	पूर्व अस्वर अ क छ ड ध भ व क्ष आ	
उत्तर एस्वर घ ट थ फ र स ष ऐ	मध्यभाग ओस्वर च उ द ब ल ह ओ औ	दक्षिण इस्वर ख ज ढ न म श य श्री ई
	पश्चिम उस्वर ग झ त प य ष उ ऊ	

अथ राशिदिग्बलचक्रम् ।

ई शुक्र वृषतुला	पू मंगल मेषवृश्चिक	अ शनि मकर कुंभ
गुरु उ मीन	क्रीडाभूमि	सूर्य द सिंह
बुध मिथुनकन्या वा	चंद्र कर्क पश्चिम	धन गुरु नै

अथ तृतीयंभूबलम् ।

चैत्रादिगतमासाश्चनेत्रघ्नास्तिथयस्तथा ॥
युक्तावेदाप्तशेषेषुशून्यैंद्रेकेतुपश्चिमे ॥ ११३ ॥
द्वयेयाम्येत्रिभिः सौम्येभूबलंकथितंबुधैः ॥
एतेषुगजयुद्धेषुद्यूतमल्लाश्वकुक्कुटम् ॥ ११४ ॥

सं० टी० ॥ ११३ ॥ १६४ ॥

अर्थ-अब तीसरा प्रकार-खेलनेके दिन भूबल कौनसी दिशामें है सो देखना चैत्रादिकसे गत मासतक गिनती करना जो संख्या होवे उस संख्याको दुगनी करके उसमें शुक्ल प्रतिपदासे खेलनेकी तिथि पर्यंत जो संख्या होवे सो मिलायके चार ४ से भाग लेना शून्य०शेष रहे तो पूर्व दिशामें भूबल है, एक १ शेष रहै तो पश्चिममें दो २ शेष रहै तो दक्षिणमें

तीन ३ शेष रहैं तो उत्तरमें भूबल जानना यह भूबलोंमें हस्तिका युद्ध इषु कहते बाणयुद्ध, द्यूतक्रीडा, मल्लयुद्ध, अश्व कहते घोडोंका युद्ध, कुर्कटका युद्ध, पक्षीका युद्ध, करना करवाना ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

यत्रास्तिभूबलंतत्रस्थित्वायुद्धचजयोभवेत् ॥
लावकादिकपक्षिणांक्रमेणैवंवदेत्सुधीः ॥ ११५ ॥

अर्थ–जिस दिशामें भूबल होवे उस दिशाका आश्रय करके युद्ध करे तो जय होवेगा ॥ ११५ ॥ इतिभूबलम् ॥

अथ कालार्धप्रहरदोषमाह ।

द्वालांतकाभिसखियामदलैस्तुकालः ।
सूर्यादिवासरगतोयुधिवर्जनीयः ॥ ११६ ॥

अर्थ–सं०टीका–अथ रव्यादिवारेषुवर्ज्यान् कालार्धप्रहरानाह--सूर्यादिवाराः सूर्यादिदिनानि तद्गतो योहालांतकाभसखि अष्ट ८ त्रि ३ षडे ६ क १ चतुः४ सप्त७ द्वि २ संख्यैस्तद्वारयामार्द्धैर्लक्षितः कालः सयुद्धसमये वर्जनीयः॥११६॥

भाषा–क्रीडा करनेको जाना होवे उस समय और क्रीडाके आरंभके समय कालवारार्द्धका समय त्याग करना वह समय देखनेका चक्र स्पष्ट है ॥ ११६ ॥

अथ कालार्धप्रहरचक्रम् ।

८	रविवारके दिन	चौथे प्रहरकी	अंतिम घटि ४	अर्धप्रहर दोष होता है
३	सोमवारके दिन	दूसरे प्रहरकी	अंतिम घटि ४	अर्धप्रहर दोष होता है
६	मंगलवारके दिन	तीसरे प्रहरकी	पिछली घटि ४	अर्धप्रहर दाष होता है
१	बुधवारके दिन	प्रथम प्रहरकी	पहिली घटि ४	अर्धप्रहर दोष होता है
४	गुरुवारके दिन	दूसरे प्रहरकी	पिछली घटि ४	अर्धप्रहर दोष होता है
७	शुक्रवारके दिन	चौथे प्रहरकी	पहिली घटि ४	अर्धप्रहर दोष होता है
२	शनिवारके दिन	प्रथम प्रहरकी	पिछली घटि ४	अर्धप्रहर दोष होता है

अथ शनिकालदोषः ।

वारनाथमधिकृत्यपूर्वतोयत्रसौरिरुपयातितद्दिशि ॥
द्यूतकर्मणिजयेत्प्रतिष्ठितःकेसरीवकरियूथमग्रतः ॥११७॥

अर्थ–अब शनिकाल देखनेकी रीति–जिस दिन जो वार होवे वह वार पहिले पूर्व दिशामें बिठाना तो पहिला अर्धप्रहर वो वारका पूर्व दिशामें जानना दूसरा अग्निकोणमें, तीसरा दक्षिणमें, चौथा नैर्ऋतमें, पांचवां पश्चिममें, छठा वायुकोणमें, सातवां उत्तर दिशामें ऐसे सात वारके अर्धप्रहर बिठाना तब जहां शनिका अर्ध प्रहर आवे उस दिशामें शनिकाल जानना इस वास्ते जिस दिशामें शनिकाल होवे उस दिशाके सामने मुख करके द्यूतादिक खेले नहीं और वह शनिकाल दिशामें बैठकर खेले तो जय होवेगा जैसे हस्तिसमूह सिंह जीते. उदाहरण–चैत्रकृष्ण ८ भौमवार इष्ट घटि २ पलें १० को खेलनेका आरंभ किया है–तब भौमवारको ५ अर्ध प्रहर पश्चिममें है तो केशवदत्तको जयकारक है आगे चक्रमें स्पष्ट है ॥ ११७ ॥

अथ शनिकालज्ञानका स्पष्टचक्र ।

रविवारके दिन	उत्तर दिशामें	७	अर्ध प्रहरको	शनि काल होता है.
सोमवारके दिन	वायु कोणमें	६	अर्ध प्रहरको	शनि काल होता है.
भौमवारके दिन	पश्चिम दिशामें	५	अर्ध प्रहरको	शनि काल होता है.
बुधवारके दिन	नैर्ऋत्य कोणमें	४	अर्ध प्रहरको	शनि काल होता है.
गुरुवारके दिन	दक्षिण दिशामें	३	अर्ध प्रहरको	शनि काल होता है.
शुक्रवारके दिन	अग्नि कोणमें	२	अर्ध प्रहरको	शनि काल होता है.
शनिवारके दिन	पूर्व दिशामें	१	अर्ध प्रहरको	शनि काल होता है.

अथ कालहोराबलमाह ।

वारारंभाद्द्व्यःख २ घ्नामा ५ त्ताश्चवारपाद्धोरा ॥
रविसितबुधेंदुशनिगुरुभौमानामरिखगस्यसावर्ज्या ॥११८॥

अर्थ–अथ कालहोरामाह–वारारंभो वारप्रवृत्तिस्तस्या अनंतरायाघटिकाइष्टकाले ताद्विघ्नाःपंचभिरात्तक्रमेणतस्मिन्ग्रहनियोवाराधिपस्तमारभ्यहोराभवंति । ग्रहक्रमस्तु रविशुक्रबुधचंद्रशनिगुरुभौमाइति एतद्ग्रहसंबंधिन्यः क्रमाद्धोराभवंति इष्टकालभवासाचस्वशत्रुराशेर्यईशोग्रहस्तत्संबंधिनीचेत्तर्हि परित्याज्या ॥ ११८ ॥

भाषा–वारप्रवृत्तिसे लेके इष्टकालपर्यंत जो घटिका होवे उसको दुगनी करके पांचसे भाग लेना जो शेष रहे सो संख्यातुल्य वाराधिपसे गिनती करते रवि शुक्र बुध चंद्र शनि गुरु मंगल यह अनुक्रमसे कालहोरा जाननी

यह कालहोरा अपने शत्रुकी राशिका जो स्वामी उसकी जो होरा उसको कालहोरा कहते हैं उस कालहोरामें द्यूतादिक खेल नहीं खेले तो जय होनेका नहीं वारप्रवृत्तिसहित उदाहरण—रात्रिमानको अर्ध करके दिनमान घटिपल उसमें मिलाना पीछे उस घटिपलमें क्षेपकघटि १४ क्षेपकपल १५ मिलाना जो संख्या होवे उस घटि पल समयको वारप्रवृत्ति जानना. वैशाखशुद्ध पंचमी ५ शुक्रवारके दिन वारप्रवृत्तिसे इष्टघटि २५ पलानि १० समयमें केशवदत्तको द्यूतक्रीडा करनेकी है तब वादि जो दयादत्त उसकी होरा न आवे. उसका विचार दिनमान घटि ३२ प० १० रात्रिमान घटि २७ पल ५० अब रात्रिका अर्ध १३ । ५५ उसमें दिनमान मिलाया ४६ । ५ इसमें क्षेपकांक घटि १४ प० १५ मिलाये सो अंक भये घटि ६० प० २० यह घटिपल समयके वक्त वारप्रवृत्ति भई तब शुक्रवारके दिन सूर्यउदय भये बाद पल २० के समयमें वारप्रवृत्ति भई जानना. अब इष्टघटि २५ । १० है इनको दुगनेकिये सो अंक ५० ।२० भये. इसका पांचसे भाग लिया तो लब्ध १० शेष० । २० इस वास्ते इष्टकालके समय वारारंभसे ११ होरा शनिकी है. तब वादि जो दयादत्त है उसकी राशिका स्वामी तो गुरु है. गुरूकी होरा होवे तो केशवदत्तको कालहोरा होवे इस वास्ते यहां तो शनिहोरा है सो कालहोरा नहीं है तब शनिहोरा दोनोंको जययोग समान है कालहोर दोनोंको नहीं है ॥ ११८

अथ इष्टघटिपलऊपरसे स्पष्ट होराज्ञानचक्र.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	दि.रा होरा संख्या
२ ३०	५ ०	७ ३०	१० ०	१२ ३०	१५ ०	१७ ३०	२० ०	२२ ३०	२५ ०	२७ ३०	३० ०	३२ ३०	३५ ०	३७ ३०	४० ०	४२ ३०	४५ ०	४७ ३०	५० ०	५२ ३०	५५ ०	५७ ३०	६० ०	इष्टघ-टिप०

र.	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	र.हो.
चं.	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	सो.हो
मं.	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	भौ.हो
बु.	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	बु.हो
गु.	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	गु.हो.
शु.	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	शु.हो
श.	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	श.हो.

अथ नग्नकालबलमाह ।

रवौगुरौचआग्नेयांसोमेशुक्रेचनैर्ऋते ॥
शनावंगारकेवायौबुधस्त्वीशानकोणके ॥ ११९ ॥

अर्थ–रविवार गुरुवारके दिन अग्निकोणमें, सोमवार शुक्रवारको नैर्ऋत्यमें, शनि मंगलके दिन वायुकोणमें, बुधवारके दिन ईशान्यकोणमें नग्नकाल रहता है ॥ ११९ ॥

सम्मुखेनग्नकालस्यहन्यतेचनसंशयः ॥
तथैववारशूलेपिसम्मुखेचपराजयः ॥ १२० ॥

अर्थ–वो नग्नकालको सन्मुख लिये तो पराजय होवेगा. डावीतरफ या पीठऊपर लिये तो जय होवेगा वैसाही वार शूलका फल जानना. वारशूल शनि सोमके दिन पूर्वमें, गुरुवारको दक्षिणमें, रवि शुक्रको पश्चिममें, भौम बुधके दिन उत्तरमें रहता है सन्मुख वर्ज है ॥ १२० ॥

अथ लग्नग्रहयोगबलमाह ।

पंचांगशुद्धिरहितेदिवसेपिफलप्रदा ॥
यात्रायोगैर्विचित्रांस्तान्योगान्वक्ष्येऽधुनाततः ॥ १२१ ॥
निंद्यतिथ्यृक्षवारेषुपातवैधृतिविष्टिषु ॥
गृहयोगंप्रशंसंतिवशिष्ठात्रिपराशराः ॥ १२२ ॥

अर्थ-अथ लग्नग्रहयोगबलमाह-पंचांगेतिद्वाभ्याम् योगप्रशंसा स्पष्टोर्थः ॥ ॥ १२१ ॥ १२२ ॥

भाषा-पूर्वोक्त स्वर छाया योगिनी राहु भूबलादिक दिनशुद्धि न होवे तो केवल योगयात्रा लग्नबल लेके क्रीडा करे तो जय होवेगा वे योगयात्रा योग कहताहूं ॥ १२१ ॥ १२२ ॥

योगयात्रालग्नमाह ।

सहजेरविर्दशमभेशशीतथाशनिमंगलौरिपुगृहेसितःसुते ॥
हिबुकेबुधोगुरुरपीहलग्नगःसजयत्यरीन्प्रचलितोऽचिरान्नृपः १२३

अर्थ-सहजेरविरिति । रविःसहजे तृतीयेस्यात् शशीचंद्रो दशमभे दशमस्थाने शनिमंगलौ रिपुगृहे षष्ठस्थाने स्यातां सितः शुक्रः सुते पंचमे बुधो हिबुके चतुर्थे गुरुरपि लग्नगश्चेत्स्यादेवंविधे योगे राजा प्रचलितः अचिरात्स्वल्पकाले नैवारीन्जयति ॥ १२३ ॥

अब आगे पांच श्लोकसें पांच योगयात्राके लग्नबलसे कहे हैं सो कुंडली देखनेसे स्पष्टहै ॥ १२३ ॥

भ्रातरिसौरिर्भूमिसुतोवैरिणिलग्नेदेवगुरुः ॥
आयगतेर्केशत्रुजयश्चेदनुकूलोदैत्यगुरुः ॥ १२४ ॥

सं०टीका-अथयोगांतरंगाथयाह-भ्रातरितृतीये शनिः वैरिणि षष्ठे भूमिसुतो मंगलः अर्केआयगते एकादशे एवंविधेयोगे राजा शत्रुंजयोभवेत् चेद्दैत्यगुरुः शुक्रोऽनुकूलः यातव्यदिक्पृष्ठवर्ती भवति ॥ १२४ ॥

तनौजीवइंदुर्मृतौवैरिगोर्कःप्रयातोमहींद्रोजयत्येवशत्रून् ॥२५॥

अथयोगांतरंगाथयाह । तनौलग्नेजीवः मृतौअष्टमेइंदुः वैरिगःषष्ठगोऽर्कः एतादृशे योगे प्रयातः नृपः शत्रून् जयत्येव ॥ १२५ ॥

लग्नगतःस्याद्देवपुरोधालाभधनस्थैः शेषनभोगैः ॥ २६ ॥

अन्यंयोगंपंक्त्याह-लग्नगतःस्यात् लग्नेगुरुःस्यात् अन्येग्रहाः लाभधनस्थाः एकादशद्वितीयस्थाश्चेदेवंविधेयोगेराज्ञोविजयः ॥ १२६ ॥

द्यूनेचंद्रेसमुदयगेर्केजीवेशुक्रेविदिधनसंस्थे ॥

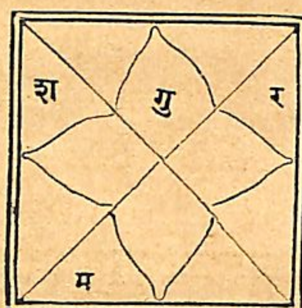
ईदृग्योगेचलतिनदेशोजेताशत्रून्गरुडइवाहीन् ॥ १२७ ॥
इतिक्रीडायांमुहूर्तविचारः ॥

अन्यंयोगंमत्तयाह-द्यूनेइति-चंद्रेसत्तमस्थेसति अर्केसमुदयगेलग्नगेसति जीवेशुक्रे विदिबुधे एतेषुत्रिषुधनसंस्थेषुसत्सुएवंविधेयोगेनरेशश्चेचलतितदाशत्रून्जेता जेष्यति कः कानिव गरुडोऽहीन् यथा जयति ॥ १२७ ॥

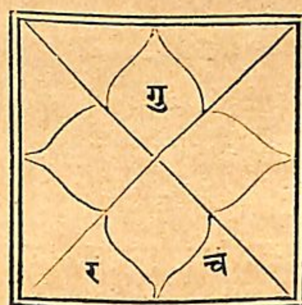
प्रथमयोगः



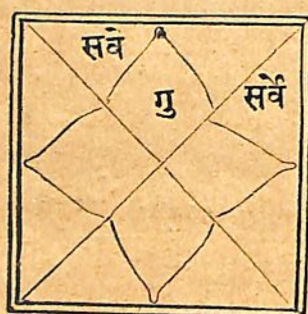
द्वितीययोगः



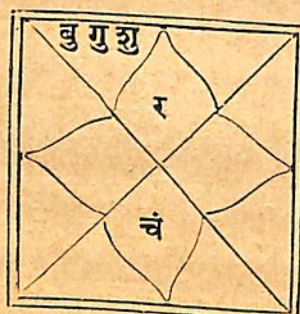
तृतीययोगः



चतुर्थयोगः



पंचमयोगः



अथ क्रीडायां जयपराजयज्ञानप्रश्ने ;

जयोत्तरेऽधरेऽन्यंवैसमतामिश्रितेभवेत् ॥ १२८ ॥

अर्थ–अथप्रश्नविचारः–प्रश्नकरते समय पृच्छकके मुखसे जितने अक्षर निकसें वे पंक्तिमें लिखना बाद उस पंक्तिमें देखना कि उत्तराक्षर बहुत होवें तो जय होवेगा, अधराक्षर बहुत होवें तो पराजय होवेगा और दोनों अक्षर समान संख्या होवें तो खेलनेमें दोनों समान रहेंगे. कोई गुजरातीने प्रश्न किया सो प्रश्नाक्षर (आ द्यूतक्रीडामा हमे जीतिशू ते प्रश्न जूवो) ऐसे यह प्रश्नाक्षर १६ हैं इसमेंसे स्वर व्यंजन जुदे निकालना

सो भये (आ[2] द्[1] य्[1] ऊ[3] त्[1] अ[1] क्[1] र[3] ई[2] ह्[2] आ[2] म्[3] आ[2] ह[2] अ[1] म्[3] ए[1] ज्[1] ई[2] त्[1] इ[1] झ्[1] उ[3] त्[1] ए[1] प्[1] र[2] अ[1] श्[1] न्[3] अ[1] ज्[1] ऊ[3] व्[2] ओ[1]) यह सब स्वर व्यंजन संख्या ३५ भई इसमें उत्तराधर कोष्टकोक्त प्रमाणसे देखै तो उत्तर स्वर व्यंजन संख्या २० है, अधर स्वर व्यंजन संख्या ९ है, उत्तराधर मिश्रस्वर व्यंजन संख्या ६ है, तब प्रश्नाक्षर पंक्तिमें उत्तराक्षर संख्या अधिक है इस वास्ते प्रश्न करनेवाला जीतेगा ॥ १२८

अथ उत्तराधरमिश्रवर्णचक्रम् ।

उत्तर स्वर व्यंजन को० १	अधर स्वर व्यंजन को० २	उत्तराधरस्वरव्यंजन० ३
अ इ ए ओ क ग च ज ट ड त द प ब य ल श स	आ ई ऐ औ ख घ छ झ ठ ढ थ ध फ भ र व ष ह	उ ऊ अं अः ङ ञ ण न म

अथ क्रीडाया जयपराजयज्ञाने हयग्रीवप्रश्नशकुनावली प्रारभ्यते ।

द्यूतेभवाञ्छेतुमिहेहसेधनंकुरुत्वदीयोविजयोभविष्यति ।
द्यूतंप्रयत्नेननसंशयोत्रभोःकृत्वापुरस्ताच्छशिनंद्विजाधिपम् १२९

अब द्यूतादिक क्रीडामें जय होवेगा या पराजय यह देखनेके वास्ते हयग्रीवप्रश्नचक्रके देखनेकी रीति कहते हैं. हयग्रीव प्रश्नचक्र जो तीन हैं. उनमेंसे कोईएक चक्रके कोष्टकोंमेंके अक्षरके ऊपर सुपारी दक्षिणा रखना पीछे उस हरफके आकडेकी संख्या मूजब वह चक्र ऊपरसे नवीन श्लोक बनायके जयपराजयका फल कहना अथवा श्लोक तैयार आगे लिखे हैं उसके ऊपरसे फल कहना अब चक्रमें १ । २ । ३ । इन अंकोंकी पंक्तिके अक्षरोंके ऊपर सुपारीरक्खा होवै तो पहिले श्लोकका फल कहना ४ । ५ । ६ इन अंकोंकी पंक्तिके अक्षरोंके ऊपर सुपारीरक्खे तो दूसरे श्लोकका फल कहना ७ ८ । ९ इन अंकोंकी पंक्तिके ऊपर सुपारी रक्खे तो तीसरे श्लोकका फल कहना १० । ११ ।१२ । इनं अंकोंकी पंक्तिके ऊपर सुपारी रक्खे तो चौथे श्लोकका फल कहना १३ । १४। १५ इन अंकोंकी पंक्तिके ऊपर सुपारी रक्खे तो पांचवे श्लोकका फल कहना १६ । १७ । १८ । इन अंकोंकी पंक्तिके ऊपर सुपारी रक्खे तो छट्ठे श्लोकका फल कहना १९ । २० । २१ । अंकोंकी पंक्तिके ऊपर सुपारी रक्खे तो सातवें श्लोकका फल कहना २२ । २३। २४ इन अंकोंकी पंक्तिके ऊपर सुपारी रक्खे तो आठवें श्लोकका फल कहना इति विधिः ॥ अथ शकुनावलीका अर्थ–हे पुरुष खेलनेमें जीतनेकी इच्छा करता है तो खेल, तेरा जय होवेगा इसमें संशय नहीं है चंद्रको सामनें लेके बैठ इति प्रथम श्लोकः ॥ १२९ ॥

अथ द्यूतादिक्रीडायां जयपराजयज्ञाने हयग्रीवप्रश्नचक्राणि.

प्रथम चक्र.

०	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२
१	द्यू	मा	वा	द्यू	कृ	मा	कृ	प्रा
२	वा	तं	दी	प	पृ	मा	ला	ते
३	मि	रु	दि	क	म	ज	ल	त
४	से	वै	नी	पृ	दि	को	कौं	वि
५	कु	द्यू	सु	द्यू	पा	स	यं	प
६	दी	जं	खे	लं	रे	ह	जे	म
७	ज	वि	नी	च	ज	लि	ण	हु
८	वि	सा	मा	ना	यं	र	य	वि
९	द्यू	क	नी	स	हुं	ए	धृ	कृ
१०	य	से	र	तं	मु	दी	दा	चा
११	न	व	र	क	च	व	सि	पु
१२	यो	से	दा	ये	तां	तं	को	मा
१३	कृ	च्चि	ज्ज	ला	जैं	स	स	वि
१४	र	टं	दा	चे	ख	रि	य	प
१५	शि	क	ग	रु	पी	न	वि	व
१६	जा	वि	वे	नो	को	यो	सं	भं

द्वितीय चक्र.

२	५	८	११	१४	१७	२०	२३
ते	स्वां	मे	तं	त्वा	दि	त्वा	प्सि
ज्ञे	त्वं	ये	र्थं	ष्ठे	दि	टे	स्व
हे	कै	यो	रो	रा	ना	कं	रा
ध	स्स	ग	च्छ	ड्भु	वि	कु	ष्प
रु	तं	सं	ता	दा	धैं	त्रं	रि
यो	द्र	ते	ना	स्था	त्वं	द	स्ते
यो	ना	चं	ना	य	तैः	के	लो
ष्प	ध	भ	स्ति	त्र	स्प	प्र	ष्पं
तं	गि	लां	वैं	का	ते	त्वा	त्वा
त्ने	चे	स्य	तो	च्चा	यं	दि	रं
सं	मा	णं	ल	दी	न	चा	रा
त्र	ह	भ	य	पु	ध	वि	न
त्वा	ता	य	भो	ता	वें	मं	धे
स्ता	दुः	ह	त्कः	र्वा	ष्यं	स्ते	श्रा
न	रा	तो	ते	त	सं	ता	य
धि	ष्प	त्त	हि	वि	त्र	श	भ

तृतीय चक्र ।

३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४
भ	प्र	त्व	कि	स्व	व्य	ल	स्तु
तु	कु	य	प्र	य	व्य	ति	ल्प
ह	त	गि	षि	ज	क्ष	हि	भ
नं	ह	णः	क	खं	दैः	मं	ति
त्व	नि	मु	त्फ	ध	स्त	भु	श्र
वि	व्य	य	स्ति	प्य	मि	क्षि	व
भ	श	द्र	स्ति	स्य	प	ज	भ
ति	नं	वत्	ते	कं	रं	दं	ति
प्र	ष्प	ब	य	र	त्व	य	वि
न	त्त	स्म	धि	र्यं	भ	व्य	च
श	न	य	ब्ध	व्य	स्थि	क्ष	स्व
भोः	ढा	वे	तो	न	नं	दैः	से
पु	स्फु	स्त	न	सि	ह	ज	हि
त्छ	ख	स्त	कु	न	ति	भ	त्त
हि	भ	भ	ज	त्र	श	न	च्छु
पं१	ति२	व ३	तं४	दान् ५	भो६	यः ७	वेत८

मासांप्रतंत्वंकुरुकैतवैस्सहद्यूतंनिजद्रव्यविनाशसाधनम् ।
करिष्यसेचेत्तवमानसेदृढांचितास्फुटंदुःखकराभविष्यति ॥१३० ॥

हे पुरुष! इस समय इन कपटी लोकोंके साथ खेले मत धनका नाश होवेगा इतनेपरभी जो खेलेगा तो बडी चिंता दुःखकारक होवेगी इति ॥ १३० ॥

वामेत्वदीयेयदियोगिनीगणःसुखंमुखेतेयदिचंद्रमाभवेत् ।
नीलांबरस्यस्मरणंयदाभवेज्जयस्तदाहस्तगतोभवेत्तव ॥ १३१ ॥

हे पुरुष ! डावी तरफ योगिनीका घर सामने चंद्रका घर जो होवे और बलरामका स्मरण जो किये तो जय हाथमें आवेगा इति ॥ १३१ ॥

द्यूतंकिमर्थंप्रकरोषिपृच्छकद्यूतात्फलंनास्तिचनास्तिनास्तिते ॥
सर्वेयतंतोऽधिकलब्धयेयतोलाभोनचेत्कःकुरुतेजनोहितम् १३२

अर्थ-हे पुरुष ! द्यूतक्रीडा काहेके वास्ते करता है इसमें फायदा नहीं है यह सबलोग हमको ज्यादा मिले ऐसी महेनत करते हैं इसवास्ते दूसरेका हित कौन करता है इति ॥ १३२ ॥

कृत्वास्वपृष्ठेयमराजदिङ्मुखंपादाधरेस्थाप्यजयस्ययंत्रकम् ॥
हुंकारमुच्चार्यचदीव्यतांपुनर्जेतासिसर्वानपितत्रकोविदान् ॥ १३३॥

अर्थ-हे पुरुष! काल राहुका मुख पीछाड़ी करके पांवके नीचे जययंत्रको दबायके हम खेलते हैं ऐसा अहंकारसे बड़ा शब्द करके खेलनेके बैठे तो बड़े बड़े खिलाड़ी लोगोंकोभी जीतेगा इति ॥ १३३ ॥

मादिव्यमादिव्यजनाक्षकोविदैःसर्वैस्सहत्वंमिलितैःपरस्परम् ॥
एतेत्वदीयंभवनस्थितंधनंसर्वंहरिष्यंतिनसंशयोऽत्रभोः ॥ १३४ ॥

अर्थ-हे पुरुष! तू खेले मत खेले मत खेले मत यह सब खेलनेवाले मिलके तेरे घरका सब धन लूट लेवेंगे इसमें संशय नहीं है इति ॥ १३४ ॥

कृत्वाललाटेतिलकंहिकौंकुमंयंत्रंभुजेदक्षिणकेजयप्रदम् ॥
धृत्वायदादीव्यसिचाक्षकोविदैःसमंजयस्तेभवितानसंशयः१३५

अर्थ-हे पुरुष ! ललाटमें मोहनकारक केसरका तिलक करके दक्षिण भुजाको जययंत्र बांधके खिलाड़ी लोगोंके साथ खेलेगा तो तू जीतेगा इसमें संशय नहीं है इति ॥ १३५ ॥

प्राप्तिस्तुतेस्वल्पतराभविष्यतिपरिश्रमस्तेबहुलोभविष्यति ॥
कृत्वाविचारंचपुरास्वमानसेविधेहिपश्चात्तवयच्छुभंभवेत् ॥१३६॥

इति प्रश्नविचारः ॥

अर्थ–हे पुरुष ! इस खेलनेमें तुमको लाभ थोड़ा और मिहनत बहुत है इस वास्ते पहिले अपने दिलमें विचार करके पीछे जिसमें अच्छा होवे वह कर इति ॥ १३६॥ इति क्रीडामें जय पराजय देखनेकी शकुनावली समाप्त भई ।

अथ क्रीडायां जयप्राप्तये मंत्रादिप्रयोगः ।

कृतांजलिःसप्तभागावंध्याकर्कोटिकात्रिभा ॥
दशभागारुद्रजटानवभागाविभीतका ॥ १३७ ॥
एतैरेकत्रसंपिष्टैस्तेनलिप्तकरोनरः ॥
द्यूतेविजयमाप्नोतिपरार्थहरणक्षमः ॥ १३८ ॥

अर्थ–अब क्रीडामें जीतनेके वास्ते लेपका प्रयोग कहते हैं–कृतांजलि हातजोड सात भाग वंध्याकर्कोटिका वांझकर्टोली तीन भाग रुद्रजटा ईश्वरी दशभाग बिभीतक बेहडे नव भाग ये चार औषध एकत्र पीसके हाथमें लेप करके खेलेगा तो द्यूतमें जय होवेगा ॥ १३७ ॥ १३८ ॥

मार्गशीर्षस्यपूर्णायांशिखिमूलंसमुद्धरेत् ॥
बाहौशिरसिवाधार्यक्रीडायांविजयोभवेत् ॥ १३९ ॥

अर्थ–मार्गशीर्ष शुद्ध पूनमके दिन मयूरशिखाका मूल लेके रखना पीछे खेलते समय शिरके ऊपर, बाहुमें बांधे तो क्रीडामें जय होवेगा ॥ १३९ ॥

गृहीत्वापुष्यनक्षत्रेश्वेतगुंजासुमूलकम् ॥
धारयेद्दक्षिणहस्तेद्यूतकार्येजयोभवेत् ॥ १४० ॥

अर्थ–तीसरा प्रयोग–पुष्यनक्षत्रके दिन सुपेद गुंजाका मूल लेके रखना बाद खेलते समय दक्षिणहस्तको बांधे तो जय होवेगा ॥ १४० ॥

धत्तूरंकरवीरंचअपामार्गस्यमूलकम् ॥
हरितालसमायुक्तंतिलकंसुदिनेकृतम् ॥ १४१ ॥
अजाक्षीरेणसंपेष्यरणेराजकुलेजयः ।
विवादेद्यूतकार्येचनान्यथाशंकरोदितम् ॥ १४२ ॥

अर्थ–चौथा प्रयोग–धत्तूरका मूल कन्हेरका मूल अघाडेका मूल हरताल इन चार पदार्थोंको बकरीके दूधमें घिसके जिस दिन अपनेको घातिक न होवे चंद्रताराबलादिक पूर्वोक्त योग अनुकूल होवे उसदिन उस चंदनका

तिलक करना तो विवादमें, राजसभामें, द्यूत खेलनेमें जय होवेगा शिवका वचन सत्य है ॥ १४२ ॥

मंत्रॐनमोविश्वरूपायअमुकेनविजयंकुरुस्वाहा—
औषधिःसिंहिकानामतयाघृष्टोमहारसः ।
सिंहीकपर्दिकामध्येक्षेप्यतन्मूलसंयुते ॥ १४३ ॥
विधायतदनंतस्यासिक्तेनचसमंततः ।
तस्यांवक्रस्थितायांतुसिंहवज्जायतेनरः ॥ १४४ ॥
रणेराजकुलेद्यूतेविवादेजयमाप्नुयात् ॥ १४५ ॥

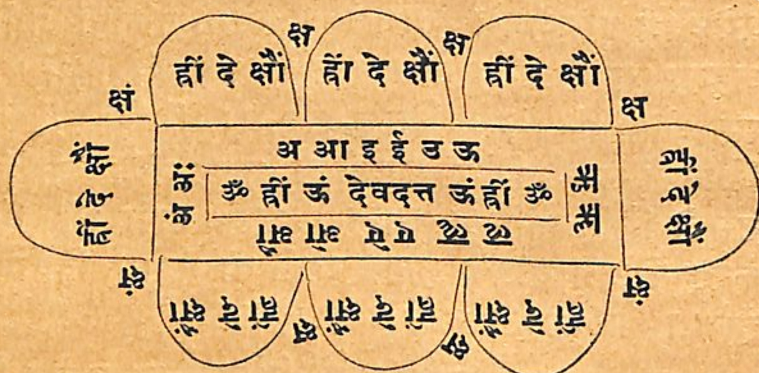
अर्थ—इस मंत्रका ग्रहणके पर्वकालमें दशहजार जप करना पीछे सब प्रयोगोंमें इस मंत्रसे अभिमंत्रण करना पांचवां प्रयोग—सिंहिका नाम करके अडूसा या मोतारिंगणीका नाम है उस औषधिमें पारा मर्दन करना बाद उस औषधिके मूलसहित वह पारा सिंहिकपर्दिकामें भरना (सिंहिकपर्दिकाका लक्षण जिस कवडीका ऊपर नीचे चारों तरफसे रंग पीला होवे उसको सिंहिकपर्दिका कहना) उसके ऊपर भी सिंहीऔषधका रस सेचन करके पोटली बांधके मुखमें रक्खे तो संग्राम, विवाद, द्यूत, राजसभामें जय होवेगा ॥ १४३ । १४४ । १४५ ॥

अथातःसंप्रवक्ष्यामियंत्रंद्यूतजयावहम् ।
सर्वद्यूतेजयःप्रोक्तोयंत्रराजस्यधारणात् ॥ १४६ ॥
एणपत्रेतुसंलिख्यलेखिन्याकाकपिच्छया ।
कज्जलस्यमषिंकृत्वालिखेद्गात्रोशुचिस्मिते ॥ १४७ ॥
तिर्यगूर्ध्वास्तुसंलेख्यानवरेखास्तुविस्तृताः ।
एवंसंजायतेकोष्ठाश्चतुःषष्टिवरानने ॥ १४८ ॥
मध्येबीजानिलेख्यान्यनुलोमप्रातिलोमतः ।
तान्येवतुपुनर्लेख्यमेतदेवक्रमेणतु ॥ १४९ ॥
मेखैरक्तंदयेरूपाकाजिजतंदनीचिनः ।
छदावींयमंत्रतेषहेष्टिवामोक्षिणपात्रम् ॥ १५० ॥
एतान्येवसुबीजानिद्वात्रिंशद्विलिखेत्क्रमात् ।
दामोदरकवीन्द्रेणचित्रोवाजिक्रमःकृतः ॥१५१॥

१ यह यंत्र धारण करना जय होवे.

मे	ख	र	क्तं	द	ये	रु	पा
क	जि	ज़	तं	द	नी	चि	नः
छ	दा	वीं	य	मं	त्र	ते	ष
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्र	मं	य	वीं	दा	छ
न	चि	नी	द	तं	ज	जि	क
पा	रु	ये	द	क्तं	र	खै	मे

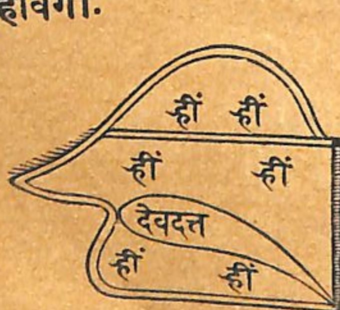
२ इस यंत्रको कुंकुम गोरोचन कस्तूरीसे कृष्णपक्षकी ८। १४ तिथिके दिन भोजपत्रके ऊपर लिखाना बीचमें खेलनेवालेका नाम लिखना बाद यह यंत्र तावितमें डालके पूजा करके भुजामें बांधे तो क्रीडामें जय पावेगा.



३ यह यंत्र गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर लिखके भुजाके ऊपर या कंठमें बांधे तो द्यूतमें जय होवेगा.

४ यह यंत्र गोरोचनसे भोजपत्रकेऊपर लिखके शिखामें रक्खे तो द्यूतमें जय होवेगी.

५ यह यंत्र शिलाके ऊपर हरतालसे लिखके औंधा रक्खे और यंत्रमें जिसका नाम लिखा होवे उसकी द्यूतमें जय होवेगी.





ओं अजितेअपराजिते देवदत्तस्य जयो भवओं.

॥ १४६ । १४७ । १४८ । १४९ । १५० । १५१ ॥

अथ जयसाधनान्यौषधानि ।

आस्येतालजटाथकेतकिदलंशीर्षेथखार्जूरके
मूलेंकस्थइषुर्लगेन्नसघृतैर्भुक्तैरजीर्णैश्चतैः ॥
कंसार्य्युत्तरमूलिकानिरशनैःपुष्यार्कआत्ताधृता
जग्धावासहतंडुलांबुभिरथोपाठाज्जटापीदृशी ॥ १५२ ॥
अंकोलोलक्ष्मणापुंखासर्पाक्षीशिखिचूलिका ॥
विष्णुक्रांताकाकजंघानीलीदेवीचपाटला ॥ १५३ ॥
भुजास्यमूर्द्धगाभुक्तातज्जटैकाधिवारयेत् ॥
रणेदारुणशस्त्रौघंयावज्जीर्यतिनोदरे ॥ १५४ ॥
चक्रमर्दकगोजिह्वाशिखिचूडाजटास्वपी ॥
एकैकाद्यूतजयदापुष्यार्कात्ताऽस्यमूर्द्धगा ॥ १५५ ॥

इति श्रीबृह० मिश्रस्कंधे क्रीडाकौशल्याध्यायेमुहूर्त्तप्रश्नमंत्र
यंत्रादिसाधननिरूपणंनामप्रकरणंद्वितीयम् ॥ २ ॥

सं०टीका-अथ भक्ष्यधारणादिनाजयसाधनान्यौषधान्याह–आस्येमुखे तालजटा तालवृक्षमूलं धृतं शतघातजग्धावा सहतंडुलांबु शतघातवारणमित्यग्रेण संबंधः क्रीडायांशरघातस्थलेपदातिघातोविज्ञेयः अथौषधांतरम् केतकीदलं केतकीपत्रं शीर्षेमूर्ध्निधृतं तद्वत्फलं अथान्यत्खार्जूरकेबृहत्खर्जूरसंबंधिमूलर कस्थेक्रोडनिहिते इषुःशरोनलगेत् सघृतैः घृतसहितैः भुक्तैरजीर्णैश्चभुक्तमात्रैस्तैः प्रागुक्तैः तालमूलकेतकपत्रखार्जूरमूलैः साद्भिर्युद्धे आरब्धेशरः नलगेत् कंसारिहिंसेति प्रसिद्धालता तस्या उत्तरादिक्स्थामूलिका निरशनैः शनावुपोष्य पुष्यार्कयोगे आत्तागृहीताधृता शरीरेसहतण्डुलांबुभिर्जग्धा खादिताच शरीरे शरवारणाय स्यात् अथ पाठा प्रसिद्धा तन्मूलमपिशरवारणाय स्यात् ॥१५२॥ अंकोलःप्रसिद्धःलक्ष्मणापुरुषाकारमूलौषधिविशेषः पुंखाशरपुंखा सर्पाक्षीसर्पनेत्राकृतिःपुष्पाशिखिचूलिकामयूरशिखाविष्णुक्रांतानीलपुष्पा प्रसिद्धा काकजंघा तदाकारानीलीप्रसिद्धा देवी सहदेवी पाटलाप्रसिद्धैवतज्जटातासा मौधीनांमूलानितन्मध्ये एकापिजटाभुजेबाहौमूर्ध्निशिरसिधृता आस्येमुखेधृता खादितावारणेसंग्रामेदारुणंशस्त्रौघंतीक्ष्णशस्त्रसमूहंवारयेत् कियत्कालमित्यपेक्षि यावदिति यावत्पर्यंतमुदरेनजीर्यतिभुक्तपक्षेचैतत् धारणपक्षेतुयावद्धारणंजयः ॥

॥ १५३ ॥ १५४ ॥ चक्रमर्दकःचकौडइतिभाषायांप्रसिद्धःगोजिह्वा गोभीप्रसिद्धाशिखिचूडामयूरशिखा एतासुमध्येएकैकाजटापुष्यार्कयोगेगृहीता आस्यगामूर्द्धगावाद्यूतजयदा ॥ १५५ ॥

भाषा-खेलते समय मुखमें तालवृक्षका मूल१, केवडेका पत्र२, बडीखजूरका मूल ३, पाठा ४ या अंकोलमूल ५, लक्ष्मणामूल ६, शरपुंखामूल ७, सर्पाक्षिमूल ८, मयूरशिखामूल ९, विष्णुक्रांतामूल १०, नीलीमूल ११, सहदेवीमूल १२, पाटलामूल १३, चकौडमूल १४, गोभीमूल १५, ये पंद्रह मूलमेंसे कोई एकभी मूल सविधिसे पुष्यार्कयोगमें लेके मुखमें रक्खेगा यदि भुजामें बांधेगा यदि शिरपर रक्खेगा तो जय होवेगी, विधिविना मूल रक्खे तो कुछ होनेका नहीं ॥ इति चार श्लोकका सारांश कहा ॥१५२॥१५३॥१५४॥१५५॥

इतिक्रीडाध्यायमें मुहूर्तका विचार प्रश्नका विचार मंत्र यंत्र साधनका विचार संपूर्ण भया प्रकरण ॥ २ ॥

अथ त्रिविधंद्यूतनामकंपाशकक्रीडनम् ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिपाशक्रीडनलक्षणम् ॥
षडंगुलप्रमाणेनचतुरस्रंसुशोभनम् ॥ १५६ ॥

अब फांसेसे चौपट खेलनेका निर्णय उसमें चौपट कैसा करना चाहिये सो लक्षण कहता हूं- छः अंगुलप्रमाणसे चतुरस्र सुंदर कपडेका बनायके ॥१५६॥

मध्यभागेप्रकुर्वीतचतुर्दिक्षुततःपरम् ॥
अंगुलद्वयमानेनजिनकोष्ठकसंयुतम् ॥ १५७ ॥

उसके चार दिशामें दो अंगुलका एक कोष्ठक ऐसे चौवीस कोष्ठकका एक पट्ट ॥ १५७ ॥

चतुःपट्टंप्रकुर्वीतहंसपादैस्समन्वितम् ॥
षण्णवत्यत्रकोष्ठानिहंसपादाश्चषोडश ॥ १५८ ॥

ऐसे चार पट्ट उस चतुरस्रमें जोडे पीछे उन चारपट्टोंके ऊपर हंसपाद चार चार करै हंसपादको चिलेका घर कहते हैं ऐसे कोष्ठक छान्नवें चीले हंसपाद सोलह करै ॥ १५८ ॥

कार्यंवस्त्रमयंपट्टंपाशकादंतसंभवाः ॥
अथवारत्नखचिताःस्वर्णरौप्यादिनिर्मिताः ॥ १५९ ॥

और फांसे हाथीदांतके अथवा रत्न हीरे मानिकजडेहुये सुवर्णके अथवा रूपेके अथवा आदिशब्द करके तांबा या पीतल उसके करै ॥ १५९ ॥

पाशकत्रयक्रीडायांवक्ष्येपाशकलक्षणम् ॥
चतुरंगुलदीर्घंचस्थूलमंगुलसंमितम् ॥ १६० ॥

अब फांसेकी क्रीडा दो प्रकारकी है उसमें तीन फांसेकी क्रीडामें जो फांसे रहतेहैं उन फांसोंका लक्षण कहता हूं– फांसा लंबा चार अंगुल और जाडा (मोटा) एक अंगुल चतुरस्र करै ॥ १६० ॥

तस्यपार्श्वेचतुष्केतुचिह्नंवैकारयेच्छुभम् ॥
ऊर्ध्वभागेचषट्चिह्नंतदधःशून्यमेककम् ॥ १६१ ॥

उसके ऊपरकी तरफ छः चिन्ह कबूतरके नेत्र सरीखे करै नीचे एक चिन्ह करै ॥ १६१ ॥

सव्यपार्श्वेपंचचिह्नंवामेचिह्नद्वयंतथा ॥
पाशकद्वयक्रीडायांविशेषंप्रवदाम्यहम् ॥१६२॥

सीधी तरफ पांच, डावीं तरफ दो चिन्ह करना, अब दो फांसेकी क्रीडामें जो फांसा रहता है उसका लक्षण कहते हैं ॥ १६२ ॥

कनिष्ठिकापर्वमात्रंदीर्घविस्तारमादिशेत् ॥
ऊर्ध्वाधोपूर्ववच्चिह्नंवेदचिह्नंतुदक्षिणे ॥ १६३ ॥
वामेशून्यत्रयंकुर्यात्पाशकद्वयलक्षणम् ॥
द्वाभ्यांचक्रीडनंप्रोक्तंतदंतःपातिनोऽपरे ॥१६४॥

वह फांसा कनिष्ठांगुलीका जो पर्व है उसके सरीखा दीर्घ विस्तार चतुरस्र करै उसके ऊपरकी तरफ छः नीचे एक, सीधी तरफ चार, डावीं तरफ तीन ऐसे चिन्ह करै यह दो प्रकारकी क्रीड़ा दो आदमियोंसे होती है ज्यादा खेलनेको बैठे तो उन दोनोंके पेटेमें बिद्ध होके खेलै जूदे खेलै नहीं ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

प्रत्येकंचपदातीनामष्टकंपरिकीर्तितम् ॥
स्वाग्रपट्टेचतुष्कंचचतुष्कंसव्यपट्टके ॥ १६५ ॥

दोनोंको नरदां आठ आठ आती हैं उनमें चार नरदां अपने सामनेके पटके ऊपर रक्खे और चार नरदां सीधे हाथके पट्टके ऊपर रक्खै ॥ १६५ ॥

तीन फांसेकी क्रीडामें फांसेका चिन्ह

फासेका ऊपरका भाग



फांसेका डावां भाग



फांसेका नीचेका भाग



फांसेका सीधा भाग



दोफांसे की क्रीडामें फांसेका चिन्ह

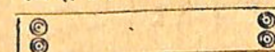
फांसेका ऊपरका भाग



फांसेका डावा भाग



फांसेका नीचेका भाग



फांसेका सीधा भाग



पक्ववर्णोसव्यभागेस्वाग्रेऽपक्वःप्रकीर्तितः ॥
पक्ववर्णौरक्तकृष्णौहरित्पीताऽवपक्वकौ ॥ १६६ ॥

पक्का रंग सीधी तरफ और कच्चा रंग अपने पटपर रक्खे लाल और काली नरदोंको पक्का रंगकहते हैं हरी और पीली नरदोंको कच्चा रंग कहते हैं॥ १६६॥

बाजीचत्रिविधाज्ञेयाखेलनेपूर्वसंमता ॥
अष्टबंदिवर्णबंदिबंदिद्वयविवर्जिता ॥ १६७ ॥

इस खेलमें बाजी तीन तरहकी हैं एक अट्ठाबंदि दूसरी रंगबंदि तीसरी खुली ऐसी है. अब अट्ठाबंदि बाजीका लक्षण कहते हैं– अट्ठाबंदि बाजीमें पेटघरमें नरद मरती नहीं है अब रंगबंदि बाजीका लक्षण कहते हैं– रंगबंदि बाजीमें पक्के रंगकी पक्के रंगसे नरदकी तोड़ होवे कच्चे रंगसे नहीं और कच्चे रंगसे भी मरे कब कि, जब सामनेवालेका रंग सई होने आया होवे सई कहते पक्के रंगकी चारों नरदां अपने पटके ऊपर आय गई होवें तो कच्चे रंगसे भी नरद मारके उनका रंगसई होने नहीं देवे पक्के रंगकी तोड़ न हुई होवे तो वे नरदां घरमें जावें नहीं कच्चा रंगभी जावे नहीं पक्का रंग गये बाद कच्चा रंग घरमें जावे और कच्चे रंगकी नरदां जहांतक घरमें होवें तहांतक पक्का रंग घरमें जावे नहीं. अब खुली बाजीका लक्षण कहते हैं– खुलीबाजीमें पेटघरमें भी मरे और कच्चा पक्का रंग दोनों नरदां परस्पर मरें और घरमें कोई भी रंग तोड़ हुये बाद जावे उसको खुलीबाजी कहते हैं ॥ १६७

सव्यभागस्थितंचादौचालयेच्चपदातिनम् ॥
पदातिगमनेसंख्याभेदाविंशतिसंख्यकाः ॥ १६८ ॥

अब खेलनेके आरंभमें पहिले सीधे तरफके पट ऊपरकी नरदां चलावे, बाद कच्चा रंग चलावे नरदां चलानेमें फांसे डालके दांव लेवे उस दांवकी संख्या बीस तरहकी है ॥ १६८ ॥

चिह्नत्रयंसमारभ्यचिह्नाष्टादशकावधि ॥
अष्टसंख्याद्वयंचैवनवसंख्याद्वयंतथा ॥ १६९ ॥

तीन काणेसे लेके तीन छक्के अठारहतकहै आठके दांव और नवके दांव दो दो प्रकारके हैं उनके नाम और चिह्न आगे स्पष्ट दिखाये हैं ॥ १६९ ॥

एकेनवायुगेनापियुगस्यमरणंनहि ॥
चतुःपट्टांतिमेमध्यकोष्ठेचमरणंनाहि ॥ १७० ॥

नरदोंको मारनेका ऐसा नियम है कि, एक नरदसे अथवा दो नरदोंका युग होता है उस युगसे भी युग मरता नहींहै अकेली नरद होवे तो छुटी नरदसे अथवा युगसे भी मरे और चार पटके अंतिम भागके बीचमेंका जो कोष्ठक है उसको पेटघर कहते हैं वहां नरद एक अथवा युग होवे परंत वहां नरद मरती नहीं है ॥ १७० ॥

युगस्यडावपतनेयुगस्यखेलनंभवेत् ॥
अवशिष्टप्रसंख्यानेचैकस्यगमनंस्मृतम् ॥ १७१ ॥

फासेमें युग चलानेकी रीति दांव लेनेमें ऐसी है कि,कोई भी संख्याकी युग पडी होवे तो उस संख्या मूजब युग चलावे विषम दांव पडा होवे तो युग चलावे नहीं. जैसे छः, दो, आठ ऐसा दांव पडे तो युग चलावे और पांच तीन आठ ऐसा दांव पडे तो एक नरद चलावे युग नहीं चलावे ऐसाही सब बाकी के दांवमें जानना चाहिये ॥ १७१ ॥

पाशक्रीडनकेप्रोक्तानियमादशसंख्यकाः ॥
चतुर्णांचपदातीनांनाशेविंद्यात्पराजयम् ॥ १७२ ॥
इतिपाशकत्रयक्रीडानिरूपणम् ॥

और फांसेके खेलमें नियम दश हैं सो आगे दिखाये हैं. इस खेलमें एक रंगकी चारों नरदां जिसकी मरगई उसे हारा जानै. यहां कोई पुरुष चौपट खेलते समय पौबारहसे नरद मारके जीतनेके वास्ते पौबारहका दांव ईश्वरके पास मांगता है सो किसी कविका कहाहुआ गुजराती भाषामें है (दोहरा) सिंहमूछ भुजंगमणी, कृपणधन सतिनार ॥ मूवा पछे पर हस्त जसे, पड पासा पोबार ॥ १ ॥ डेरु दीठूं देवनुं, दीठा देव मुरार ॥ दर्शन पण परसन नहीं, पड पासा पोबार ॥ २ ॥ हंस गयो सरोवर विषे, दीठो अमृत सार ॥ दीठूं पण चाख्यूं नहीं, पड पासा पोबार ॥ ३ ॥ आंबे केरी झुलरही, केली केलां सार ॥ दीठा पण चाख्या नहीं, पड पासा पोबार ॥ ४ ॥ १७२॥

इति तीन फांसेसे खेलनेकी क्रीडा संपूर्ण ।

अब दांव लेनेके वास्ते फांसेका चिन्ह और दांवका निर्णय आगे लिखाहै ।

इसको तीन काणे कहते हैं यहां एक घर युग चले. छुटी नरद एक घर चले. १



इसको चार काणे कहते हैं यहां युग एक घर या दो घर चले और छुटी नरद दो घर चले. २



इसको पंजड़ी कहते हैं यहां युग चार घर या दो घर चले और छुटी नरद एक घर चले ३



इसको छकडी कहते हैं यहां युग तीन घर या चार घर चले और छुटी चलाना होवे तो छः घर चले. ४



इसको पांच दो सात कहते हैं यहां युग दो घर या एक घर चले छुटी नरद पांच घर चले. ५



इसको पांच तीन आठ कहते हैं यहां युग न चले केवल छुटी नरद दांवकी संख्या तुल्य चले. ६



इसको छः दो आठ कहते हैं यहां युग दो घर चले छुटी नरद छः घर चले. ७



इसको पांच चार नव कहते हैं यहां युग चार घर चले या दो घर चले छुटी नरद पांच घर चले. ८



इसको छः तीन नव कहते हैं यहां युग नहीं चले छुटी नरद दांवकी संख्या तुल्य चले. ९

इसको छः चार दश कहते हैं यहां युग दो घर या चार घर चले छुटी नरद छै घर चले. १०

इसको दश प्यादि कहते हैं यहां युग पांच घर या दश घर चले छुटी नरद एक घर चले. ११

इसको दश दो बारह कहते हैं यहां युग पांच घर या दश घर चले छुटी नरद दो घर चले. १२

इसको ग्यारह दो तेरह कहते हैं यहां युग नहीं चलता छुटी नरद संख्या तुल्य चलती है. १३

इसको बारह दो चौदह कहते हैं यहां युग छै घर या बारह घर चले छुटी नरद दो घर या चौदह घर चले. १४

इसको तीन पंजे पंद्रह कहते हैं यहां युग दश घर या पांच घर चले छुटी नरद पांच घर या पंद्रह घर चले. १५

इसको दश छः सोलह कहते हैं यहां युग दश घर या पांच घर चले छुटी नरद छः घर या सोलह घर चले. १६

इसको बारह पांच सत्रह कहते हैं यहां युग बारह घर या छः घर चले छुटी नरद पांच घर या सत्रह घर चले. १७

इसको तीन छक्के अठारह कहते हैं यहां युग बारह घर या छः घर चले छुटी नरद छः घर या अठारह घर चले. १८

इसको कच्चे बारह कहते हैं यहां युग छः घर चले छुटी नरद चलाना होवे तो बारह घर चले. १९

इसको पोबारा कहते हैं यहां युग छः घर या बारह चले छुटी नरद एक घर या तेरह घर चले. २०

अब खेलमें दश तरहके नियम कहते हैं.

१ जो खेलते२ एक रंगकी चारों नरदां जिसकी मर जावें तो वह हारा और खेलकी बाजी पूरी हुई.

२ एक रंगकी चारों नरदां फिरकर अपने पट्टके ऊपर आयगई होवें तो वह रंग पक्का हुआ उनको घरमें ले जावे परंतु जिस समय अपना रंग पक्का हुआ उतनेमें सामने वालेने अपनी चार नरदोंमेंसे एक नरदको मारा तो बाकीकी तीन नरदां घरमें जावे नहीं परंतु घरमें एक नरद गई होवे पीछे अपनी नरद सामनेवाला मारे तो फिर बाकीकी नरदांको घरमें जानेका हरकत नही है.

३ जो कभी अपने पक्के रंगकी नरदां सब घरमें गई होवै और सामनेवाले-का रंग पक्का होनेके वास्ते नरद जाती होवे तो घरमेंसे अपनी नरद निकालके सामनेवालेकी नरदको मारके उसके रंगको सई होने देवे नहीं.

४ नरदां बिठानेकी रीति ऐसी है कि, पहिले तो आप अपनी जगह पै बैठी होवे वो इसही है वहांसे दांव लेवे और खेलनेमें जो नरद मरगई पीछे वह नरद बिठाना होवे तो नवके मध्य जितने दांव हैं उन दांवोंसे बैठे नहीं नवके ऊपर के जितने दांवहैं उन सब दांवोंसे नरदां बैठे.

५ कच्चारंग हरेको और पीलेको कहते हैं वह कच्चा रंग आपअपने पटकेऊपर बिठावे और पक्का रंग लालको और कालेको कहतेहैं वह पक्का रंग आप अपने दक्षिण बाजूके पटके ऊपर बिठावे लाल हरा एक लेवे कालापीला रंग एक लेवे.

६ और मरी हुई नरदको बिठाना है तब नवसंख्या आदि जितने दांव हैं उन दावोंके संख्या तुल्य घर खाली होवें तो नरद बैठे अथवा उस घरमें बै-ठने वाली नरदका रंग जो होवे वही रंगकी नरद वहां बैठी होवे तो उसके साथ युग होके बैठे और उस घरमें अपनी नरद दूसरे रंगकी होवे या सामने वालेका युग बैठा होवे तो नरद बैठे नहीं.

७ नरदां चलानेमें युग अथवा एक चलानेकी है और दांव पांच, चार, नव, पड़े हैं तब पांचवें घरमें सामनेवालेकी नरद बैठी है अथवा अपनी बेरंगी नरद बैठी है तब सामनेवालेने कहा की पंजा बंद है तब उसने पहिले चारका दांव लेके पीछे पांच लिया तो बंदि कही जाती नहीं है. यह युगका छक्का पंजा बंद कहा जाता है और यही बंदिमें सामनेवालेकी एकली नरद होवे तो वह नरद मार लेवे वह बंदि नहीं है.

८ जो कभी पक्का रंग घरमें आगया होवे और कच्चा रंगभी सई हुआ होवे तो पक्के रंगको कच्चा करके कच्चे रंगको पक्का कर ले कहते घरमें ले जावे.

९ रंग सई हुआ किसको कैहे कि, चारों नरदां एकही रंगकी एक पटके ऊपर आय गई होवें.

१० दांव लेते समय एकही दांवमें दो रंगकी नरदां चलें नहीं कोईभी एक रंग चलै.

इति खुलासे संपूर्ण भये.

अथ पाशकद्वयक्रीडामाह।

अतःपरंप्रवक्ष्यामिपाशकद्वयक्रीडनम् ॥
द्वाभ्यांचखेलनंह्येतत्तस्यभेदस्तुपूर्ववत् ॥ १७३ ॥

अब दो फांससे खेलनेकी क्रीडा कहता हूं—यह खेल दो आदमीसे खेला जाता है उसका भेद सब पहिले तीन फांसेके खेलमें कहाहै वही जानना चाहिये ॥ १७३ ॥

चतुर्भिर्वाभवेत्खेलोवाजिबंधनवर्जितः ॥
पदातिगमनेसंख्याभेदाश्चदशसंख्यकाः ॥ १७४ ॥

चार आदमी से खेलना होवे तो खुली बाजीसे खेलै वहां बंद बाजी नहीं है इस खेलमें फांसेके दाँव दश तरहके हैं ॥ १७४ ॥

सप्तचिह्नंद्विधातत्रराम ३ रुद्रं ११ दु १ वर्जिताः ॥
चिह्नद्वयंसमारभ्यचिन्हद्वादशकावधि ॥ १७५ ॥

सातके दाँव दो तरहके हैं और दो चिह्नसे लेके बारह तक दाँव हैं उसमें तीन, एक, ग्यारह, यह संख्या नहीं हैं ॥ १७५ ॥

चिह्नैक्यंपाशयुगलेतदायुग्मस्यखेलनम् ॥
एकस्यापिप्रभवतिशेषेष्वेकस्यखेलनम् ॥ १७६ ॥

दोनों फांसेके ऊपर एकही चिह्न होवे तो नरदका युग चलावै अथवा एक नरद चलावै बाकीके खेलमें नाम दो फांसेमें जुदा जुदा चिह्न होवे तो एक नरद चलावे युग चलता नहीं है ॥ १७६ ॥

द्वादशेदावपतनेद्विवारंपाशकंक्षिपेत् ॥
तत्रापिपुनरर्कंचेत्पुनर्वैपाशकंक्षिपेत् ॥ १७७ ॥

खेलते खेलते बारहका दाँव गिरे तो फांसा दूसरे वार और डालै और दूसरे दाँवके समयभी जो बारह पडें तो और फांसा तीसरी बार डालै ॥ १७७ ॥

तृतीयेद्वादशेपूर्वंडावनाशःस्मृतोबुधैः ॥
चतुर्थादिपुनःसंख्याग्राह्याखेलनकर्मणि ॥ १७८ ॥

तीसरी वेरभी जो बारह पडे तो वे तीनों दाँव सब जल गये कहते व्यर्थ गये पीछे चौथे दांवसे संख्या लेवे खेलनेमें ॥ १७८ ॥

पटेस्वेस्वेपदातीनांस्थितिरादौप्रकीर्तिता ॥
मरणानंतरंचैकपतनेस्थितिरीरिता ॥ १७९ ॥

नरदां बिठानेकी रीति ऐसी है कि, अपने अपने पट ऊपर पहिले बैठे और वहांसे दाँव लेते जावे पीछे जब खेलनेमें नरद मर जावे तब जिस समय एक पडे तब नरद बिठावे पो बिना नरद बैठे नहीं पो के दाँव चार हैं छपगडी १ दोमणी १ तुटि चार १ चार पो १ ऐसे हैं ॥ १७९ ॥

रिपोःपदातिमरणेमारणाख्योरसःस्मृतः ॥
तत्रदावंद्विवारंवैहर्षेणप्रक्षिपेन्नरः ॥ १८० ॥

अब मारका रसका निर्णय कहते हैं सामनेवालेके नरदको जिस समय मारे उस समय हर्षसे दूसरी बार और फांसा डालके दाँव लेवे दाँवमेंभी जो सामनेवालेकी नरद मरे तो और तीसरी बार दाँवका फांसा डाले जहांतक मरे वहांतक फांसे डालते जावे नरद न मरे तो पीछे फांसा डालै नहीं उसको मारका रस कहते हैं ॥ १८० ॥

एवमक्षद्वयेनापिक्रीडेयंपरिकीर्त्तिता ॥

ऐसी दो फांसेकी क्रीडा मैंने वर्णनकी

इतिपाशकद्वयक्रीडासंपूर्णा ।

अब दशतरहके दाँव लेनेमें फांसोंके चिह्न दाँवका निर्णय.

इसको दो मणी कहतेहैं यहां युग दो घर या एक घर चलता है छुटी नरद दो घर चलती है. १

इसको एक तीनसे तूटि चार कहते हैं यहां युग नहीं चलता छुटी नरद चलती है. २

इसको चार पो पांच कहते हैं यहां युग नहीं चलता एकही चले. ३

इसको तीन तीन छः दो घोडे कहते हैं यहां युग छै घर या तीन घर चलता है छुटी नरद छः घर चलतीहै ४

इसको चार तीन सात कहते हैं यहां युग नहीं चलता छुटी नरद चलती है. ५

इसको छपगडी छः पो सातकहते हैं यहां युग नहीं चलता छुटी नरद चलती है. ६

इसको दो चौक अट्ठा कहते हैं यहां युग चार घर या आठ घर चलता है छुटी नरद आठ घर चलती है. ७

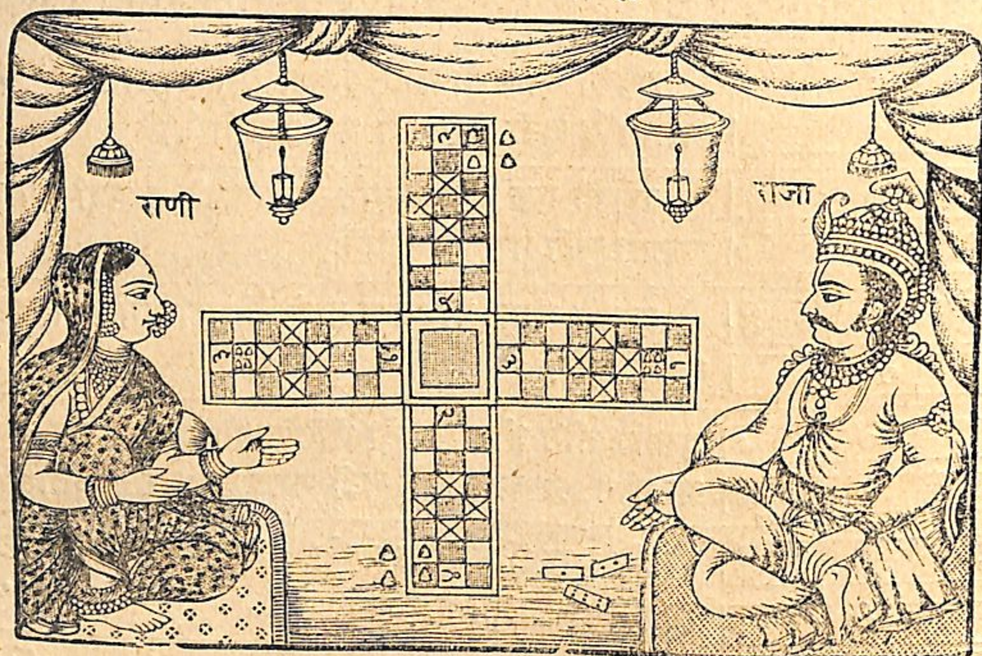
इसको छः तीन नव कहते हैं यहां युग चलता नहीं है छुटी नरद चलती है. ८

इसको छःचार दश कहते यहां युग नहीं चलता छुटी नरद दश घर चलती है. ९

इसको दो छक्के बारह कहते हैं यहां युग छः घर या बारह घर चलता है छुटी नरद बारह घर चलती है. १०

इसको तीस कहना ३०	इसको पच्चीस कहना २५	इसको चार कहना ४	इसको तीन कहना ३	इसको दो कहना २	इसको दश कहना १०

चौपटखेलनेकाचिन्ह.



अथ कपर्दिकाभिःखेलनमाह ।

अस्मिन्नेवपटेक्रीडातृतीयापरिकीर्तिता ॥ १८१ ॥

इस चौपटके ऊपर तीसरी क्रीडाका भेद कहता हूं ॥ १८१ ॥

कपर्दिकासप्तकेनचतुर्भिःखेलनंभवेत् ॥
पदातिगमनेभेदाःषडेवपरिकीर्तिताः ॥ १८२ ॥

अब कौडियोंसे चौपट खेलनेका निर्णय कहता हूं- सात कौडियोंसे चार जने खेलें इस खेलमें नरदां चलानेको दाँवके भेद छः हैं ॥ १८२ ॥

षड्भिरूर्ध्वमुखैस्त्रिंशत्पंचभिःपंचविंशतिः ॥
चतसृभिस्तुर्यसंख्याद्व्यंद्वाभ्यांत्रयस्त्रिभिः ॥ १८३ ॥

सो कहते हैं—छः कौडियोंके मुख ऊपर होवैं और एक उंधीहोय तो उसको तीसका दाँव कहना नरद तीस घरपै जाके रखना ऐसा पांच कौडियोंके मुख ऊपर रहें तो पच्चीस कहना चार कौडियोंके मुख ऊपर रहें तो चार कहना तीनके मुख ऊपर रहें तो तीन कहना दो से दोका दाव लेना ॥ १८३ ॥

एकाचेद्दशसंख्यात्र ग्राह्याखेलनकर्माणि ॥
बहिरष्टौहंसपादास्तत्रचेन्मरणंनहि ॥
अरिघातं विना गेहे स्वकीये गमनंनहि ॥ १८४॥

और एक कौडीका मुख ऊपर और छः कौडियोंका मुख ऊंधा होवे तो उसको दश कहना दशवें घरपै जाके नरद रखना. कितनेक लोग छः कौडीसे खेलते हैं वह रीति दाँवकी यही है, परंतु वहां तीसका दाव नहीं है सो जानना और चार पटके ऊपर दो दो चीले हैं वहां नरदा बैठी होवे तो वह नरदा मरती नहीं है और सामनेवालेकी नरदको मारना उसको तोड़ कहते हैं सो तोड़ हुये बिना नरदां अपने घरमें जाती नहीं है ॥ १८४ ॥

वर्णबंदितदा कार्याद्वाभ्यां क्रीडायदाभवेत् ॥
यस्यादौगमनंगेहे तस्यविद्याज्जयंसदा ॥ १८५ ॥

इति हरिकृष्णवि० बृ० ष० मिश्र० क्रीडाकौशल्याध्याये त्रिविधद्यूतक्रीडावर्णनं नाम प्रकरणम् ॥ ३ ॥

इस खेलमें दो जने खेलें तो रंगबंदी बाजीसे खेलें. और यहां जिसकी नरदा सब घरमें पहिले जावे उसकी जय जानना. जिसकी नरदा घरमें नहीं गई पट ऊपर रहीं सो हारा जानना ॥ १८५ ॥

इति तीन प्रकारसे द्यूतक्रीडा का भेद पूरा हुआ प्रकरण ॥ ३ ॥

अथ पत्रक्रीडा प्रारभ्यते ।

चंगकांचन गंजीफाकी देहेलीबंदी बाजी सुपेदकी रंगदूसरा पत्तोमें रंगकाला.

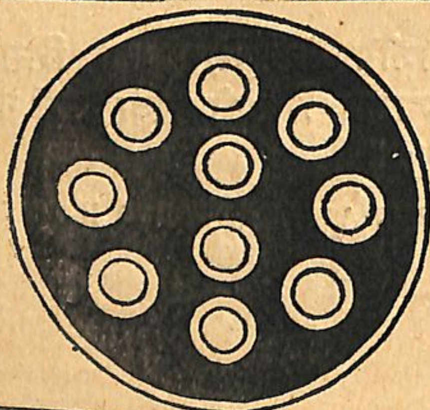
सफेदका मीर



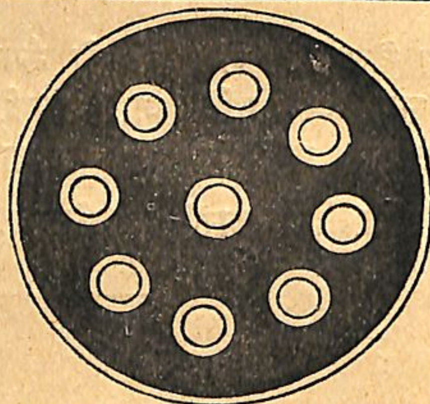
सफेदका वजीर



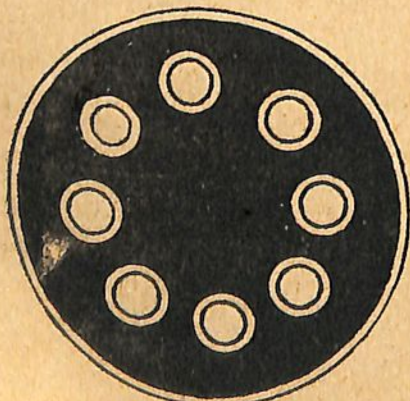
सफेदका दहेला



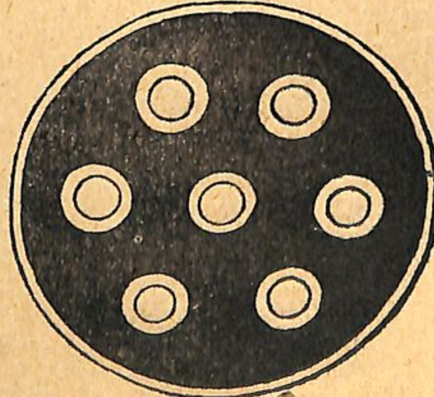
सफेदका नहेला



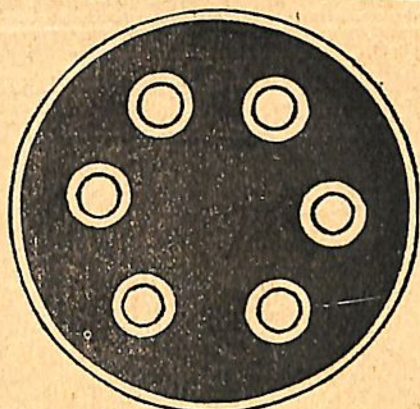
सफेदका अट्ठा



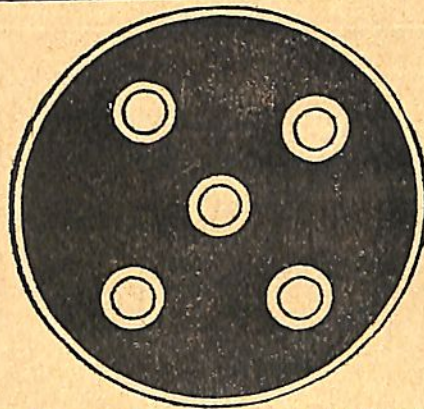
सफेदका सत्ता



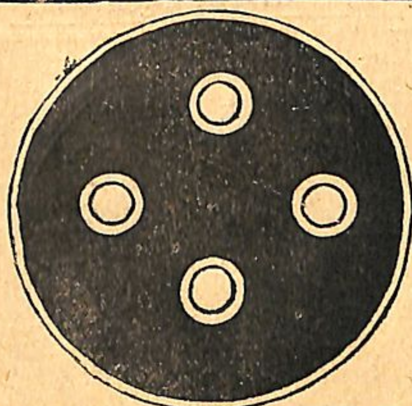
सफेद्का छक्का



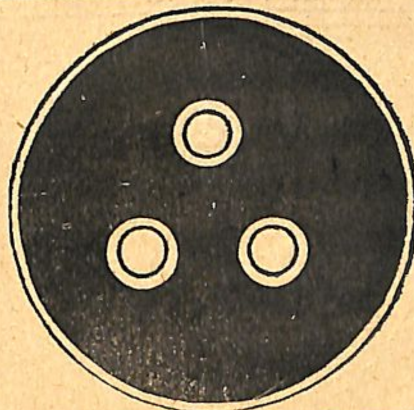
सफेद्का पंजा



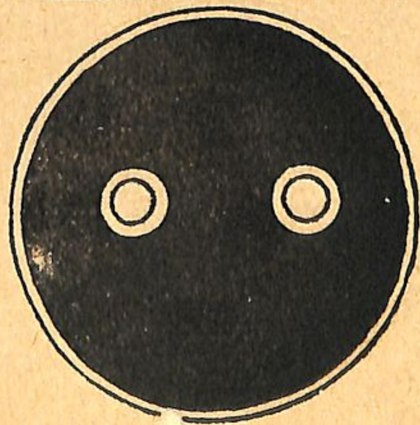
सफेद्का चौवा



सफेद्का तीया



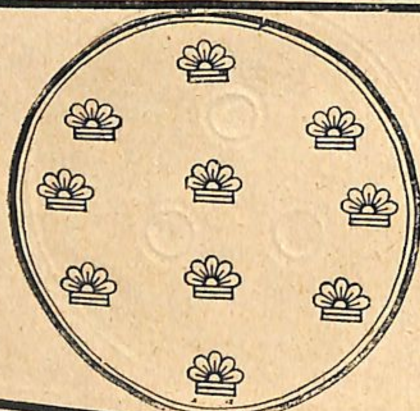
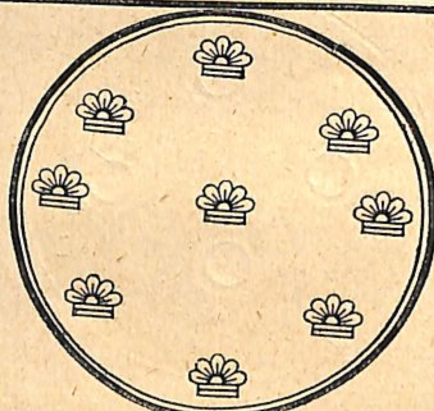
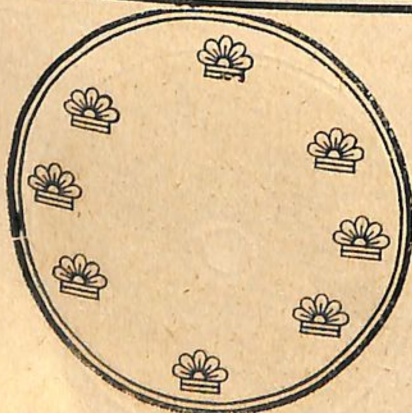
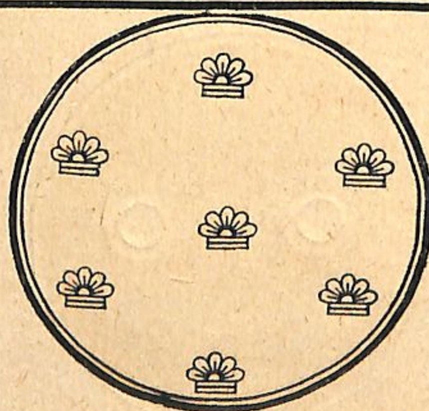
सफेद्का दूवा



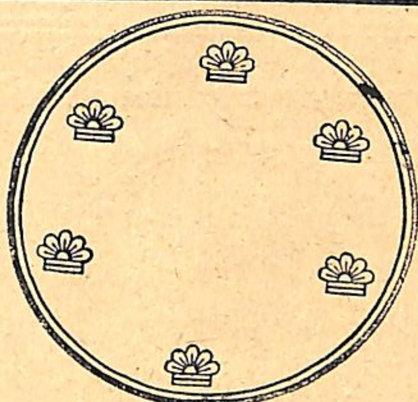
सफेद्का एक्का



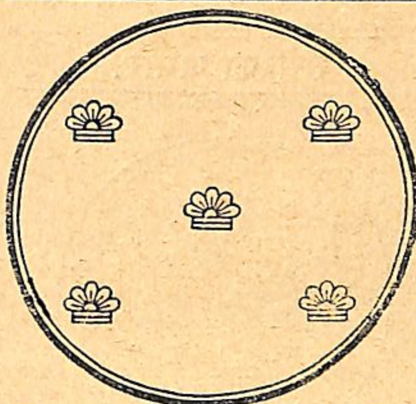
चंगकांचनगंजीफाकी देहेलीबंदीबाजी ताजकीरंगपहिलापत्तोंमें रंगहराथोडीसुर्खी मिला हुआ ।

ताजका मीर	ताजका वजीर
	
ताजका दहला	ताजका नहला
	
ताजका अट्ठा	ताजका सत्ता
	

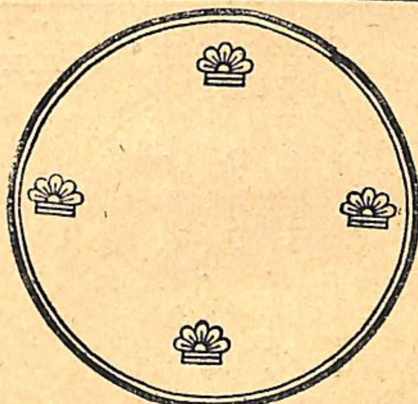
ताजका छक्का.



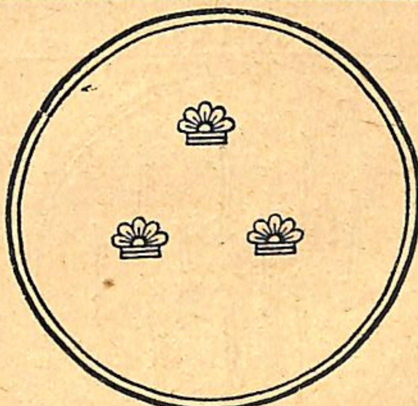
ताजका पंजा.



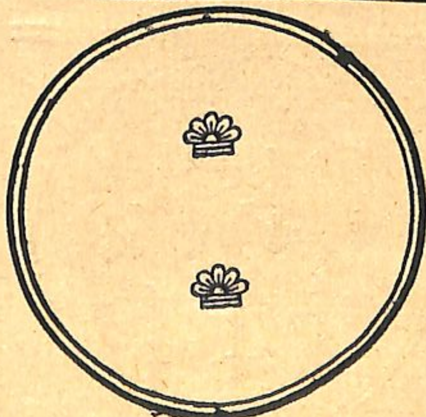
ताजका चौवा.



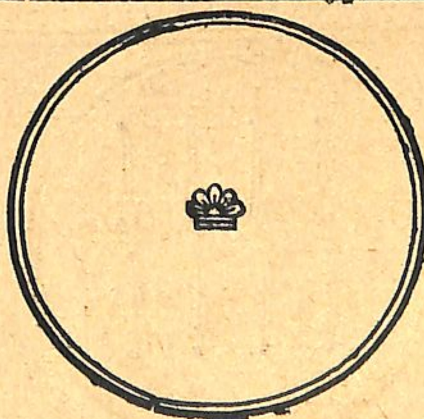
ताजका तीया.



ताजका दूवा.



ताजका एक्का.



५

चंगकांचन गंजीफाकी दहलेबंदीबाजी संसेरकी रंग तीसरा पत्तोंमें रंग लाखी ।

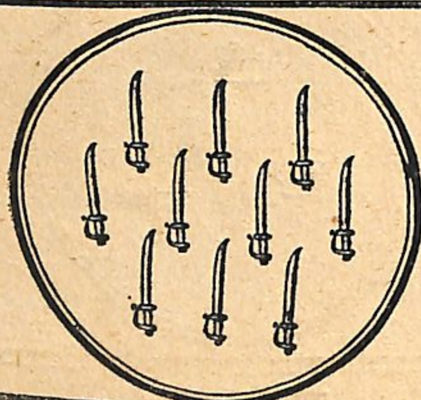
संसेरका अमीर.



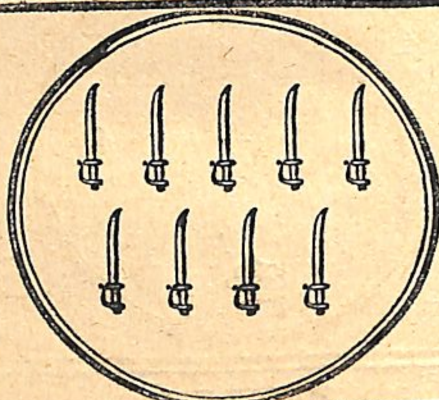
संसेरका वजीर.



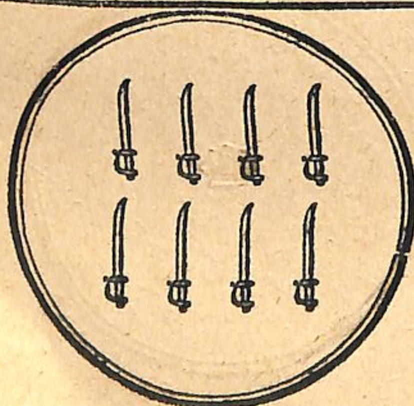
संसेरका दहला.



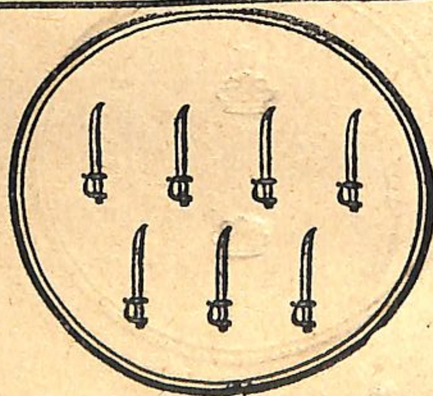
संसेरका नहला.



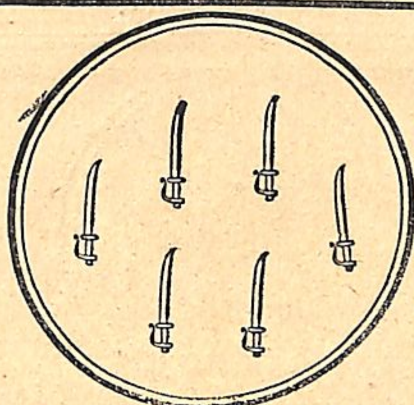
संसेरका अट्ठा.



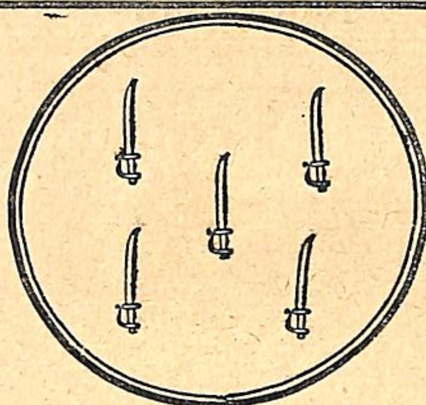
संसेरका सत्ता.



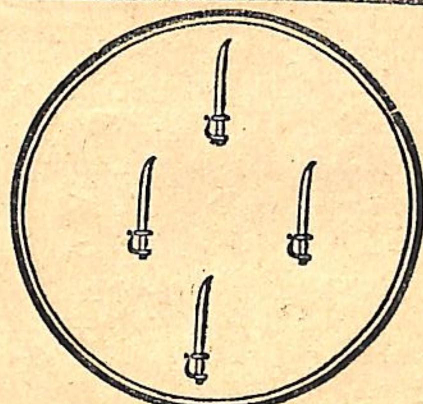
संसेरका छक्का.



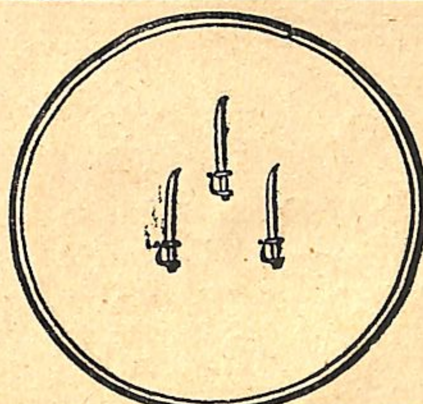
संसेरका पंजा.



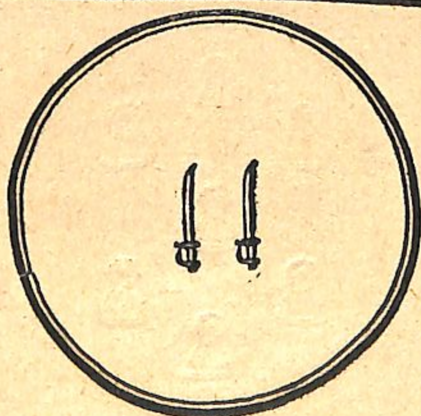
संसेरका चौवा.



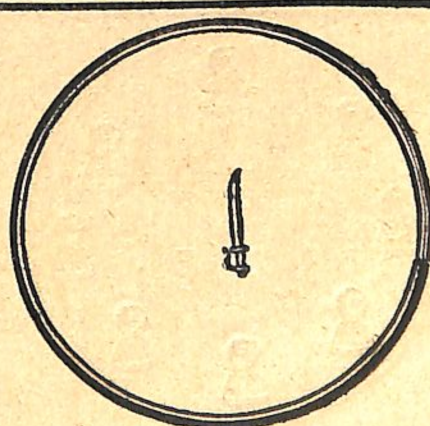
संसेरका तीया.



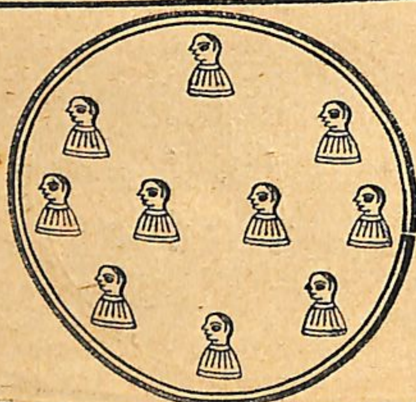
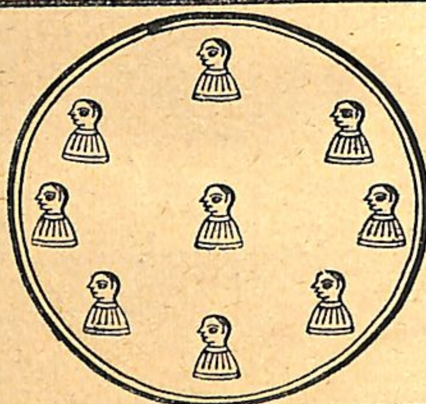
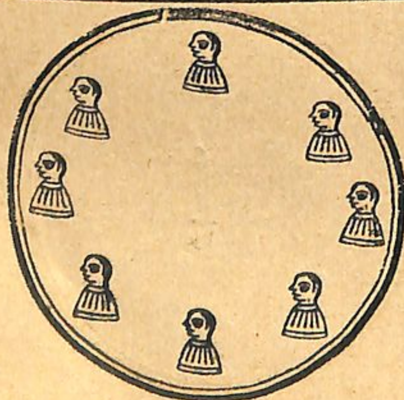
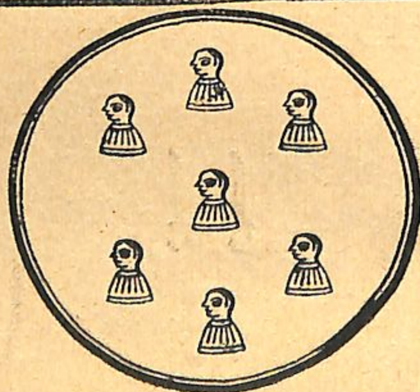
संसेरका दूवा.



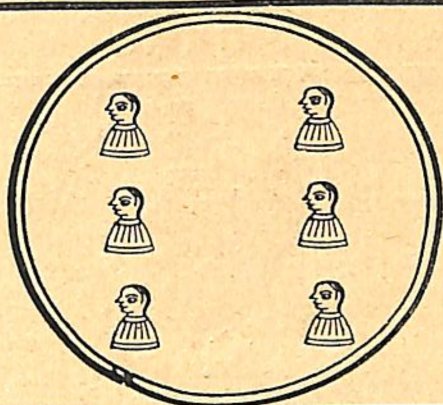
संसेरका एक्का.



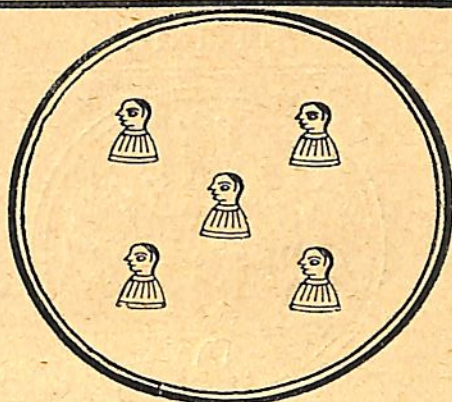
चंगकांचन गंजीफाकी दहलेबंदी बाजी गुलामकी रंग चौथा पत्तोंमें रंग पीला ।

गुलामका अमीर.	गुलामका वजीर.
	
गुलामका दहला.	गुलामका नहला.
	
गुलामका अट्ठा.	गुलामका सत्ता.
	

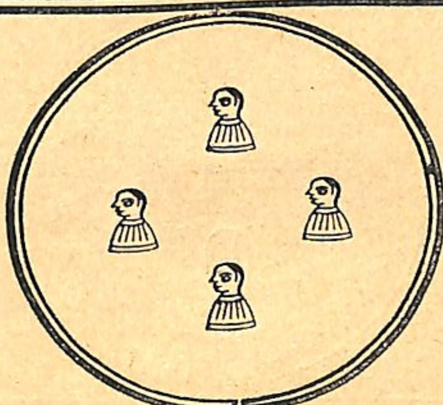
गुलामका छक्का.



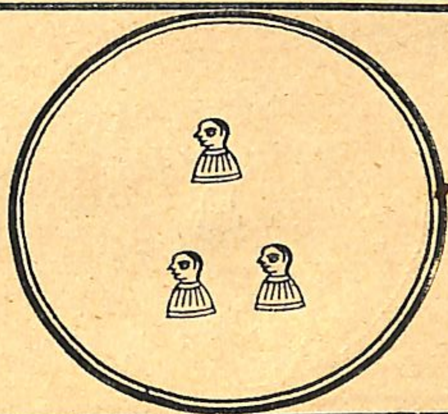
गुलामका पंजा.



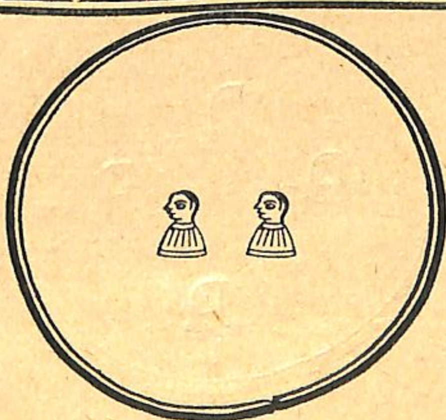
गुलामका चौवा.



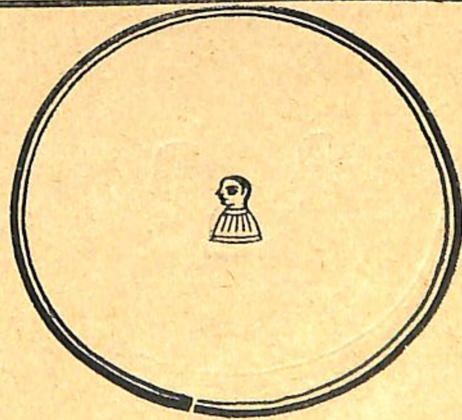
गुलामका तीया.



गुलामका दूवा.



गुलामका एक्का.



चंगकांचन गंजीफाकी एक्काबंदीबाजी चंगकीरंग पहिला आदीसे रंग पांचवा पत्तोंमें रंग हरा ।

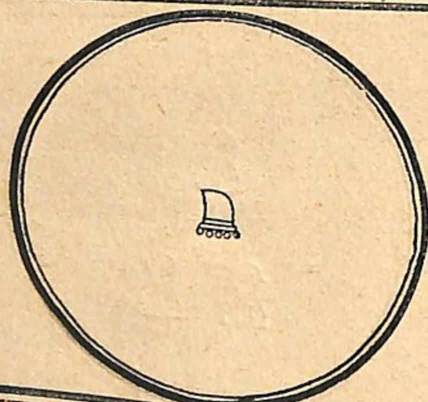
चंगकामीर.



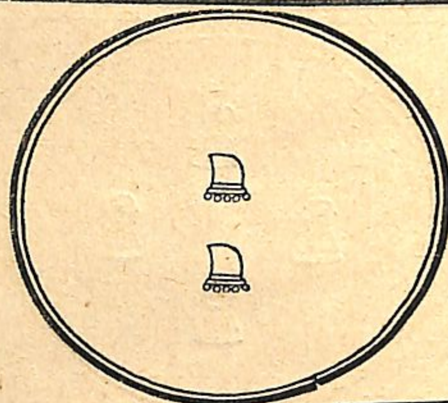
चंगका वज़ीर.



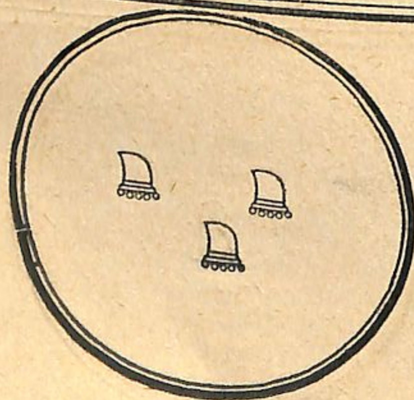
चंगका एक्का.



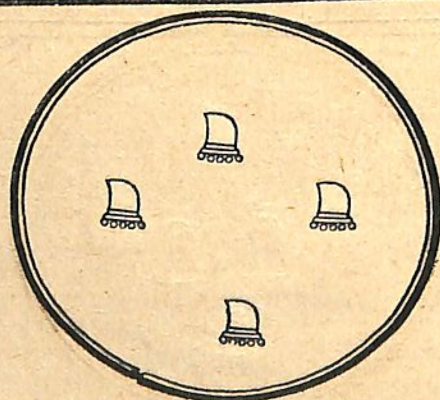
चंगका दूवा.



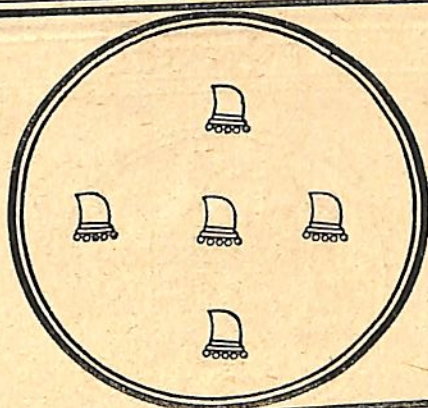
चंगका तीया.



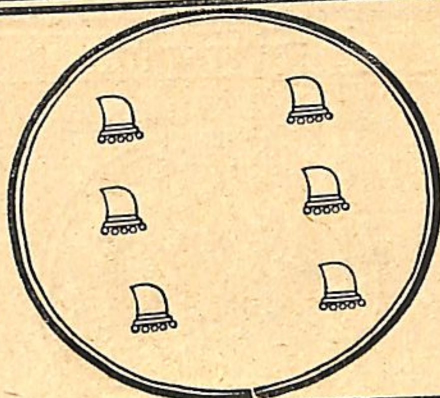
चंगका चौवा.



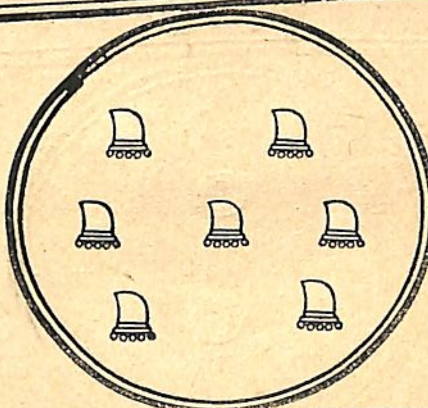
चंगका पंजा.



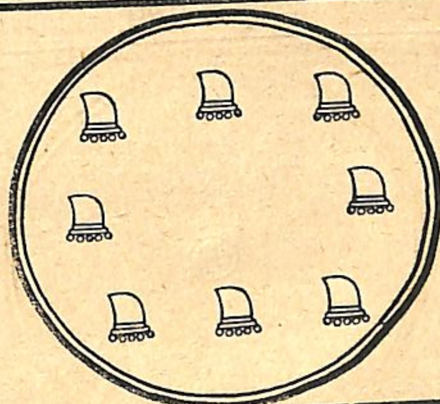
चंगका छक्का.



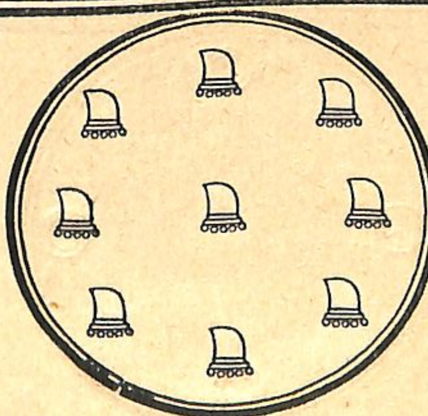
चंगका सत्ता.



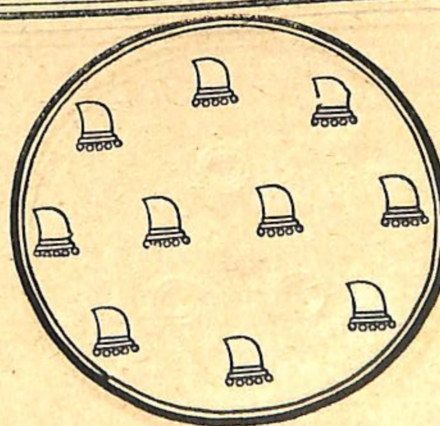
चंगका अट्ठा.



चंगका नहेला.



चंगका दहेला.



चंगकांचनगंजीफाकी एक्काबंदीबाजी सुर्ख़की रंगदूसरा पहिलेसे छट्टा पत्तोंमें रंगलाल ।

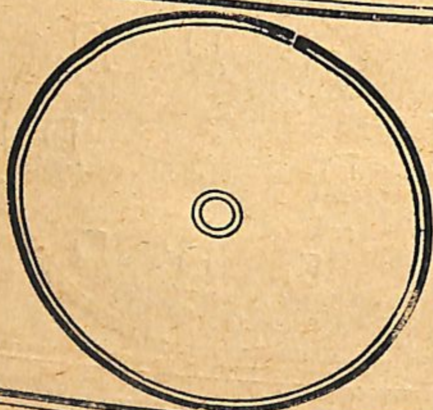
सुर्ख़का अमीर.



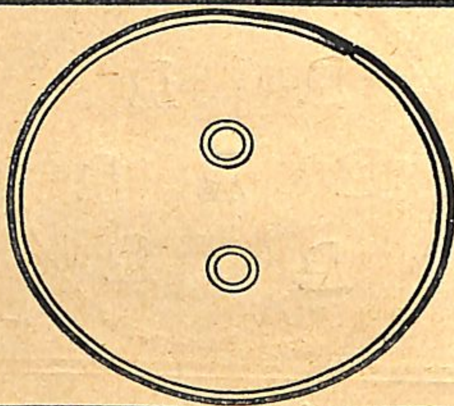
सुर्ख़का वजीर.



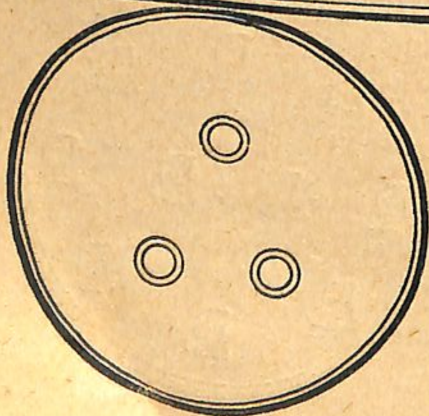
सुर्ख़का एक्का.



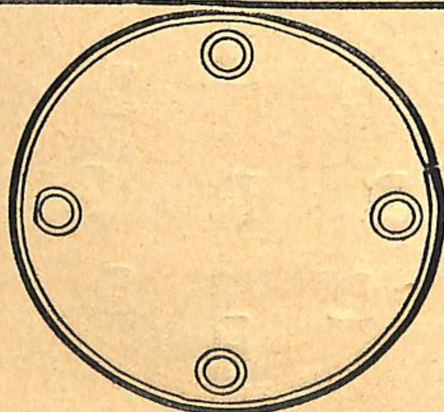
सुर्ख़का दूवा.



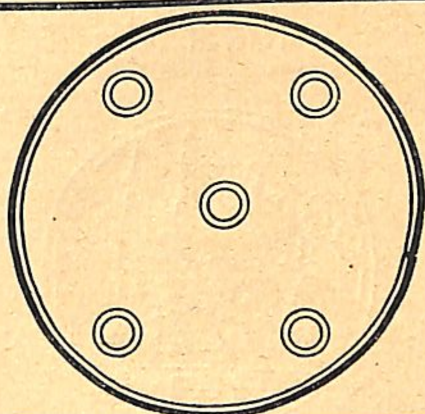
सुर्ख़का तीया.



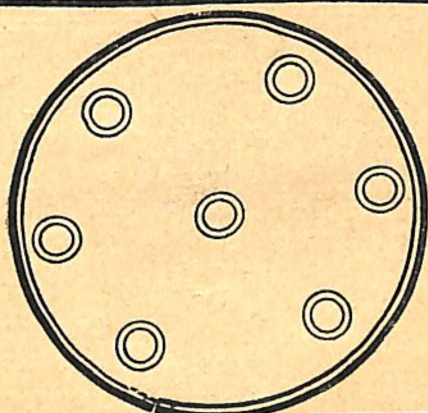
सुर्ख़का चौवा.



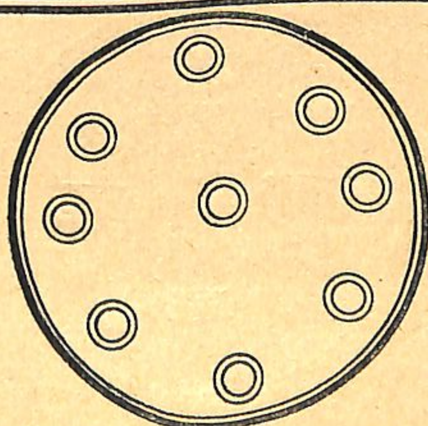
सुर्ख़का पंजा.



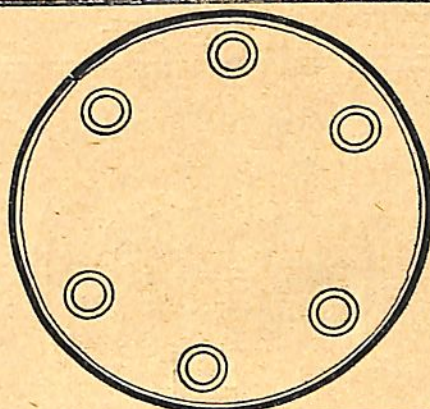
सुर्ख़का सत्ता.



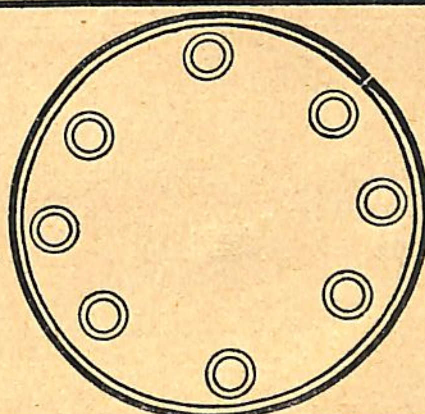
सुर्ख़का नहेला.



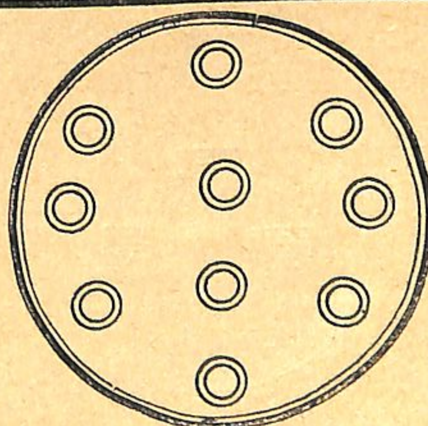
सुर्ख़का छक्का.



सुर्ख़का अट्ठा.



सुर्ख़का दहला.



चंगकांचन गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी बरातकी रंग तीसरा पहिलेसे रंग सातवां पत्तोंमें रंग लाल ।

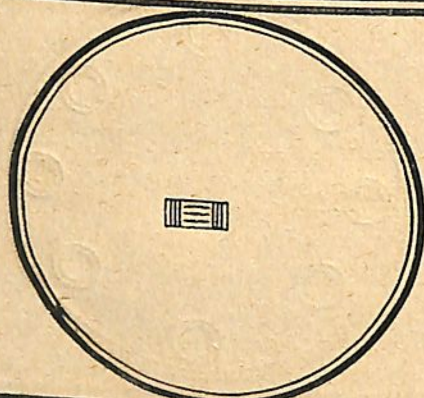
बरातका अमीर.



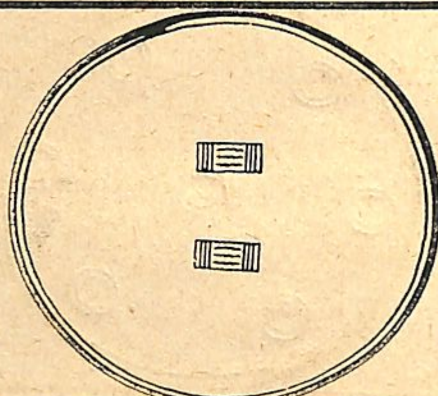
बरातका वज़ीर.



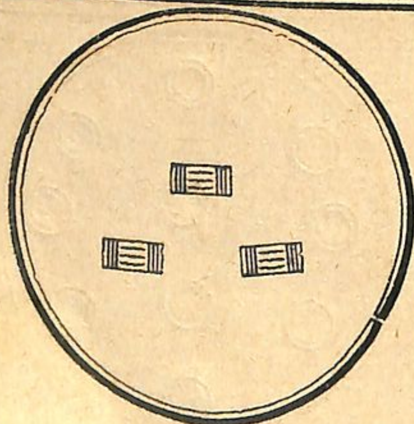
बरातका एक्का.



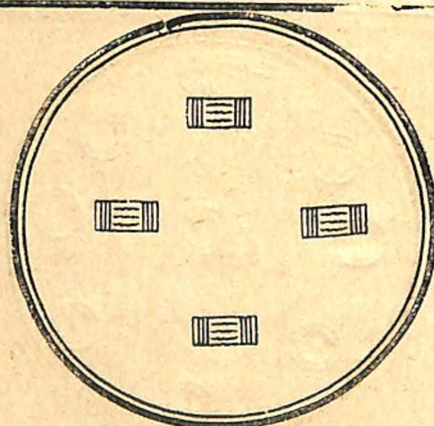
बरातका दूवा.



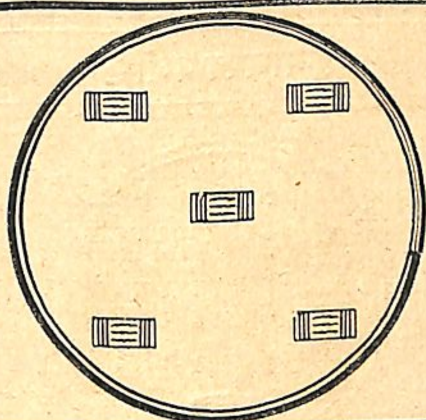
बरातका तीया.



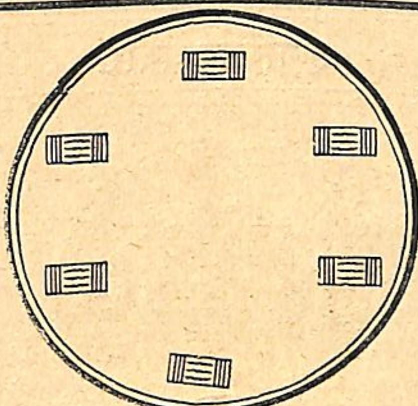
बरातका चौवा.



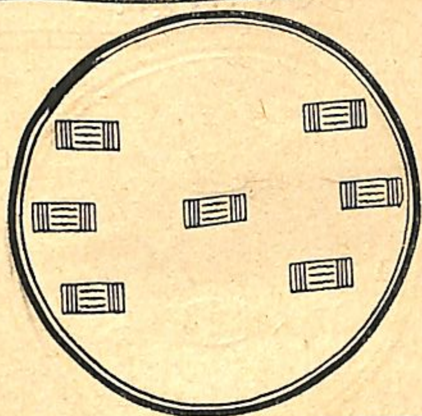
बरातका पंजा.



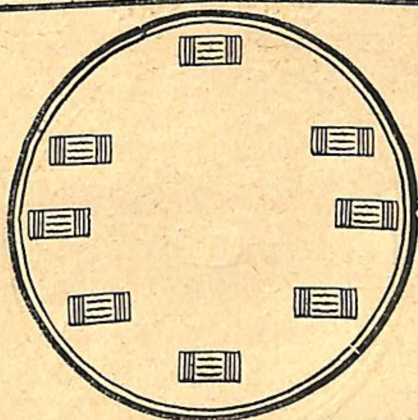
बरातका छक्का.



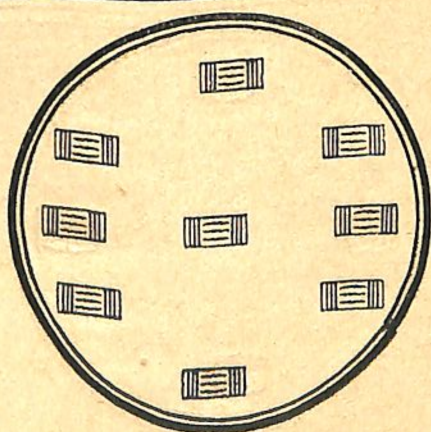
बरातका सत्ता.



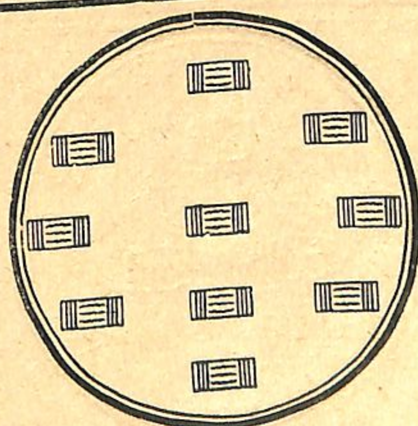
बरातका अट्ठा.



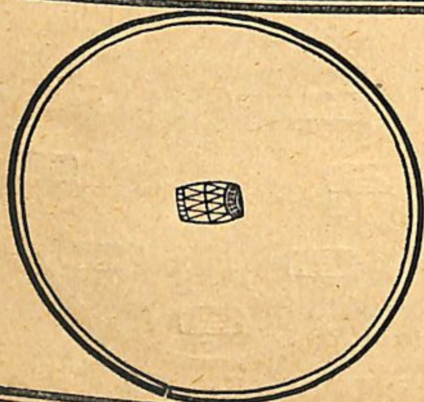
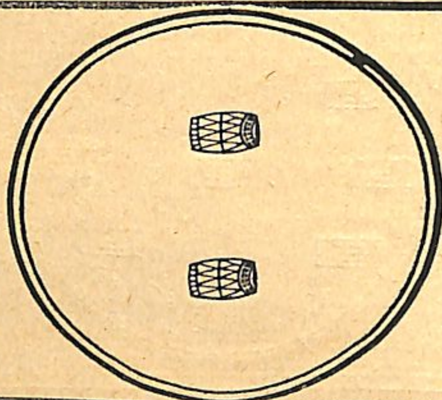
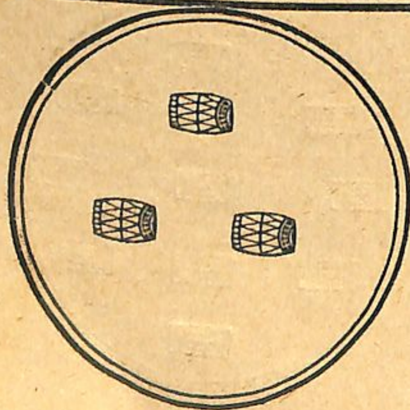
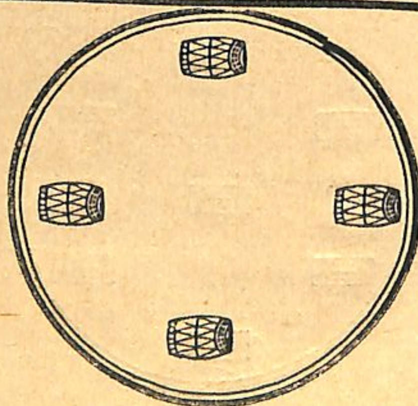
बरातका नहला.



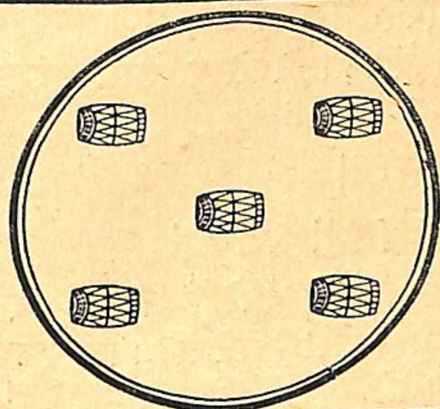
बरातका दहला.



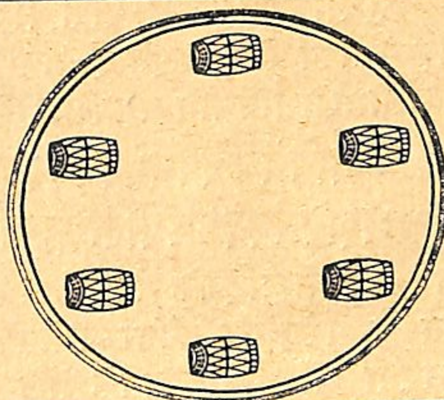
चंगकांचन गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी कुमाजकी रंग चौथा पहिलेसे आठवां पत्तोंमें रंग पीला ।

कुमाजका अमीर.	कुमाजका वजीर.
	
कुमाजका एक्का.	कुमाजका दूवा.
	
कुमाजका तीया.	कुमाजका चौवा .
	

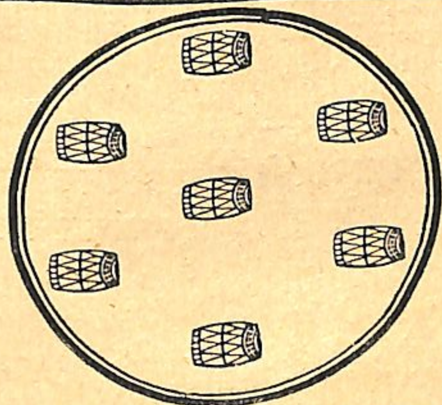
कुमाजका पंजा.



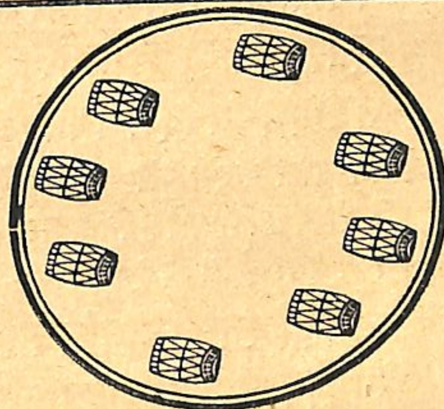
कुमाजका छक्का.



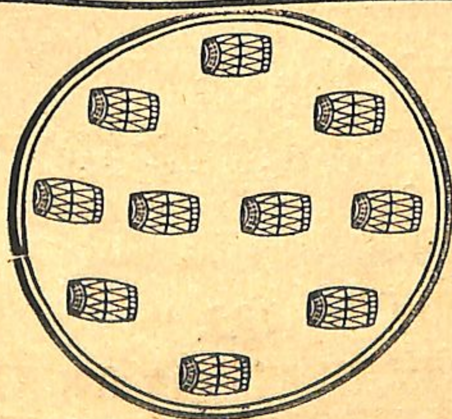
कुमाजका सत्ता.



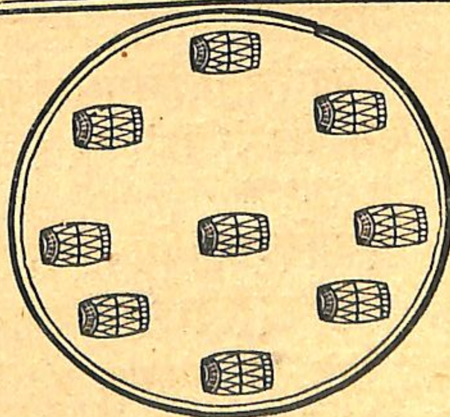
कुमाजका अट्ठा.



कुमाजका नहला.



कुमाजका दहला.



अथातःसंप्रवक्ष्यामिपत्रक्रीडांसुशोभनाम् ॥
नृपादिखेलनेयोग्यांसभारंजनकारकाम् ॥ १८६ ॥

अब पत्तोंका खेल कहते हैं—अब राजादिकोंके खेलने योग्य सभामे रंजन करनेवाली शोभायमान पत्रक्रीडा कहता हूं ॥ १८६ ॥

उद्यानेमंडपेवापिस्वगृहेवाविशेषतः ॥
प्रशस्तंक्रीडनंप्रोक्तंभूम्यांनैवकदाचन ॥ १८७ ॥

अथवा विवाहादिकके मंडपमें अथवा अपने घरमें बंगलेमें क्रीडा करना प्रशस्त है, परंतु यह क्रीडा जमीनके ऊपर नहीं खेलै गलीचा अथवा शतरंजी अथवा चाँदनी बिछायके खेलै ॥ १८७ ॥

गंजीफाख्याचयाप्रोक्ताक्रीडासात्रिविधामता ॥
चंगाख्याप्रथमाज्ञेयाद्वितीयाहूणदेशजा ॥ १८८ ॥
तृतीयाविष्णुमूर्त्तीनांस्मरणाल्हादकारिका ॥
तत्राहंप्रथमंवक्ष्येचंगक्रीडनलक्षणम् ॥ १८९ ॥

गंजीफा नाम करके जो क्रीडा है वह तीन प्रकारकी है. एक चंगकांचन, दूसरी इंग्रेजी पत्तेकी, तीसरी दशावतारकी है उसमें पहिले चंग कांचन खेलका लक्षण कहता हूं ॥ १८८ ॥ १८९ ॥

चंगकांचनक्रीडायांपत्राणिषण्णवत्यपि ॥
अष्टौवर्णानिप्रत्येकंपत्राणिद्वादशैवहि ॥ १९० ॥

चंगकांचनके खेलमें पत्ते छान्नवें हैं और रंग आठ ८ हैं और एक एक रंगके पत्ते बारह बारह हैं ॥ १९० ॥

अष्टौवर्णानितन्मध्येखेलनंद्विविधंस्मृतम् ॥
तत्रवर्णचतुष्केनप्रथमाबाजिरुच्यते ॥ १९१ ॥

अब उस आठ रंगमें दो भेद हैं उसमें चार रंगसे पहिली दहेले बंदी बाजी कहते हैं ॥ १९१ ॥

एकादिदशपर्यंतंबलवदुत्तरोत्तरम् ॥
पत्राणिदशमाच्छ्रेष्ठोप्रधानश्चततोनृपः ॥ १९२ ॥

एक्केसे दहेले तक बलवान् जानै जैसा एक्केसे दूवा बड़ा, दूवेसे तीया बड़ा, तीयेसे चौवा बड़ा, चौवेसे पंजा बड़ा, पंजेसे छक्का बड़ा, छक्केसे सत्ता बड़ा,

सत्तेसे अट्ठा बड़ा, अट्ठेसे नहला बड़ा, नहलेसे दहला बड़ा, दहलेसे वजीर बड़ा, वजीरसे नृप कहते अमीर बड़ा ॥ १९२ ॥

अथवर्णचतुष्कानांनामानिप्रवदाम्यहम् ॥
प्रथमस्ताजइत्युक्तआद्योराजाततःपरम् ॥ १९३ ॥

अब दहले बंदीबाजीके चार रंग कहते हैं पहिले रंगको ताज कहते हैं. उसके बारह पत्तोंका निर्णय कहते हैं.पहिले पत्ते पर सिंहासन ऊपर बैठा हुआ राजा निकालै उसको अमीर कहते हैं. दूसरे पत्तेके ऊपर घोड़ेसवार प्रधान निकालै उसको वजीर कहते हैं ॥ १९३ ॥

प्रधानश्चाश्वसंरूढोराजासिंहासनस्थितः ॥
प्रत्येकपत्रेचिह्नानिह्येकादिदशमांतकम् ॥ १९४ ॥

बाकीके दश पत्तोंके ऊपर तीन फकडिका मुकुट सरीखा चिह्न इसप्रकार निकालै कि, पहिले पत्तेके ऊपर एक चिह्न दूसरेके ऊपर दो इसी क्रमसे दशवें पत्ते ऊपर दश चिह्न निकालै ॥ १९४ ॥

चिह्नंमुकुटवत्कार्यंशृंगत्रयसमन्वितम् ॥
हरिद्वर्णानिपत्राणिरक्तवर्णयुतानिच ॥ १९५ ॥

सब बारहपत्तोंमें रंग हरा थोड़ी सुरखी मिला हुआ रंग भरै बाकीके रंग जैसे शोभायमान दीखें वैसे भरै ॥ १९५ ॥

एवमग्रेपिविज्ञेयारीतिःसर्वदलेष्वपि ॥
द्वितीयःश्वेतइत्युक्तःपत्रेषुश्यामवर्णकः ॥ १९६ ॥

ऐसीही आगेभी बाकीकी सात बाजीमें रीति जानना केवल उन्होंमें नाम और चिह्न और रंग फिरता है और दूसरे खेलको सुपेद कहते हैं उसके बारह पत्तोंके भींतर काला रंग भरै ॥ १९६ ॥

श्वेतबिंद्वाख्यकंचिह्नंशेषंसर्वंपुरोदितम् ॥
तृतीयःखड्गइत्युक्तोलाक्षावर्णदलानिवै ॥ १९७ ॥

अमीर वजीर पहिले सरीखे करै और दश पत्तोंमें कबूतरकी आंखों सरीखे सुफेद चिह्न करै. तीसरे खेलको संशेर कहते हैं उसके बारह पत्तोंके भींतर लाख के सरीखा रंग भरै ॥ १९७ ॥

चिह्नानिखड्गरूपाणिशेषंसर्वंपुरोदितम् ॥
चतुर्थोदासइत्युक्तःप्रधानोवृषसंस्थितः ॥ १९८ ॥

अमीर वजीर पहिले सरीखे करै और दश पत्तोंमें तलवारके सरीखे चिह्न करै बाकी रीति सब पहिले सरीखी. चौथे खेलको गुलाम कहते हैं उसमें वजीर बैलके ऊपर बैठा हुआ ॥ १९८ ॥

गजारूढोनृपस्तत्रदलवर्णश्चपीतकः ॥
चिह्नानिनरतुल्यानिशेषंसर्वंपुरोदितम् ॥ १९९ ॥

अमीर हाथीके ऊपर बैठाहुआ निकालै यह वाहनका जो फेरहै उसका कारण यह है कि यह दोनों राजा प्रधान कर्णाटक देशके थे इस देशमें बैलकी सवारी करते हैं और हाथी बहुत होते हैं. पत्तोंके बीच रंग पीला भरै. दश पत्तोंके ऊपर आदमी सरीखे चिह्न करै बाकी सब पहिले सरीखा क्रम जानना चाहिये १९९॥

प्रोक्तेयंदशमावंदीक्रीडाश्वेतनृपात्मिका ॥
एक्कावंदीद्वितीयावैतत्रवर्णक्रमंशृणु ॥ २०० ॥

ऐसी यह दहेलावंदी बाजी कही जिसमें सफेद आफताब है. अब दूसरी जो एक्कावंदी बाजी है उसके रंगका क्रम कहते हैं ॥ २०० ॥

दशमाद्येकपर्यंतंबलवदुत्तरोत्तरम् ॥
पत्राणिप्रथमाच्छ्रेष्ठोप्रधानश्चततोनृपः ॥ २०१ ॥

इन चार रंगोंमें दहलेसे नहला बड़ा, नहलसे अट्ठा बड़ा, अट्ठेसे सत्ता बड़ा, सत्तेसे छक्का बड़ा, छक्केसे पंजा, पंजेसे चौधा, चौधेसे तीया, तीयेसे दूवा, दूवेसे एक्का, एक्केसे वजीर, वजीरसे अमीर बड़ा जानना ॥ २०१ ॥

अथवर्णचतुष्केतुचंगाख्यःप्रथमःस्मृतः॥
प्रत्येकपत्रेचिह्नानिह्येकादिदशमांतकम् ॥ २०२ ॥

अब चार रंगमें पहिला खेल चंगका इसके बारह पत्तोंमें अमीर, वजीर एक, दो, तीन, इत्यादि दश तक पहिले सरीखे करै. वजीर ऊँटके ऊपर बैठा, हुआ निकालै. यह वजीर मरुदेशका था इस वास्ते ऊंट वाहन है ॥ २०२॥

चिह्नंमुकुटवत्कार्यंशृंगैकेणसमन्वितम् ॥
हरिद्वर्णानिपत्राणिशोभायुक्तानिकारयेत् ॥ २०३ ॥

चिह्न एक सींगवाले मुकुट सरीखा करै.पत्तोंमें रंग हरा भरै बीचमें सुनहरी छींटे बुनकी सरीखे देवे ॥ २०३ ॥

शेषंपूर्वोक्तवत्कार्यंरक्तवर्णोद्वितीयकः ॥
रक्तवर्णानिपत्राणिह्यर्कबिंबसमप्रभः ॥ २०४ ॥

बाकी सब पहिले सरीखा अब दूसरा खेल सुर्खका, उसके पत्तोंमें रंग लाल भरै अमीरका चित्र सूर्य्यके सरीखा निकालै ॥ २०४ ॥

स्वर्णबिंदुसमंचिह्नं सर्वपत्रेषुकारयेत् ॥
एकादिदशपर्यंतं शेषं सर्वं पुरोदितम् ॥ २०५ ॥

दश पत्तोंके ऊपर चिह्न सुन्नेके बिंदुसरीखे एक, दो, तीन इत्यादि क्रमसे करै बाकी सब पहिले सरीखा करै ॥ २०५ ॥

बराताख्यस्तृतीयस्तु खेलः सर्वमनोहरः ॥
रक्तवर्णानिपत्राणिचिह्नंवर्णसमन्वितम् ॥ २०६ ॥

अब तीसरा खेल बरातका उसके पत्तोंमें रंग लाल भरै और चिह्न जो निकालै सो ऐसा कि ॥ २०६ ॥

चतुरस्रंचदीर्घंचशेषंसर्वं पुरोदितम् ॥
कुमाजाख्यश्चतुर्थस्तुपत्रवर्णश्चपीतकः ॥ २०७ ॥

लंबा चतुरस्र निकालके उसमें फारसी हरफ लिखै एका दूवा ऐसा बाकी रीत सब पहिले सरीखी अब चौथा खेल कुमाजका–उसके पत्तोंमें रंग पीला भरै ॥ २०७ ॥

मृदंगाकारचिह्नानितत्र कुर्वीतमानवः ॥
एवंवर्णव्यवस्थोक्ता क्रीडाभेदंवदाम्यहम् ॥ २०८ ॥

दश पत्तोंमें चिह्न मृदंग सरीखा एक, दो, तीन इत्यादि क्रमसे करै बाकी रीति सब पहिले सरीखी. ऐसे आठों रंगका बयान करके अब खेलनेका बयान कहता हूं ॥ २०८ ॥

त्रिभिः क्रीडाप्रकर्त्तव्या नन्यूनैर्नाधिकैर्हिसा ॥
प्रत्येकंद्व्यग्निपत्राणि यत्रार्कःसोग्रगःस्मृतः ॥ २०९ ॥

यह खेल तीन आदमी खेलें जास्ती आदमीसे अथवा दो आदमीसे खेला नहीं जाता तीनोंके हिस्सेमें पत्ते बत्तीस बत्तीस आते हैं उसमें जिसके पास आफताब आया होवे वह पहिले खेलै ॥ २०९ ॥

दिवसे रक्तवर्णीयनृपोर्कः परिकीर्त्तितः ॥
रात्रौश्वेतनृपोर्कः स्यान्नैकोगच्छतिक्रीडने ॥ २१० ॥

दिनको खेले तो सुर्ख खेलका जो अमीर उसको आफ्ताब कहते हैं रातको खेले तो सफेदका जो अमीर उसको आफ्ताब कहते हैं जब आफ्ताबका पत्ता डालै तो अकेला नहीं डालै उसके साथ दूसरा कोईभी हलका पत्ता डालै तो जीतके अपने समेत छः पन्ने एक तरफ रक्खै ॥ २१० ॥

किंचार्कक्रीडनपरेणनरेणचादौयद्यत्समाजदलमस्तितदेवसर्वम् ॥
संपाद्यपत्रमखिलंचततःपरंवैदेयंसरंस्वनिकटस्थितपूरुषाय २११

और आफ्ताब खेलने वाला अपने पास दहेला बंदीकी अथवा एक्का बंदीकी दोनोंकी अथवा एककी कोईभी बाजी एक सरीखी लगी हुई होवे तो उसका अंतका हलका पत्ता एक रखके बाकीके सब पत्ते वसूल कर लेवे जो कभी भुलावेसे ऐसा नहीं किया तो उस लगी हुई बाजीके पत्ते सब रद्दी हो जावे इस वास्ते जितने रंगकी बाजी बराबर लगी हुई होवे उतनी बाजी खेल लेंवे पीछे खेल दूसरेको देवे उसको सर देना ऐसा कहते हैं ॥ २११ ॥

सरदानविधिंवक्ष्ये यंज्ञात्वाविजयीभवेत् ॥
स्वदलानांबलंकर्तुंत्यजेद्धीनबलंदलम् ॥ २१२ ॥

अब सर देनेकी रीति कहते हैं—जिस बाजीका वजीर अपने पास है उस बाजीमेंसे हलका पत्ता डालै तो सामनेवालेका अमीर उतरे तो फिर अपना वजीर हुकमी होवे ऐसे निर्बली पन्ने डालते जावे और पत्ते हुकमी करके वसूल करते जावे ॥ २१२ ॥

दक्षिणे निर्बलःप्रोक्तोवामेसबलउच्यते ॥
निर्बलादागते खेले उत्तमाट्टीपउच्यते ॥ २१३ ॥

अब टीप देनेकी रीति कहते हैं—आफ्ताबका जो खेलनेवाला है उसके सीदे बाजूके आदमीको निर्बली कहते जेरदस्त कहै डावे तरफके आदमीको सबल कहते जबरदस्त कहै अब जेरदस्तके तरफसे सर आवें तो उसका जो पन्ना पडा होवे उससे सबल पन्नेसे टीप लेवे टीप कहते जिसकी सर आई होवे उसको एक दूसरा पत्ता ज्यादा ऐसे दो पत्ते डालै ॥ २१३ ॥

सबलादागते खेलेहुकमीटीपउच्यते ॥
सरंविनानिर्बलानिदलानि विनियोजयेत् ॥ २१४ ॥

और जो जबरदस्तके तरफसे सर आवे तो हुक्मी टीप लेवे जैसा दहले बंदी बाजीका दहला एक्का बंदी बाजीका एक्का होवे तो टीप लेवे, नहीं तो हुक्मी पत्ता डालके लेव सरविना खरची पत्ते डालते जावे ॥ २१४ ॥

क्रीडारंभेचपत्राणांसमूहत्रितयेत्रिभिः ॥
स्पर्शः कार्यः प्रयत्नेनयोधिकः सतुपत्रदः ॥ २१५ ॥

अब पत्ते बांटनेका निर्णय कहते हैं–पहिले खेलते समय छान्नवे पत्तों को खूब घोलके तीन थेकड़ी करके रक्खै और तीनों जने अपनी अपनी थेकडी को हाथ लगाके पत्ता उचलके देखैं जिसके हाथमें सबल पत्ता आवे उससे बांटना यह रीत पहिले खेलकी जानै पश्चात् यथाक्रमसे बांटते जावै ॥ २१५ ॥

एवंक्रीडामया प्रोक्ताचंगकांचनसंज्ञका ॥
रसिकानांविनोदायद्वितीयांप्रवदाम्यहम् ॥ २१६ ॥
इति क्रीडाकौशल्याध्यायेचंगकांचनक्रीडावर्णनम् ॥

ऐसा रसिकजनोंके आनंदके वास्ते चंग कांचनका खेल मैंने वर्णन किया, अब आगे दूसरा अंग्रेजी पत्तोंका खेल कहता हूं ॥ २१६ ॥

इति चंगकांचनका खेल संपूर्ण ॥

लालबदाम.	एक्का	दूवा	तीया	चौवा	पंजा	छक्का	सत्ता	अठ्ठा	नव्वा	दहेला	वजीर	राणी	राजा
इस्पिक.	एक्का	दूवा	तीया	चौवा	पंजा	छक्का	सत्ता	अठ्ठा	नव्वा	दहेला	वजीर	राणी	राजा
चौकट.	एक्का	दूवा	तीया	चौवा	पंजा	छक्का	सत्ता	अठ्ठा	नव्वा	दहेला	वजीर	राणी	राजा
फुलीबदाम.	एक्का	दूवा	तीया	चौवा	पंजा	छक्का	सत्ता	अठ्ठा	नव्वा	दहेला	वजीर	राणी	राजा

अथ हूणदेशपत्रक्रीडामाह।

अतःपरंप्रवक्ष्यामिहूणदेशसमुद्भवाम् ॥
क्रीडांवर्णचतुष्काढ्यांद्विपंचाशद्दलान्विताम् ॥ २१७ ॥

अब अंग्रेजी पत्ते खेलनेकी रीति कहते हैं-इस खेलमें रंग चार और पत्ते बावन हैं ॥ २१७ ॥

प्रत्येकवर्णेपत्राणित्रयोदशमितानिच ॥
सर्वपत्राणिश्वेतानिचिन्हेवर्णप्रपूरयेत् ॥ २१८ ॥

एकेक रंगके पत्ते तेरह तेरह हैं पत्तोंका रंग सफेद रक्खे बीचके चिह्नोंमें रंग भरै ॥ २१८ ॥

अथवर्णचतुष्कानांनामानिप्रवदाम्यहम् ॥
रक्तकृष्णेबदामेद्वेह्यारक्तंचतुरस्रकम् ॥ २१९ ॥

अब चार रंगके नाम कहते हैं. लालबदाम एक, कालीबदाम दूसरी, तीसरी चौखटलाल ॥ २१९ ॥

पुष्पाग्र्यंकृष्णवर्णचचिन्हवर्णावुदाहृतौ ॥
आदौराजाचतत्पत्नीप्रधानश्चैकसंज्ञकः ॥ २२० ॥

चौथा फुलावर काला, ऐसे चार रंगके नाम कहे हैं. अब पत्तोंमें चिह्नोंका वर्णन करते हैं. चारों रंगमें राजा और राणी और वजीर एकी सरीखे निकालै परंतु उसमें अपने अपने रंगका एक चिह्न मुखके सामने रक्खै अब बल निर्बलका लक्षण कहते हैं-राजासे राणी बलहीन, राणीसे वजीर, वजीरसे एक्का ॥ २२० ॥

दशमादिद्वितीयांतंप्रत्येकंनिर्बलंस्मृतम् ॥
क्रीडारंभेहस्तमध्येयद्वर्णोदृश्यतेतदा ॥ २२१ ॥

एक्केसे दहेला, दहेलेसे नौवा, नौवेसे अट्ठा, अट्ठेसे सत्ता, सत्तेसे छक्का छक्केसे पंजा, पंजेसे चौवा, चौव्वेसे तीया, तीयेसे दूवा निर्बल ऐसा जानना चाहिये अब खेलनेके पहिले बाजीका पत्ता उठाते समय पहिले जो रंग हाथमें आवे वह रंग ॥ २२१ ॥

सएवबलवाञ्ज्ञेयःसर्वपत्रोपरिस्थितः ॥
त्रिभिःक्रीडाप्रकर्तव्याचतुर्भिर्वाविशेषतः ॥ २२२ ॥

उस खेलमें सब पत्तोंके ऊपर बलवान् जानै उसको हुकमी रंग कहते हैं. दूसरी बाजीके पत्ते बरोबर नलगे होवें और हुकमी पत्ता बहुत होवें तो वह सब बाजी हुकूमी पत्तोंसे जीत लेने यह क्रीडा तीन आदमीसे खेली जाती है अथवा चार आदमीसे ॥ २२२ ॥

नद्वाभ्यांनाधिकैस्तत्ररसोत्पत्तिर्नजायते ॥
चतुरस्त्राणिपत्राणिकिंचिद्दीर्घाणिकारयेत् ॥ २२३ ॥

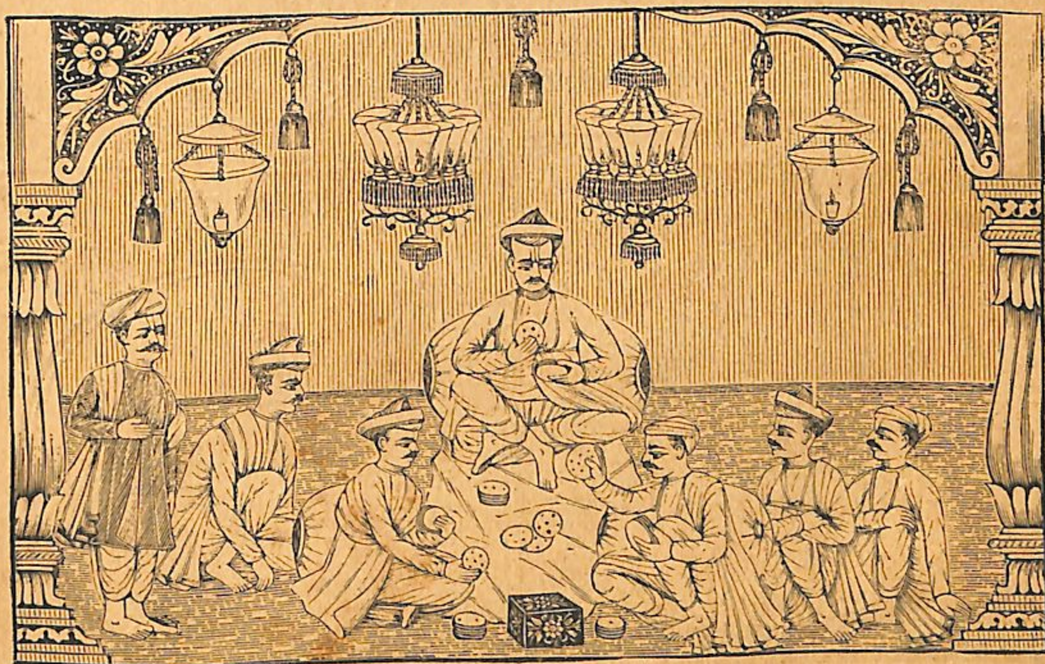
दो आदमी अथवा ज्यादा आदमीसे नहीं खेली जाती और जो कभी खेलेंतो क्रीडाका आनंद नहीं होनेका. सब पत्तोंका आकार चौड़ा कुछ थोडा लंबा करै ॥ २२३ ॥

खेलनंचंगवत्कार्यमितिसर्वंप्रकीर्त्तितम् ॥
रसिकानांविनोदायतृतीयांप्रवदाम्यहम् ॥ २२४ ॥
इतिक्रीडाकौशल्याध्यायेहूणदेशीयपत्रक्रीडावर्णनम् ॥

अब इसके खेलनेकी जो रीत है सो चंग कांचन सरीखी जाननी. परंतु यहां इतना विशेष है कि इस खेलकी दहलेबंदी बाजी है लेकिन एक्का सबसे बडा है सो जानना. ऐसा यह खेलका निर्णय रसिक लोगोंके वास्ते वर्णन किया. अब आगे तीसरी गंजीफाकी क्रीडा कहते हैं ॥ २२४ ॥

इतिअंग्रेजी पत्तोंका खेल संपूर्ण भया ॥

अथ दशावतारी खेलमाह।



दशावतारी गंजीफाकी एक्कावंदी बाजी मच्छकी रंग पहिला पत्तोंमें रंग लाल ।

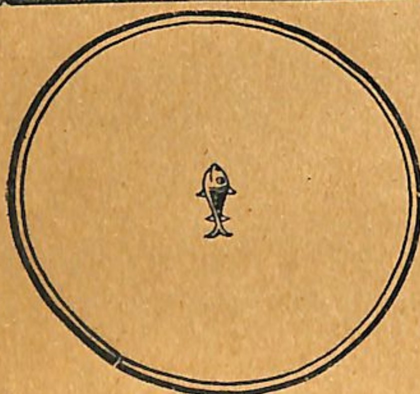
मच्छका मीर.



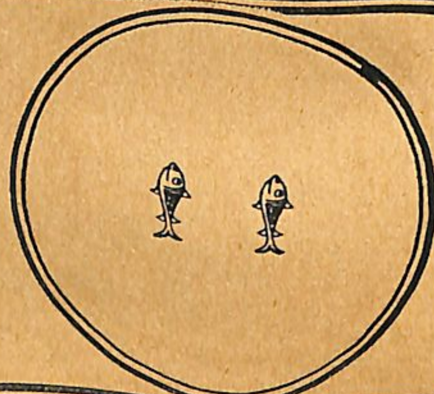
मच्छका वजीर.



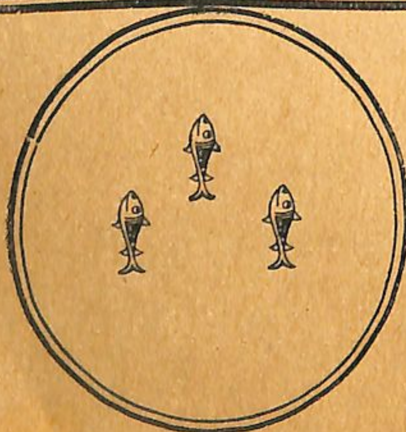
मच्छका एक्का.



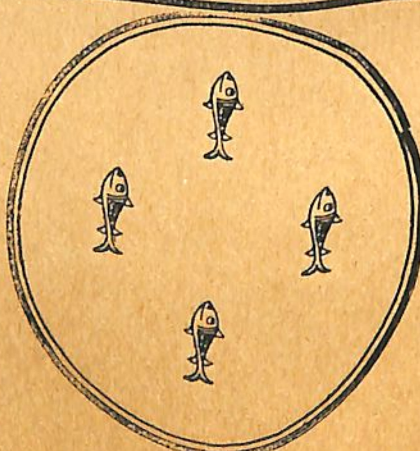
मच्छका दूवा.



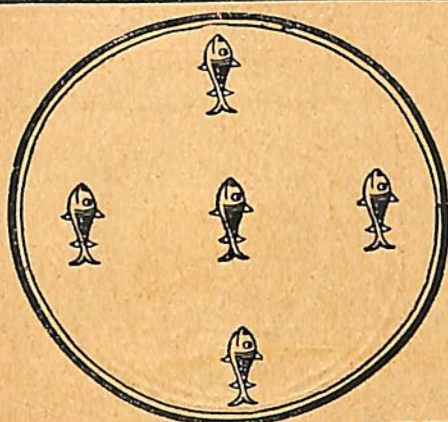
मच्छका तीया.



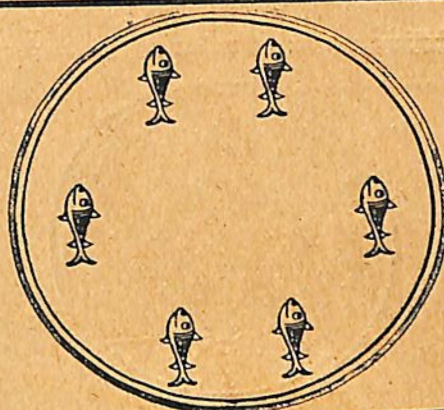
मच्छका चौवा.



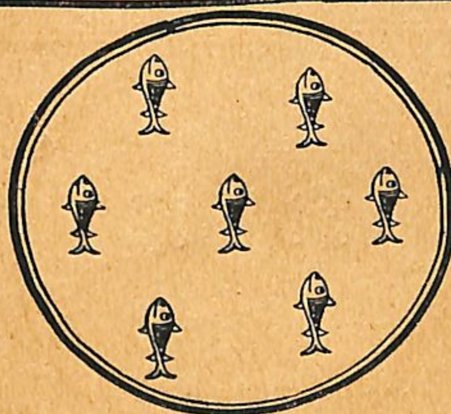
मच्छका पंजा.



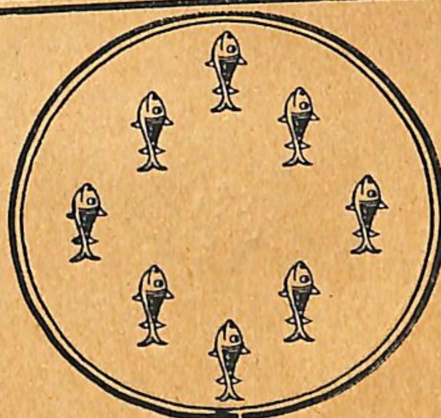
मच्छका छक्का.



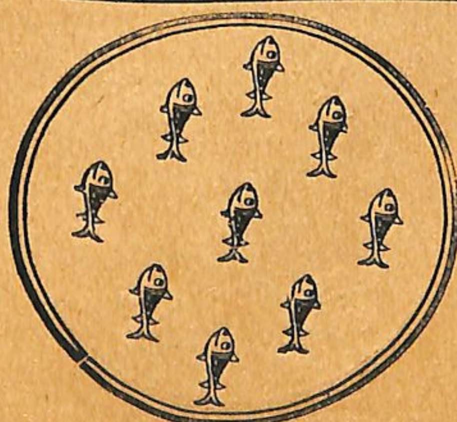
मच्छका सत्ता.



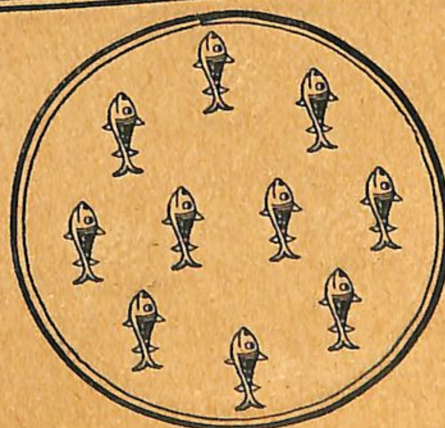
मच्छका अट्ठा.



मच्छका नेहेला.



मच्छका देहेला.



दशावतारी गंजीफाकी एक्कावंदी बाजी कूर्म्मकी रंग दूसरापत्तोंमें रंग लाल.

कच्छका मीर.



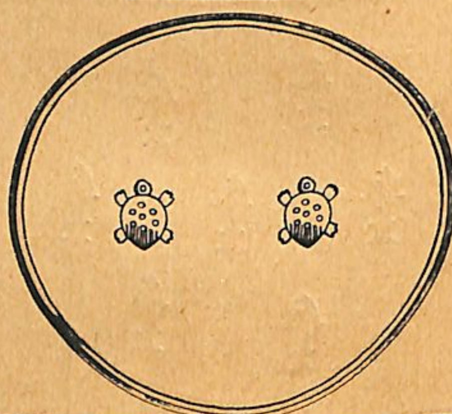
कच्छका वजीर.



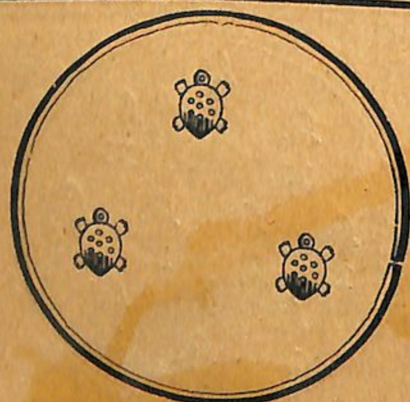
कच्छका एक्का.



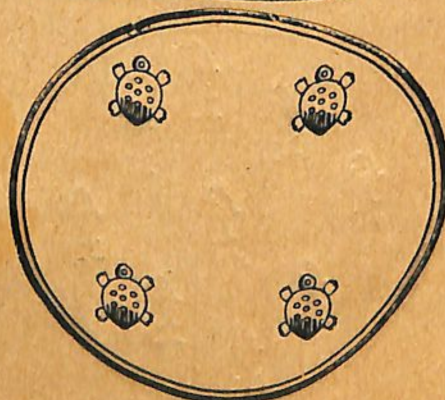
कच्छका दूवा.



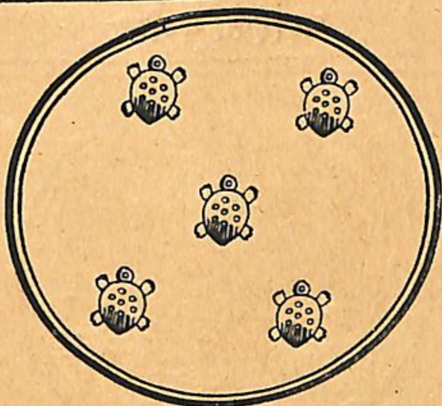
कच्छका तीया.



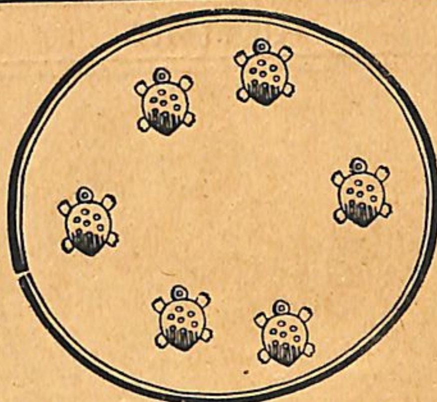
कच्छका चौवा.



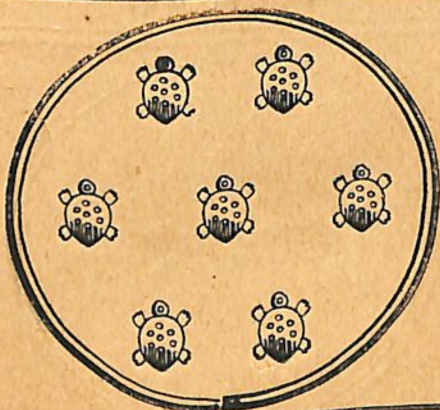
कच्छका पंजा.



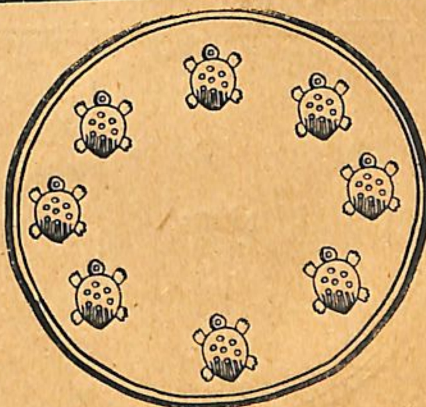
कच्छका छक्का.



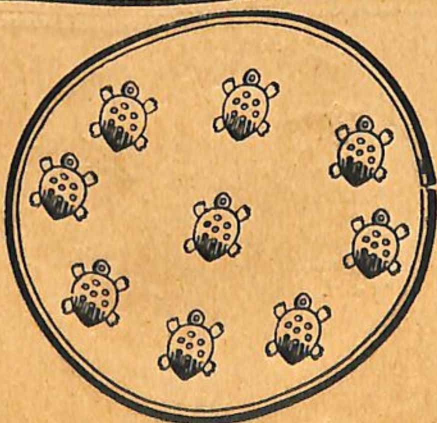
कच्छका सत्ता.



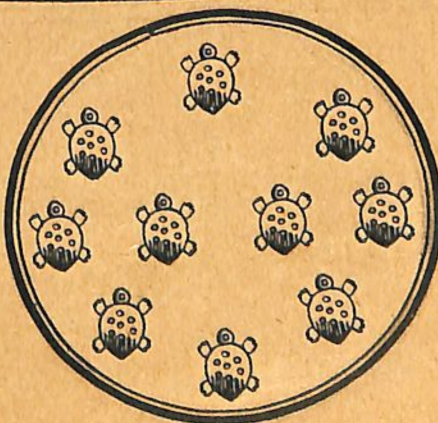
कच्छका अट्ठा.



कच्छका नेहेला.



कच्छका देहेला.



दशावतारी गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी वराहकी रंग तीसरापत्तोंमेंरंगरुपेरी.

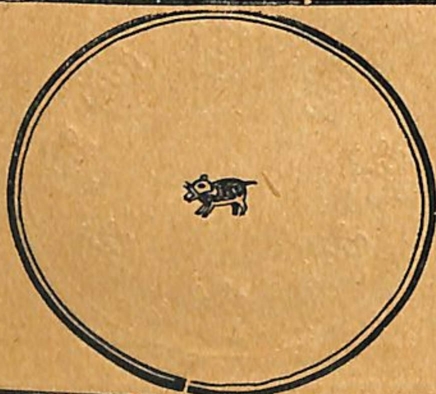
वराहका मीर.



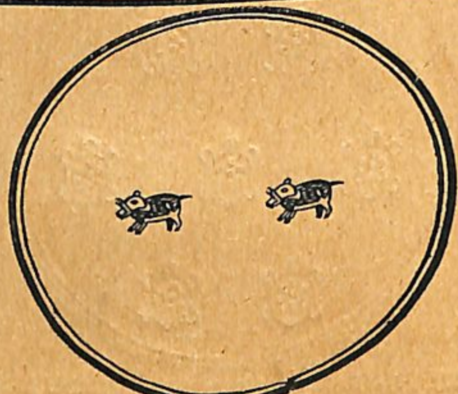
वराहका वजीर.



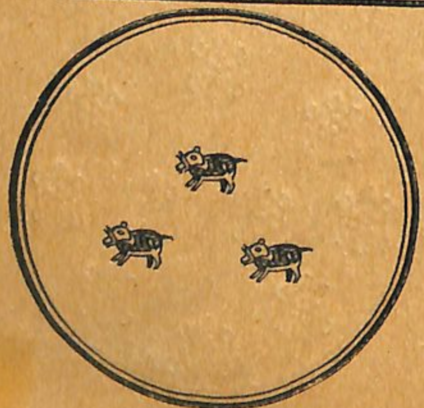
वराहका एक्का.



वराहका दूवा.



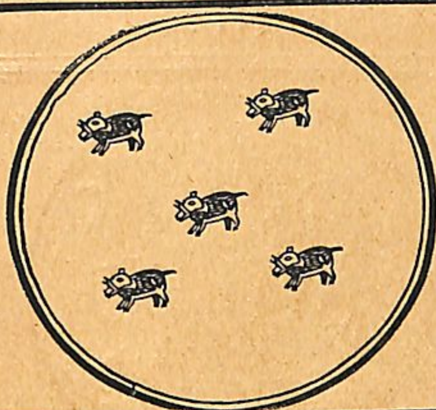
वराहका तीया.



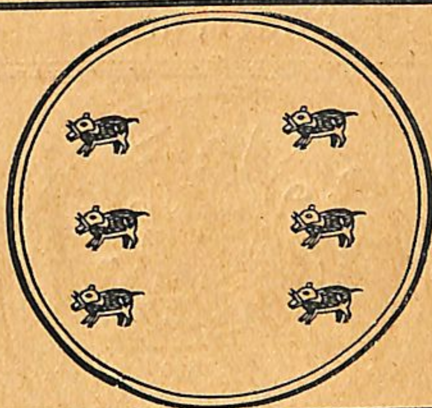
वराहका चौवा.



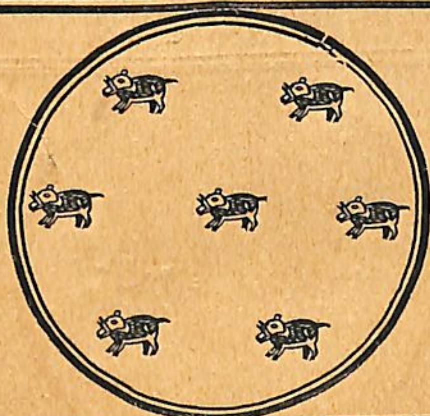
वराहका पंजा.



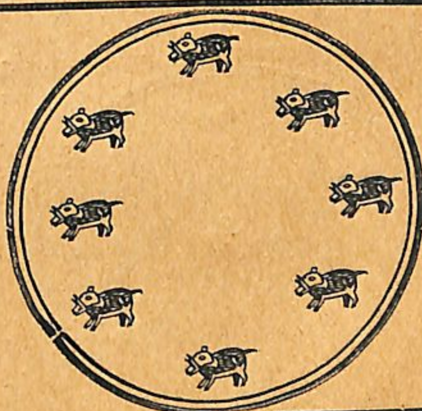
वराहका छक्का.



वराहका सत्ता.



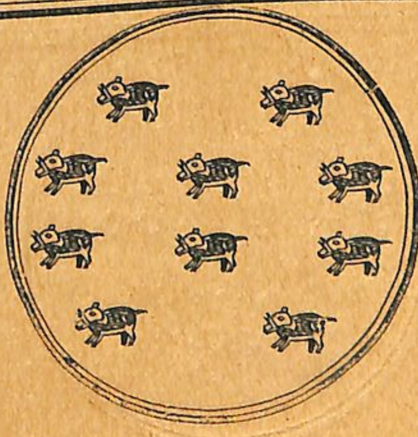
वराहका अठ्ठा.



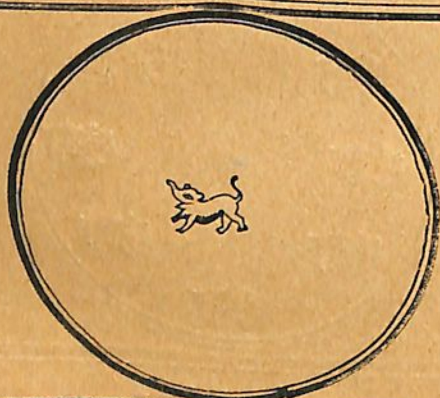
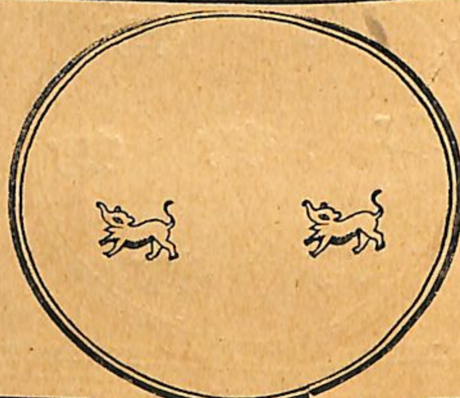
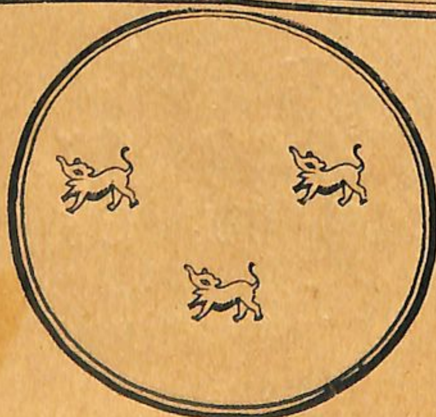
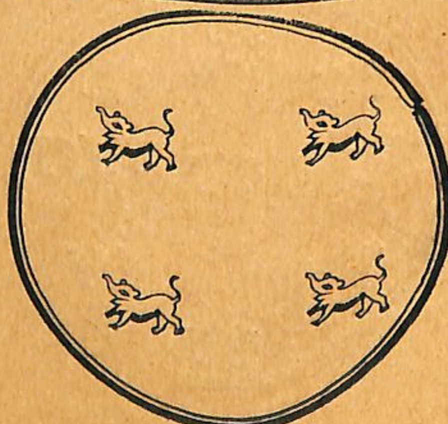
वराहका नेहेला.



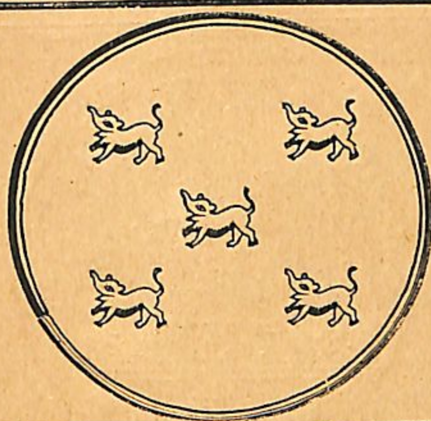
वराहका देहेला.



दशावतारी गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी नरसिंहकी रंग चौथापत्तोंमें रंग लाखी.

नरसिंहका मीर.	नरसिंहका वजीर.
	
नरसिंहका एक्का.	नरसिंहका दूवा.
	
नरसिंहका तीया.	नरसिंहका चौवा.
	

नरसिंहका पंजा.



नरसिंहका छक्का.



नरसिंहका सत्ता.



नरसिंहका अट्ठा.



नरसिंहका नेहेला.



नरसिंहका देहेला.



दशावतारी गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी वामनकी रंगपांचवा पत्तोंमेंरंग लाखी.

वामनका मीर.



वामनका वजीर.



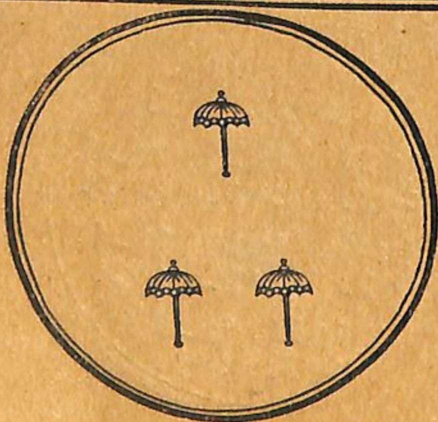
वामनका एक्का.



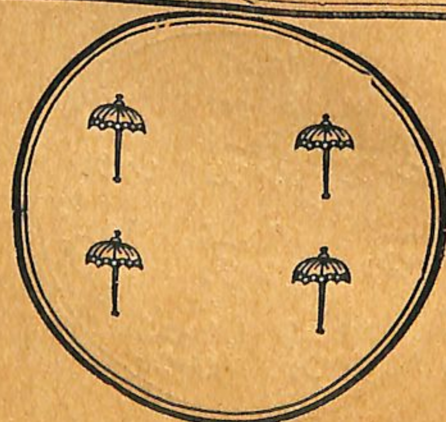
वामनका दूवा.



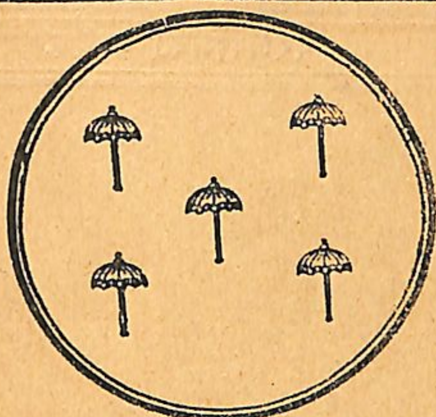
वामनका तीया.



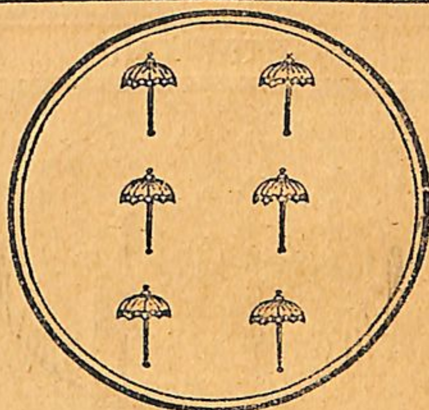
वामनका चौवा.



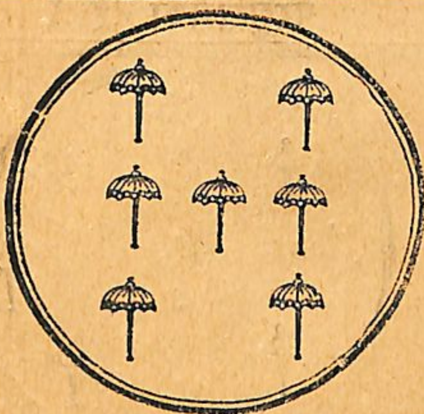
वामनका पंजा.



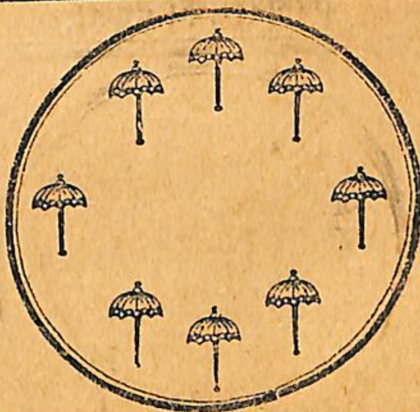
वामनका छक्का.



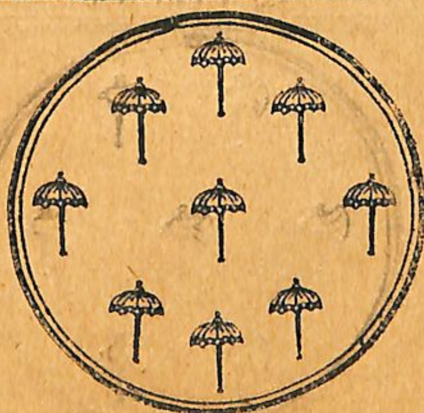
वामनका सत्ता.



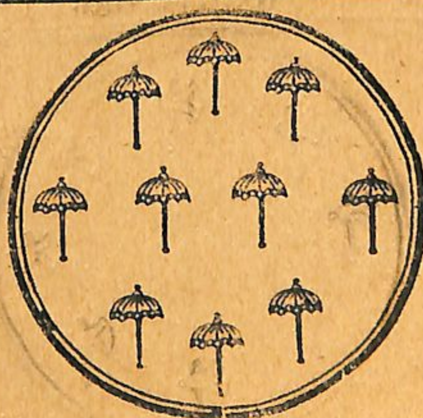
वामनका अट्ठा.



वामनका नेहला.



वामनका देहेला.



दशावतारी गंजीफा देहेलावंदी बाजी परशुरामकी रंगछट्टापत्तोंमें रंग लाल।

परशुरामका मीर.



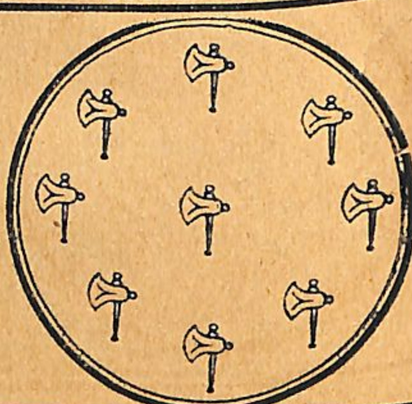
परशुरामका वजीर.



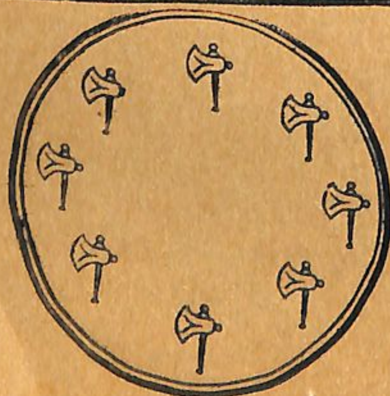
परशुरामका देहेला.



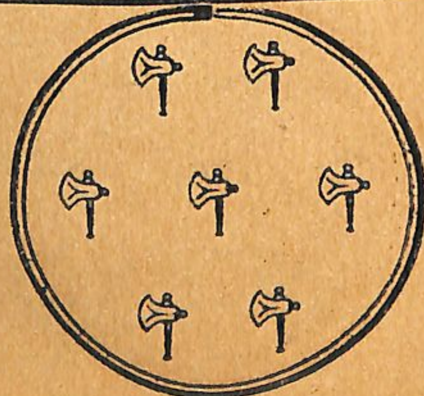
परशुरामका नेहेला.



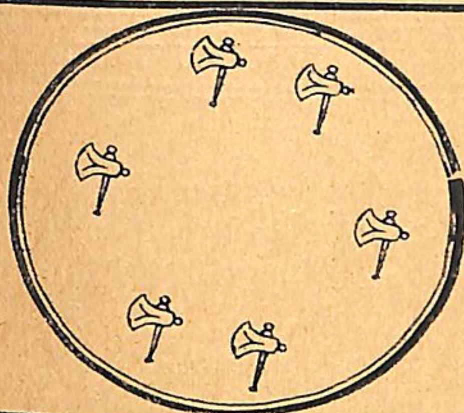
परशुरामका अट्ठा.



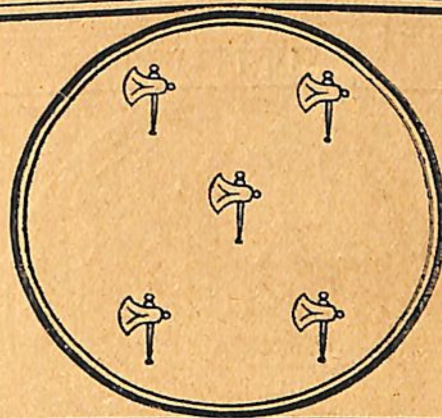
परशुरामका सत्त.



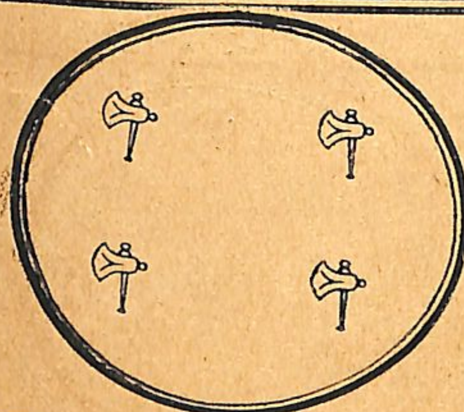
परशुरामका छक्का.



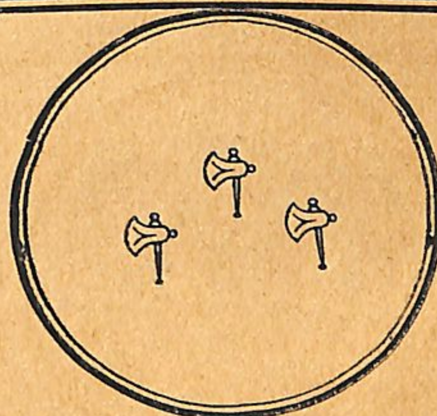
पशुररामका पंजा.



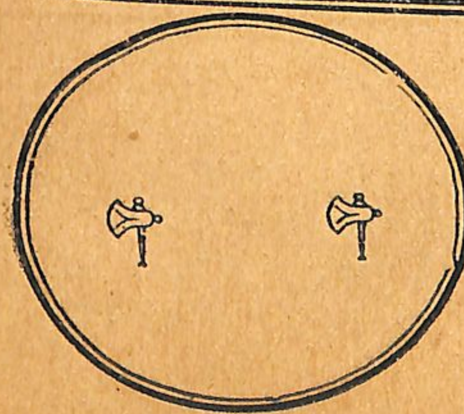
परशुरामका चौवा.



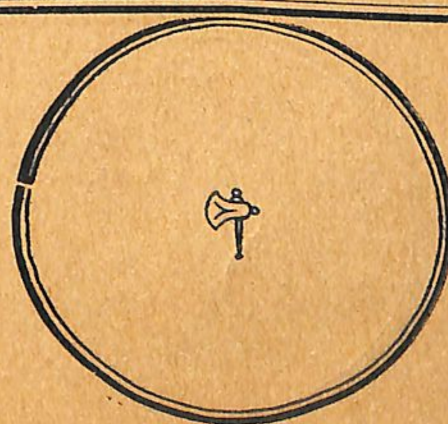
परशुरामका तीया.



परशुरामका दूवा.



परशुरामका एक्का.



दशावतारी गंजीफाकी देहेलेबंदी बाजीरामचंद्रकी रंग सातवापत्तोंमें रंगसिंगरफीलाल ।

रामचंद्रका मीर.



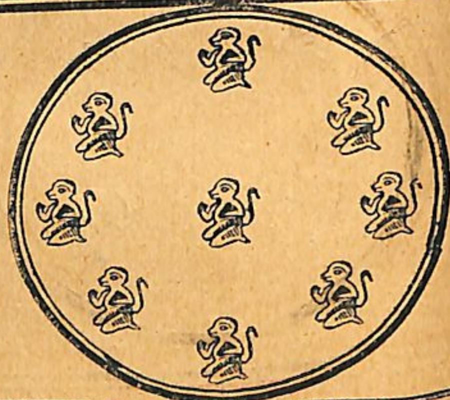
रामचंद्रका वजीर.



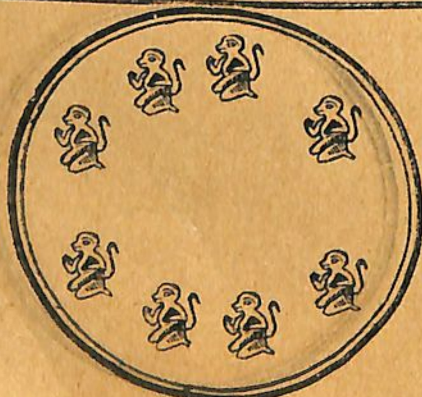
रामचंद्रका देहेला



रामचंद्रका नेहेला



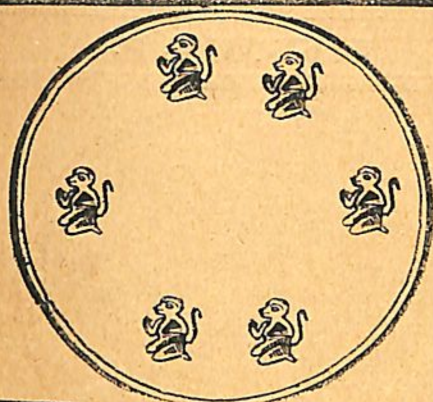
रामचंद्रका अट्ठा.



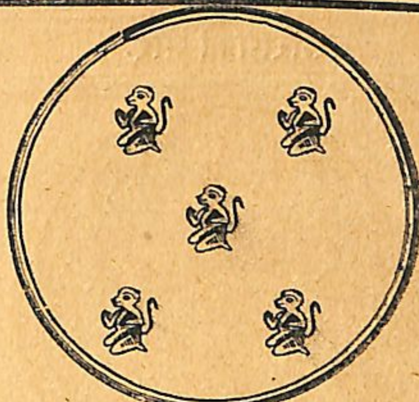
रामचंद्रका सत्ता.



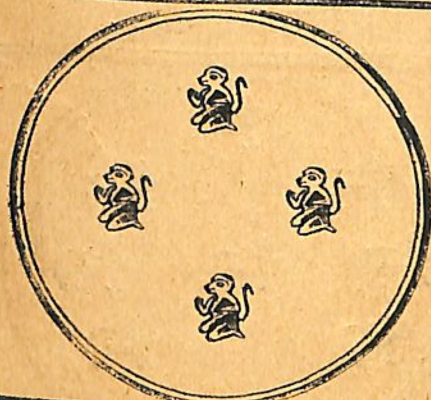
रामचंद्रका छक्का



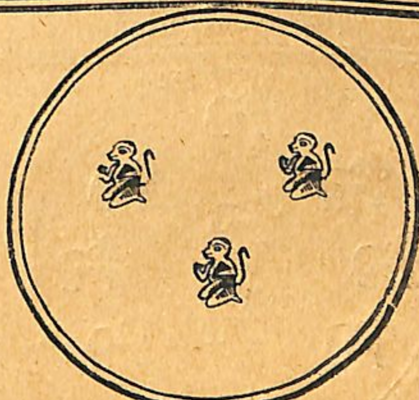
रामचंद्रका पंजा.



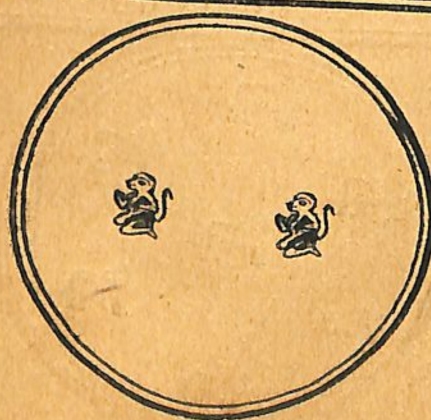
रामचंद्रका चौवा.



रामचंद्रका तीया.



रामचंद्रका दूवा.



रामचंद्रका एक्का



दशावतारी गंजीफाकी देहेलेबंदी बाजी बलीरामकी रंग आठवा पत्तोंमें रंग हरालाखी ।

बलीरामका मीर.



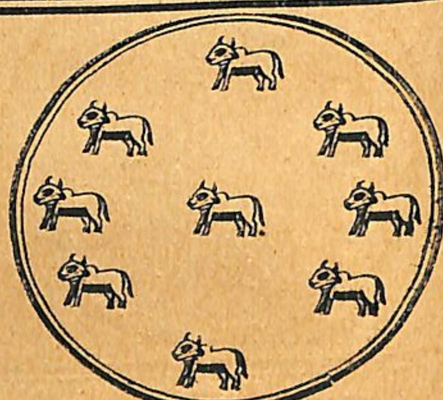
बलीरामका वजीर.



बलीरामका देहेला



बलीरामका नेहेला.



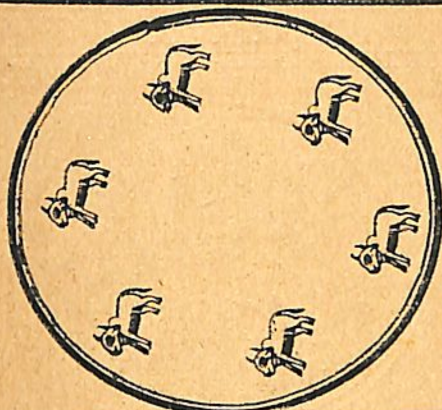
बलीरामका अट्ठा.



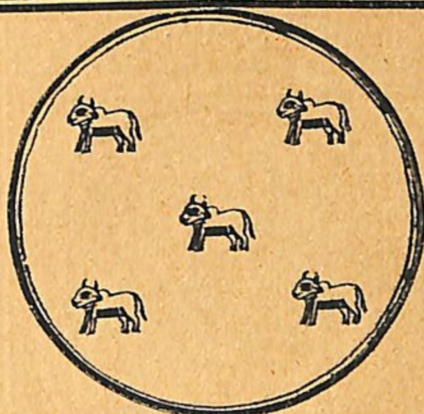
बलीरामका सत्ता.



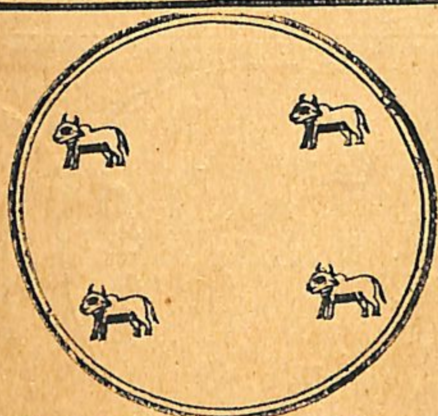
बलीरामका छक्का.



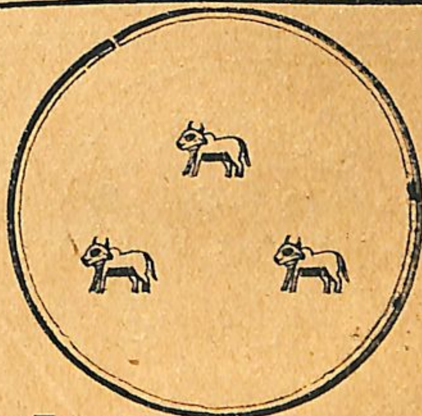
बलीरामका पंजा.



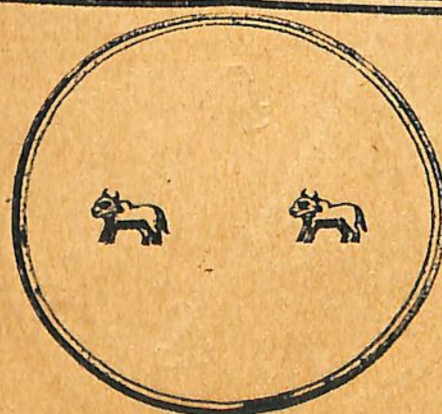
बलीरामका चौवा.



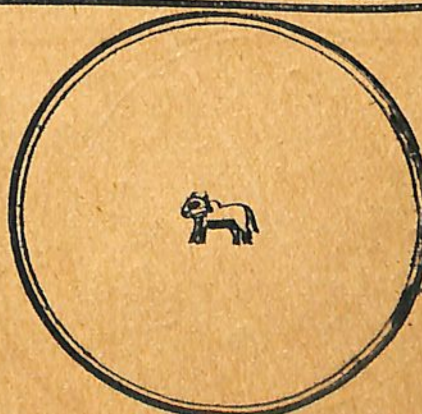
बलीरामका तीया.



बलीरामका दूवा.



बलीरामका एक्का.



दशावतारी गंजीफाकी देहेलेवंदीबाजी बौद्धकी रंग नवमा पत्तोंमें रंग लाखी

बौद्धका मीर.



बौद्धका वजीर



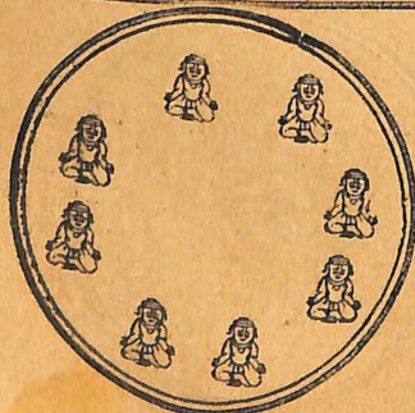
बौद्धका देहेला



बौद्धका नेहेला.



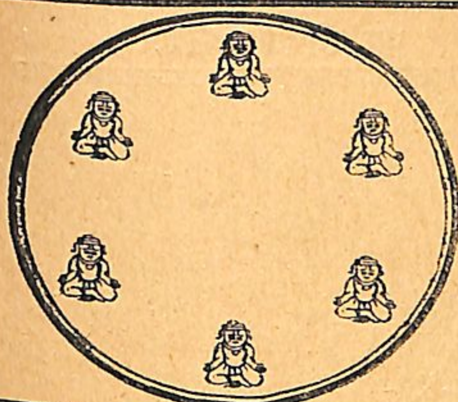
बौद्धका अठ्ठा.



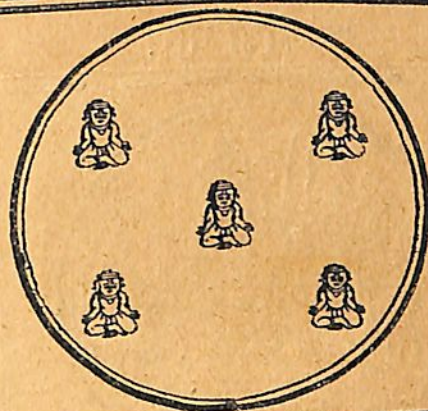
बौद्धका सत्ता.



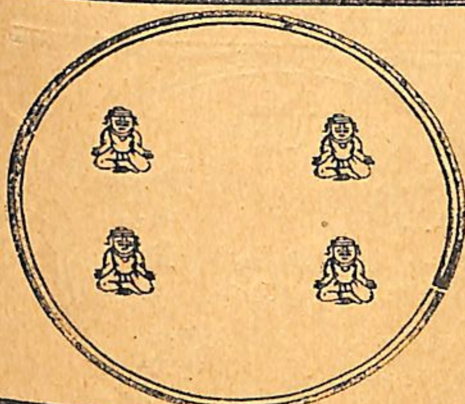
बौद्धका छक्का.



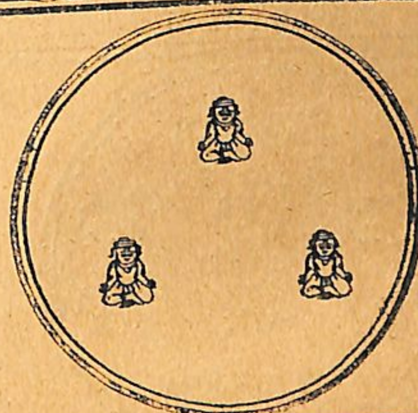
बौद्धका पंजा.



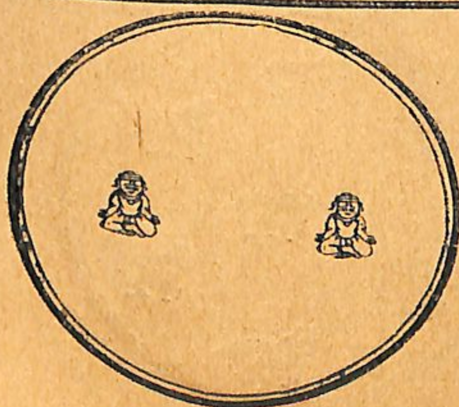
बौद्धका चौवा.



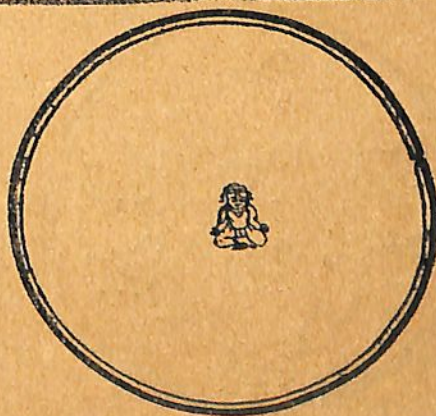
बौद्धका तीया.



बौद्धका दूवा.



बौद्धका एक्का



दशावतारी गंजीफाकी देहलेबंदी बाजीकलंकीकी रंग दसवां पत्तोंमें रंग काला ।

कलंकीका मीर.



कलंकीका वजीर.



कलंकीका देहेला.



कलंकीका नेहेला.



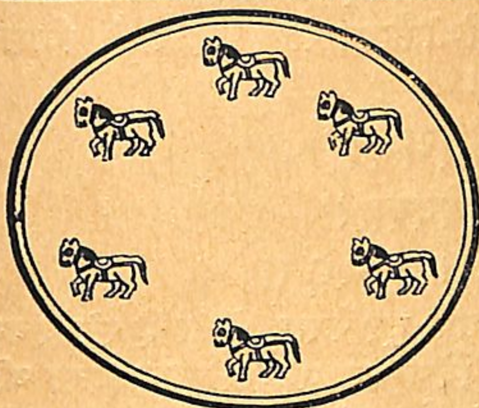
कलंकीका अट्ठा.



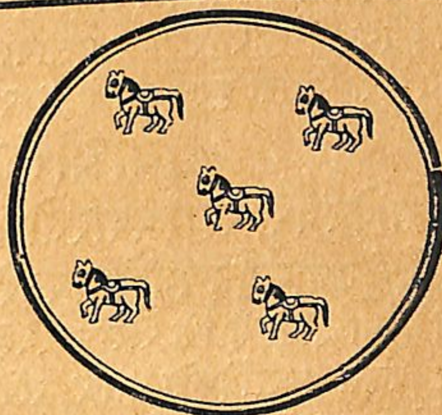
कलंकीका सत्ता.



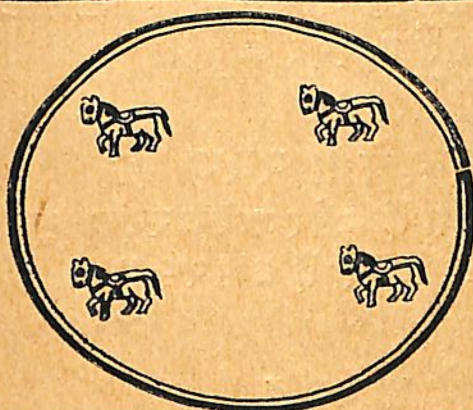
कलंकीका छक्का.



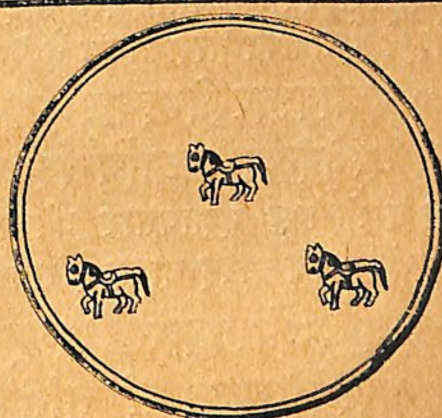
कलंकीका पंजा.



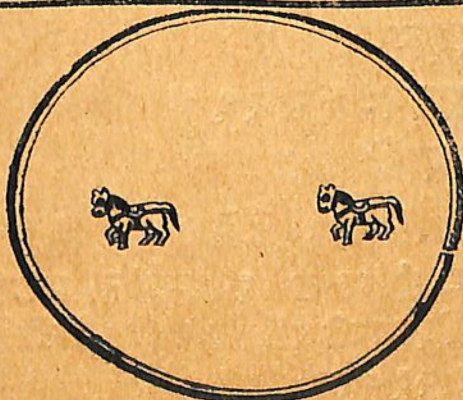
कलंकीका चौवा.



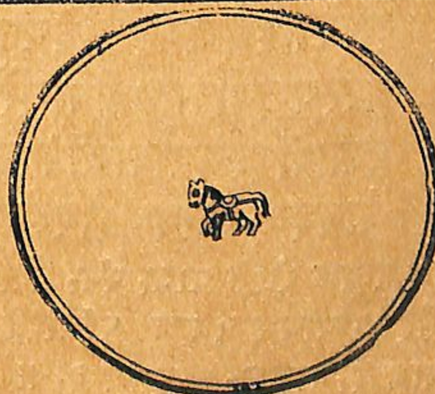
कलंकीका तीया.



कलंकीका दूवा.



कलंकीका एक्का.



अतःपरंप्रवक्ष्यामिविष्णुस्मरणखेलनम् ॥
यस्यखेलनमात्रेणनाशमायातिपातकम् ॥ २२५ ॥

अब आगे विष्णु स्मरणरूप दशावतारी गंजीफाका खेल कहता हूं. जिसके खेलने मात्रसे पातक दूर होता है ॥ २२५ ॥

तथाचोक्तंश्रीभागवते

सांकेत्यंपारिहास्यंवास्तोभंहेलनमेववा ॥
वैकुंठनामगृहणमशेषाघहरंविदुः ॥ २२६ ॥

यहां शंका होती है कि खेल करनेसे पातक दूर कैसा होता है सो क्चन सांकेत्य कहते पुत्रादिकके नाम संकेतसे विष्णुका नाम लेना अथवा थट्ठे विनोदमें अथवा स्तोभ कहते गीत आलाप पूर्ण करनेमें अथवा हेलन कहते तुम्हारे विष्णुने वैसा किया, हमारे शिवने ऐसा किया, तुम्हारा मत्स्य हार गया, हमारा वराह जीता, ऐसे कोई भी निमित्तसे जो भगवत् का नाम लेवे सो संपूर्ण पातकका नाशकारक है ऐसा कहते हैं ॥ २२६ ॥

दशावतारक्रीडायादशवर्णाःप्रकीर्तिताः ॥
प्रत्येकंचार्कपत्राणिविंशोत्तरशतान्यपि ॥ २२७ ॥

इस वास्ते इस दशावतार क्रीडामें रंग दश हैं और प्रत्येक रंगके सूर्यके समान गोल पत्ते बारह बारह हैं सब पत्ते एकसौ वीस हैं ॥ २२७ ॥

त्रिभिःक्रीडाप्रकर्तव्यान्यूनाधिकनरैर्नहि ॥
परस्परंस्वपत्राणांवृत्तांतंकथयेन्नहि ॥ २२८ ॥

यह क्रीडा तीन आदमियोंसे खेली जाती है कम जास्तीसे नहीं. अपने अपने पत्तोंका वृत्तान्त दूसरेके सामने कहै नहीं ॥ २२८ ॥

प्रत्येकवर्णनामानिचिन्हानिचवदाम्यहम् ॥
मत्स्यकूर्मौवराहश्चनारसिंहोथवामनः ॥ २२९ ॥
एक्काबंदिस्मृताबाजीपंचानांप्रथमाहिसा ॥
जामदग्न्योरामचंद्रोबलरामस्तृतीयकः ॥ २३० ॥

अब प्रत्येक रंगके नाम, रंग, चिह्न कहता हूं मच्छ १, कूर्म २, वराह ३ नारसिंह ४, वामन ५ इन पांचोंकी एक्काबंदीबाजी पहिली कही जाती है ॥ परशुराम १, राम २, बलराम ३, ॥ २२९ । २३० ॥

बौद्धःकल्कीतिपंचानांदिग्बंदीसाद्वितीयका ॥
दशवर्णीयपत्रेषुराजासिंहासनस्थितः ॥ २३१ ॥
बौद्ध ४, कलंकी ५, इन पांचोंकी देहलाबंदी दूसरी बाजी कही जाती है अब दशरंगके जो राजा हैं उनको सिंहासनपै बिठावै ॥ २३१ ॥

प्रधानश्चाश्वसंरूढःलेखनीयःस्वचिह्नयुक् ॥
एकादिदशपर्यंतंक्रमवृध्योत्तरोत्तरं ॥ २३२ ॥
और प्रधानोंको घोडोंके ऊपर बिठावै अपने अपने अवतारका चिह्न करै और एक्केसे दहले तक क्रमवृद्धिसे ॥ २३२ ॥

स्वस्वचिन्हानिकुर्वीतशतपत्रेषुबुद्धिमान् ॥
मत्स्येमत्स्यंप्रकुर्वीतकूर्मेकच्छपमादिशेत् ॥ २३३ ॥
अपने अपने चिह्न सौ पत्रके ऊपर करै जैसे मच्छके खेलमें मच्छ करै कूर्मके खलेंमे कछुवा निकालै ॥ २३३ ॥

वाराहोसूकरंविद्यान्नारसिंहेतुसिंहकम् ॥
छत्राकारंवामनेतुपरशुंजामदग्न्यके ॥ २३४ ॥
वराहके खेलमें डूकर निकालै नारसिंहके खेलमें सिंह निकालै वामनके खेलमें छत्र अथवा कमंडलु निकालै परशुरामके खेलमेंफरस शस्त्र निकालै १३४

रामेवानरचिन्हानिगौचिन्हंबलरामके ॥
बौद्धेबौद्धस्वरूपाणिकल्किखेलेऽश्वाचिन्हकम् ॥ २३५ ॥
रामके खेलमें वानर अथवा धनुर्बाण निकालै बलरामके खेलमें गायोंका स्वरूप अथवा गेंद निकालै बौद्धके खेलमें बुद्धावतारस्वरूप अथवा शंख निकालै कल्किके खेलमें घोडेका स्वरूप अथवा तरवार निकालै ॥ २३५ ॥

दिवसेखेलनेराजारामचंद्रःप्रकीर्तितः ॥
रात्रिक्रीडनवेलायांबलरामोनृपःस्मृतः ॥ २३६ ॥
दिनको खेले तो राजा रामचंद्र जानना रात्रिके खेलमें राजा बलराम जानना ॥ २३६ ॥

तमेवकृष्णमित्यन्येप्रवदंतिमनीषिणः ॥
चंगकांचनवत्सर्वंखेलनंचात्रनिर्दिशेत् ॥ २३७ ॥

कितनेक लोग बलरामके ठिकाने पर कृष्ण कहते हैं. अब इस दशावतारका खेल कैसे खेले कहे, तो जैसा पहिले चंगकांचनके खेलमें मार्ग बताया है उसी रीतिसे यहांभी मार्ग जानना चाहिये ॥ २३७ ॥

तस्माद्विशेषंयत्किंचित्तत्स्पष्टंक्रीयतेमया ॥
नृपखेलनकस्तस्यदक्षिणेसबलःस्मृतः ॥ २३८ ॥

चंगकांचनके खेलसे यहां इतना जास्ती है कि दुकलु खेलमें डावी तरफ सबल और सीधि बाजू निर्बल ऐसा मतांतर है बाकी राजाके खेलमें सीधी भी बाजू सबल कहा है ॥ २३८ ॥

वामभागेनिर्बलश्चटीपमार्गस्तुपूर्ववत् ॥
अत्रापिनियमास्संतिखेलनेदशसंख्यया ॥ २३९ ॥

डावींतरफ निर्बल कहा है और टीप कैसी लेना उसका भेद चंगकांचन खेलमें कहा है उसीरीतिसे जानना चाहिये और इस खेलमें दश तरहके नियम हैं सो आगे कलमबंदीसे कहते हैं ॥ २३९ ॥

नियमःप्रथमोमीरह्युतारिद्वितियःस्मृतः ॥
याचनंद्विविधंप्रोक्तंदुकलुसंज्ञकस्ततः ॥ २४० ॥

इति श्रीहरीकृष्णविनिर्मितेबृहज्ज्योतिषार्णवे षष्ठे मिश्रस्कंधे क्रीडाकौशल्याध्याये त्रिविधपत्रक्रीडावर्णनं नाम प्रकरणम् ॥ ४ ॥

अब दश प्रकारके जो नियम हैं उनमें मुख्य चार हैं उनके नाम मीरखेल १ उतारीखेल २, मागनीकाखेल ३, दुकलुखेल आदि आगेस्पष्ट है ॥ २४० ॥

अथ दशावतारी खेलके नियम १० कहते हैं.

१ मीरकी सर दिये बिना दूसरे पत्तोंका खेल होतानहीं है.
२ पहिलेकी उतारी हुये बिना औंधे पत्तोंका खेल होता नहीं है.
३ इस खेलमें जो पत्ते हारेगा वह उसने पहिले जबरदस्तको पत्ते देना पीछे जेरदस्तको देना पत्त कितनेभी देना हों हारने वालेके पाससे चौंतीस पत्ततक लेना जादा लेनेके रहें तो वो खेल पूरा करके नवा खेल शुरू करना पीछेका लेना देना रखना नहीं.

४ खेलके आखिरके ऊपर तीनों आदमीके पास एकही रंगके पत्ते हाथमें होवें तो ओ बाजीखेल की पूरी भई लेना देना पीछेका रखना नहीं परंतु जिस आदमीको पत्ते दोनोंके ऊपर अगर एकके ऊपर लेनेके होवें और उसके पास बलवान् पत्ता होवे देनोंके पास वही रंगका निर्बल पत्ता होवे तो बाजी पूरी नहीं भई और देनेवालेके पास वही रंगका सबल पत्ता होवे तौ बाजी पूरी भई.

५ दुकलु खेलका निर्णय ऐसा है कि बाजी लगी हुई होवे राजा प्रधान एक्का अथवा दहेलेसे लेके बरोबर बाजी होवे तो वो पत्ते वमूल करलनेको दुकलु खेल कहते हैं.

६ उतारी खेलका निर्णय सर देनेकुं अपने पास उतरने सरीखा दूसरा पत्ता न होवे तो मीर उतरके और दूसरेभी उतरना उसको उतारी खेल कहते हैं.

७ मांगनीका खेलका निर्णय उतारीका खेल हुवे बाद उसी अदमीने अपने हाथमें औंधे पत्ते लेके सामनेवालेको कहना "मांगो" तब वह ऐसा मांगे कि दो जायके या पाँच जायके एक पत्ता छोडो तब वह उस पत्तेको बीचमें डाले पीछे उस पत्तेसे जिसने सबल पत्ता डाला वह लेजावे निर्बल डाले तो वही लेजावे.

८ मांगनी खेलका दूसरा भेद ऐसा है कि कोईभी रंगके पत्ते अपनेको हुकमी करना होवें और उस रंगमेंके बीच बीचके पत्ते सामनेवालेके पास होवें तो एक हलका पत्ता डालके कहे कि इस रंगका बंद सब डालदेव जब वह डाले तो आप कोईभी दूसरे रंगके पत्ते भरतीमें डालना.

९ नातवानी तवानी खेलका निर्णय. इस खेलका भेद महाराष्ट्र देशमें प्रसिद्ध है. अपने पास एक्का है दूसरेके पास दूवा है और तीसरेके पास तीया है तो तीये वाला एक्के वालेको पहिले सर देवे उस्को नातवानी कहते हैं और दूसरी वार दूवेको सर देवे उसको तवानी कहते हैं. दहले बंदीको उलटा जानना

१० हरदू खेलका भेद कहते हैं. अपने पास तीया है. दूसरे आदमीके पास एक्का और दूवा है तो तीये वाला सर देवे उसको हरदू खेल कहते हैं. इति श्री तीन प्रकारका गंजीफेका खेल संपूर्ण भया प्रकरण ॥ ४ ॥

अथज्ञानपट्ट खेलनमाह

महाराष्ट्रेपुरायोगीज्ञानेश्वरमुनीश्वरः ॥
संसारतापदग्धानांकिंचिद्विश्रांतिहेतवे ॥ २४१ ॥
ज्ञानपट्टाभिधंखेलंनिर्ममेऽतिमनोहरं ॥
पंचाशीतिप्रकोष्ठानिसर्पाणांनवकंतथा ॥ २४२ ॥
सोपानद्वयसंयुक्तंद्व्यधिकैःखेलनंभवेत् ॥
कपर्दिकासप्तकेनसंख्याचोर्ध्वमुखास्मृता ॥ २४३ ॥
जन्मस्थानादिमोक्षांतंयथासंख्यंप्रपूरयेत् ॥
सोपानेनोर्ध्वगमनंसर्पतुंडादधस्थितिः ॥ २४४ ॥
सत्कर्मादूर्ध्वगमनंकुच्छितेऽहिमुखंस्मृतम् ॥
समाधियोगाद्वैकुंठमन्यथोर्ध्वभ्रमःस्मृतः ॥ २४५ ॥
इतिबृ०क्रीडाकौशल्याध्यायेज्ञानपट्टखेलनम् ॥

अब ज्ञानपट्ट खेल कहते हैं—यह खेल महाराष्ट्र देशमें ज्ञानेश्वर साधुने संसारतापसे दग्ध भये हुये लोगोंको विश्रांति होनेकेवास्ते ज्ञानचौपट बनाया. यह खेल दोसे किंवा चार जनोंसे खेलते बनता है. जितने खेलनेवाले होवें उतने रंगकी जुदी२ नरदां अथवा फलादि अन्य पदार्थ सब पहिले घरमें रक्खै पीछे हाथमें७ कौडी लेके जमीन पर दांव डालै. जितनी कौडियां सीधी गिरें उस संख्या मुताबिक दांव पडा ऐसा समझके खेलनेवाले अपने २ प्यादे संख्या मूजब अनुक्रमसे आगे आगे चलाते जावें जिस घरमें प्यादा रखनेका होवे उस घरमें जो सर्पका मुख होवे तो प्यादेको सर्पका पुच्छाग्र जहां होवे उस घरमें रक्खे. जैसा १४ वें घरमें रखनेका होवेतो पांचवेघरमें रक्खे इसप्रमाणसे १९।२२।२५।४२।७२ ।७३।७५।४०।५६। इन घरोंमें प्यादे आये तो अनुक्रमसे १८। १५।१२।११।२१।२४।१८।१३।८० घरोंमें रक्खे या ५६ वें घरसे प्यादा ८० वें वैकुंठ घरमें पहुँचा तब आगे जो एक दाँव पडातो मोक्ष घरमें जाता है एकसे जियादः पडे तो सीधे हाथपै ८४ पर्यंत घरगिनके देवे दाँव समाप्त न होवे तो पुनः ८० पर्यंत गिनते जावे पुनः जब ८० वें घरमें दाँव पूरा होके प्यादा वहांही रहा तो एक जब पडे तो मोक्षको गया नहीं तो पुनः ८० से ८४ पर्यंत ८४ से ८० पर्यंत भ्रमण करताहै. इस खेलमें उत्पन्न हुवा जीव

मोक्षको जाता है इस हेतु करके मोक्ष जानेको बीचमें कितने स्थान हैं यह सूचना की है- अविवेक १ द्वेष २ दुष्टमोह ३ ज्ञानमोह ४ अहंकार तामस ५ अहंकारराजस ६ क्रियाशक्ति ७ अहंकार ८ शिश्नभोग ९ इसमें आया तो महापातक १ क्रोध २ समुद्र ३ संसार ४ क्रोध ५ शून्य ६ सुखसंग ७ स्थूलदेह ८ हर्ष ९ इसमें आता है और जिसको समाधि सिद्ध हुई वह वैकुंठको जाता है वहां से मोक्ष न भया तो ब्रह्मलोकादिकमें फिरता है. और कर्मयोगसे स्वर्गको, ज्ञानयोगसे वैकुंठको जाता है॥२४१॥२४२॥२४३॥२४४॥२४५॥इति ज्ञानचौपटका खेल समाप्त ॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामिकर्मपट्टंसुशोभनम् ॥
संसारिणांसुबोधार्थंकर्मपाकप्रसूचकम् ॥ २४६ ॥

अब आगे संसारी मनुष्योंको बोध होनेके वास्ते कर्मविपाकपट्टखेल कहता हूं ॥ २४६ ॥

केनकर्मविपाकेनकीदृशंफलमश्नुते ॥
तत्सर्वंज्ञायतेयस्यखेलनान्नात्रसंशयः ॥ २४७ ॥

कौनसा कर्म करनेसे कौनसा फल प्राप्त होता है? इसका ज्ञान इस पट्टखेलनेसे होता है इसमें संशय नहीं है, परंतु अपनी नरद जिस स्थानपर बैठे उस स्थानका ध्यान रक्खै ॥ २४७ ॥

पंचशतंकोष्ठकानांकुर्यादत्रसुबुद्धिमान् ॥
तदूर्ध्वंविष्णुलोकश्चशिवलोकश्चतत्राहि ॥ २४८ ॥

इस पट्टके पाँचसौ कोष्ठक करै उन कोष्ठकोंके ऊपर दक्षिणोत्तर भागमें विष्णुलोक,शिवलोक निकाले ॥ २४८ ॥

तयोरुपरिगोलोकेमोक्षस्थानंतदेवाहि ॥
सोपानादूर्ध्वगमनंसर्पतुंडादधस्तथा ॥ २४९ ॥

और दोनों लोकोंके ऊपर मध्यभागमें गोलोक निकाले गोलोकको मोक्षस्थान कहते हैं. अब इस पट्टमें जिस कोष्ठकमें सीढीका पाँव आवे वहांसे चढके जहां अग्रभाग होवे उस कोष्ठकमें नरद रक्खै सर्पके मुखमें आवे तो नीचे पुच्छाग्रके घरमें रखना चाहिये ॥ २४९ ॥

षड्ङ्ग्भिःकपर्दिकाभिश्चखेलनंपरिकीर्तितम् ॥
जन्मस्थानंमानवस्यप्रथमंपरिकीर्तितम् ॥ २५० ॥

यह खेल छःकौडीयोंसे दो अथवा चार आदमी खेलैं. पहिला घर मनुष्यका जन्मस्थान वहाँ खेलनेवाले अपनी नरदां रक्खैं पश्चात् जैसा दांव पडे वैसा चलें. दांवके समय जितनी कौडियां चित्त ऊर्फ सीधी पडें उतनी संख्या लेवे जो आदमी खेलते खेलते शिवादिक लोकोंमें नहीं गया और पाँचसौ कोष्टक पूरे हो गये तो ऐसा जानै कि ऊपरके सात लोकमें फिरता रहा है. खेलनेकी अवधि शिवलोक, विष्णु लोक, मोक्ष, गोलोकप्राप्ति पर्यंत जानना ॥ २५० ॥

ततोमोहमयीसृष्टिःसप्तप्रकृतयस्तथा ॥
चतुर्दशात्रलोकाश्चवायूनांदशकंतथा ॥ २५१ ॥
इंद्रियाणिचतन्मात्राभक्तिज्ञानादिकंतथा ॥
यथावकाशंविलिखेत्कर्मपाकौविशेषतः ॥ २५२ ॥

अब पाँचसौ घरोंमें नाम लिखनेका भेद कहते हैं— मोहसृष्टि, सप्तप्रकृति, चौदह लोक, दशवायु, दश इंद्रिय, विषय, भक्ति, ज्ञान, वैराग्यादिक इनके नाम जहां स्थान मिलै वहां लिखै कर्मके और पाकके नाम विचार करके परस्पर संवध देखके लिखै ॥ २५१ ॥ २५२ ॥

केवलंनाममात्राणिलिखामिकर्मपाकयोः ॥
संशयश्चेत्तदामूलग्रंथेद्रष्टव्यमादरात् ॥ २५३ ॥

कर्मपाकोंके केवल नाम पट्टमें लिखता हूं श्लोकोंका प्रमाण नहींलिखता कारण कि ग्रंथ बडा हो जावेगा और जो कभी पट्टमें लिखे हुये कर्मविपाकके नाम पर किसीको संशय होवे तो मूल ग्रंथमें प्रमाण देख लेवे ॥ २५३ ॥

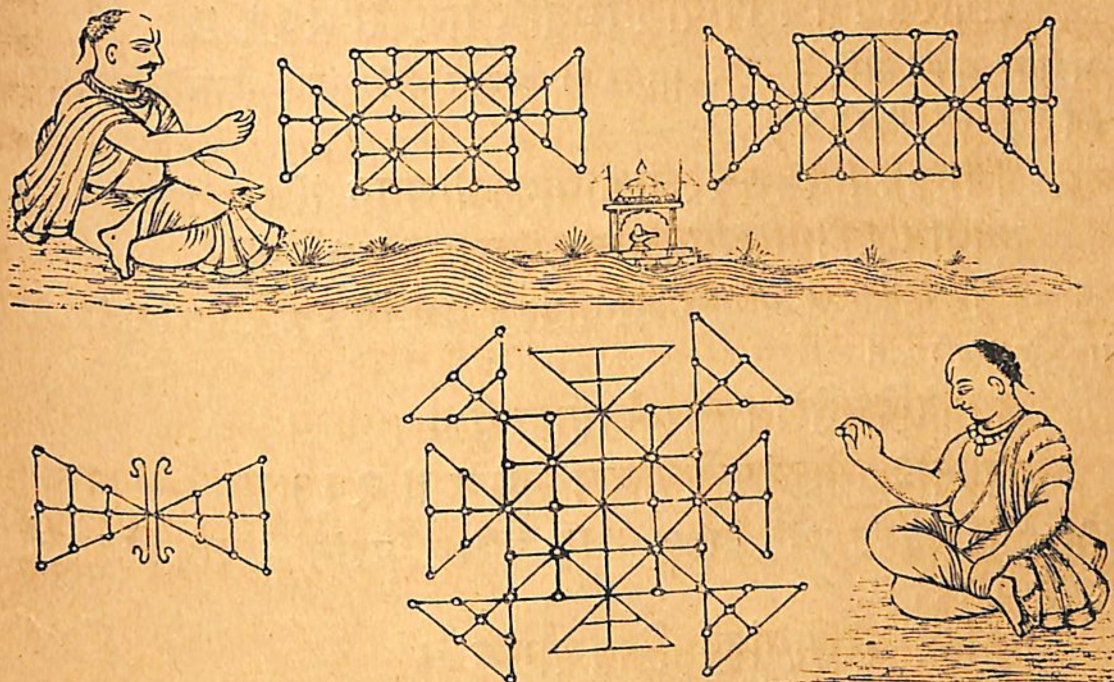
दृष्ट्वाकर्मविपाकार्कपुराणंगारुडंतथा ॥
शातातपस्मृतिमात्स्यंश्रीमद्भागवतादिकम् ॥२५४॥
कृतोमयाकर्मपट्टोहरिकृष्णेनधीमता ॥
सत्कर्मणिप्रवृत्त्यर्थंत्यागार्थंचकुकर्मणाम् ॥ २५५ ॥

इति बृ० मिश्रस्कंधेक्रीडाकौशल्याध्यायकर्मविपाक पट्टखेलनं नाम पञ्चमं प्रकरणम् ।

मैंने कर्मविपाकार्क गरुडपुराण मत्स्यपुराण श्रीभागवत शातातपस्मृति आदि ग्रंथ देखके लोगोंको सत्कर्ममें प्रवृत्ति होनेके लिये और कुकर्मोंका त्याग करनेके लिये कर्मविपाक पट्ट बनाया है. इस कर्मविपाकके पट्ट खेलनेसे जीवात्माको पुण्य पापका नित्य सहज स्मरण रहता है ॥ २५४ ॥ २५५ ॥

इति कर्मविपाकपट्टखेलनं नाम पंचमं प्रकरणम् ।

अथश्मशानद्यूतकंकरीक्रीडाभेदवर्णनं ॥



अतःपरंप्रवक्ष्यामिरसेंदुशर्कराभिधम् ॥
क्रीडनंत्रिविधंतेषांरीतिरेकैववर्तते ॥ २५६ ॥

अब श्मशान चौपटका खेल कहते हैं-सोलह कंकरीका खेल तीन प्रकारका है परंतु सबोंकी रीति एकही है ॥ २५६ ॥

श्मशानेवावनेवापिक्रीडोपस्करवर्जिते ॥
स्थलेवैकारयेत्क्रीडानगृहेषुकदाचन ॥ २५७ ॥

यह क्रीडा श्मशानमें अथवा बनमें जहाँ दूसरे खेलनेके पदार्थनहीं रहते वैसी जगहमें खेलै घरमें नहीं खेलै ॥ २५७ ॥

प्रमादाद्यदिकुर्याच्चेदशुभंतस्यनिर्दिशेत् ॥
अथतस्यप्रवक्ष्यामिक्रीडनस्यविधिंशृणु ॥ २५८ ॥

जो कोई यह क्रीडाघरमें खेलेगा तो उसको अशुभ होवेगा अब उसकी विधि कहते हैं ॥ २५८ ॥

आदर्शसदृशेचाश्मस्थलेयंत्रंसमालिखेत् ॥
अंगारकेणवाश्वेतपाषाणेनसुबुद्धिमान् ॥ २५९ ॥

बरोबर दर्पण सरीखी जहां पत्थरकी चटान होवे वहां कोयलेसे अथवा सफेद कंकरीसे ॥ २५९ ॥

पंचोर्ध्वंपंचतिर्यक्चरेखाकार्याःसुशोभनाः ॥
एवंषोडशकोष्ठानितिर्यग्रेखाद्वयंततः ॥ २६० ॥

सोलह घर निकालके अग्निकोनेसे वायुतक नैऋतसे ईशानतक आडी दो रेखा करै ॥ २६० ॥

कुर्याद्विदिक्षुसंलग्नंचतुरस्रंततःपरम् ॥
पूर्वादिदिक्षुसंलग्नंमध्येषोडशकोष्ठके ॥ २६१ ॥

पीछे और चतुरस्र पूर्वसे दक्षिण वहांसे पश्चिम वहांसे उत्तर फिर पूर्व ऐसा करै ॥ २६१ ॥

तद्बहिर्मध्यरेखायांपूर्वपश्चिमभागके ॥
त्रिकोणमंडलंकार्यंचतुःकोष्ठकसंयुतम् ॥ २६२ ॥

फिर षोडश कोष्ठकके बाहर पूर्व दिशाको पश्चिम दिशाको त्रिकोण मंडल मध्य रेखासे मिलाके करै उसमें चार कोष्ठक होवें ऐसा रेखायुक्त स्वस्तिक करनेसे बत्तीस ग्रंथि होती हैं. उनमें सोलह कंकरीका खेल खेला जाता है ॥ २६२ ॥

षट्कोष्ठसंयुतंवापिह्यष्टकोष्ठमथापिवा ॥
बृहच्छ्मशानद्यूताख्यंक्रीडनंपरिकीर्तितम् ॥ २६३ ॥

और उन्हीं दोनों त्रिकोणोंमें छः कोष्ठक किये से उन्नीस कंकरीका खेल खेला जाता है. और उन्ही दोनों त्रिकोणोंमें आठ कोष्ठक किये से बाईस कंकरीका खेल खेला जाता है ऐसी यह बडी श्मशान द्यूत नामकी क्रीडा कही ॥ २६३ ॥

द्वात्रिंशद्ग्रंथयश्चात्रह्यष्टत्रिंशमथापिवा ॥
चतुश्चत्वारिंशकावाग्रंथयस्थानरूपकाः ॥ २६४ ॥

इस क्रीडाके यंत्रमें ग्रंथि कहिये कंकरी रखनेके स्थान,बत्तीस अथवा अठतीस अथवा चवालीस हैं ॥ २६४ ॥

पदातयश्चतावंतःशुक्लार्द्धारक्तवर्णकाः ॥
शुक्लाह्येकेनसंग्राह्यारक्ताऽन्येनवरानने ॥ २६५ ॥

जितनी ग्रंथि हैं उतनी जगह पर पैदल कहिये कंकरियाँ रक्खै सो एक तरफ लालरंगकी दूसरी तरफ सफेद रंगकी. कंकरी रखना एक मनुष्य लालकी तरफ बैठे दूसरा सफेदकी तरफ बैठे ॥ २६५ ॥

मध्येरेखास्थितग्रंथिपंचकेरणभूमिका ॥
युद्धारंभंततःकुर्यात्क्रीडारूपंविचक्षणः ॥ २६६ ॥

बीचमें जो पाँच ग्रंथि खाली रहीं वह रणभूमि खेलनेकी जगह कहते हैं वहां खेलनेके वास्ते दोमें से एक पहिले कंकरी सीधे हाथके अंतकीग्रंथिकी जगह पर रक्खे ॥ २६६ ॥

पुरुषद्वयसंसाध्याक्रीडेयंपरिकीर्तिता ॥
न्यूनाधिकस्यसंवेशोविद्यतेनकदाचन ॥ २६७ ॥

यह क्रीडा दो आदमियोंसे खेली जातीहै कम जियादह नहीं होते ॥२६७॥

यदागच्छतियुद्धार्थेपदातिःसन्मुखंरणे ॥
तदास्वपृष्ठभागेवैग्रंथिंशून्यांनकारयेत् ॥ २६८ ॥

परंतु खेलते समय कंकरी जो शत्रुके सामने रक्खे तब उसके पीछेकी जगह खाली नहीं रक्खे और अपना जो सामनेवालेकी कंकरीको मारै सो अपने अधर बीचमें नहीं बैठना. और शत्रुको अपने ऊपरसे उडके बैठनेकी जगह नहोवे ऐसे स्थानमें बैठे यदि अपनी तरफकी कंकरी होवे उसके पास जायके बैठे अपनी कंकरीकाघर पीछेका सूना नहीं रक्खे ॥ २६८ ॥

शून्याचेन्मृत्युमाप्नोतितस्माद्यत्नेनसंविशेत् ॥
क्रीडेयंद्वंद्वयुद्धाख्यापार्ष्णिग्राहाज्जयोभवेत् ॥ २६९ ॥

सूना रक्खे तो कंकरी मरजावे इस वास्ते बहुत बिचार करके शत्रुके सामने जावै. इस क्रीडाको द्वंद्वयुद्धक्रीडा कहते हैं पीछे कोई दूसरा पार्ष्णिग्राह कहिये सहाय होवे तो जय होवे ॥ २६९ ॥

लौकिकेपितथाज्ञेयमितिसर्वंनिवेदितम् ॥
रसेंदुशर्कराक्रीडाप्रोक्तान्यंनवसंज्ञकम् ॥ २७० ॥

लोकमें भी ऐसा है कि जिसके तरफचार भाई रहें उसका जय होता है ऐसा सोलह कंकरीका भेदवर्णन किया अब नव कंकरीका भेद कहतेहैं॥२७०॥

त्रिकोणद्वयसंलग्नंडमरूवाद्यसन्निभम् ॥
लघुश्मशानद्यूताख्यंक्रीडनंचद्वितीयकम् ॥ २७१ ॥
लघुद्यूतेमध्यग्रंथौरणभूमिःप्रकीर्तिता ॥
कोष्ठानिद्वादशैवात्रग्रंथयोऽष्टादशैवहि ॥ २७२ ॥

दो त्रिकोण करके एक ठिकाने मिलावे डमरू वाद्यका जैसा आकार है वैसा यंत्र निकाले वह दोनों त्रिकोणमें मिलके बारह कोष्ठक अठारह ग्रंथि होती हैं इसको लघु श्मशानद्यूत नवकंकरीका खेल कहते हैं. दो त्रिकोणोंके बीचकी ग्रंथि को खेलनेके वास्ते रणभूमि कहते हैं ॥ २७१ ॥ २७२ ॥

पदातयश्चतावंतोनवरक्ताश्वशुभ्रकाः ॥
प्रत्येकग्रंथिषुस्थाप्यास्ततःक्रीडनमारभेत् ॥ २७३ ॥

इस क्रीडामें अठारह पैदल कहिये कंकरी हैं, नव लाल हैं नव सफेद. सो प्रत्येक गाँठके ऊपर रखके खेलनेका आरंभ करना परंतु इस क्रीडामें पहिले दांवको दोनो तरफकी एक एक कंकरी मरती है पीछे जिसकी बुद्धि ऊपर लिखे मूजब से चलेगी तो वह जीतेगा ॥ २७३ ॥

प्रयागप्रांतदेशेप्रसिद्धंक्रीडनंचयत् ॥
तत्सर्वंपूर्ववज्ज्ञेयंविशेषंप्रवदाम्यहम् ॥ २७४ ॥

अब अट्ठाईस कंकरीका खेल कहते हैं. यह खेल प्रयागके जिलेमें बोहुत करके खेलते हैं. इसकी रीति सब पहिले सरीखीहै ॥ २७४ ॥

द्वात्रिंशद्ग्रंथिकेखेलेयोसौयंत्रःप्रकीर्तितः ॥
तस्यकोणचतुष्केतुतथायाम्योत्तरेलिखेत् ॥ २७५ ॥
त्रिकोणंमंडलंरम्यंचतुष्कोष्ठकसंयुतम् ॥
षट्पंचाशद्ग्रंथयस्तुभवंत्यत्रविशेषतः ॥ २७६ ॥

विशेष यह है कि सोलह कंकरी सरीखा यंत्र निकालके उसके चारों कोणोंके ऊपर और उत्तर दक्षिणकी बीचकी रेखाके ऊपर त्रिकोणमंडल चार कोष्ठक सहित निकालना. इस यंत्रमें छप्पन ग्रंथि होती हैं ॥२७५ ॥ २७६ ॥

उभयोःखेलनार्थंवैशेषेषुयुद्धभूमिका ॥
याम्योत्तरौत्रिकोणौद्वौतत्रयुद्धंसमारभेत् ॥ २७७ ॥

सो दोनोंने अठाईस अठाईस कंकरियोंसे खेलना. उत्तर दक्षिणके त्रिकोणकी और बीचकी पांच ऐसी सतरह ग्रंथिकी जगहको युद्ध भूमि कहिये हैं खेलनेकी जगह है ॥ २७७ ॥

खेलनंपूर्ववत्कुर्यान्न्यूनाधिक्यंनचात्रहि ॥ २७८ ॥

यहां भी खेलना पहिले सरिखा जानना ॥ २७८ ॥

अथप्रकारांतरेणगुर्जरदेशप्रसिद्धंनवकंकरीखेलनमाह ।
आसमंताच्चतुष्कोणंवप्रत्रयसमन्वितम् ॥
यंत्रंकुर्याद्विशेषेणखेलनार्थसमेस्थले ॥ २७९ ॥

अब गुजरात देशमें जो नवकंकरियोंसे खेलते हैं उसको बयान करते हैं कि चार कोनेका तीन प्राकार सहित यंत्र निकालना ॥ २७९ ॥

वप्रत्रयेणसंलग्नांरेखांदिक्षुचतुर्षुच ॥
वप्राणांमध्यभागेचभूमिर्द्व्यंगुलसंमिता ॥ २८० ॥

और तीनों वप्रसे लगी हुई रेखा चार चार दिशाओंमें करना वप्रके बीचमे दो अंगुल भूमि छोडना ॥ २८० ॥

ग्रंथयोद्वादशैवात्रकोणाश्चतावदेवहि ॥
खेलनार्थपदातीनांसंख्याष्टादशसंमिता ॥ २८१ ॥

जितने कोने हैं उनही ठिकानोंको ग्रंथि कहते हैं वे ग्रंथि दोनों तरफकी मिलके अठाराह हैं और बाकीके दक्षिणोत्तरकी जो छः ग्रंथि हैं सो खेलनेकी खुली जगह है और नरदां अठारह हैं ॥ २८१ ॥

शुक्लारक्ताश्चप्रत्येकंनवसंख्याःप्रकीर्तिताः ॥
द्वाभ्यांक्रीडाप्रकर्तव्यानवकंकरीसंज्ञका ॥ २८२ ॥

उसमें नव सुपेद रंगकी और नवलाल रंगकी प्रत्येक दोनो जनोंने नव नव लेना यहक्रीडा दो आदमियोंसे होती है ॥ २८२ ॥

भरद्धरणयोगेनघातयेत्परपक्षगम् ॥
यत्रकुत्रास्थितंतंचभरणस्थोननश्यति ॥ २८३ ॥

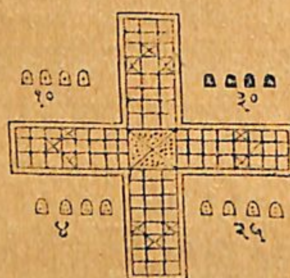
इसमें अपनी नरदोंका भरत भरना ऐसे हुवा तो सामनेवालेकी बिना भरतकी नरद उठालेनाको कहते हैं मार लेना.और भरतमें बैठी हुई नरदां मरती नहीं है और पहिले जितने कंकरीके खेल कहे उनमें कंकरी पहिले सब रखके खेलै ऐसा है और इसमें तो दोनों जने जैसा अपनां भरत सिद्ध होवे उसी रीतिसे कंकरी रखते जावें ॥ २८३ ॥

त्रयाणामेकरेखायांमिलनंचयदाभवेत् ॥
भरणंतंविजानीयात्स्वबुद्ध्याप्रतिपादयेत् ॥ २८४ ॥

भरत उसको कहते हैं कि अपनी नरदें तीन एक रेखाके ऊपर बराबर आवें तो भरत सिद्ध हुवा जानना ॥ २८४ ॥

इति श्मशान द्यूतका भेद पूरा भया प्रकरण ६ संपूर्ण ॥

अथ हस्त्यश्वाजगवांक्रीडा ॥ १४ ॥



अस्मिन्नेवपटेक्रीडाहस्त्यश्वाऽजगवांस्मृता ॥
कपर्दिकासप्तकेनद्वाभ्यांक्रीडनविदेः ॥ २८५ ॥

(अब हस्ती अश्व गाय बकरीका खेल कहते हैं) पहिले द्यूत क्रीडा करनेका जो पट्ट है उसी पट्टके ऊपर चारों रंगकी नरदां रखके दो आदमी सात कौड़ियोसे खेलें ॥ २८५ ॥

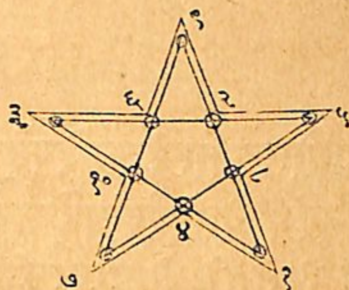
त्रिंशद्दावेगजोग्राह्यःपंचविंशेतुरंगमः ॥
गौर्ग्राह्यादशसंख्यायांचतुःसंख्येत्वजास्मृता ॥ २८६ ॥

जिसके तीस ३० का दाँव पडे वह हाथी लेवे पचीस पडे तो घोड़ा लेवे दश पडे तो गाय लेवे चार पड़े तो बकरी लेवे ॥ २८६ ॥

गजाश्वगोजवर्णाःस्युःकृष्णरक्तौचपीतकः ॥
हरिद्वर्णइतिप्राज्ञैःक्रीडेयंबालखेलने ॥ २८७ ॥

जिस नरदका काला रंग है उसको हाथी, लाल रंगकी नरदाको घोड़ा, पीले रंगकी नरदाको गाय, हरे रंगकी नरदाको बकरी कहते हैं यह बालकोंके खेलनेका खेल है ॥ २८७ ॥

अथसाक्षिक्रीडाभेदद्वयमाह १५-१६.



पंचास्रखेलनंवच्मिबुद्धिकौशल्यकारकम् ॥
एकेनक्रीडनंप्रोक्तंसाक्षिणश्चप्रयोजनम् ॥ २८८ ॥

(अब पंचकोण खेल कहते हैं.) जिस खेलमें बुद्धिकी चातुर्यता मालूम पड़ती है. ऐसे इस खेलमें एक खेले और दूसरा साक्षी होकर बैठे ॥ २८८ ॥

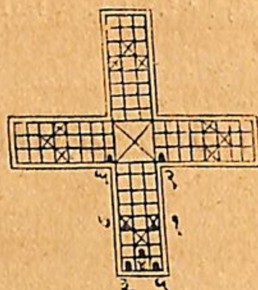
पंचास्रंविलिखेद्रम्यंदशग्रंथिसमन्वितम् ॥
पदातयश्चतावंतोह्येकैकंस्थापयेत्क्रमात् ॥ २८९ ॥

भूमि पर अगर पीठके ऊपर पंचकोण चक्र निकालके दश नरदा अपने पास लेके बैठे. पीछे चक्रमें दशग्रांथियां हैं वहां एक एक ग्रंथिके ऊपर एक एक नरद बिठावे ॥ २८९ ॥

तृतीयेतृतीयेग्रंथौसरलेनहिवक्रके ॥
अथवाचौपटेपट्टेतत्रैकस्मिन्विभागके ॥ २९० ॥

कैसी बिठावे सो कहते हैं--पहिले जिस ग्रंथिके ऊपर नरद बिठाई होवे वहांसे तीसरी ग्रंथिके ऊपर सरल रेखामें रक्खे, टेढ़ी रेखाकी ग्रंथिपर रक्खे नहीं; ऐसी दश नरदा दश ग्रंथिनके ऊपर सरल मार्गसे रक्खे वही बुद्धिका चातुर्य जानना. इसमें खूबी यह है कि एक नरदको तीन तीन गिनके रक्खे परंतु जहां नरद पहिले बिठाई है वह घर गिनतीमें लेके रक्खे तो दश नरदा बराबर बैठेंगी. (अब साक्षीक्रीडाकहते हैं) पहिले चौपटके जो चार भाग हैं उसमेंके एक भागके ऊपर ॥ २९० ॥

साक्षिक्रीडाका पट्ट.



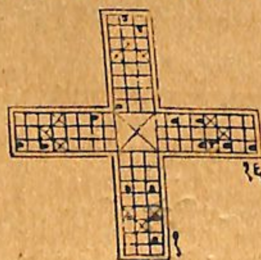
चीलाख्यकोष्टकंद्वंद्वेतस्मात्पंचद्वयेपदे ॥
तृतीयेतृतीयेताभ्यांमध्येतीर्यक्पदेन्यसेत् ॥ २९१ ॥

सात नरदा इस प्रकारसे रक्खे कि दो नरदा चीले ऊपर वहांसे पाँच पाँच घरके ऊपर दो नरदा और चीलसे तीसरे तीसरे घरमें दो नरदा और उन दोनों नरदोंके पासके अंदरके घरमें नरद एक ऐसी सात नरदा बिठायके॥ २९१॥

पदातीनांसप्तकंवैद्येकेनरसपातनं ॥
कर्तव्यंपंचपंचभ्यांदशभिर्दशभिस्तथा ॥ २९२ ॥

उसमेंकी एक नरद लेवे उस नरदसे छः नरदोंको मारे. मारनेके दाँव छः हैं- पाँच १ दश २ दो ३ दो ४ दस ५ पाँच ६ ऐसे हैं; परंतु वहां खूबी यह है कि दोनों चीलें ऊपरकी जो नरदा है उसमेंसे एक नरद पहिले उछलके उससे सब नरदा मरेंगी. इसके बिना तीसरी नरद ली तो नरदा मरनेकी नहीं ॥ २९२ ॥

अथपुरुषद्वयसाध्यक्रीडा १७.



द्वाभ्यांद्वाभ्यांचक्रीडेयंसाक्षिक्रीडाद्वितीयका ॥
अथवाचौपटेपट्टेदिगादिपरिसंख्यया २९३

(अब दो आदमीसे खेलनेकी क्रीडा कहते हैं.) पहिले चौसरके पटके ऊपर एक मनुष्य दश दशके अंतरसे या आदि शब्द करके पचीस या बीस या जो अपने दिलमें आवे उस संख्याके घर पर ॥ २९३ ॥

पदातयश्चसंस्थाप्याः कोष्ठकेषुमनीषिणा ॥
प्रथमेनततोऽन्येनतत्रद्दष्टियुतेनच ॥ २९४ ॥

सोलह नरदा रख देवे सामनेवालेको मालूम न होवे इस तरहसे रखके कहे कि एक नरदसे अमुक संख्या मूजब पंद्रह नरदाको मारो तब दूसरा आदमी नरदा रखते समय दृष्टि रखके ॥ २९४ ॥

आद्येनवांतिमेनापिमारणीयाः प्रयत्नतः ॥
इत्येवंक्रीडनंप्रोक्तंपुरुषद्वयसाधकम् ॥ २९५ ॥

पहिली नरद या अंतिम नरदसे सब नरदा मारे ऐसी दो पुरुषोंसे खेलनेकी क्रीडा हमने कही ॥ २९५ ॥

अथचतुर्विंशतिकोष्टकात्मिकींक्रीडामाह १८



अथान्यच्चप्रवक्ष्यामिखेलनंजिनकोष्टकं ॥
प्रागायताश्चतस्रस्यूरेखास्तिर्यङ्नवस्मृताः ॥ २९६ ॥

(अब चौवीस कोष्टकसे सोलह नरदा खेलनेका मार्ग कहते हैं १८) खड़ी रेखा चार, तीर्यक्‌रेखा नव निकाले तो ॥ २९६ ॥

चतुर्विंशतिकोष्टानिखेलनेमध्यभूमिका ॥
अष्टकोष्टात्मिकातस्याः पार्श्वयोः पादचारिणः ॥ २९७ ॥

चौवीस कोष्टक होते हैं उसके एकतरफ एक अपनी आठ नरदा रक्खे दूसरी तरफ दूसरी अपनी आठ नरदा रक्खे बीचमें घर आठ हैं वह खेलनेकी भूमि है और दोनों तरफ आठ आठ नरदोंका स्थल है ॥ २९७ ॥

स्थलंप्रकल्पयेत्तत्रश्वेतरक्ताः पदातयः ॥
द्वयोश्चखेलनंह्येतन्नन्यूनाधिकयोर्भवेत् ॥ २९८ ॥

आठ नरदा सफेद और आठ नरदा लाल करे यह खेल दो मनुष्योंसे खेलाजाता है कम ज्यादासे नहीं खेला जाता ॥ २९८ ॥

क्रीडारंभेचगमनंनरयोः कोष्टकद्वयं ॥
विज्ञेयंचततः पश्चादासमंतात्पदैककं ॥ २९९ ॥

खेलके आरंभमें दोनों जनोंकी नरदा दो घर पहिले चलती है बाद चारों तरफसे एक एक घर चलती है ॥ २९९ ॥

पृष्ठेशून्यस्थलंदृष्ट्वाघातयेत्परपक्षगं ॥

और नरदको मारनेका ऐसा नियम है कि जिस नरदाके पीछे खाली जगह होवे उस नरदको मार लेवे.

अथैकपंचाशत्तमकोष्ठकात्मिकांक्रीडामाह १९.



एकपंचाशत्तमैर्वाकोष्ठैर्यंत्रमालिखेत् ॥ ३०० ॥
अब इक्कावन घरकी क्रीडा कहते हैं–सत्रह घरकी एक पंक्ति वैसीही तीन पंक्तिसे इक्कावन घरका यंत्र निकालके ॥ ३०० ॥

मध्यषोडशकोष्टेषुपदातीनांस्थलंस्मृतम् ॥
द्वयोःपदातिनोर्मध्येपदैकंरणभूमिका ॥ ३०१ ॥

बीचके घरोंमें सोलह नरदा रक्खै और दोनों रंगके बीचमें एक घर खेलनेके वास्ते खुला रक्खै ॥ ३०१ ॥

खेलनार्थपार्श्वभूमिःशेषंसर्वंपुरोदितम् ॥
यस्यावशिष्यतेसेनाजयंतस्यविनिर्दिशेत् ॥ ३०२ ॥

और दोनों बाजूके घर चौंतीस हैं वे खेलनेके वास्ते हैं बाकी रीति पहिले खेल सरीखी जानै इन दोनों खेलोंमें जिसकी नरद बाकी रहे उसका जय जानै ॥ ३०२ ॥

अथद्यूतार्धखेलनमाह २०.

	८	[illegible]	३१	
[illegible]	[illegible]	४८	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible] २५	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१७	२४	[illegible]	[illegible]
	१६	१	२	

चतुरस्रंलिखेच्चक्रंशुंठिकोष्ठैःसमन्वितम् ॥
हंसपादंचतुर्दिक्षुमध्येकुर्याच्चपंचमम् ॥ ३०३ ॥

अब आदा सादेका खेल कहते हैं पच्चीस कोष्ठकका चतुरस्र चक्र निकालके चारों दिशाके मध्य कोष्ठकमें हंसपाद चिह्न करै और पांचवाँ हंसपाद मध्य कोष्ठकमें करै उस घरमें नरदा फिरायके रक्खै ॥ ३०३ ॥

चतुर्भिःखेलनंप्रोक्तंद्वाभ्यांवापिकदाचन ॥
वराटकैश्चतुर्भिश्चनृपसंख्यापदातयः ॥ ३०४ ॥

यह खेल चार आदमियोंसे अथवा दो आदमियोंसे खेला जाता है चार कौड़ीसे खेलै. नरदा चार रंगकी मिलके सोलह लेवै ॥ ३०४ ॥

मध्येकोष्ठेपदातीनांगमनांतंहिखेलनम् ॥
स्वस्वदिग्वंसपादाच्चप्रथमंखेलनंभवेत् ॥ ३०५ ॥

खेलमें जीतनेका नियम ऐसा है कि, अपनी अपनी दिशाके हंसपादमें जो नरदा बैठी हैं वहांसे नरद चलाते चलाते बीचके हंसपादमें आयके नरद बैठी तो वह नरद आगे चलावे नहीं तो ऐसी नरदा जिसकी पहिले आई उसकी जय जानै ॥ ३०५ ॥

अथैकव्याघ्रअजात्रयखेलमाह २१.



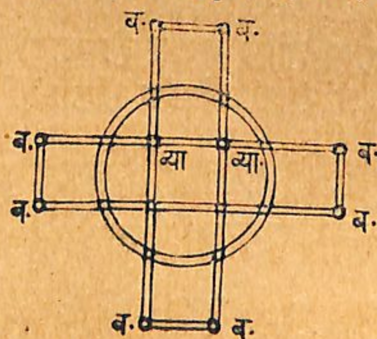
त्रिकोणंविलिखेच्चक्रंमध्येपाशयुगंतथा ॥
ग्रंथयःषट्प्रजायंतेऊर्ध्वेव्याघ्रस्थलंस्मृतम् ॥ ३०६ ॥

अब एक व्याघ्र और तीन बकरीका खेल कहते हैं त्रिकोण चक्र निकालके दक्षिण उत्तर तरफसे दो रेखा पश्चिममें मिलावे तो उस यंत्रमें ग्रंथियां छः होवेंगी तब ऊपरकी ग्रंथिके ऊपर बाघ बिठावे ॥ ३०६ ॥

अधोऽजानांत्रयंस्थाप्यद्वाभ्यांखेलनमीरितम् ॥
अधोमध्यस्थितेव्याघ्रेबंधयेत्तंस्वबुद्धिना ॥ ३०७ ॥

नीचेकी तीन ग्रंथिके ऊपर तीन बकरी बिठायके दो आदमी खेलैं. उसमें बाघ जब नीचेकी पंक्तिके बीचकी ग्रंथिऊपर बैठा होवे और खेल उसका होवे तो बाघ बांधा जावे. इस वास्ते अपनी बुद्धिसे बाघको फिराते फिराते ऊपर कही हुई ग्रंथिके ऊपर लायके बाघको बांधे तो खेल पूरा हुआ बकरीके पीछे घर खाली होवें तो बाघ मार लेवे इस वास्ते बाघके सामने बकरी देखके रक्खै आगे भी तीन खेलमें इसी रीतिसे खेलै ॥ ३०७ ॥

अथाजाष्टकव्याघ्रद्वयखेलनमाह २२.



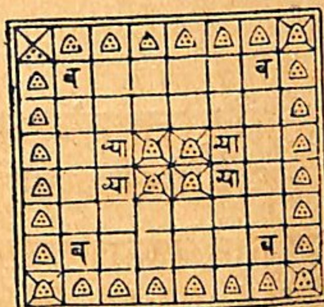
अष्टास्त्रंद्यूतवत्पट्टंमध्यवर्तुलसंयुतम् ॥
विलिख्यस्थापयेत्तत्रह्यजानामष्टकंतथा ॥ ३०८ ॥

अब दो बाघ आठ बकरीका खेल कहते हैं-आठ कोने जिसके हैं ऐसा द्यूत सरीखा पट्ट निकालै उसमें वर्तुल निकालके आठ बकरी बाहरके कोने ऊपर बिठावै ॥ ३०८ ॥

व्याघ्रद्वयंचसंस्थाप्यताभ्यांखेलनमारभेत् ॥
व्याघ्रयोर्बंधनंतत्रयथास्यात्तद्वदाचरेत् ॥ ३०९ ॥

दो व्याघ्र बीचकी दो ग्रंथियोंके ऊपर बिठायके दोनों जने खेलैं पीछे दोनों व्याघ्रका जैसा बंधन होवे वैसा खेलते जावें बाघ बांधे उसको जय जानना चाहिये ॥ ३०९ ॥

अथव्याघ्रचतुष्टयअष्टाविंशत्यजाखेलनमाह २३.



चतुरस्रंलिखेच्चक्रंचतुःषष्टिपदान्वितम् ॥
हंसपादाश्चतुष्कोणमध्यकोष्ठचतुष्टये ॥ ३१० ॥

अब चार बाघ अट्ठावीस बकरीका खेल कहते हैं-पहिले नवरेखाखड़ी नव रेखा आड़ी लिखके चौंसठ घरका एक पट्ट निकालके चार कोनेके ऊपर और बीचके चार कोष्ठकमें हंसपाद निकालै ॥ ३१० ॥

अष्टाविंशत्यजानांतुपदेष्वंतिमपंक्तिषु ॥
स्थलंप्रकल्पयेत्पश्चान्मध्यव्याघ्रचतुष्टयम् ॥ ३११ ॥

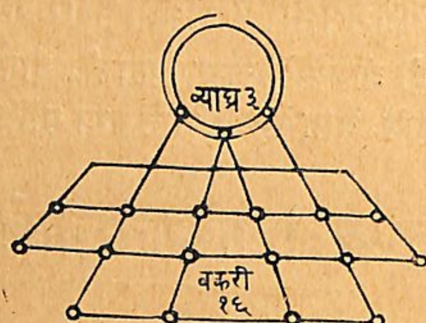
पीछे अट्ठावीस बकरियोंको चारों तरफकी अंतिम पंक्तिमें बिठावै और चार व्याघ्रोंको बीचमें बिठावै ॥ ३११ ॥

संस्थाप्यखेलनारंभःकर्त्तव्योबुद्धिमत्तरैः ॥
व्याघ्राणांबंधनंकुर्याच्चतुष्कोणेषुबुद्धिना ॥ ३१२ ॥

फिर खेलनेका आरंभ करै बकरीके पीछेका घर खाली होवे तो उस बकरी-को बाघ मार लेवे इस वास्ते अपनी बकरीको बचायके चार बाघोंको चार

कोनोंके ऊपर लायके बंद करै. बाघकी गति एक सीधीपंक्तिसे चारों तरफ जितने घर खाली होवें वहांतक जाती है. बकरीकी गति सीधी टेढी एक घरकी है. यह गतिका भेद बाघ बकरीके चारों भेदमें जानै ॥ ३१२ ॥

अथव्याघ्रत्रयषोडशाजाखेलनमाह २४.



प्रथमंवर्तुलंकृत्वातिर्यक्रेखात्रयंतथा ॥
ऊर्ध्वरेखाचतुष्कंवैकृत्वायंत्रंसमालिखेत् ॥ ३१३ ॥
वर्तुलंमस्तकेयोज्यंतिर्यग्रेखाचहस्तवत् ॥
पादवदूर्ध्वरेखाचग्रंथयःपंचविंशतिः ॥ ३१४ ॥

अब तीन बाघ सोलह बकरीका खेल कहते हैं—पहिले एक वर्तुल मस्तक सरीखा निकालके उसके नीचे तीन रेखा हाथ सरीखी उत्तर दक्षिणकी करै और उस वर्तुलको संलग्न करके चार रेखा खड़ी पांव सरीखी करै. नरदां चलानेकी ग्रंथि पच्चीस करै ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥

व्याघ्राणांप्रथमंस्थानंमस्तकस्थपदेषुच ॥
अजानांषोडशानांतुस्थापनंहस्तपादयोः ॥ ३१५ ॥

बाघ बिठानेका स्थान वर्तुल संलग्न जो ग्रंथि तीन हैं वहां करे बकरियोंका स्थान हस्तपादोंकी ग्रंथिके ऊपर करे ॥ ३१५ ॥

खेलनेपूर्ववत्सर्वारीतिरत्रप्रकीर्तिता ॥
एवंव्याघ्रत्रयाणांहिखेलनंपरिकीर्त्तितम् ॥ ३१६ ॥

खेलनेकी सब पहिले तीन खेलमें जो रीति कही है वही जानना चाहिये ऐसा सोलह बकरीका खेल पूरा भया ॥ ३१६ ॥

अथ लीलावतीखेलमाह २५.

आ·१ लं·२

प· ५

उ·४ स·३

कृत्वाषोडशकोष्ठानिप्रतिकोष्ठेपदातयः ॥
पंचपंचचसंस्थाप्यातेष्वैकंधारयेद्धृदि ॥ ३१७ ॥

अब लीलावती खेल कहते हैं पहिले सोलह कोष्ठकनिकालके एकएक कोष्ठकमें पाँच पाँच नरदा रक्खे. चार नरदा चार दिशामें और एक मध्य भागमें इस रीतिसे रक्खे बाद तीन आदमी बैठें पीछे एक कहे कि, हम यहाँसे दूसरी जगह जाके बैठते हैं तुम जो नरद ध्यानमें रक्खोगे वह नरद देखे बिना कह देवेंगे. ऐसा कहके दूसरेस्थलमें जाके बैठे. पीछे दूसरा आदमी जो नरद ध्यान में लेके पास बैठा है उसको दिखावे ॥ ३१७ ॥

ततोऽन्येनाक्षरवशाद्वक्तव्योहृदिधारितः ॥
आकारोईशकोणेचलकारश्चाग्निकोणके ॥ ३१८ ॥
सकारोराक्षसेवायौह्युकारश्चपकारकः ॥
मध्यभागेचविज्ञेयस्ततोवक्ष्यामिदोहरान् ॥ ३१९ ॥

दोहरा–आरमतछे अक्कलतणी, चतुरतणुछेकाम ॥
एहेसीमाथिएकले,तेनुलीलावतीनाम ॥ ३२० ॥
लंकागडनेगुंदरे,नामकनामेमोर ॥
सीतासरखिसुंदरी,रावणसरखोचोर ॥ ३२१ ॥
उठउठपरिभ्रहमसु, जइअमरापर्वत ॥
पंडचोपुछेपंडितने,तारीकेइउपरछेहट्ट ॥ ३२२ ॥

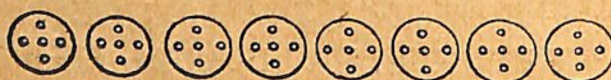
१०

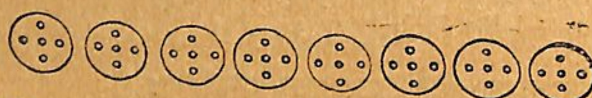
ससासत्यनछोडिये,सतछोडेपतजाय ॥
सतनिबांधिपृथ्वी,उघाडेपतजाय ॥ ३२३ ॥
पपापीतनरंजनकीजिये,नहिंदासकेदेश ॥
प्रथमपेहेलोसमरिये,गौरीपुत्रगणेश ॥ ३२४ ॥

पीछे देखनेवाला जिस दिशा की नरद ध्यानमें रक्खी होवे उस उस दिशाके अक्षर मूजब गुजराती भाषाके दोहरे बोले. पीछे दूर बैठनेवाला उन दोहरोंके अक्षर मूजब नरद आयके कहे. उदाहरण-किसी पुरुषने यंत्रमें जहां एकका अंक है उस नरदको ध्यानमें रक्खा तब दूसरेने ससा १ उठ २ लंका ३ यह तीन दोहरे बोले सो ध्यानमें रक्खी हुई नरदका ज्ञान भया ॥ ३१८ ॥ ॥ ३१९ ॥ ३२० ॥ ३२१ ॥ ३२२ ॥ ३२३ ॥ ३२४ ॥

अथनवग्रामशतकंकरीखेलमाह २६.







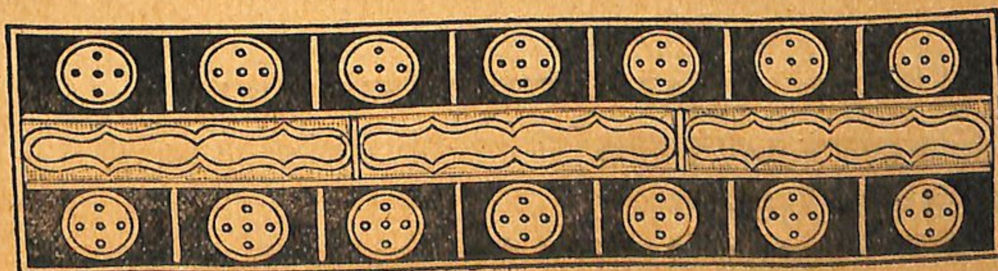


गुर्ज्जरेचप्रसिद्धंवैनवग्रामाख्यखेलनम् ॥
नवग्रामाणिप्रत्येकंप्रत्येकंपंचशर्करा ॥ ३२५ ॥
द्वाभ्यांक्रीडाहिसंप्रोक्ताचैकैकांशर्करांक्षिपेत् ॥
शर्कराहीनग्रामस्यसन्मुखस्थंचयद्भवेत् ॥ ३२६ ॥
ग्रामंतत्रस्थितांसर्वांशर्करांचसमाहरेत् ॥
शर्कराहीनकेग्रामद्वयेप्राप्तेऽन्यखेलनम् ॥ ३२७ ॥
प्राप्यंशेशर्कराधिक्यंयस्यतस्यजयंविदुः ॥
अत्रार्थेकेनचित्प्रोक्तौश्लोकौवैदोहराभिधौ ॥ ३२८ ॥
दोहरा लंकागढ़नेगुंदरे,थैथैनाचेमोर ॥
सीतासरखीसुंदरी,रावणसरखोचोर ॥ ३२९ ॥

जलकुकडीजलमेंबसे, चंद्रबसेआकाश ॥
तेतेनादिलमेंबसे, चतुरकरोविचार ॥ ३३० ॥

अब सौ कंकरी नव गांवका खेल कहतेहैं-यह खेल गुजरात देशमें प्रसिद्ध है और दो आदमियोंसे खेलाजाताहै एक लंका गढ़के ऊपर बैठे दूसरा जलदुर्ग-के पास बैठे एकएकके ताबेमें ग्राम आठ आठ करे हर ग्राममें पाँच पाँच कंकरी रक्खे. पीछे एक खेलनेवालोंमेंसे कोईभी एक ग्रामकी पाँच कंकरी उठाके आगेके घरोंमें एकएक रखता जावे. पाँच पूरी होवें तब उसके अगाडीके गाँव एकमेंसे पाँच कंकरी उठाके आगेके गावोंमें पहिले सरीखे रखता जावे. ऐसा करते करते जिस जगह पर हाथकी कंकरी पूरी होवे और आगेका घर भी खाली होवे तो उन खाली गाँवके सामनेके गाँवमें जितनी कंकरी होवें वे सब ले लेवे तो वह गाँव जीता कहा जायगा और वे सब कंकरी अपने गढ़में रक्खे बाद और पहिले प्रमाणसे खेलते जावे. परंतु जो जीता हुआ गाँव है उसमें कंकरी रक्खे नहीं. पहिले सरीखा करता जावे ऐसे खेलते खेलते जब इसका दांव बंद होवे तब सामनेवाला दांव लेवे. दांव बंद कब होता है सो कहते हैं. एक गाँव खाली आया उसके आगेकाभी गाँव खाली होवे तब कंकरी भरनेकी जगह रही नहीं और कंकरीभी हाथमें रही न होवे तब दाव बंद हुआ जानै अगर एक ग्राम खाली आया और उसके आगे लंकागढ़ या जलदुर्ग आवे तो भी दांव बंद हुआ जानै अब इन्हीं नव ग्रामके खेलमें पहिले लीलाव-तीका खेल कहा उसी रीतिसे एक सोलह गाँवमेंसे एक ग्राम मनमें धारके रक्खे पास बैठा होवे उससे कहे तब वह जिस गढ़का ग्राम होवे उस गढ़का दोहरा बोले जितनी संख्याका गाँव होवे उतनी चिपटी बजाता जावे और दोहरा कहे तब तीसरा आयके देखेबिना उस दोहरा और चिपटीके अनुसार मनमें धरा हुआ गाँव कह देवे ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥ ३२७ ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥ ३३० ॥

अथनिधिक्रीडामाह २७.



अतःपरंप्रवक्ष्यामिनिधिक्रीडनलक्षणम् ॥
अत्युत्तमेकाष्ठपीठेपार्श्वयोर्मनुगर्त्तकान् ॥ ३३१ ॥

अब गल्लेका खेल कहता हूं. संस्कृतमें गल्लेका नाम निधि है. पहिले काष्ठका पीठक लंबा हाथ १। चौड़ा हात. ॥ बरोबर बनायके उसमें सात घर गोल ऊपर, सात घर गोल नीचे करे बीचमें तीन घर लंबे करे ऐसा उत्तम गल्ला बनावे उसके चौदा, घर हैं ॥ ३३१ ॥

मध्येस्थानत्रयंकृत्वाद्वाभ्यांक्रीडेयमीरिता ॥
उभयोःसप्तसप्तैवगर्त्तकास्तेषुसंक्षिपेत् ॥ ३३२ ॥

उसे दो आदमी खेलें और सात सात घरोंमें अपना अपना द्रव्य रक्खें. द्रव्य राजा वा कोई बड़ा आदमी होवे वह मोती रुपये पावली दोअनी पैसे जो शक्ति होवे वो लेवे. गरीब होवे तो कौड़ी वा इमलीके बीजसे खेले. अब उन घरोंमें पहिले पूर्वोक्त द्रव्य ॥ ३३२ ॥

पंचपंचपदार्थानिरोप्यतान्प्राग्यथारुचि ॥
स्वभागात्पंचसंगृह्यक्रीडांकुर्यात्ततःपरं ॥ ३३३ ॥

पाँच पाँच रक्खे. दोनों आमने सामने बैठें पहिले एक आदमी अपने तरफका एक गल्ला फोड़के जिसको फोड़ा उसमें नहीं डालना ॥ ३३३ ॥

एकैकंप्रक्षिपेद्गर्तेशून्यगर्त्ताग्रगद्वयोः ॥
पदार्थानिचगृह्णीयात्क्रीडाऽन्यस्यततःपरं ॥ ३३४ ॥

आगेके एकएक घरमें एकएक डाले पाँच पूरे हुए बाद फिर उसके आगेका गल्ला फोडे पहिले सरीखे एकएक डालता जावे. डालते डालते सामनेवालेकी पंक्तिमेंका घर या अपनी पंक्तिमेंका घर खाली आजावे तो उस खाली घरके आगेके घरमेंका और उसके सामनेके घरमेंका ऐसे दोनों दाम उठा लेवे फिर सामनेवाला अपने घरसे चले दाम कम वा जास्ती होवे तो फिक्र नहींहै परंतु पहिलेसरीखी चाल चलते घर खाली आवे तो आगेके आमने सामनेके दोनों घरोंका दाम उठा लेवे ॥ ३३४ ॥

यस्मिन्गर्तेचतुःसंख्यास्तागावःकीर्त्यतेबुधैः ॥
स्वस्वखेलनवेलायांग्रहीतव्याह्यसंशयम् ॥ ३३५ ॥

खेलते खेलते जिस घरमें चार दाम होवें उसको गाय कहते हैं वह गाय जिसके खेलमें आवे वह उसे निःसंशय ले लेवे ॥ ३३५ ॥

शून्येगर्तद्वयेऽन्यस्यखेलनंपरिकीर्तितम् ॥
यस्यपक्षेशून्यगर्ताधिक्यंतस्यपराजयः ॥ ३३६ ॥

और खेलते खेलते जो कभी दो घर खाली आवें तो दांव बंद हुआ. तब सामने वाला खेले. सामनेवालेका खेल पुरा हुए बाद फिर वह खेले इस खेल में सात दांव लेनेमें जीतताहै हारजीत इसतरह है कि जिसका पदार्थ खेलते खेलते पैंतीससे कम होवे वह हारा जास्ती होवे वह जीता कहावेगा परंतु उसे एकही वक्तमें हारा नहीं जानना सो कहते हैं जो हारा है उसके जितना दाम कम होवे उतना पाँचके हिसाबसे घर कमी रखना उस घरको नरककुंड कहते हैं वहां खेलना नहीं ऐसे जो सातों घर हारगया उसे हारा जानना ॥ ३३६ ॥

एकैकस्यपदार्थस्यप्रक्षेपाल्लघुखेलनम् ॥
पंचपंचप्रचिक्षेपात्खेलनंबृहदुच्यते ॥ ३३७ ॥

इस खेलमें जो कभी बड़ा खेल खेलना होवे तो पहिले जिस घरसे उस खेलकी पाँच संख्या हाथमें लेके आगेके घरमें डाले फिर उसके आगेके घरकी पाँच संख्या लेके उसके आगेके घरमें डाले ऐसे डालते डालते जहाँ खाली घर आ जावे तब उस खाली घरपर हाथ फिरायके उस हाथ फिरानेको चाटना कहते हैं आगेके घरकी और उसके सामनेके घरकी सब संख्या जीतलेवे बाद सामनेवाला इस रीतसे खेले पहिले खेलमें नव बार दाँव लेनेसे बीस संख्यापदार्थको जीतता है सामनेवालाभी नवें खेलको बीस संख्यापदार्थको जीतता है ऐसेही तीसरी बारभी नवें दाँवमें दश पदार्थको जीतता है बाद बुद्धिकी चातुर्यतासे जीतना होता है. बाद खेल जब थोड़ा रह जावे तब घर जो फोड़े सो अपनी बाजूका फोड़े सामनेवालेका फोड़े नहीं ॥ ३३७ ॥

अथषट्पंचाशद्भ्रमात्मिकांक्रीडामाह २८

(१)

	४	३	२	१	
१	७	६	५	४	४
२	८	छपन्नके फेरे का यंत्रस्व· रूप. बिंदु४०		३	३
३	९			२	२
४	१०	११	१२	१	१
	१	२	३	४	

(२)

दांवका प्रस्तार १ बिंदु ४४

(३)

दांवका प्रस्तार २ बिंदु ४८

(४)

दांवका प्रस्तार ३ बिंदु ५२

(५)

दांवका प्रस्तार ४ बिंदु ५६

(६)

चौरसीके फेरेका यंत्र स्वरूप बिंदु ६८

अतःपरंप्रवक्ष्यामिषट्पंचाशद्भ्रमात्मिकीं ॥
क्रीडांचतुरशीतिंचचमत्कृतिकरांपराम् ॥ ३३८ ॥
चतुरस्रंलिखेच्चक्रंकोष्ठैर्द्वादशभिर्युतम् ॥
द्रव्यैर्धान्यैःशर्कराभिःतेष्वेकेनचखेलनम् ॥ ३३९ ॥

अब छप्पन्ना फेराका खेल कहता हूं बारह कोठेका चतुरस्र यंत्र निकालके गेहूं आदि धान्यके कण ५६ लेवे अथवा पैसे रुपये कंकरी जैसी योग्यता होवे वैसा इनमेंसे कोईभी एक पदार्थ ५६ संख्या गिनतीकी लेके खेलकी रचना करे ॥ ३३८ । ३३९ ॥

षट्पंचाशत्प्रसंख्यानैरादौपूर्णाब्धिपूरणम् ॥
ततःषोडशभिःपूर्णकर्तव्यंहिस्वबुद्धिना ॥ ३४० ॥

अब बारह कोठेका जो यंत्र है उसकी दिशामें जो कोठे ८ हैं उनमें पाँच पाँच इस प्रकार रक्खै कि चार कोठोंमें तीन तीन संख्या, चार कोष्ठकोंमें दो दो संख्या, विदिशामें जो कोठे ४ हैं उनमें पाँच पाँच संख्या रक्खै सब संख्या ४० भई बाकी १६ संख्या रहीं उसके विभाग ४ करके रक्खै ॥ ३४० ॥

पंचवारंचतुर्दिक्षुसंख्यापंचदशैवहि ॥
अयमेवचमत्कारोन्यूनाधिक्यंनदृश्यते ॥ ३४१ ॥

अब उन चारों दिशाओंकी समूह पंक्तिमें जिधरसे गिने उधरसे संख्या पंद्रहकी होती है तब ऊपर लिखे हुये विभाग ४ हैं उनमेंका एक विभाग चार संख्याका लेके उन बारह समूहमें एकएकमें एकेक मिलानेसे वह चारका विभाग अंदर मिल जाता है और चारों दिशाकी समूह संख्या पंद्रह रहती है ऐसा चारबार खेले तो वे सोलह कंकरी बारह समूहमें मिल जाती हैं. परंतु चारों दिशाकी समूह संख्या पंद्रह रहती है तब यहाँ आश्चर्य यह है कि सोलह मिलानेके पहिले भी चारों दिशाकी समूह संख्या पंद्रह थी और सोलह मिलाये बादभी संख्या पंद्रह भई तब सोलह मिलाये वे कहां गये इसको छपन्नाका फेरा कहते हैं. तैसा संसारमें आयुष्य क्षीण होती है सो मालम नहीं पड़ता है और इसी रीतिसे चौरासीके फेरेकाभी खेल है इस खेलमें चारों दिशाकी समूह संख्या छब्बीस होती हैं. सोलह मिलावै उसका उदाहरण दिखानेके वास्ते ऊपर प्रस्तारचक्र ६ बताये हैं ॥ ३४१ ॥

अथइष्टदेवताप्रदर्शनखेलमाह २९

चक्र १			चक्र २			चक्र ३		
१	२	३	१	२	३	१	२	३
जासूंद सूर्य	बर्वा भैरव	हजारा दत्तात्रेय	गुलखरी राम	रायवेल सरस्वती	कोयल शनि	चंबेली हनुमान	सेवती चंद्र	गुलसोना बुध
चंपा देवी	ऋतवसं· कामदेव	गंदा गुरु	गुलहजा लक्ष्मी ·	कनेर मंगल	बोरसरी पीर	गुलाब विष्णु	केतकी गौरी	कवडा पार्वती
मोगरा कृष्ण	गुलह· लक्ष्मी	गुलखरी राम	मोगरा कृष्ण	गुलाब विष्णु	चंबेली हनुमान	मोगरा कृष्ण	चंपा देवी	जासुंद सूर्य
केवडा पार्वती	गुलदाउ· पित्री	चर्चेरो नृसिंह	गंदा गुरु	पोहप नाग	सोंजाय कालिका	बोरसरी पीर	पाठला गणपती	मोरआं· अंबा
केतकी गौरी	कमल शिव	पोहप नाग	ऋतवसं· कामदेव	कमल शिव	पाठला गणपती	कनेर मंगल	कमल शिव	गुलदाउ· पित्री
गुलाब विष्णु	कनेर मंगल	रायवेल सरस्वती	चंपा देवी	केतकी गौरी	सेवती चंद्र	गुलहजा· लक्ष्मी	ऋतवसं· कामदेव	बर्खा भैरव
गुलसोना बुध	मोरआं· अंबा	जुई शुक्र	हजारा दत्तात्रेय	चर्चेरो नृसिंह	जुई शुक्र	कोयल शनि	सोंजाय कालिका	जुई शुक्र
सेवती चंद्र	पाटला गणपती	सोंजाय कालिका	बर्खा भैरव	गुलदाउ· पित्री	मोरआं· अंबा	रायवेल सरस्वती	पोहप नाग	चर्चेरो नृसिंह
चंबेली हनुमान	बोरसरी पीर	कोयल शनि	जासूंद सूर्य	केवडा पार्वती	गुलसोना बुध	गुलखरी राम	गंदा गुरु	हजारा दत्तात्रेय
गणपती	लक्ष्मी	पद्म	गणपती	पद्म	लक्ष्मी	गणपती	पद्म	लक्ष्मी

अतःपरंप्रवक्ष्यामिइष्टदर्शनखेलनम् ॥
स्वतःसिद्धानिचक्राणिकुसुमैःपूरितानिच ॥ ३४२ ॥
इष्टदेवसमैतैश्चप्रथमेधारणंहृदि ॥
द्वयोःप्रश्नप्रयोगेनकथयेद्धृदिसंस्थितम् ॥ ३४३ ॥
दोहा–ग्वाल एक गोपी द्विती,गगन लोकं पलचार ॥
पाप पाँच पगहे छठो, लालसात लप आठ ॥
लगेतो यह जानिये, दीजै नवम बताय ॥ ३४४ ॥

इतिश्री ह. बृ. षष्ठेमिश्रस्कंधेक्रीडाकौ॰षोडश
विधक्रीडानिरूपणंनामप्रकरणम् ॥ ७ ॥

अब इष्टदेव और मनमें धरा हुआ फूल बतानेका खेल कहता हूं आगे जो तीन चक्र लिखेहैं उनमेंके पहिले चक्रमें जो देवता अथवा फूल लिखे हैं उनमेंसे एक मनमें रक्खे फिर दूसरा आदमी उसको पूंछे कि तुमने जो मनमें धरा-है वह इस दूसरे चक्रके कौनसे कोष्ठकमें है सो पूंछके उसे मनमें रक्खै पीछे वैसाही तीसरे कोष्ठकमें भी पूंछके पंक्तिध्यानमें रखके दोहेके प्रमाणसे देव और फूल बतादेवे. उदाहरण. किसी आदमीने सेवतीका फूल मनमें धराहै सो पूंछनेसेदूसरे चक्रमें लक्ष्मीकी पंक्तिमें है तीसरे चक्रमें पद्मकी पंक्तिमें है तब लप आठ ऐसा दोहरेमें लिखा है इस वास्ते आठवीं सेवती मनमें धारी है ऐसा कह देवे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ३४४ ॥

इति सोलह तरहके खेल संपूर्ण भये प्रकरण ॥ ७ ॥

अथ बुद्धिबलक्रीडामाह।

अतःपरंप्रवक्ष्यामिखेलंबुद्धिबलाह्वयम् ॥
खेलोयंसर्वखेलेषुनृपवदुत्तमोत्तमः ॥ ३४५ ॥

अथ शतरंज ऊर्फ बुद्धिबल खेल प्रकरणम्–बुद्धिबलखेलप्रशंसा. जगत्में मनोरंजन खेल बहुत हैं तथापि ज्ञानकी वृद्धि और स्वाभीप्सित प्राप्तिके विषयमें सदसद्विचार करनेका अभ्यास अनायाससे वृद्धिगत होके विश्रांति होना बहुत उत्तम है ऐसा विचार किये तो यह गुण बुद्धिबल खेलमें बहुत करके देख पड़ता है. इसवास्ते पूर्वकालमें जो बादशाह राजा और विद्यमान जो उत्तम मंडली है उन्होंने विश्रांतिका यही उपाय निश्चय किया है और इसके ऊपर बड़े बड़े ग्रंथभी हैं. जगत्में प्रौढ़ अप्रौढ़खेल बहुत हैं उनमें यह खेल प्रौढ़ है और इसमें बुद्धिकी परीक्षा होती है ॥ ३४५ ॥

दोहरा-कौनघटावेहुनरदश, दशगुणकेतनोगंज ॥
दुःखपर्यायसुबुधबधन, कहोखेलसतरंज ॥ ३४६ ॥

और किसी कविके (दोहरा) हुन्नरको कौन घटाता है ? दशसे दशको गुणित किये तो कितनी राशि होवेंगी? दुःखका पर्यायशब्द कौनसा ? और उत्तम प्रकारसे बुद्धि बढ़ानेको क्या करें ? ऐसे शिष्यने चार प्रश्न पूछे तब गुरु कहते हैं कि, "खेल शतरंज"इन छः अक्षरोंमें उत्तर दे दिये उसका पुनः विस्तार विद्याको कौन घटाताहै? उत्तर--खेल. दशसे दशको गुणित किये तो राशि कितनी भई ? उत्तर-शत. दुःखका पर्याय शब्द कौनसा ? उत्तर--रंज. बुद्धि काहेसे बढ़ेगी उत्तर--खेल शतरंज. तात्पर्य यह कि इस खेलमें बुद्धिकी वृद्धि और बुद्धिकी परीक्षा होती है इस वास्ते यह खेल सबसे उत्तमोत्तम है ॥ ३४६ ॥

अथ बुद्धिबलक्रीडनोत्पत्तिमाह।

पुराश्रीशशिनाथाख्योविद्वान्विप्रःसुबुद्धिमान् ॥
तत्पुत्रोव्रजलालाख्यःपितृवद्गुणवानभूत् ॥ ३४७ ॥

अब इस खेलकी उत्पत्ति और नामका अर्थ कहते हैं बुद्धिबलका खेल किसने उत्पन्न किया इसका शोध करते करते "मतलयलूउलूम, व मजमयलूफनून" नाम फारसी ग्रंथमें इसकी उत्पत्तिका विषय सपड़ा उसका भाषांतर यहां लिखता हूं. पूर्वकालमें यह बुद्धिबलका खेल शशिनाथ पिता धर्यनाथ नामका कोई

विद्वान् हिंदुस्थान देशमें था उसका पुत्र व्रजलाल नाम करके था उसने यह खेल उत्पन्न किया इसका कारण ऐसा भया कि हिंदुस्थान देशमें कोई चक्रवर्ती राजा था. उसने अपनी अवस्था युद्ध प्रसंगमें देश जीतनेमें और शूरत्वमें निकाली. पीछे थोड़े वर्ष पश्चात् शरीरको बड़ा रोग होनेसे पहिले कर्म छूट गये; परंतु उस राजाको शूरत्वका व्यसन था इस वास्ते उस रोगअवस्थामें कालका निर्गम बड़े संकटसे होने लगा तब अपने प्रधान और विद्वान् लोगोंको बुलाकर कहा कि, इस समय शरीरकी रोगअवस्था होनेसे मेरा व्यसन (अश्वारूढ होके युद्ध प्रसंगमें जायके शत्रुओंको जीतना)छूट गया उससे काल निर्गम होता नहीं है इस वास्ते कोई ऐसी तरकीब निकालो कि,जिसमें प्रत्यक्ष युद्धविना मेरा व्यसन पूरा होवे ऐसा राजाका वचन सुन व्रजलाल नामक विद्वान्ने वह आज्ञा शिरपै लेके मुजरा करके विनती बहुत की कि,आपने जो विचार किया उसकी युक्ति मेरे पास है ऐसा कह अपने घर आकर स्वकपोलकल्पित जो बुद्धिबलका खेल सो राजाको दिखाया राजा बहुत प्रसन्न होकर उस खेलकी सब रीतियाँ समझके पीछे उस खेलमें अपनी आयु पूर्ण की ॥ ३४७ ॥

तेनेयंनिर्मिताक्रीडाबलाबुद्धिबलाह्वया ॥
नृपस्यराजपत्न्याश्चतुष्टयेनिर्बलाभिधा ॥ ३४८ ॥

राजाके मरे बाद रानीको भी उसखेलमें समझथी सो बुद्धिबल खेलमें अपने दिन निकालतीथी. बाद किसी समयमें रानीका पुत्र युद्धमें गया था बहुतदिनोंसे उसकी कुछ खबर नहीं आई तब रानी चिंता करने लगी. इतनेमें एक विद्वान् ब्राह्मण आकर रानीका वृत्तांत सुनके कहता है कि, हे रानी ! आप सब जानती हो. दिग्विजय करनेमें शरीरको बहुत परिश्रम लेना पड़ता है उसमें रात्रि दिन चित्त रखना ठीक नहीं है इस वास्ते बुद्धिबल शतरंजका खेल एक निर्बली खेलके प्रकार है सो श्रवण करो. तब रानीने उस खेलकी रीति सब सुनके खेलनेका अभ्यास करके उस विद्वान्के साथ खेलते खेलते कुछ दिन बीतनेके पश्चात् एक दिन रानीका खेल बलिष्ठ हुआ तब कहने लगी कि, अब राजाके ऊपर मात होनेका समय आया है. यह रानीका वचन सुन विद्वान्ने कहा कि, आपके मुखसे आज यह बात निकली है तो राजपुत्रको कष्ट प्राप्त हुये बहुत दिन भये हैं. परंतु आपसे प्रत्यक्ष कहनेको किसीकी शक्ति हुई नहीं आज आपके मुखसे बात निकली तब मैंने भी निवेदन किया रानीने पुत्रका वृत्तांत सुनके पुत्र शोकमें भी यह बुद्धिबल शतरंज खेलनेमें अपनी शेष आयु पूर्ण की उस दिनसे भूमिके ऊपर इस खेलकी

प्रवृत्ति भई और इस ग्रंथ निर्माण कालका प्रमाण शक संवत्सर मालूम नहीं पड़ता है; परंतु फ़ारसी ग्रंथमें "गुलिस्ताँ" नामक ग्रंथ हिजरी सन् ६५६ में "शेख़शादीशीराजा" ने किया है उस ग्रंथमें भी इस शतरंज खेलका दृष्टांत दिया है और ऐसा एक लेख देखनेमें आया है कि, हिंदुस्थानके एक राजाने यह खेल ईरानके राजाको पठाया उसको १३०० वर्ष भये इस कारणसे यह खेल पुरातन है ऐसा सिद्ध होताहै ॥ ३४८ ॥

अथ शतरंजराज्यवर्णनम् ।

एकस्मिन्नगरेनृपौससचिवौवीरौसदासंगरे
हस्त्यश्वोष्ट्रपदातिभिःपरिवृतौपद्भ्यांसदाधावतः ॥
युद्धंतौकुरुतःपरस्परमिदंनित्यंहिशस्त्रंविना
चित्रंतावमरौविचित्रमितियत्सैन्यंमृतंजीवति ॥ ३४९ ॥

अब शतरंजका राज्य वर्णन करते हैं—कोई कवि अद्भुत अलंकारसे बुद्धिबलक्रीडाका वर्णन करता है. अहो यह कितना आश्चर्य है ! कि, एक नगरमें दोनों राजा अपने अपने प्रधान सहवर्तमान युद्धमें बड़े शूर और हाथी घोड़े ऊँट सिपाही पास हैं उनके ऊपर बैठे विना पाँवसे दौड़ते हैं और शस्त्रविना परस्पर युद्ध करते हैं और यह बड़ा आश्चर्य है कि, वे दोनों राजा अमर हैं उनकी मृत सैन्य पुनः जीवित होती है ॥ ३४९ ॥

अथ शतरंजपटादिवर्णनम् ।

नृपाहतांराजनीतिमुक्त्वाशंकरनंदनः ॥
श्रीनीलकंठोवदतिक्रीडांबुद्धिबलाश्रिताम् ॥ ३५० ॥

अब शतरंजका पट वर्णन करते हैं—शंकर पंडितके पुत्र नीलकंठ पंडित राजाको मान्य ऐसी राजनीति वर्णन करके अब बुद्धिबलक्रीडा वर्णन करते हैं ॥ ३५० ॥

पट्टेपटेवाभुविवाथकार्यंप्रागग्ररेखानवकंतथैव ॥
उदग्दिगग्रंनवकंसमानमेवंचतुःषष्टिपदंहितत्स्यात् ॥ ३५१ ॥

उसमें पहिले पट कैसा करे सो कहते हैं—पट्ट कहिये काष्ठके पीठकके ऊपर अथवा पट कहिये वस्त्रके ऊपर अथवा भूमिके ऊपर पूर्वाग्र रेखा नव करे वैसीही उत्तराग्र रेखा नव करे ऐसा चौसठ कोष्ठकका पट होताहै ॥ ३५१ ॥

कोणेष्वथोहंसपदैस्तदंकयेत्तत्पंक्तिगंदिक्षुपदद्वयंद्वयम् ॥
मध्येचतुष्कंचसमंक्यतत्रस्थाप्यंचसांग्रामिकसैन्ययुग्मम् ३५२॥

पीछे उस पटके चार कौनेके ऊपर चार हंसपद निकाले और चार दिशामें दोदो हंसपद निकाले बीचके चार कोष्ठकमें चार हंसपद निकाले ऐसा पट सिद्ध करके पीछे दोनों सेनाओंको बिठावे ॥ ३५२ ॥

अंत्येष्वष्टपदेषुमध्यपदयोराजाचमंत्रीतयोरुष्ट्रौपार्श्वगतौतयो-
रपितथाबाहौतयोर्दंतिनौ ॥ तद्लग्नाधरपंक्तिगावसुमितास्था-
प्याबुधैःपत्तयःस्थाप्यंचात्रपरत्रसैन्यमुभयंचैवंरणायोद्यतम् ३५३

पटके अंतके जो आठ घर हैं उनमें दोनों तरफ तीन तीन घर छोडके दक्षिण हंसपादके ऊपर राजाको बैठावे और बाएँ हंसपादके ऊपर प्रधानको बैठावे और राजाके पास ऊंट, ऊंटके पास घोड़ा, घोड़ेके पास हाथी बैठावे. वैसाही प्रधानकी तरफसे ऊंट, घोड़ा, हाथी ऐसे आठों घरोंमें आठ मोहरे बिठायके उनके आगे प्रत्येक घरमें एक एक प्यादा बैठावे. दूसरे खेलने वालेने भी इसी प्रमाणसे बुद्धिबल मांडना तो बत्तीस मोहरे अपनी अपनी जगहोंमें बैठाये जाते हैं ॥ ३५३ ॥

कालिदासः ।

भूपद्वंद्वंसचिवयुगलंवारणाश्वोष्ट्रकाणांयोग्यंयोग्यंकमलनयनेप
त्तयःषोडशैव ॥ तत्रत्यानांस्थलमिभहयोष्ट्रप्रधानप्रभूणांवक्ष्येहं
तेपदगतिगणस्यापियुद्धंगतिंच ॥ ३५४ ॥

ऐसा इस खेलमें राजा २, प्रधान २, हाथी ४, घोड़े ४, ऊंट ४ और प्यादे १६ ऐसे सब मोहरे ३२ होते हैं. अब इनके बैठनेका ठिकाना और चलनेकी गति और युद्धकी रीति सब वर्णन करता हूं ॥ ३५४ ॥

नागौकोणेष्वनुगजपथाश्वौसमीपेतयोष्ट्रौमध्येमंत्रीनरपतिवरौ
पत्तयश्चाग्रभागे ॥ मध्येकोष्ठान्रदपरिमितान्रम्यरूपेविहाय
प्रांतेपंक्तिद्वयमपिपरंसन्मुखंस्यात्तथैव ॥ ३५५ ॥

चार कोनेमें चार हाथी बैठावे हाथियोंके पास घोड़े, उनके पास ऊँट दोनों ऊँटोंके बीच प्रधान और राजा और सबोंके आगे एकएक पैदल बैठावे बीचमें बत्तीस कोष्ठक युद्ध खेलनेके लिये छोड़के सामनेकी तरफ भी इसी प्रकार नरदा बैठावे ॥ ३५५ ॥

नीलकंठः ।

अनावृत्तिपरावृत्तिभिदाक्रीडाद्विधेष्यते ॥
पदतत्स्थाप्यभेदेनतत्राप्याद्याद्विधामता ॥ ३५६ ॥

यह क्रीडा दो प्रकारकी है. एक अनावृत्ति कहिये जो मोहरा रक्खे उसको पीछा फिरावे नहीं आगे जावे और एक परावृत्ति कहिये मोहरा जायके पीछा फिरना स्थानकी योजनासे उसमें भी अनावृत्तिक्रीडा दो प्रकारकी है ॥ ३५६ ॥

सचिवाग्रगतौततःपदातीसचिवौतावनुतत्रचालनीयौ ॥
पदयुग्ममितीहसंप्रदायःपदगोन्योपिपरैःप्रवर्त्यतेत्र ॥ ३५७ ॥

सो कहते हैं खेलते समय पहिले दोनों प्रधानके आगे जो प्यादे हैं उनको चलावे बाद प्रधानकों चलावे उसमें पहिले दो दो घर चलाना ऐसा एक संप्रदाय है और एकएक घर चलाना ऐसा भी संप्रदाय है ॥ ३५७ ॥

गतागतेहयोष्ट्रयोर्नचांतरानिवर्तकः ॥
पुरःस्थिताहयादयोगजस्यतेनिवर्तकाः ॥ ३५८ ॥

और इस खेलमें ऐसा नियम है कि ऊंट और घोड़ा इन दोनोंको आने जानेमें दूसरा रोकनेवाला नहीं है और घोड़ा आदि सब मोहरे हाथीके आगे रहें तो हाथीको रोक सकते हैं ॥ ३५८ ॥

मंत्रिणःपृष्ठकोणस्थौस्थाप्यौपत्तीस्थिरावुभौ ।
तथाक्रमेलकस्यापिपश्चाच्छृंखलगावुभौ ॥ ३५९ ॥

अब दो प्रकारका व्यूह कहते हैं–मंत्रीको आगे बढायके उसके पीछेके दो कोने ऊपर दो प्यादे रक्खै उसी तरहसे ऊंटके पीछे शृंखला सरीखे दोनों प्यादे रक्खे ॥ ३५९ ॥

व्यूहद्वयमिदंचक्रव्यूहवत्परमारणम् ॥
द्वित्रिप्रकारोद्यमनंदुरोखशःप्रकीर्तितः ॥ ३६० ॥

यह दोनों व्यूहसे चक्रव्यूह सरीखा शत्रुको मारनेके वास्ते ऐसे दो तीन प्रकारसे उद्योग करे उसको दुरोखस चाल कहते हैं ॥ ३६० ॥

परस्यराज्ञोभिमुखंद्विपंसंस्थाप्यमध्यतः ॥
स्वीयान्यस्यापसरणात्काटीशःसप्रकीर्तितः ॥ ३६१ ॥

अब काहाढशेहेका लक्षण कहते हैं–सामनेवाले राजाको जैसी किस्तलगे

वैसा मोहरा रखके उन दोनोंके बीचमें जो अपना मोहरा है उससे सामने वालेके सबल मोहरेको मारके शहकाढ ऐसा कहे इस खेलको काटीश काहाडशी है ऐसा कहते हैं ॥ ३६१ ॥

नसांग्रामिकःकोपिसंस्थापनीयोविनासंश्रयंसंश्रयोनीचइष्टः ॥
नवैसंश्रयोभूपतेरन्यइष्टोनवामारणंभूपतेस्त्विष्टमेव ॥ ३६२ ॥

इस खेलमें आश्रय विना निर्बल नरद रक्खै नहीं और आश्रय नीचका भी होवे तथापि इष्ट है राजाको किसीका आश्रय अपेक्षित नहीं है और राजाको मारना वह भी इष्ट नहीं है ॥ ३६२ ॥

संरोधनंराजजयोमतोऽत्रतदर्धतैकाकितयाप्रदिष्टा ॥ साचेच्चतुः
षष्टिमिताक्रमेणस्युर्यस्यसोप्यत्रपराजितःस्यात् ॥ ३६३ ॥

इस खेलमें जीतनेका लक्षण कहते हैं–खेलमें सामने वालेके राजाको रोक लिया तो अपना जय हुआ जानै. यदि सब मोहरे मरगये हों केवल राजा अकेला रहगया होवे तो अर्ध जय जानै; परंतु जिसके मोहरे जीवते हैं उस मोहरेकी पदगति संख्या चौसठ होवे तो पराजय जानै ॥ २६३ ॥

राजाविरुद्धेशयुतोनचेत्स्यान्नचास्यपक्षेगतिमान्द्वितीयः ॥
प्रमापयेत्सोथविपक्षपक्षेसमीपगंस्वस्यनिरोधनक्षमम् ॥ ३६४ ॥

अब जिस खेलमें अपने राजाके साथ सामनेवालेका राजा निकट न होवे और अपना दूसरा मोहरा जो है उसको चलनेकी जगह नहीं है तब अपने राजाको रोकके सामनेवालेके मोहरे जो बैठे हैं और वे बलवान् हैं तथापि उस मोहरेको मारके राजा अपने फिरने की जगह कर लेवे ॥ ३६४ ॥

निरुध्यमानस्यनृपस्यसार्थेशिष्येतयद्येकतरस्तदैव ॥ तत्क्री-
डकःसंगणयेत्प्रतीपांस्तेष्वात्मनोद्रावथतान्द्विनिघ्नान् ॥ ३६५ ॥

अब जिस खेलमें अपना राजा शत्रुसेनामें बंद हो गया है और अपना मोहरा एक बाकी रहा है तब क्रीडा करनेवाला सामनेवालेके जो मोहरे हैं उनकी गतिपद संख्या और अपने मोहरेकी गतिपद संख्या यह दोनों संख्या मेली करके दुपट करै ॥ ३६५ ॥

कृत्वातदंकान्गणयेत्प्रतीपक्रीडाश्चतुःषष्टिमिताःसहीनः ॥
तन्मध्यएवास्यपराजयःस्यात्ततोधिकोसौविपरीतकश्च ॥ ३६६ ॥

पीछे वह संख्यांक जो हुआ वह अंक चौसठके बराबर होवे तो क्रीडा करनेवाला हीन जानना चाहिये चौसठसे वह संख्या कम होवे तो पराजय जानै और चौसठसे पूर्वांक अधिक होवे तो जय जानै ॥ ३६६ ॥

भूपेदृष्टिर्यस्यकस्यापिकिस्तिःस्यातामन्येशःसमुच्चारयंति ॥
खेलोयस्मादासुरोदिव्यदृष्टेस्तस्मादत्रप्राकृताःसंतिशब्दाः ३६७

राजाके ऊपर जिस मोहरेकी दृष्टि होवे उसको किस्ति कहते हैं कितनेक उसको शह कहते हैं और दिव्यदृष्टि लोगोंके सामने खेल जो है सो आसुर कहा जाता है इस वास्ते इस ग्रंथमें प्राकृत शब्द हैं ॥ ३६७ ॥

पश्चात्तीर्यनसरतिपुरोगेहमेकंप्रयायाद्रोधाभावेपदगतिरहितंहं
तिकोटयोर्यदृच्छः ॥ अश्वःसार्द्धद्वयपदगतिर्हंतिशत्रून्पदस्था-
न्भूपेकिस्तिरचयतिचतुःषष्टिकोणेषुगच्छेत् ॥ ३६८ ॥

अब प्यादेकी गतिका और युद्धका लक्षण कहते हैं—प्यादा जहां बैठा होवे वहांसे पीछेके घरमें और बाईसीधीतरफके घरमें जाता नहीं है केवल आगे एक घर चलता है रोकने वाला नहो वे वहांतक जाता है और शत्रुको सामनेके कोनेके दो घरमें तिरछा मारता है. घोड़ा अढ़ाई घर चलता है और अढ़ाई घरके ऊपर जो शत्रु होवे उसको मारता है राजाको किस्ति देता है चौसठ घर फिरता है ॥ ३६८ ॥

कोणेकोणेष्वसदनगतिश्चेन्नमार्गावरोधोहन्यान्मार्गस्थितमपि
करःकिस्तिमीशेतनोति ॥ दंतीदंतीप्रमितभवनान्येतिचेन्नां
तरायस्तिर्यक्पश्चादभिमुखमरिंहंतिकिस्तिंकरोति ॥ ३६९ ॥

ऊंट चारों तरफके कोनेके घरोंमें तिरछा एक घर से आठ घर तक चलता है. बीचमें रोकनेवाला सबल होवे वहांतक चले और निर्बल होवे तो उसको मारता है राजाको किंस्ति देता है. हाथी बीचमें रुकावट न होवे तो आठ घर चलता है और चारों दिशाके चार घर जो बाईसीधी तरफ पीछे आगेके हैं उनमें शत्रुहोवे उसको मारता है राजाको किस्ति देता है ॥ ३६९ ॥

दिक्चातुष्केव्रजतिसचिवःकोणवर्णेपिगेहान्यष्टौऽरोधेसतिरिपुग
णंहंतिकिस्तिंदधाति ॥ किस्तेःपूर्वक्षितिपतिगतिर्वाजिवच्चैक
वारंपश्चादेकंपदमनुसरेदासनादासमंतात् ॥ ३७० ॥

प्रधान चार दिशाके और चार विदिशाके जो घर हैं वहां चलता है बीचमें रुकावट न होवे तो आठ घर जाता है शत्रुकी सेनाको मारता है राजाको किस्ति देता है. अब राजाकी गति जहांतक राजाको किस्ति लगी नहीं है वहांतक घोड़े सरीखा अढ़ाई घर एक वार चलता है बाद दूसरी वार चलना होवे तो अपने आसनसे आठों दिशाओंमें एक एक घर चलता है ॥ ३७० ॥

उष्ट्रोहस्तीःप्रधानश्चनागगेहानिगच्छति ॥
यावज्जिगमिषूरोधोनोचेदाहुर्मनीषिणः ॥ ३७१ ॥

ऊंट हाथी और प्रधान ये तीनों आठ घर चलते हैं और बीचमें रुकावट न होवे तो जहांतक जीतनेकी इच्छा होवे उतने घर चलते हैं ऐसा बुद्धिमान् पुरुष कहते हैं ॥ ३७१ ॥

अकिस्तिर्भूपतिर्नूनमासनात्सकृदश्वगः ॥
पश्चादेकपदंगच्छेदासमंतात्स्वभावतः ॥ ३७२ ॥

किस्ति बिना राजा एक वार घोड़ेकी गतिसे चलता है पीछे चारों तरफ एक घर चलता है ॥ ३७२ ॥

किस्तौसत्यांव्रजतिनपरःकिस्तिमध्येनभूपोवीशावीशानवल-
वलिनोघ्नंतिभूपोऽसहायान् ॥ तत्साहाय्यंनिजवलजनैःकार्यमादौ
कथंचिन्नोचेद्धन्युःप्रियसखिपरास्तूर्णमेवस्वकीयान् ॥ ३७३ ॥

राजाको किस्ति होवे तो किस्ति निकाले बिना दूसरा मोहरा नहीं चल सकता है और किस्तिमें राजा नहीं चल सकता है और राजा निर्बल मोहरे को मारके किस्ति निकाल सकता है. इसवास्ते जिस मोहरेसे किस्ति देना है उस मोहरेको पहिले सबल करे पीछे उससे किस्ति देवे ऐसा न करे तो हे प्रियसखी सामनेवाले शत्रु अपनी सेनाको मारेंगे ॥ ३७३ ॥

सर्वेवीशानभिघ्नंतिविशाददतिभूपतौ ॥
किस्तिजिघांसादिच्छाचेदेतन्नीतिमतांमतम् ॥ ३७४ ॥

और एक मत ऐसा भी है कि राजाको किस्ति लगी है वह किस्ति तोडना होवे तो सबल या निर्बल उस मोहरेको मारके किस्ति छुड़ावै ॥ ३७४ ॥

स्थानंक्षेमंसैन्यकानांविलोक्यस्वानांपश्चाद्योद्धुमिच्छेत्परेण ॥
किस्तेर्मध्येपूरणार्थंप्रदत्तोयःकश्चिद्वातस्ययत्नोविधेयः॥३७५॥

खेलते समय अपनी सेनाका सुख और बैठनेका स्थान देखके पीछे शत्रुके साथ युद्ध करनेकी इच्छा करे और अपने राजाको किस्ति लगी दूर करनेके वास्ते बीचमें जो मोहरा नाकिस्ति करनेके वास्ते रक्खा होवे उसके उठानेका प्रयत्न करे ॥ ३७५ ॥

दृष्ट्वाभूपेमाहतिश्चेत्समीपेकस्माद्धन्यावाहिनीव्यर्थमेव ॥
बुद्धिस्तावन्माहतौयोजनीयायुद्धेबुद्धेर्योजनंव्यर्थमेव॥३७६॥

खेलनेवालेको पहिले राजाके ऊपर मात निकट देखके सेनाको मारना व्यर्थ है इसवास्ते पहिले आरंभ करते ही मात करनेके ऊपर दृष्टि रक्खे युद्ध करनेके ऊपर बुद्धि चलाना व्यर्थ है ॥ ३७६ ॥

पत्तेःकिस्तिर्वाजिनश्चापिकिस्तिर्वातान्नश्येद्भूपतेश्चालनेवा ॥
साचिव्यौष्ट्रीवारणीचापिकिस्तिर्घातोत्थानाऽऽपूरणैर्नाशमेति३७७

प्यादेकी किस्ति और घोड़ेकी किस्ति ये दोनों किस्ति मोहरेको मारनेसे दूर होती हैं अथवा राजाको हटानेसे नाकिस्ति होती है. और प्रधान, ऊंट, हाथी ये तीनों किस्ति मोहरेको मारनेसे दूर होती हैं अथवा राजाको हटानेसे अथवा दोनोंके बीचमें दूसरा मोहरा ईर रखके किस्ति दूर होती है ॥ ३७७ ॥

किस्तौसत्यांभूपतेश्चेन्नमार्गःक्रीडाकारामाहतिंतांवदंति ॥
युद्धेसैन्यंसर्वमापातितंचेत्तद्विद्वांसोबुर्दमाभाषयंति ॥ ३७८॥

अब खेलते समय राजाको किस्ति होवे, हटनेकी जगह न होवे तो खेलने वाले उसको मात कहते हैं और युद्धमें मोहरे सब मरगये होवें तो विद्वान् लोग उसको बुर्जिमात कहते हैं ॥ ३७८ ॥

एकःपत्तिश्चेदसौमाहतिःसासर्वैहन्यात्तत्रबुर्दापरस्मिन् ॥
वाहिन्यावाभूपतेर्नोगतिःसाजिच्चिन्नस्यांग्राह्यमेकंपरस्याः॥३७९॥

यदि एक प्यादा बाकी है और राजाको मात भई तो उस मातको भी बुर्जिमात कहते हैं और वह एक प्यादा शत्रुकी सेनाको मारे. अब खेलमें सर्व सेनाको और राजाको चलनेकी जगह न होवे तो उसको जितबाजी कहते हैं दूसरेकी सेनामेंसे एक मोहरा लेवे अथवा एक घर छुड़ा लेवे ॥ ३७९ ॥

यस्यस्थानंपत्तिराप्नोतिगच्छन्तत्रस्वीयःस्थापनीयःसएव ॥

मंत्रीमंत्रीशस्थलोपेतपत्तिर्हतानोचेदुत्पतेदेकएव ॥ ३८० ॥

अब अपना प्यादा आगे जाते जाते सामने वालेके हाथी घोड़ा ऊँटके जो छः घर हैं उनमें से जिस घरमें पहुँचा उस घरका मोहरा अपना मरगया होवे तो उसको जीता करके उस घरमें बिठावै अथवा मरा न होवे तो जीता मोहरा उठायके उस घरमें बिठावै और वह प्यादा जो कभी प्रधानके या राजाके घरमें जायके बैठा तो वहां प्रधानको बिठावे एक प्रधानज खड़ा होता है परंतु जिस मोहरेको सजीवन करना होवे उस घरके ऊपर मारनेवाला न होवे ऐसा समय देखके मोहरा सजीवन करै ॥ ३८० ॥

हस्तीवाश्वःप्रियसखिकरोनोतृतीयःकदाचिन्मंत्रीचामीकरगि-
रिकुचेनद्वितीयःकदाचित् ॥ यत्रोपेतःपदगतिरहोवारणादि-
त्वमेतिस्वीयस्तस्मिन्विलसतिमरिंचारुनेत्रेनहन्यात् ॥ ३८१ ॥

और हे प्रियसखि हाथी घोड़ा ऊँट ये दो बार सजीवन होते हैं तीसरी बार नहीं होते हैं मंत्री एकही वार होता है और अपना प्यादा जिस घरमें जायके बैठै उस घरके हाथी आदि मोहरेके अधिकारको पाता है और वह बैठते शत्रुको मारै नहीं ॥ ३८१ ॥

हत्वाकिंचिन्माहतिर्याभवेत्सामाराख्यैवप्रोज्वलःतारहारे ॥
उत्थानेयामाहतिर्मध्यगस्यसाविज्ञेयाकुब्जरूपासुरूपे ३८२॥

अब खेलते समय थोड़े मोहरोंको मारनेके पश्चात् जो मात होवे उसको माराख्यमात कहते हैं और उठते समय जो मात होवे उसको कुब्जमात कहते हैं ॥ ३८२ ॥

दीर्घैपत्तेमाहतिःसानिकृष्टाह्रस्वेचौष्ट्रीमाहतिर्दुःकरैव ॥
साचिव्यैभीतौरगीमाहतिर्यासाविज्ञेयाहीनरूपाक्रमेण ३८३॥

दूरके प्यादेसे जो मात करना कठिन है और ऊँटकी मात नजीकसे होना बहुत कठिन है. और प्रधानसे हाथीसे घोड़ेसे जो मात करना यह तीन मात हीन कही जाती हैं ॥ ३८३ ॥

किंचित्कर्तुंनैवशक्नोतिकश्चित्सेनाधीशेमाहतिंवाथबुर्दम् ॥
श्रीभद्रांकेयामिनीशोपमास्येधीमंतस्तांकायमांव्याहरंति ३८४॥

जिस खेलमें राजाके ऊपर कोई भी मोहरा मात या बुर्जिमात करनेको समर्थ नहीं है उसको बुद्धिमान पुरुष कायमबाजी कहते हैं ॥ ३८४ ॥

यस्माच्छःस्यात्तत्तदेवप्रचाल्यंबालेसास्यादस्तमोरेतिनीतिः ॥
यत्रन्यस्तंयत्तुतत्रैवतत्स्यान्नीतिर्बालेसानुखानापुरेति ॥ ३८५ ॥

हे बाले! हे स्त्रि! इस खेलमें नीति दो हैं सो कहते हैं-जैसी जैसी राजाको शह लगती जावे वैसा वैसा राजाको हटाते जावे इसको अस्तमोरा नीति कहते हैं और राजाको एकही ठिकाने बिठायके शहको नाशह करै आगे दूसरे मोहरे खेलते जावे उसको सानुखाना नीति कहते हैं ॥ ३८५ ॥

नीतिद्वंद्वंयत्रपूर्वप्रयुक्तंसासंज्ञास्यादस्तुखानापुरेति ॥
नीत्यापूर्वखेलनादुत्तमैवनीतिर्नोचेद्बाधकंनैवकिंचित्॥३८६॥

और जिस खेलमें पूर्वोक्त दोनों नीति चल रही हैं उस नीतिको अस्तुखाना पुरा कहते हैं. इस खेलमें नीतिपूर्वक खेलनेसे उत्तम नीति जानै और नीति बिना खेले तो उसमें बाधक नहीं है ॥ ३८६ ॥

पश्चाद्दिक्कोणातिर्यङ्नोगच्छेत्पदगतिःसदा ॥
पुरोऽरुद्धंपदंयायात्कोटचोर्हंताचकिस्तिकृत् ॥ ३८७ ॥

प्यादा पश्चिम दक्षिण उत्तर तरफ और तिर्यक् कोणेके घरोंमें जाता नहीं है. केवल आगे जो कभी रुकावट न होवे तो सामनेका एक एक घर चलता है और कोणेके दो घरोंमें शत्रु निर्बली होवे तो उसको मारता है और किस्ति देता है ॥ ३८७ ॥

अथ राजगुणनिरूपणं-नीतिशास्त्रे।

ऋजुवक्रगतिर्ज्ञेयोधीरोधीमान्प्रतापवान् ॥
प्रजापालनसंपन्नकीर्त्यामरसमःप्रभुः ॥ ३८८ ॥

इस खेलमें मोहरेकी चाल और रीतिकी योजना की है वह नीतिशास्त्रके सानुकूल केवल राजनीतिका गर्भार्थ लेके की है इसमें पहिले गतिकी योजना प्रधानकी गति वक्र और सरल, ऊँटकी वक्र, हाथीकी सरल, राजाकी वक्र, सरल यह सब किस हेतुसे हैं वह सब निरूपण करताहूं. राजा कैसा होवे इसके ऊपर राजनीतिकार कहते हैं-राजा किसी जगहमें सरल चले किसी जगहमें वक्र चले धैर्य, बुद्धि, प्रताप रक्खै; प्रजा पालन करै; कीर्तिसे देवतुल्य मरणरहित रहै वही राज्य पदवीके योग्य है. यह नीति दिखानेके वास्ते खेलमें राजाकी वक्र और सरलगति रक्खी है और सर्व मोहरे मरगये

तो भी राजा धैर्य रखके अपने बचाव करनेके वास्ते धीरतासे उद्योग करै खेल बंद करै नहीं ॥ ३८८ ॥

येनयुद्धप्रसंगस्तुनश्रुतोनावलोकितः ॥
सधीरोवासदाशूरःपरत्परिगणंकिल ॥ ३८९ ॥

जिसने युद्धप्रसंग न कभी सुना और न कभी देखा है, परंतु जिसका स्वभाव जन्मसे धीरपनेका और शूरत्व का है तो वह राजा विचार न करके एकदम युद्धमें जायके पड़ता है तो प्रथम राजाके ऊपर शत्रुकी मार पड़ती है ॥ ३८९ ॥

नगणस्याग्रतोगच्छेत्सिद्धेकार्येसमंफलम् ॥
यदिकार्यविपत्तिःस्यान्मुखरस्तत्रहन्यते ॥ ३९० ॥

इस वास्ते राजा एकाएकी युद्धमें आगे जायके पड़े नहीं कारण, कार्यसिद्धि हुई तो दो पाँव आगे गये अथवा दो पाँव पीछे रहे तो भी यशप्राप्ति समान है. यह नीति समझनेके वास्ते प्रथम राजा घोड़े सरीखा उडै और राजा पहिले खेलै नहीं आगे निकला तो मार खावेगा ॥ ३९० ॥

अथ प्रधानगुणनिरूपणम् ।

ऋजुवक्रगतौप्राज्ञोदूरद्रष्टाहितेरतः ॥
शूरश्चप्रभुभक्तोऽसौराजमंत्रीप्रकीर्त्तितः ॥ ३९१ ॥

राजाका प्रधान कैसा होना चाहिये कि जो सरलमार्ग और टेढ़ा मार्ग चलना जानता हो, जिसकी दूरदृष्टि हो और राजाका हित करनेवाला, राजाका भक्त, शूर होवे तो ऐसा मनुष्य प्रधान गादीऊपर योग्य है. यह नीति दिखानेके वास्ते प्रधानकी गति सरल वक्र रक्खी है. दूरद्रष्टा कहिये जितने घर अपेक्षित होवें उतने घर चले. 'हितेरतः' इस विशेषणसे राजाके ऊपर दाँव आवे तो प्रधान समेत सर्व ईरमें आयके अपना प्राण गमायके राजाका बचाव करैं यह रीति रक्खी है ॥ ३९१ ॥

सानुकूलेसुकालेचविपत्कालेसमःसुधीः ॥
नभ्रमोजायतेयस्यसपार्थपुरुषोत्तमः ॥ ३९२ ॥

अब प्रधान अकेला रहा तो भी उन्मत्त करै नहीं उसका क्या कारण सो कहते हैं–उत्तम अनुकूल समय आया होवे अथवा विपत्तिकाल आवे तो भी जिसकी वृत्ति समान रहती है कालपरत्व करके जिसको भ्रम होता नहीं है

उसे उत्तम पुरुष जानना. यह नीति दिखानेके वास्ते प्रधानको संकटके समय भी उन्मत्त होना नहीं चाहिये ऐसा निर्बंध बांधा है ॥ ३९२ ॥

अथ उष्ट्रगुणनिरूपणम् ।

वपुर्विषमसंस्थानंकर्णज्वरकरोरवः ॥
करभस्याशुगत्यैवाच्छादितादोषसंततिः ॥ ३९३ ॥

जिसका शरीर चारों तरफसे वक्र है और जिसका शब्द कर्णको त्रास देनेवाला ऐसा यद्यपि ऊँट है तथापि उसका सत्वर गतिरूप गुणसे सर्व दोष समुदाय अस्त होगया;है क्योंकि एक सबल गुणसे सब दोष गुप्त होते हैं ऐसा कविताका तात्पर्य है. इस वास्ते ऊँटकी गति वक्र है. परंतु दूर पर्यंत वेध करनेवाली है. त्वरित गतिरूप गुणसे दूषण आच्छादित होकर बडप्पन मिलता है. यह नीति दिखानेके वास्ते ऊँटको राजा और वज़ीरके पास घर दिया है ॥ ३९३ ॥

अथाश्वगुणनिरूपणम् ।

बहुभिःपशुभिःकिंवैविनाचैकेनवाजिना ॥
येनोड्डानवतायुद्धेविजिताःशत्रुपंक्तयः ॥ ३९४ ॥

हस्ति आदि बहुत पशु हैं तथापि उनका उपयोग नहीं है कारण कि घोड़के उड्डान वगैरह गुणोंसे शत्रुके समुदाय जीते जातेहैं. इस श्लोकमें सर्व पशुओंमें घोड़े का उड्डानगुण अधिक वर्णन किया. सब शूरोंको भी शत्रुसेनाके ऊपर तलवारका घाव करते वक्त घोड़ा उड़ायके करना होता है इसवास्ते घोड़ेमें उड्डानगुण विशेष है ऐसा समझके घोडेकी गति अढ़ाई घरकी रक्खी है. घोड़ा जन्म होतेही जन्मस्थानसे अढ़ाई घरपे उड्डान करके स्थिर होता है यह सब मोहरेसे विशेष योजना काहेके वास्ते करी है सो शंका मात्र रहती है; परंतु घोड़ेकी चंचलतासे यह गुण दिखाया ऐसा मालूम पड़ता है. घोड़ेका माल चंचलपनेपर है ॥ ३९४ ॥

दोहा ॥ चंचल चाल चमक्कनी, अतिभोजन अतिरोष ॥
यह गुण तुरय बिसाहिये, यह तिरियाके दोष ॥ ३९५ ॥

इसके ऊपर किसी कविने हिंदुस्थानी भाषाके दोहेमें घोड़ेका गुण और स्त्रियोंका दोष वर्णन किया है. चंचल चाल और चलते चलते बिचकना और बहुत आहार करना तथा बहुत क्रोध होना यह सब घोड़के गुण और स्त्रियोंके

दोष हैं. तात्पर्य चंचलपना घोड़ेका मुख्य गुण है वह दिखानेके वास्ते जन्म होतेही जन्मस्थानसे उड्डानकी योजना दिखाता है ॥ ॥ ३९५ ॥

अथ हस्तिगुणनिरूपणम् ।

वक्रत्वंसरलत्वंचस्वभावादसतांसताम् ॥
गतिर्नागस्यसरलावक्राहेर्जन्मतःकिल ॥ ३९६ ॥

वक्रत्व और सरलत्व, यह दुष्ट और सत्पुरुषोंका स्वाभाविक गुण है. इसपर दृष्टांत जन्मसे हस्तीकी गति सरल और सर्पकी गति वक्र होती है इसमें किसीका वाद नहीं है स्वभावसे हस्तीकी गति सरल है उसको टेढ़ा फिरना नहीं आता इस वास्ते हस्तीका जो साटमारी खेल है सो हस्तीको जर्जरीभूत करता है और घोड़ेसवार हाथीको चिढ़ायके निकल जाते हैं यह प्रत्यक्ष अनुभव है ॥ ३९६ ॥

अथ पदातिगुणनिरूपणम् ।

ऋजुचित्तेनयद्वाक्यंप्रोक्तंदुःखंददातिन ॥
वक्रीभूतःप्रहारोसौखड्गस्याशुनिकृन्तति ॥ ३९७ ॥

अब पदातिके गुण कहते हैं—सरल चित्तसे किसीने तीक्ष्ण भाषण किया तो दुःख देता नहीं है. इसपर दृष्टांत टेढ़े हाथसे जैसा खड्ग प्रहार करना काम आता है वैसा खड़ी तरवारका घाव बरोबर लगता नहीं है ॥ ३९७ ॥

दोहा—सज्जनसेसीधेरहै, बांकोअरिसोहोय ॥
यहमनुष्यकीरीतिहै, सरलपनोमतखोय ॥ ३९८ ॥

जो सज्जन है उससे सरलपनेसे रहना और जो वक्र गतिसे चलता होवे उससे टेढ़े रहना यह मनुष्यकी रीति है इसवास्ते मनुष्यको एक शत्रु बिना किसीसे भी टेढ़े रहना नहीं चाहिये ॥ ३९८ ॥

वही सिपाही बोलिये, सन्मुख सहे जो घाव ॥
ज्योंप्यादाशतरंजका, पीछेरखेनपाव ॥ ३९९ ॥

शूर उसको कहना चाहिये जो सन्मुख होकर शत्रुका घाव सहन करता है. इसका दृष्टांत शतरंजका प्यादा जैसे अपने पाँव पीछे नहीं रखताहै. यह तीन सुभाषित के अनुसार प्यादेकी गति आदिक लक्षण स्थापन किये हैं॥ ३९९ ॥

श्लोक–सहसाविदधीतनक्रियामविवेकःपरमापदांपदम् ॥
वृणुतेहिविमृश्यकारिणंगुणलुब्धाःस्वयमेवसंपदः ॥४००॥

अथ महाराष्ट्रभाषामध्येबुद्धिबलक्रीडावर्णनम् ।

श्लोक ॥ जीच्याजाणपटाससुंदरघरेंअष्टाष्टचारींमुखें, झालींतीं गणितांसमस्तहिचतुःषष्टीगणावींसुखें ॥ मध्येंदोनघरेंतयास कटतेंकेलेंचहूंबाजुला, तेंसिंहासनचिह्नहोयपटमीसांगीतला हातुला ॥४०१॥ गीति ॥ गजअश्वउष्ट्रअसती, दोनतसेअष्ट तेपदातीरे॥एकप्रधानराजा, मुख्यतयालागिंसंपदातीरे ॥४०२॥ क्रीडाकरितीदोघे, प्रत्येकालासमानहींमोहरीं ॥ सामग्रींतन सेत्या, दोघांलान्यूनतीळवामुहरी ॥ ४०३॥ मध्येंदोनकटांव र, उजवेबाजूसबैसवींराजा॥डावीकडेप्रधाना, बैसविण्यालागि सुस्थळींयोजा ॥ ४०४ ॥ राजाचेशेजारीं, उंटबळींनेंचअश्वह त्तीतो ॥ तैसेचसव्यभागीं, प्रधानसन्नीधबैसवीतीतो॥४०५॥ पुढल्याघरींबळीनें, एकेकाचेपुढेंपदातींस ॥ बसवावेंदोघांनीं मोहोरींझालींसमस्तबत्तीस ॥४०६॥श्लोक॥हस्तीनीटउभात थाहिअडवाचालेपटींनिर्भय, उष्ट्राचीगतिवक्रातिकेसघरेंघो डाहिसार्धद्वय॥हस्त्युष्ट्रापरिचालतोसचिवतोप्यादाग्रएकग्रहा, चालेभूपतिसर्वचालिसपरीएकाग्रहातेंपहा ॥ ४०७ ॥ विशे षतायांतवदेनसारी, पदातिवक्रैकघरांतमारी॥अचक्रविद्धप्रभु अश्वचाल, सकृत्त्वरीचालतसेपहाल ॥ ४०८॥ गजापुढेंजोअ सतोपदाती, सकृत्गृहेंदोनचिचालवीती ॥ प्रधानराजापुढला शिपाई, तैसाचचालेसमजोनघेई ॥ ४०९ ॥

कोई भी काम एकाएकी करना नहीं कारण यह कि अविचार बड़ी विपत्तिकी जगह है कारण गुणके विषे लुब्ध ऐसी संपत्ति विचारशील पुरुषको वरती है कहेते प्राप्त होती है. तात्पर्य शतरंजके खेलमें विचार किये बिना मोहरा उठा-यके रक्खे तो उसमें आगे संकट पडेगा और विचार करके खेले तो आपही

आप जयरूपी लक्ष्मीकी प्राप्ति होवेगी ॥ ४०० ॥ ४०१ ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥ ॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥ ४०८ ॥ ४०९ ॥

असोनसोपृष्ठिंसभूपमंत्री, गृहद्वयींचालवितीस्वतंत्री ॥
परंतुहत्तीनसतांस्वपृष्ठीं, नपाहिलाचालवितांस्वदृष्टीं ॥ ४१० ॥

हस्ती, राजा और वजीर इन तीनोंके आगेका सिपाही एक बेर अपनी चालसे दो घर आगे चलता है, परंतु उसमें इतना विशेष है कि हाथी पीछे होवे तो हाथीके आगेका सिपाही दो घर एक बार चलता है. राजा और प्रधान इन्होंके आगेका सिपाही राजा, प्रधान पीछे न होवे तथापि एक बार जब चाहो तब दो घर चलता है ॥ ४१० ॥

बलाविणेंजोप्रथमप्रसंगीं, करीलराजाप्रतिविद्धअंगी ॥
उडूनघोड्यापरिभूपजाणा, वधीलघोड्यासमनांतआणा ॥ ४११ ॥

कोई बल न होते पहिले घोड़ेका शह राजाको दिया तो राजा घोड़े सरीखा अढाई घर उड़के घोड़ेको मारेगा ॥ ४११ ॥

जेंप्यादेंघरएकएकक्रमतांज्याच्याघरापावतें ।
तेंहोतेंमोहरेंसजीवसमजाजन्मींतिथेंराहतें ॥
घोडेंनिश्चयजन्मतांचउडतेंयाकारणेंतोनडे ।
जन्मस्थानिंअसेलमारअथवाज्याज्याघरींतोउडे ॥ ४१२ ॥

प्यादा आगे कहे हुये प्रमाणसे चलते २ जिस मोहरेके घरमें पहुँचेगा वह मोहरा जीता होवेगा और उस दाँवको जन्मस्थान कहते मोहरा उसीघरमें रहता है, परंतु घोड़ा जीता होतेही अढ़ाईघर उड़के वही दाँवमें अपने उड्डानकी जगहोंमें जायके बैठता है इसवास्ते जन्मस्थान और जहां उड़के बैठे वह स्थान इन दोनोंस्थानोंके ऊपर मार होवे तो वह जीता भया हुआ घोडा मारा जावेगा इस वास्ते अन्य मोहरेको जीता होनेके घरमें मार लगता है घोडेको जीता होनेके घरमें और उड्डानके घरमेंभी मार लगता है ॥ ४१२ ॥

प्यादाजरींअश्वकरावयाला, अश्वस्थळासन्निधजाणआला ॥
कांहिंनसेआडयडेलघोडा, राजानउड्डाणगृहांतसोडा ॥ ४१३ ॥

खेलते समय पूर्वोक्त रीतिकरके घोड़ा जीता होनेका समय आवे उस समय घोडेके उड्डाणके घरोंमें राजाको रक्खे नहीं ॥ ४१३ ॥

प्रथम सकल सैन्यें चालती एक राजा,
निजगृह नच सोडी निश्चयो हा करा जा ॥
अखिलहि जन आदौ खेळती चार डाव,
परि नच कधिं घेई मोहरें एक धांव ॥ ४१४ ॥

पहिले दाँवमें सर्व मोहरे चलते हैं इसवास्ते खेलने वालेके ध्यानमें आवे वह मोहरा चलावे परंतु राजा मात्र पहिले नहीं चलता है और पहिले चार दाँव खेले ऐसा नियम है, परंतु एक मोहरा एक दाँवसे अधिक दाव खेल नहीं सकता. चार मोहरेसे चार दाँव लेवे ॥ ४१४ ॥

जरी मोहरें एक डावांत राहे, तरी माजतें त अशी चाल आहे ॥
जरी राहिला एकटाही प्रधान, न होईलतो मत्तअन्यासमान॥४१५॥

प्यादेकी गणना मोहरेमें नहीं है इस वास्ते प्यादे थोड़े या बहुत रहें परंतु मोहरा एक रहा तो वह मोहरा उन्मत्त होता है. अपने जीवपर उदार होके सामने वालेका जो मोहरा उसके रस्तेमें आवे उसको मारताहै, परंतु बड़ा खिलाड़ी बुर्जी मात विना बड़े दाँव करनेकी अपेक्षासे मारता नहीं है और सर्व मोहरे मरगये होवें एक प्रधान रहा होवे तो दूसरे मोहरे सरीखा वह प्रधान उन्मत्त नहीं होता है ॥ ४१५ ॥

गीति ॥ प्यादीं ज्या मोहऱ्याचे गेलीं घरिं जरि परंतु मोहरीं तीं॥
असलीं पटांत तरि तीं टाकिति काढोनि ही असेरीती ॥ ४१६॥

प्यादा आठ घर फिरते फिरते किसी एक मोहरेके घरमें पहुँचे और उस घरका मोहरा संग्रहमें होवे तो वह प्यादा खेलमेंसे निकालडाले, ऐसी रीति है॥४१६॥

परि जे कुशल खिलाडी ते मानिति खेळ तो असे काचा ॥
प्यादें मारुनि घ्यावें युक्त्या अडवोनि डाव लोकांचा ॥ ४१७॥

परंतु वह खेल अच्छे खिलाड़ी लोग उत्तम नहीं मानते हैं इस वास्ते ऐसा करते हैं कि वह प्यादा उस स्थानपर अड़चन करता होवे तो किसी युक्तिसे मारडाले ॥ ४१७ ॥

अथवा मोहरें घ्यावें मारुनि तें अन्यनिज उपायानें ॥
मोहरें दुजें करावें त्याजागीं पावल्या शिपायानें ॥ ४१८ ॥

अथवा मोहरा मारके उस प्यादेसे दूसरा मोहरा जीता करावे यह खेल प्रशस्त है ॥ ४१८ ॥

श्लोक ॥ राजाचे घरचा शिपाइ क्रमितो षष्ठ गृहातें तदा ॥
होई निश्चय तो प्रधान समजा ही रीति चाले सदा ॥४१९॥
आहे ज्या घरचा जिवंत करभ क्रीडा कराया तरी ॥
होईना दुसराहि त्याच घरचा उष्ट्रेति चित्तीं धरीं ॥ ४२० ॥
गीति ॥ दुसरीं मोहरीं होण्या ऐसा प्रतिबंध करभसम नाहीं ॥
मोहरें होतें जातां प्यादें दोहोंतुन घरांत एकाही ॥ ४२१ ॥

राजाके घरका प्यादा छः घर गये बाद वजीर होता है. जिस मोहरेका प्यादा छः घर क्रमसे गया तो वह मोहरा जीता होता है, परंतु जिस घरका ऊँट जीता है उस घरका दूसरा ऊँट जीता नहीं होता है कारण कि दोनों ऊँटोंके पद भिन्न भिन्न होते हैं वैसा दूसरे मोहरेका नहीं है इस वास्ते दूसरे मोहरे दो घरमेंसे किसी एक भी घरमें प्यादा गया तो वे मोहरे जीते होते हैं ॥ ४१९ ॥ ४२० ॥ ४२१ ॥

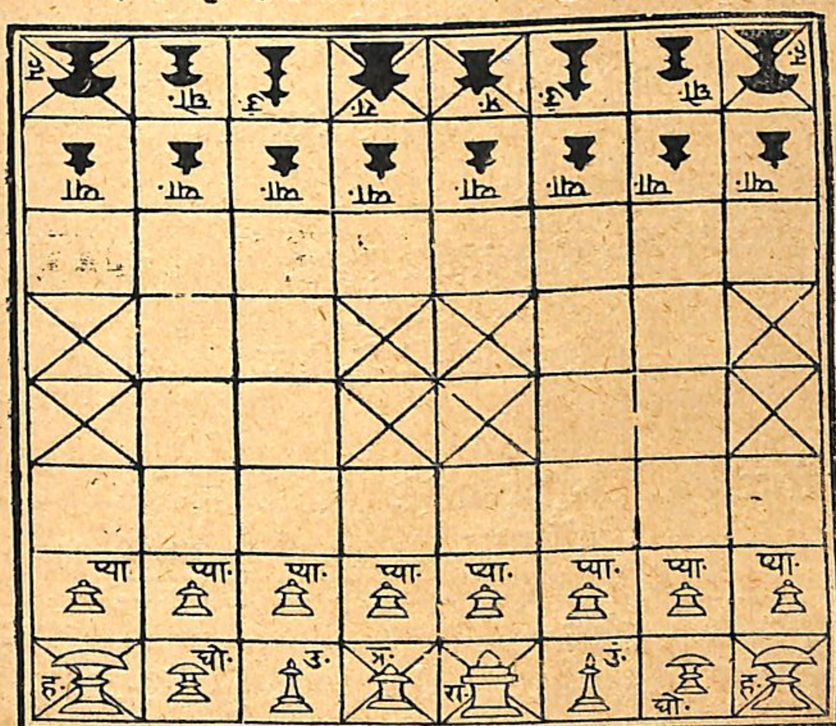
श्लोक ॥ आहे जें मोहरें बलिष्ठ तरि तें मारूंनये निश्चयें
मारावें जरि सर्वथैव बुडतो डाव प्रसिद्धीकर ॥
किंवा जेंवळतें इरेस पडलें तें मोहरें मारिती
राजा काढ शहांत येइल तरीही मारणें निश्चितीं ॥ ४२२ ॥

और इस खेलमें राजाका मरण नहीं है खेलमें राजाको प्रतिबंध होवे अथवा सब मोहरे मरगये बाद राजा अकेला रहे तो खेल समाप्त भया जानें और इस खेलमें एक निर्बली नामका प्रकार है उसका नियम बताते हैं जिस मोहरेको बल होवे उसको मारै नहीं यह साधारण निर्बली खेलका सिद्धांत है, परंतु बल होवे तथापि मोहरेको मारते हैं,सो कब कि जब अपने ऊपर उसी दाँवमें मात होनेका समय है तो बलिष्ठकोभी मारै. यदि एकाध मोहरेको बल है, परंतु राजाके इरमें फँसा है अथवा कौनसेभी मोहरेको बल बहुत है. परंतु राजाको उसी दाँवमें काटशह लगा होवे तो बलके ऊपर दृष्टि न रखके वह बलिष्ठ मोहराभी मारा जावेगा ॥ ४२२ ॥

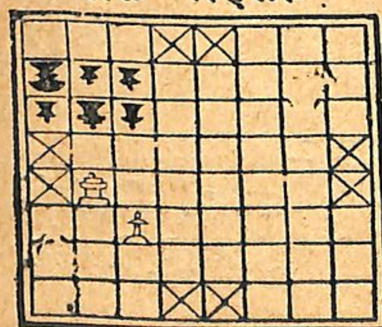
अथवा जरि एक मोहरें उरलें मारिल निश्चयें खरें ॥
न गणा मुहऱ्यांत प्यादिं तीं आहे निर्वेळिची अशीरीती४२३

सर्व मोहरे मरके एक मोहरा बाकी रहा हो तो वह उन्मत्त होके बलवान्को भी मारेगा. परंतु प्रधान उन्मत्त नहीं होता प्यादेकी गिनती मोहरेमें नहीं की जाती. कदाचित् उसीदाँवमें मातका समय होवे तो प्रधान उन्मत्त होवेगा ॥ ४२३ ॥

अथ शतरंजखेलके पट्टका यंत्र.



खेल पहिला.

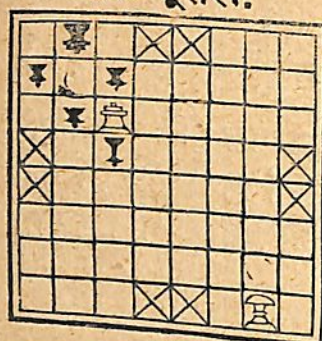


सुपेद पहिले खेलकर तीसरे दाँवमें कालेके ऊपर बुरजी होतीहै.

दाँवका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ ऊँटका शह.	१ प्रधान ईरमें
२ ऊँट प्रधानकुमार. श.	२ राजा प्र. उठके पाचवें घर.
३ ऊँट हस्तिको लेके बुरजी	

खेल दूसरा.

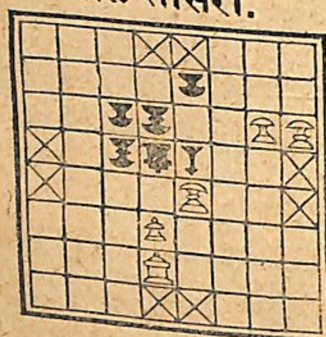


सुपेद पहिले खेलकर कालेके ऊपर मार मात फकीरी होती है.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ हाथीका शह.	१ ऊँट ईरमें.
२ हाथी ऊँटको लेताहै.	
मार मात फकीरी.	

खेल तीसरा.



सुपेद पहिले खेलकर कालेके ऊपर चौथे दाँवें मात होती है.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ हस्ती ऊँटको लेके शह.	१ घोड़ा हस्ति. ले.
२ घोड़ाघोड़ेको ले. श.	२ रा. प्रधानके
३ हाथीको ले. श.	चौथे घरमें ग.
४ हाथीहाथीको ले. मात	३ हाथी प्रधानके
	पांचवें घरमें.

खेल चौथा.



सुपेद पहिले खेलके कालेके ऊपर चौथे दाँवमें मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ प्या. प्या. लेता है श.	१ रा. प्र. ऊँ. चौथे
२ प्र. रा. ऊँ. छठे घर. श.	घर प्या ले.
३ प्र. प्या. ले. श.	२ रा. प्र. पाचवें घर
४ प्र. रा. घो. पाचवें	३ राजाप्यादेको ले.

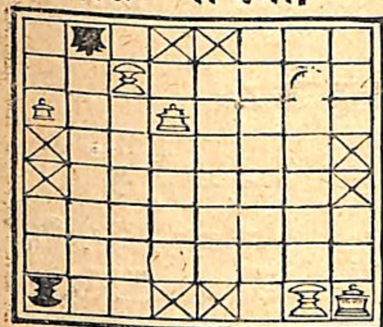
घरमें जा. मात.

दूसरा प्रकार.

१ प्या. प्या. ले. श.	१ रा. प्र. ऊँ पांचवें
२ प्र. रा. घो. पाचवें	घरमें प्यादेको मार.

घरमें जायके मात.

खेल पांचवां.

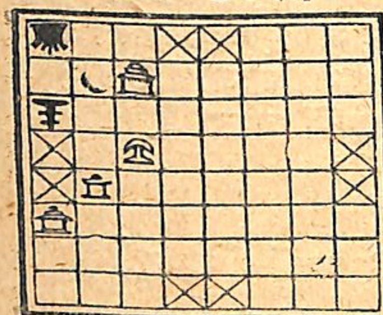


सुपेद पहिले खेलके कालेके ऊपर चौथे दाँवमें प्यादे मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ हा. रा. ऊँट. आठवें घर और प्र. शह.	१ रा. प्र. हा. आठवें घर.
२ प्र. रा. ऊँ. तीसरे. घर शह.	२ रा. प्र. घो. आठवें घर.
३ हा. रा. घो. आठवें घ. शह.	३ हा. हा. ले.
४ प्या. प्यादेमात.	

खेल छटवां.

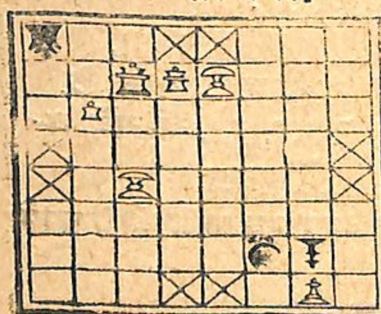


सुपेद पहिले खेलके कालेके ऊपर चौथे दाँवमें प्यादे मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ घो. रा. घो. दूसरे घर.	१ राजा खे.
२ प्यादा आगे जाताहै.	२ राजा खे.
३ प्र. प्र. ऊँ. घो. श.	३ राजा खे.
४ प्या. श. प्यादे. मात.	

खेल सातवां.

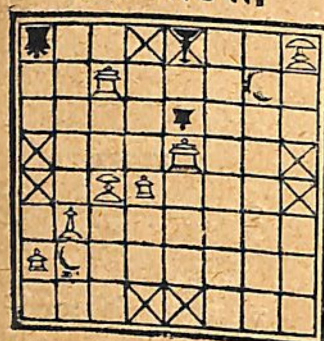


सुपेद पहिले खेलके चौथे दांवमें कालेके ऊपर इुचमल्ली मात.

दावका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ प्र. श. ऊँ. तीसरे घर शह.	१ ऊँ. प्र. ले.
२ हा. प्र. घर. श.	२ ऊँ. ह. ले.
३ हा. रा. हा. पांचवेंघर श.	३ ऊँ. ह. ले.
४ प्यादे इुचमल्ली मात.	

खेल आठवां.



सुपेद पहिले खेलकर चौथे दाँवमें कालेके ऊपर प्याद मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ प्या. रा. चौथेघर.	१ प्या. ले.
२ रा. रा. पांचवें घर.	२ प्या. घो. ले.
३ रा. रा. ऊँ. छठे घर.	३ प्या. ऊँ. ले.
४ प्र. रा. हा. चौथे घर शह.	४ राजा.
५ प्या. प्या. ले दुचमल्लीका प्यादाहो.	

खेल नवमाँ.

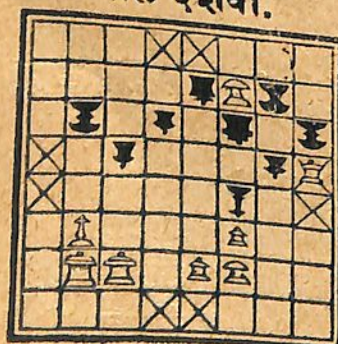


सुपेद पहिले खेलकर कालेके ऊपर चौथे दावमें मात होती है.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ हस्ति शह.	१ राजा हाथीकोलेता है
२ ऊँट राजाके चौथेघरमें जाता है और हस्ति शह हुई	२ राजा राजाघोड़ेके १ घरमें जाता है.
३ प्यादा राजा ऊँटके दूसरे घरमें (मात)	

खेल दशवां.

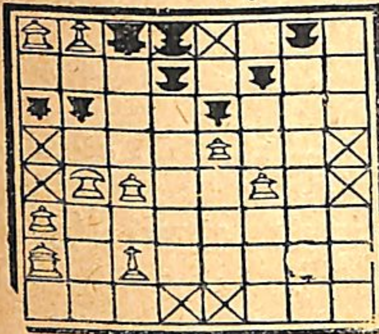


सुपेद पहिले खेलकर चौथे दावमें कालेके ऊपर मात होती है.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ प्रधानप्रधानऊँटके चौथे घरमें शह.	१ राजा प्रधान ले.
२ घोडाघोडेकी ले. श.	२ रा. रा. पांचवें घरमें गया.
३ घो.प्र.घो.पाचवें घरमें शह	३ रा.प्रधानके चौथे घरमें
४ घो.प्र.ऊँटके चौथेघर मात.	

खेल ग्यारहवां.



सुपेद पहिले खेलके कालेके ऊपर पाँचवें दाँवमें मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद — काला.

१ घोडाराजाके चौथेघर — १ घोडा ऊँटले.
२ घोडा प्यादाकोलेता है शह ल. — २ रा. प्र. ऊँ ७ वें घरमें
३ प्रधान रा. हा. दूसरे घरमें शह — ३ रा. प्र. ऊँ छठे घर.
४ घो. रा. हा. पहिले घर — ४ मनमें आवे वहां चले.
५ प्र. रा. ऊँ. दूसरे घरमात.
अथवा ऊँ. रा. हा. पांचवें घर. मात.

खेल बारहवां

सुपेद पहिले खेलके चौथे दाँवमें काले ऊपर प्यादे मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद. — काला.

१ घो. रा. ऊँ. छठेघर. — १ रा. प्र. ऊँ. ८ घर.
२ घो. रा. चौथे घर. — २ रा. अपने घरमें.
३ घो. प्र. ऊँ. तीसरे घर. — ३ रा. प्र. ऊँ. ८ घर
४ घो. प्र. घर. ॥ ५ घो. रा. ऊँ. दूसरे घर ॥ ६ घो प्र. तीसरे घर. ॥ ७ घो. रा. घर. ॥ ८ घो.रा. घो७ घर ॥ ९ घो. रा. ३घर.॥ १० घो. प्र. ८ घर ॥ ११ घो. प्र. ह. ७ घर ॥ १२प्यादा॥ १३ घो. प्र. ऊँ. ३ घ. शह. ॥ १४ प्या. प्यादेमात.
— ४ रा. अपने घरमें ५ रा. प्र. ऊँ. ८ घर. ६ रा.प्र. घो. ८ घर. ७ रा. प्र. ऊँ. घर. ८ रा. प्र.घो.८घर॥ ९रा.॥१०रा.॥११रा. ॥१२रा.१३रा.दिलमें आवे वहां रक्खे

(अथ यवनलोकानां पद्धतिमाह.)

गीति ।। यवनक्रीडा सारी स्वकीयलोकांसमान समजा ती ॥
यास्तव खेळा तेसे खेळति जैसी स्वदेशसम जाती ॥४२४॥

अब मुसल्मान लोकोंमें जो शतरंज खेलनेकी पद्धतिहै सो कहतेहैं—मुसल्मान लोगोंमें बहुत करके अपनेसरीखीही रीति है ॥ ४२४ ॥

परिभेदकिंचिताहे कथितोंतुजसर्वहीविलोकींतो ॥
जोमीशोधुनिकथिला समजायास्तवस्वेदेशलोकींतो ४२५॥

परंतु थोड़ासा भेद है उसका शोध करके अगले श्लोकमें विशेष कहता हूं ॥ ४२५ ॥

श्लोक ॥ यवनांतविशेषहापहा हुचमल्लीप्रतिमोहरींसहा ॥
मोहरींपरिपांचराखितां म्हणतितेउभयींसमानता ॥ ४२६ ॥

इन लोगोंमें हुचमल्ली करनेका विचार होवे तो पटके ऊपर दोनोंके मिलके मोहरे छ रखना. कारण कि पांच मोहरे दोनोंके रहे तो पांच मोहरेका दाँव समान हुआ इस वास्ते खेल बंद रखते हैं इससे कुछ विशेष नहीं है ॥४२६॥

गीति ॥ मातप्रतिबन्धम्हणा लुंठनबुर्जीह्मणूनआणावी ॥
मृत्युंजयहुचमल्ली परिभाषामनंतआणावी ॥ ४२७ ॥
प्यादेमातम्हणावी पदातिबंधासजाणधीभूषा ॥
मारेमातफकीरी लुंठनबन्धप्रसिद्धपरिभाषा ॥ ४२८ ॥

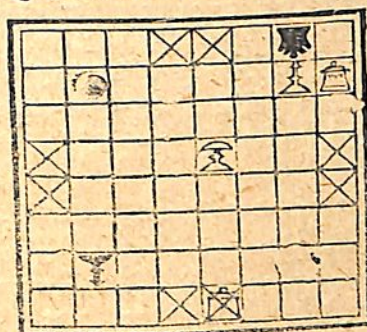
इस खेलमें विजय कितने हैं उनके नाम और संस्कृत पर्याय कहते हैं इस खेलमें पांच प्रकारके विजय हैं. उनके संस्कृत नाम ऐसे हैं कि (प्रतिबंध) कहे मात. (लुंठन) कहे बुर्जी . (पदातिबंध·) कहे प्यादेमात. (मृत्युंजय) कहे हुचमल्ली और (लुंठनप्रतिबंध) कहे मारमात फकीरी इस प्रमाणसे पांच प्रकारके विजय हैं. मात--इस विजयका स्वरूप ऐसा है कि अपने मोहेरेसे राजाको कैद करना. बुर्जी—इस विजयका स्वरूप ऐसा है कि जिसमें सर्व मोहरे मरगये बाद राजा अकेला रहे. प्यादेमात—प्यादेसे राजाको कैद करना. हुचमल्ली—अपने और सामनेवालेके सर्व मोहरे मारके अपना ऊँट और प्यादा और प्रतिस्पर्धिकाभी प्यादे विना वही मोहरा रखके राजाको प्यादेसे कैद कराना. मारेमातफकीरी— प्रतिस्पर्धिका एक मोहरा रहा होवे उसको मारके उसी दाँवसे राजाको कैद करना. बुर्जी और मात एक समयावच्छेदसे करना. ऐसा पांच प्रकारके मातके भेद कहे यवन लोगोंमें एक शुतरगस्ती नाम करके दाँव खेलते हैं वह ऐसा है कि

राजाके तरफसे ऊँटको प्रदक्षिण चार पांच बार करवाना बाद होवे वो दाँव चलाना. इस दाँवको शुतरगस्ती कहते हैं इसका उदाहरण पट आगे लिखाहै ॥ ४२७ ॥ ४२८ ॥

इति यवन लोक प्रशस्ति ।

अथ हूणदेशीयलोकानां खेलनपद्धतिमाह.

शुतरगस्तीका उदाहरण ।



श्लोक ॥ इंग्रेजलोकांत अशी प्रवृत्ती गृहद्वयें चालविती पदाती ॥
परंतु ही एकचि खेळचाल ते चालती निश्चयें रूपबोल ॥ ४२९॥

अब अंगरेज लोगोंमें जो शतरंज खेलनेकी पद्धति है सो कहते हैं अंगरेज लोगोंमें ऐसी चाल है कि सब प्यादे दोघर एक वख्त चलाते हैं उसके पीछे मोहरा रहे या न रहे ॥ ४२९ ॥

प्रधानाचे स्थानीं जरि करि पदाती गमन तें
तरी होती अश्वादिक सकल इच्छील मन तें ॥
तसा गेला अश्वादिक गृहिं शिपाई तरि तिथें
करावें मंत्र्याला सुलभ सहज स्वीकृतपथें ॥ ४३० ॥

और प्रधानके घर पर जो कभी प्यादा आवे तो प्रधान जीता होताहै वह तो ठीक है, परंतु जो मनमें इच्छा होतीहै वह मोहरा खड़ा करते हैं और अश्वादिक अन्य मोहरेके घरमें प्यादा जा पहुँचा तो वह मोहरा अथवा इच्छा होवे तो प्रधान भी खडा होता है ॥ ४३० ॥

राजा हत्तिमध्यें नसेल मोहरें दूजें तरी भूपती
हत्तीच्यास्थळिं ठेविती गज तसा भूपस्थळीं आणिती ॥

ऐसी चाल अहे परंतु बसला नाहीं प्रभूला शह
तेव्हां योग्य पुढें प्रवृत्ति मग ती सर्वांसिही दुःसह ॥ ४३१ ॥

और राजा हस्ति इन दोनोंके बीचमें ऊँट अथवा घोड़ा न होवे तो हाथीको राजाके घरमें और राजाको हाथीके घरमें उलटापुलटा करके रखते हैं, परंतु यह उलटापुलटी राजाको शह लगनेके पहिले होती है पीछे नहीं होती है ॥ ४३१ ॥

ज्याज्या घरींजाइलतोपदाती तींतींवरी मोहरें सिद्ध होती ॥
परंतु भूपस्थळिंचा शिपाई इच्छाअसेत्यामोहऱ्यासदेई ॥ ४३२ ॥

जिस मोहरेके घरमें प्यादा पहुँचे उस घरका मोहरा अथवा प्रधान होता है. इसी रीतिसे राजाके घरमें प्यादा पहुँचे तो इच्छामें आवे वह मोहरा खड़ा करते हैं ॥ ४३२ ॥

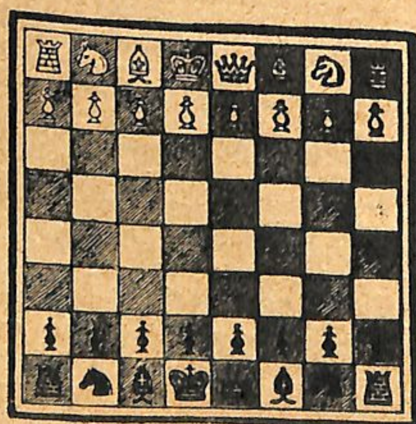
राजाआणिसचीवहेपटिंवरेठेऊनियांसन्मुख ॥
तज्जातीयसमस्त लोक करिती क्रीडाघडायासुख ॥
नाहीं भेददुजासमानहिविती सारींदुजीं मोहरीं
चित्तीं ठेउनिक्रीडका मगतिथें तूंहीतसेंस्वीकरीं ॥ ४३३ ॥

राजा और प्रधान पटके ऊपर परस्पर सन्मुख बिठाते हैं ॥ ४३३ ॥

एकाचिडावा प्रथम प्रसंगीं तूंखेळशिष्टोक्तिकदानभंगी ॥
असो नसो पृष्टिंशिमोहरींतीं देएकदां दोन घरें पदाती ॥ ४३४ ॥

और जैसा अपनेमें पहिले चारदांव खेलते हैं वैसी उन लोगोंमें प्रवृत्ति नहीं है. आरंभसे लेके एक एक दाँव खेलनेका संप्रदाय है ॥ ४३४ ॥

आंग्लशतरंजपट।



राजादिकोंके आंग्लनाम.

किंग	... राजा.
क्वीन वा मिनिस्टर	... प्रधान.
रुक् अथवा क्यासल	... हस्ती.
बिशप	... ऊँट.
नाईट	... घोडा.
पॉन अथवा फुट सोल्जर	... प्यादा.
चेस	... शतरंज.
चेसबोर्ड	... पट.
चेक्	... शह.
डिस्कवर्डचेक्	... काटशह.
चेकमेट्	... मात.
क्यासलिंग	राजा और हाथी.

राजा और हाथी इनके बीचमें दूसरा मोहरा न होवे राजाकी जगहपर हस्ती और हस्तीकी जगह पर राजाको रखते हैं उसको क्यासलिंग कहते हैं.

महत्पुरुषसंगेन क्रीडनंचयदा भवेत् ॥
तदातुदशमर्यादापालनीयाविशेषतः ॥ ४३५ ॥

इति बुद्धिबलप्रथमप्रकारः समाप्तः ॥

यह शतरंज खेलने आनेसे बडे बडे सरदार लोगोंसे प्रेम संपादन होता है. इसवास्ते " मतलय उलुम " और " मजमय लुफनून " नामके ग्रंथ करनेवालेने दश मर्यादा खेलनेकी बांधी हैं सो आगे लिखते हैं ॥ ४३५ ॥

शिक्षा दशकम् ।

१ प्रथम मर्यादा–शतरंज खेलनेके प्रारंभके समय दूसरेको कौनसा रंग प्रिय है यह अपनेको मालूम नहीं है तो दूसरेने मोहरा उठाया नहीं तबतक आपने भी उठाना नहीं. उन्होंके एक रंग लिये बाद आप दूसरा रंग लेना अगर उसने प्रथम अपनेको कहा कि तुम रंग लेव तब आप सबसे हलका रंग लेना.

२ दूसरी मर्यादा–खेलनेके समय पहिले आप प्रारंभ नहीं करना और जो कभी उसनेही कहा किं तुम खेलो तो फिर आप प्रारंभ करना.

३ तीसरी मर्यादा–खेलनेमें सामनेवालेके मनमें दुःख होवे ऐसा अमर्याद और निरर्थक भाषण करना नहीं और खेलनेको उदास होवे ऐसा मौनभी धरके बैठना नहीं.

४चौथी मर्यादा–दूसरा दाँव खेलनेवाला अवकाशसे खेलने लगा तो उसको जलदी खेलनेके वास्ते उपद्रव देना नहीं. आप मात्र वह राह न देखे वैसा जलदीसे दाँव खेलना.

५ पांचवीं मर्यादा–दूसरेसे अपनेको अधिक खेलना आता होवे तथापि अपनी स्तुति और दूसरेकी निन्दा करना नहीं.

६ छठी मर्यादा–कोई पास देखनेको बैठा हुआ आदमी अच्छा दाँव लेनेका विचार दूसरेको बतावे तो उसके ऊपर आप क्रोध और उसको प्रतिबन्ध करना नहीं और देखनेवालोंकोभी यह योग्य है कि जहां दोनोंजने खेल रहे हैं वहां वह स्वस्थ बैठकर देखता रहे पर दोनोंमेंसे एकका भी हिताहित दाँव बतावे नहीं दिखानेवालेका व्यर्थ अपमान होता है और पुरातन राजा लोगोंमें भी ऐसी नीति थी कि जिसको बडा अधिकार देना है उसकी बुद्धि पराक्रम धैर्य गम्भीर उदारताकी परीक्षा करनेके वास्ते शतरंज खेलमें परीक्षा करते थे.

७ सातवीं मर्यादा–सत्यतासे खेलनेका स्वभाव रखना प्रतिस्पर्धिने कदाचित् बुद्धि पुरस्सर अथवा विस्मरणसे खोटा दाँव लिया तो भी उसको हलका शब्द कहना नहीं सूचना करनी है तो ऐसा कहना कि भाई यह दाँव भुलावेसे लिया गया है सो विचार करना अवश्य है तथापि न माने तो आग्रह छोड देना.

८ आठवीं मर्यादा–जो कभी दूसरे खेलनेवालेने पहिले एक खेल खेलके पुनः दूसरा विचार खडा रह्या तो वह खेल फिरायके दूसरी रीतिसे खेलेगा तो उसको प्रतिबन्ध न करना अपना मात्र देखके चलना.

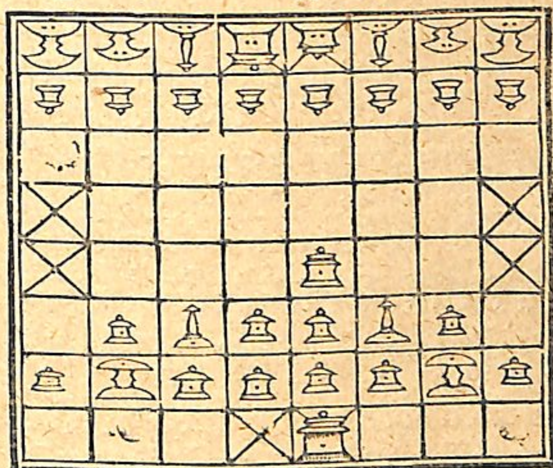
९ नववीं मर्यादा–आठवीं मर्यादामें खेल फिरानेकी आज्ञा दी परन्तु यह बात दोनोंको योग्य नहीं है पहले जिस मोहरेको हाथ लगायके दाँव लिया वह दाँव फिराना नहीं क्योंकि चलाया हुआ दाँव फिरानेसे कलहकी जड होती है और अपनी तरफ हलकापन होता है.

१० दशवीं मर्यादा–कितने एक लोगोंकी ऐसी चाल है कि अपने मरे हुए मोहरेको कभी कभी पीछे मांगते हैं, परन्तु यह रीति बहुत हलकी है इस वास्ते मांगना नहीं जो मात होनेका समय आया होवे और मैं दाँव

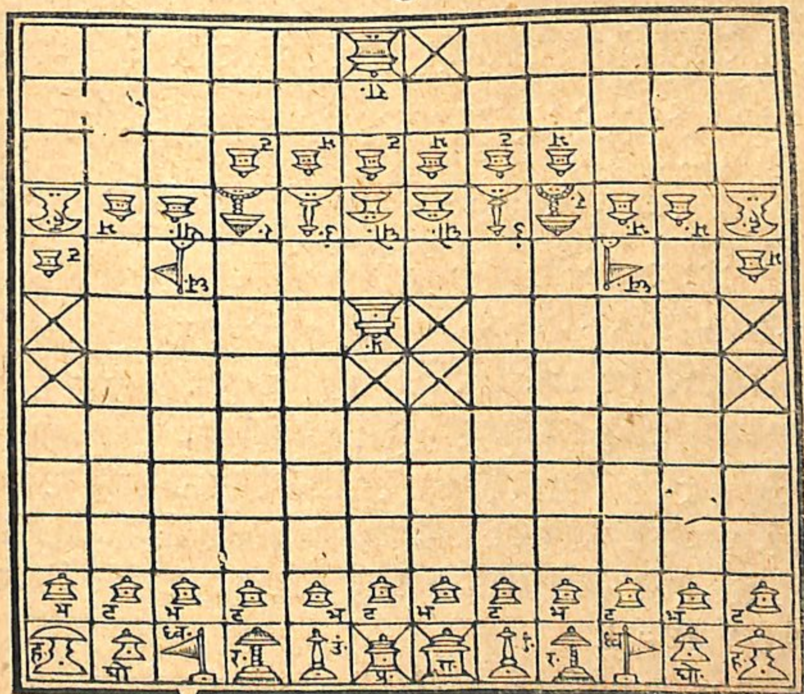
बचायके दूसरा चलाताहूं ऐसा कहे तो वह मोहरा पीछा देना यह बात दोनोंको योग्य है दशवीं मर्यादाका सारांश यह है कि उत्तरोत्तर स्नेहकी वृद्धि होवे ऐसा मार्ग स्वीकार करना ॥ ४३५ ॥

इति बुद्धिबलक्रीडामें प्रथमप्रकार संपूर्ण ॥

अथ बुद्धिबल व्यूहरचना भेद ।



अथ १४४ घरवाला बुद्धिबलका व्यूहपट्ट ।



अथ द्वितीयंबुद्धिबलक्रीडनमाह ।

द्वितीयंसंप्रवक्ष्यामिखेलंबुद्धिबलाह्वयम् ॥
त्रयोदशोर्ध्वगारेखास्तिर्यग्रेखास्त्रयोदश ॥ ४३६ ॥

अब शतरंज खेलमें दूसरा भेद बताते हैं तेरह रेखा खडी और तेरह रेखा तिरछी निकालना ॥ ४३६ ॥

एवंकोष्ठानिजायंतेवेदाब्धींदु १४४ मितानिच ॥
नृपादीनांस्थलान्यत्रखेलनंगतिलक्षणम् ॥ ४३७ ॥
विज्ञेयंपूर्ववत्सर्वंविशेषंप्रवदाम्यहम् ॥
द्वौ द्वौ रथौध्वजौ द्वौद्वौभटानामष्टकंमिथः ॥ ४३८॥
मिलित्वाधिक्यमेवात्रसेनायांपरिकीर्तितम् ॥
रथस्यगजवज्ज्ञेयाध्वजस्यकरिवद्गतिः ॥ ४३९ ॥

उससे एकसौ चौवालीस कोष्ठकका चतुरस्रपट्ट होता है—अब इस पट्टके खेलमें राजा, प्रधान, ऊँट, घोडा, हस्ति, प्यादे इन सबकी जगह और इनके खेलनेका मार्ग तथा इनके चलनेकी गतिका लक्षण यह सब पहिले खेलके सरीखा जानना. अब इसमें जो विशेष है सो कहता हूँ. इस खेलमें दोनों तरफ दो दो रथ और दो दो ध्वजा तथा चार चार प्यादे अधिक हैं जो रथ ध्वजा सामने खडे हैं केवल पहिले खेलमें दोनोंके मिलके बत्तीस मोहरे थे और इस पटमें सब मिलके अड़तालीस हैं. रथके चलाने और बलाबल लेनेकी रीति हाथी सरीखी तथा ध्वजाकी रीति ऊँट सरीखी जानना ॥ ४३७ ॥ ४३८ ॥ ४३९ ॥

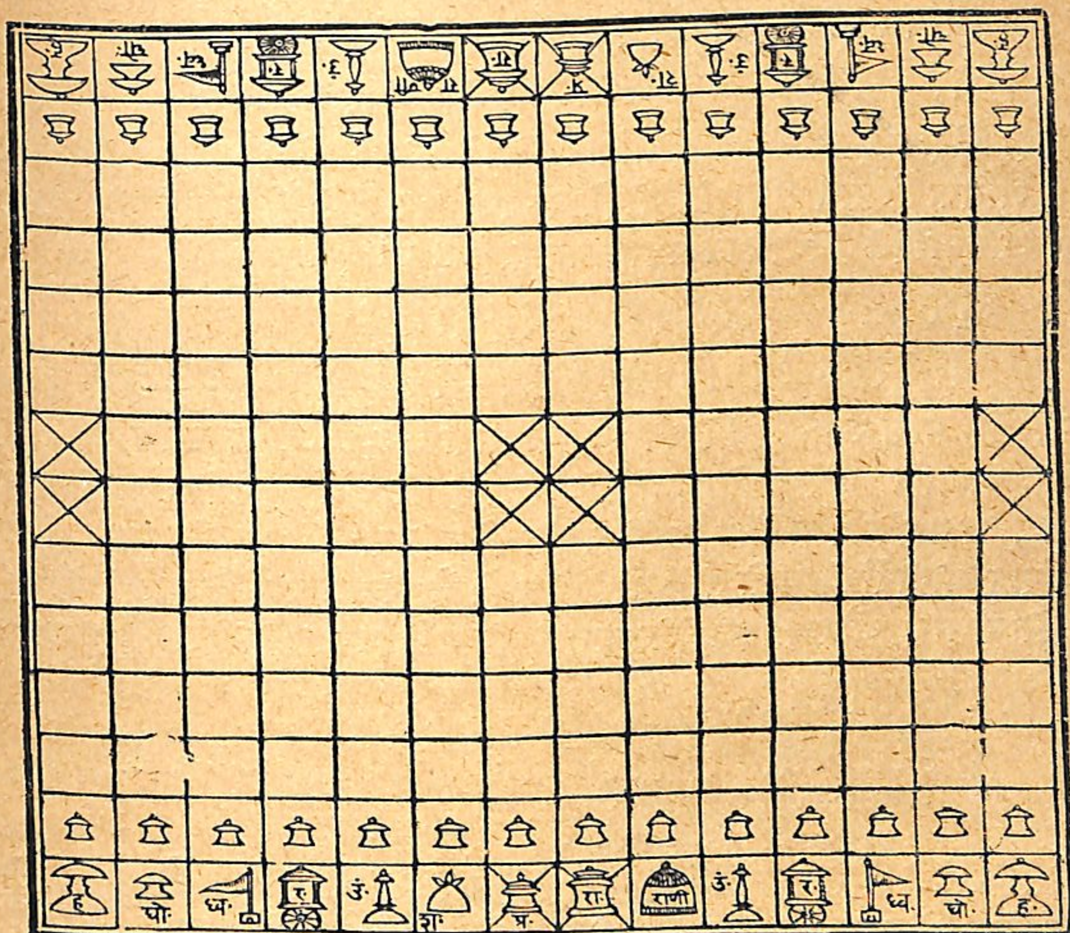
उष्ट्रस्यनिकटेस्थानंरथस्यपरिकीर्तितं ॥
तत्समीपेध्वजस्थानमश्वस्थानंततःपरम् ॥ ४४० ॥

इति बुद्धिबलद्वितीयप्रकारः ।

अब पटमें प्रथम रथके बिठानेको स्थान ऊँटके निकट कहा है. रथके निकट ध्वजाका स्थान, ध्वजाके निकट घोडेका, घोडेके निकट हास्तिका स्थान जानना. बाकी खेलनेकी रीति मात वगैरह और शह लगानेकी सब पहिले सरीखी जानना ॥ ४४० ॥

इति दूसरे प्रकारका शतरंजका खेल संपूर्ण भया.

अथ १९६ घरका बुद्धिबल खेलका पट ।



अथ तृतीयप्रकारेणबुद्धिबलक्रीडनमाह ।

तृतीयंसंप्रवक्ष्यामिखेलंबुद्धिबलाह्वयम् ॥
ऊर्ध्वरेखाःपंचदशतीर्यग्रेखास्तथैवच ॥ ४४१ ॥

अब तीसरी तरहका बुद्धिबलका खेल कहता हूँ. पहिले खडी रेखा पँद्रह निकालके आड़ीरेखा पंद्रह करना ॥ ४१ ॥

कर्तव्यास्तत्रजायंतेकोष्ठानिषण्णवत्यपि ॥
शताधिकानिसेनांगंपूर्ववत्सर्वमादिशेत् ॥ ४४२ ॥

तो उस चतुरस्र पट्टमें एकसौ छियानवे कोष्टक होतेहैं.अब इस पट्टमें राजा

प्रधान उंट रथ ध्वज घोडा हाथी प्यादे यह सब पहिले सरीखे सरीखें बिठाना ॥ ४४२ ॥

विशेषंचात्रवक्ष्यामिद्वेराज्ञ्यौद्वौकुमारकौ ॥
चत्वारश्चभटास्त्वेवंगतिस्थानेवदाम्यहम् ॥ ४४३ ॥

यहां विशेष इतना है कि दोनों तरफके मिलके रानीदो शाहाजादे दो प्यादे चार अधिक हैं सब मिलके मोहरे छप्पन ५६ होते हैं. अब इनके चलनेकी गति और पहिले बिठानेका स्थान कहताहूँ ॥ ४४३ ॥

नृपस्यनिकटेराज्ञीप्रधानस्यकुमारकः ॥
राज्ञागतिः स्वपतिवत्कुमारस्यप्रधानवत् ॥ ४४४ ॥

राजाके पास रानीको बिठावे;रानीके पास ऊँट, ऊँटके पास रथ,रथके पास ध्वजा, ध्वजाके पास घोड़ा, घोडेके पास हाथी इसी क्रमसे प्रधानके पास शाहाजादा उसके पास ऊँट आदि करके बिठावे सबोंके सामने प्यादे बिठावें और सब मोहोरोंकी गति तो पहिलेही कही है. केवल रानीके चलानेकी गति राजाके समान और शाहजादेके चलानेकी गति प्रधान सरीखी है ॥ ४४४॥

एवंभेदद्वयेनैवखेलनंपरिकीर्तितम् ॥
अत्रसर्वाणिमार्गाणिपूर्वोक्तानिसमाचरेत् ॥ ४४५ ॥

इति तृतीयप्रकारेण बुद्धिबलक्रीडनम् ।

जैसा पहिले चौसट घरका खेल कहा है उसी रीतिसे एकसौ चौवालीस घरका खेल और एकसौ छियानवे घरका खेल वर्णन किया.इन दोनों खेलोंमें केवल मोहरे ज्यादा हैं. बाकी सब रीति पहले सरीखी है उसी मार्गसे चले ॥ ४४५ ॥

इति तीसरा भेद संपूर्ण भया ॥

अथाग्रे अश्वगतिभेदानाह ।

(कर्नाटकविषयाधिपोश्रीकृष्णभूपतिः)
महाबलगिरिंद्रजाविमलपादपंकेरुह-
प्रपूजनपरायणप्रचुरमानसःकृष्णराट् ।
समस्तनृपमण्डलीमुकुटरत्ननीराजित-
स्फुरच्चरणपल्लवःप्रथयतिप्लुतिंवाजिनः ॥ ४४६ ॥

अब आगे शतरंजके खेलमें सब मोहरेमें घोड़ेकी गुणाधिक्य प्रशंसा बहुत है इस वास्ते घोड़ेकी गति चलानेके भेद वर्णन करते हैं. कर्णाटक देशमें महिषासुर पत्तन उर्फ महेशूर पुरमें श्रीचामुंडेश्वरीके चरणारविंदकी पूजामें रातदिन जिनका अंतःकरण तत्पर है और संपूर्ण राजमंडलके मुकुटके जो रत्न हैं उस रत्नसहित प्रणाम करनेसे जैसा नीराजन करते होवे इससे प्रकाशित दीखते हैं चरण कमल जिनके ऐसा कृष्णराजा जो है वह घोडेकी चातुर्य गतिके भेद प्रकट करता है ॥ ४४६ ॥

वेदवारिंधितारेशसदनेचातुरंगके ॥
विज्ञेयागर्भचक्राद्यैद्यइवैकाश्वगतिःशुभा ॥ ४४७ ॥

एकसौ चवाँलीस १४४ घरके पटमें प्रथम गर्भचक्रबंधमें उत्तम अश्वगति चलाई है ॥ ४४७ ॥

गर्भेगामरभेदाढ्यापूर्णेन्यासेभभेदयुक् ॥
आहत्यरसरूपार्कभेदयुक्ताहयप्लुतिः ॥ ४४८ ॥

इस पटमें गर्भके नवकोष्ठकके सब अंक मिलके ३६३ तीनसौ त्रेसठ संख्या होती हैं उसको अंगामर भेद तथा अमरभी कहते हैं. तीसके बीचमें छः बिठाना और उसका पूर्ण न्यास करनेसे इस चक्रके बारहसौ सोलह १२१६ भेद उत्पन्न होते हैं ॥ ४४८ ॥

वीथीबोधकरास्त्वाद्याद्वितीयागृहबोधकाः ॥
सर्वेसंख्यारत्नकोशप्रोक्ताःशब्दास्तथात्रहि ॥ ४४९ ॥

अब आगे जो अश्वगतिके चक्रोंके उद्धारांक लिखे हैं उसमें पहिले अंक वीथि पंक्तिके बोध करनेवाले कहते हैं और दूसरे अंक घरके बोध करनेवाले हैं उन घरोंमें एक दो तीन ऐसे क्रमसे लिखते जावे. अब इसमें जो अंकके नाम लिखे हैं " मंडलाश्वोधरालक्ष्मी " इत्यादि उनका प्रमाण देखना होवे तो रत्नकोशमें लिखा है ये शब्द यहां लिखे हैं ॥ ४४९ ॥

मंडलाश्वोधरालक्ष्मीकरभाषाब्धिमातृका ॥
प्राणकांतारामरसोभुजलक्ष्मीःक्षमाबलम् ॥ ४५० ॥
नेत्रवर्णोरूपनेत्रंरामचन्द्रःकरेगुणः ॥
विराट्रूपंलिंगपाणिर्वेदव्यूहोवधूबलम् ॥ ४५१ ॥

युगलक्ष्मीर्द्विद्ववाजीभूमिकन्यागुणांबुधिः ॥
चन्द्रमूर्तिर्नेत्ररूपंरामलिंगंकरेश्वरः ॥ ४५२ ॥
सोमवारःशक्तिलक्ष्मीर्बाणाद्रिर्गणकावधूः ॥
मदांबुधिर्मुनिकरोबाणलिंगंकृतेशिखा ॥ ४५३ ॥
तर्कशास्त्रंवाजिगजोगजशास्त्राद्रिगोस्तनौ ॥
लक्ष्मीकरोजीवरूपंवेदपक्षःशरांबुधिः ॥ ४५४ ॥
वेदशास्त्रंरसनदीगजलक्ष्मीस्वरेबलम् ॥
जीवसिद्धिर्हस्तिशैलोवारकन्याबलेषणम् ॥ ४५५ ॥
पक्षिरूपंवेदभाष्यंरामबाणःक्षमांबुधिः ॥
कुचग्रहणकेंद्रंद्वेश्याक्षिवसुचंद्रमाः ॥ ४५६ ॥
अश्वमूर्तिर्वधूनेत्रंद्वीपचंद्रोरमागुणः ॥
रसवार्धिर्नागकन्याहयेश्वःकोशभार्गवी ॥ ४५७ ॥
वेदनादःशास्त्रशिवोयुगाकौंबाणनंदनः ॥
गिरीश्वरोमातृभावोजीवाशासागरेनिधिः ॥ ४५८ ॥
रामेश्वरश्चन्द्रसूर्यः कर्णपुत्रोयुगेश्वरः ॥
नेत्रभावश्चन्द्रवनंलिंगांकस्तनशंकरः ॥ ४५९ ॥
क्षमारत्नंरामपुत्रःशरवीरोनदीसुतः ॥
जीवराशिर्भैरवेशोदिशासूर्योऽर्कशंकरः ॥ ४६० ॥
शिवनन्दोभानुवारःशिवस्त्रीरत्नसागरः ॥
शिवरामःसूर्यचन्द्रोवनहृत्सूर्यमण्डलम् ॥ ४६१ ॥
शिवरूपंवीरबाहुःपुत्रव्यूहोघनेरसः ॥
वनलक्ष्मीः शम्भुपुत्रोमासाकौंवनशंकरः ॥ ४६२ ॥
नागकूटोमेघनादोहयांकोवीरभार्गवी ॥
चुम्बनांगंभावकन्यारुद्राश्वःसूर्यधान्यकम् ॥ ४६३ ॥

शिवशंकरनन्दार्कौदोहलाशारमामणिः ॥
मेघस्वरोवनेदुर्गाभावलक्ष्मीःशिवेबलः ॥ ४६४ ॥
सूर्यकेंद्रंवनेकन्याभावोर्मिःशिवसागरः ॥
सूर्यग्रहणपुत्रेंदूधेनुशक्तिः शिवेकरः ॥ ४६५ ॥
रत्नभूमिस्नानसंध्यावीरकन्यावनाचलः ॥
ग्रहरत्नंशिवेलक्ष्मीर्भानुपुत्रःशिवार्यमा ॥ ४६६ ॥
चोलेश्वरःशैलराशिर्लक्ष्मीपुत्रोरसेघनः ॥
बाणेश्वरोलिंगराशिर्भूमीशोभुजनायकः ॥ ४६७ ॥
एकत्वाद्याःक्रमात्संख्याःपूर्वोक्तेषुचसद्मसु ॥
लिखेद्यदितदासिध्येद्विचित्राश्वगतिःशुभा ॥ ४६८ ॥

(इन्द्रवज्रावृत्तम्)

दृग्भ्यांगजैर्भूपतिभिर्जिनैश्चदंतैश्चतंत्रैर्दृगगैर्युगेंद्रैः ॥
एकत्वसंख्यापृथगत्रचक्रेसंयोजितान्ज्ञेयमनूनधीभिः ॥४६९॥

अब आगे अंकोंका बयान किया जावे तो ग्रंथ बहुत बढ जायगा इस वास्ते श्लोक मात्र दिखाये हैं. यह आगे जो अश्वगतिके गर्भचक्रादिबंध हैं उसमें पहिला दूसरा तीसरा ऐसे क्रमसे घोडेको चलावे परंतु इस खेलमें खूबी यह है कि पत्र न देखते घरोंके ऊपर ध्यान न रखके दिलमें आवे वैसा आकार खड़ा करे यह बुद्धिका चमत्कार है. उसके सब श्लोक ५२७ तक हैं चक्रबंध सब ८२ तरहके हैं इति ॥ ४५० ॥ ४५१ ॥ ४५२ ॥ ४५३ ॥ ४५४ ॥ ४५५ ॥ ॥४५६ ॥ ४५७ ॥ ४५८ ॥ ४५९ ॥ ४६० ॥ ४६१ ॥ ४६२ ॥ ४६३ ॥ ॥४६४ ॥ ४६५ ॥ ४६६ ॥ ४६७ ॥ ४६८ ॥ ४६९ ॥

श्रीचामुंडाकृपाभाजाश्रीचामेंद्रतनूभुवा ॥
श्रीकृष्णनृपचन्द्रेणश्रीहरिप्लुतिरीरिता ॥ ४७० ॥
चामुंडाचरणाब्जपूजनपरःश्रीकृष्णभूवल्लभ-
श्चक्रेवार्धिकृतेंदुसद्मकलितेश्रीचातुरंगेशुभे ॥
संचारंतुरगस्यसाधुतनुतेपूर्णाश्वलक्ष्मीमितासंख्या
भास्करवीथिकास्वपिसमास्याद्दंडतःपार्श्वतः ॥ ४७१ ॥

वीथीनांबोधकास्त्वाद्याद्वितीयागृहबोधकाः ॥
शब्दाःसंख्यारत्नकोशस्थिताःसर्वेत्रकीर्तिताः ॥ ४७२ ॥
पादनेत्रंवार्धिचंद्रोरामलिंगंक्षमांबुधिः ॥
नेत्रभाषावेदकन्यामंडलाश्वःक्षमारमा ॥ ४७३ ॥
लोकनायकभूपुत्रौद्वंद्वभावोयुगेश्वरः ॥
जीवपुत्रोवधूराशिस्तांडवेशोरमामणिः ॥ ४७४ ॥
वनारण्यंरत्नराशिःशिवेशोभावनायकः ॥
शिवाचलोभानुकन्यासुतांगंवीरभैरवः ॥ ४७५ ॥
हयस्वरःकोशलक्ष्मीर्बलांगंनागकन्यका ॥
स्वरमंडलबाणाब्धीशास्त्रदृग्वसुचंद्रमाः ॥ ४७६ ॥
वीररामःशिवकृतंसूर्यदृक्वनचन्द्रमाः ॥
शिवशक्तिःसूर्यचंद्रोदिशाक्षिमणिसागरः ॥ ४७७ ॥
नागनेत्रंजीवरूपंबाणाग्निर्व्याधसागरः ॥
लक्ष्मीबलंजीवकन्याशिखाश्वोहरिभार्गवी ॥ ४७८ ॥
वीरतांडवपुत्रार्थौसूर्यांगंशिवभार्गवी ॥
भानुपुत्रोरुद्रभावोवीरेशोवननायकः ॥ ४७९ ॥
रमात्मजोघोटकार्कःप्राणेशोजीवनायकः ॥
वार्धिपुत्रोमण्डलार्कोभूमीशोभुजनायकः ॥ ४८० ॥
चन्द्रस्वरःशक्तिलक्ष्मीर्वेदशास्त्रंकरेशरः ॥
कृतेयुगंलिंगपाणिश्चंद्ररूपंकरेगुणः ॥ ४८१ ॥
वेदपाणिःपाणिचंद्रश्चंद्रनाडीगुणांबुधिः ॥
भूमिकन्यारामजीवोवार्धिःश्रीपक्षघोटकः ॥ ४८२ ॥
चन्द्रधान्यंविभूतीशोवेदार्कोलोकनंदनः ॥
कन्यारत्नंबलशिवोलक्ष्मीभावोद्रिनंदनः ॥ ४८३ ॥

ग्रहरत्नंपुत्रशिवोराश्यर्कःशिवनन्दनः ॥
भावलक्ष्मीरुद्रबलंवीरकन्यावनाचलः ॥ ४८४ ॥
गजलक्ष्मीर्बलगिरिर्बाणकन्यानदीबलम् ॥
गजव्यूहोबलगुणःशरचन्द्रःस्वरायनम् ॥ ४८५ ॥
मेघचन्द्रोदिशाशक्तिः कूटाब्धिःशिवलोचनम् ॥
दिशाव्यूहःसूर्यमूर्तिःशिवेंदुर्वीरलोचनम् ॥ ४८६ ॥
वारचन्द्रोबाणपाणी रसाब्धिर्नागमंडलम् ॥
शैलकन्याप्राणबलंबलश्रीर्गजघोटकः ॥ ४८७ ॥
वनलक्ष्मीर्धेनुबलंशिवार्थोभावतांडवः ॥
शिवनंदःकूटशिवोवनार्कोनन्दनन्दनः ॥ ४८८ ॥
अश्वरत्नंभैरवेशोजीवराशिर्वधूसुतः ॥
रामेश्वरश्चन्द्रसूर्यःकर्णपुत्रोब्धिनायकः ॥ ४८९ ॥
भुजलक्ष्मीर्वेदगिरीरामबाणःक्षमाबलम् ॥
द्वंद्ववेदश्चंद्रकरोरामचन्द्रोब्धिमंडलम् ॥ ४९० ॥
एकत्वाद्याःक्रमात्संख्याःपूर्वोक्तेषुचसद्मसु ॥
लिखेद्यदितदासिद्ध्येद्विचित्राश्वगतिःशुभा ॥ ४९१ ॥
श्रीचामुंडादयापात्रकृष्णराजमहीभुजा ॥
रचिताप्राज्ञमोदायजीयादासूर्यचन्द्रभम् ॥ ४९२ ॥
चामुंडापदभव्यभक्तिभरितःश्रीकृष्णभूपालक-
श्चक्रेतन्त्रगृहान्वितेवितनुतेसाप्तिस्तुतिंसुंदराम् ॥
वीथीबोधकरास्तुपूर्वमुदिताःपश्चाद्गृहाबोधकाः
संख्यारत्नसुकोशगाश्वसकलाःशब्दाःप्रयुक्तास्त्विह ॥ ४९३ ॥
रामलिंगंनेत्ररूपंध्रुवशक्तिर्गुणायनम् ॥
ध्रुवचन्द्रःपाणिलिंगंरामचन्द्रःक्षमाकरः ॥ ४९४ ॥
युग्मवेदोभूमिरसोभुजलक्ष्मीर्गुणेबलम् ॥
भूमिकन्यापक्षवाजीरामबाणःक्षमांबुधिः ॥ ४९५ ॥

पादनेत्रंवेदमूर्तिःकन्यारूपंनदीकरः ॥
गजव्यूहोजीवशक्तिर्वेदाब्धिःकरपल्लवः ॥ ४९६ ॥
सोमवारःशक्तिलक्ष्मीर्वेदशास्त्रंशिखागजः ॥
गुणस्वरोभूमिलक्ष्मीर्नेत्रांगंवार्धिकन्यका ॥ ४९७ ॥
बाणलिंगंभाष्यवेदः कन्यार्थोमातृकाश्रुतिः ॥
लक्ष्मीकरःशास्त्ररूपंवेददृष्टिःशरांबुधिः ॥ ४९८ ॥
तर्कशास्त्रंवेदगिरीरसश्रीर्गजघोटकः ॥
शैलकन्यारमामूर्तिर्द्वीपभूमिर्वधूस्तनः ॥ ४९९ ॥
अंगवेदोनागकंचद्वीपाश्वोलोहकारकम् ॥
वेदलक्ष्मीर्जीववारोगजलक्ष्मीर्नदीरसः ॥ ५०० ॥
वधूस्वरोद्वीपगजोगंधांगंजीवकन्यका ॥
हरिमूर्तीरमारूपंवेश्याक्षियुगचंद्रमाः ॥ ५०१ ॥
एकत्वाद्याःक्रमात्संख्याःपूर्वोक्तेषुचसद्मसु ॥
लिखेद्यदितदासिद्ध्येद्व्यश्वैकाश्वगतिःशुभा ॥ ५०२ ॥

(इन्द्रवज्रावृत्तम्)

दृग्भ्यांगजैर्भागवतैर्जिनैश्चदंतैश्चतालैर्वसुगोस्तनैश्च ॥
हालास्यलीलाभिरपिक्रमात्स्यादेकत्वसंख्याग्रथितात्रचक्रे ५०३

जायंतेबलदेवांकचक्राणिप्रमुखानिच ॥
यन्त्रचक्रेगजार्कांकाश्चैकैकस्मिन्निदाःक्रमात् ॥ ५०४ ॥
श्रीचामुंडाकृपापात्रश्रीकृष्णेंद्रमहीभुजा ॥
रचिताप्राज्ञमोदायजीयाद्धरिगतिश्चिरम् ॥ ५०५ ॥
श्रीमच्चामुंडिकांबाचरणसरसिजद्वंद्वपूजाधुरीणः
श्रीमान्कृष्णक्षितीशःश्रुतिमतसदनैर्भूषितेचातुरंगे ॥
चक्रेऽस्मिन्घोटकस्यप्लुतिमपितनुतेपूर्णताराढ्यसंख्या
प्रत्येकंसर्वपंक्तिष्वपिभवतिसमादंडतःपार्श्वतश्च ॥ ५०६ ॥

वीथीनांबोधकास्त्वाद्याद्वितीयागृहबोधकाः ॥
शब्दाःसंख्यारत्नकोशस्थिताःसर्वत्रकीर्तिताः ॥ ५०७ ॥
राममूर्तिःकेंद्रचंद्रःपाददृष्टिःक्षमांबुधिः ॥
शक्तिकन्याचंद्रबलंभुजश्रीवार्धिघोटकः ॥ ५०८ ॥
बाणकन्याबलगिरिर्गजलक्ष्मीर्नदीरसः ॥
वसुव्यूहोबलगुणोवधूरूपंस्वरायनम् ॥ ५०९ ॥
बाणलिंगंजीवरूपंसिद्धिदृष्टिस्वरांबुधिः ॥
रमाबलंद्वीपगजोबाणाद्रीरसकन्यका ॥ ५१० ॥
वेदशास्त्रंशक्तिलक्ष्मीः सोमवारोंघ्रिपल्लवः ॥
वेदवर्णोभाष्यकरोध्रुवेंदुस्तनमंडलम् ॥ ५११ ॥
भूमिकन्यापक्षवाजीकृतसिद्धिर्गुणेबलम् ॥
नेत्रवर्णश्चंद्रकरोरामचन्द्रोब्धिमंडलम् ॥ ५१२ ॥
रसव्यूहोवधूनेत्रंद्वीपचन्द्रोरमागुणः ॥
शैलकन्याहस्तिगिरिरससिद्धिर्वधूर्बलम् ॥ ५१३ ॥
द्वीपवाजीकोशलक्ष्मीर्वैडूर्यांगंभोगिकन्यका ॥
नदीसंध्यासिद्धिरूपंतर्कपक्षोर्थसागरः ॥ ५१४ ॥
युगपक्षःपक्षचंद्रोभूलोकोगुणगोस्तनः ॥
करभाषाक्षमालक्ष्मीर्मंडलाश्वोब्धिकन्यका ॥ ५१५ ॥
एकत्वाद्याःक्रमात्संख्यालिखेत्पूर्वोक्तसद्मसु ॥
पूर्णताराकल्पतरुचक्रंसिध्येत्तदाध्रुवम् ॥ ५१६ ॥
श्रीचामुंडा कृपापूर्णकृष्णराजमहीभुजा ॥
रचितं प्राज्ञमोदाय जीयादाभूरवींदुभम् ॥ ५१७ ॥

इस प्रकारसे १२८ भेदचक्र उत्पन्न होते हैं और इस पूर्ण तारा कल्पतरु चक्रमें जगह जगहमें विचित्र जैसी होवे वैसी समानता समानता होयके आठ आठ गृहोंकी संख्या एकत्र किये तो २६० संख्या होतीहैं और देखने वालेकी बुद्धिकौशल्यता बलवान्होती है. ऐसे अनेक प्रकारसे पूर्वोक्त संख्या २६०

पूर्णाश्व लक्ष्मी संख्यादंडबंधचक्र ३

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें चमत्कारसे पूर्णाश्व लक्ष्मी संख्या दंड और पार्श्वांत अंदर आयेसरी धीं एकाश्व गति चलाई है.

९१	१२६	५३	२०	९३	१२४	५१	२२	१०७	११०	३५	३८
५४	१९	९२	१२५	५२	२१	९४	१२३	३४	३७	१०८	१११
१२७	९०	१७	५६	१२१	९६	२३	५०	१०९	१०६	३९	३६
१८	५५	१२८	८९	२४	४९	१२२	९५	४०	३३	११२	१०५
८७	१३०	५७	१६	९७	१२०	४५	२८	१०१	११६	४१	३२
५८	१५	८८	१२९	४८	२५	१००	११७	४४	२९	१०४	११३
१३१	८६	१३	६०	१११	९८	२७	४६	११५	१०२	३१	४२
१४	५९	१३२	८५	२६	४७	११८	९९	३०	४३	११४	१०३
८३	१२	६१	१३६	७९	१३८	६७	६	६९	१४४	७३	२
६२	१३३	८४	९	६६	७	७८	१३९	७६	३	७०	१४३
११	८२	१३५	६४	१३७	८०	५	६८	१४१	७२	१	७४
१३४	६३	१०	८१	८	६५	१४०	७७	४	७५	१४२	७१

दंडबेरीजबंधचक्र ४.

इस १४४ घरके बुद्धिबळपटमें दंडरीतिसे ८७० की बेरीज होवे इस रीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

६२	२१	८२	१२५	६६	१९	७८	१२७	७६	१७	७२	१२९
८३	१२४	६३	२०	७९	१२६	६७	१८	६९	१२८	७५	१६
२२	६१	१२२	८१	२४	६५	१३२	७७	१४	७३	१३०	७१
१२३	८४	२३	६४	१२१	८०	१३	६८	१३१	७०	१५	७४
६०	२७	८६	११९	५८	२५	८८	१३३	५६	११	९०	१३५
८५	११८	५९	२६	८७	१२०	५७	१२	८९	१३४	५५	१०
२८	४१	११६	१०७	३०	४५	१३८	९३	८	४३	१३६	९१
११७	१०६	२९	१०२	११५	१०८	७	५२	१३७	९२	९	५४
४०	३५	४२	१०९	४४	३१	४६	१३९	९४	३	५०	१४३
१०५	११०	१०३	३६	१०१	११४	९९	६	९१	१४४	९५	२
३४	३९	११२	४३	३२	३७	१४०	४७	४	९७	१४२	४९
१११	१०४	३३	३८	११३	१००	५	९८	१४१	४८	१	९६

पार्श्वबेरीजबंधचक्र ५

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें पार्श्व रीतिसे ८७० की बेरीज होवे इस रितिसे एकाश्व गति चलाईहै.

५४	११	९२	१२५	५२	२१	९६	१२१	४८	२५	९८	११९
९१	१२६	५३	२०	९३	१२४	४९	२४	९७	१२०	४७	२६
१८	५५	१२८	८९	२२	५१	१२२	९५	२८	४५	११८	९९
१२७	९०	१७	५६	१२३	९४	२३	५०	११७	१००	२७	४६
५८	१५	८८	१२९	३८	३५	११२	१०५	४४	२९	११६	१०१
८७	१३०	५७	१६	१११	१०८	३७	३४	११३	१०४	४३	३०
१४	५९	१३२	८५	३६	३९	१०६	१०९	३२	४१	१०२	११५
१३१	८६	१३	६०	१०७	११०	३३	४०	१०३	११४	३१	४२
६२	१३३	८४	९	६६	७	७८	१३९	७६	३	७०	१४३
८३	१२	६१	१३६	७९	१३८	६७	६	६९	१४४	७३	२
१३४	६३	१०	८१	८	६५	१४०	७७	४	७५	१४२	७१
११	८२	१३५	६४	१३७	८०	५	६८	१४१	७२	१	७४

कोणद्वयबेरीजचक्र ६

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें कोण द्वयमें वि ८७० की बेरीज होवे इसरीतिसे अखंडैकाश्व गति चलाईहै.

११०	११९	१०६	१२१	९८	१२३	७६	१२७	१३०	८१	७८	२९
१०५	१००	१०९	११८	१०७	१२६	१३१	८२	७७	३०	१२९	८०
११६	१११	१२०	९९	१२२	९७	१२४	७५	१२८	७९	२८	३१
१०१	१०४	११७	१०८	१२५	१३६	८३	१३२	५३	७४	५१	१४०
११२	११५	१०२	९१	९६	८९	१३४	७३	५६	१३९	३२	२७
१०३	९४	११३	८८	१३५	८४	१३७	५४	१३३	५२	१४१	५०
११४	९३	९२	९५	९०	८७	७२	५७	१३८	५५	२६	३३
१३	६८	४१	६२	८५	७०	३९	६०	३७	५८	४९	१४२
४२	७	६४	६९	४०	६१	८६	७१	४८	१४३	३४	२५
६५	१८	६७	८	४५	१६	४७	३८	५९	३६	१२	१४४
६	४३	२०	१७	४	९	२२	१५	२	११	२४	३५
१९	६६	५	४४	२१	४६	३	१०	२३	१४	१	९२

सर्पगतिबंधचक्र ७

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें सर्प गतिरीति प्रमाणसे अखंडै काश्व गति चलाई है

९	१४	११	१३८	१४३	१३६	१२३	१२०	१४१	१३०	१२५	१२८
१२	३	८	१३५	१२२	१२९	१४२	१३३	१२४	१२७	११८	१३१
१५	१०	१३	१४४	१३७	१३४	१२१	१४०	११९	१३२	१२९	१२६
२	७	४	९९	१०२	९७	१०८	१११	१०६	९३	११४	११७
५	३६	१	९६	१०९	१००	१०३	९४	११५	११२	१०५	९२
२८	३१	६	१०१	९८	९५	११०	१०७	१०४	९१	११६	११३
१७	३४	२९	७२	७५	७०	८१	८४	७९	६६	८७	९०
३०	२७	३२	६९	८२	७३	७६	६७	८८	८५	७८	६५
३३	१८	३५	७४	७१	६८	८३	८०	७७	६४	८९	८६
२४	२१	२६	४५	३८	४७	६०	५७	४२	५१	५४	६३
१९	३६	२३	४८	५९	४४	३९	५०	६१	५६	४१	५२
२२	२५	२०	३७	४६	४९	५८	४३	४०	५३	६२	५५

नवखंडबंधचक्र ८

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें नव खंडको विचित्र रितीसे अखंडै काश्व गति और ह्रस्वगति विचलाईहै.

६०	६५	६२	८९	१२८	५३	५६	९१	९६	५१	४८	४५
६३	८८	५९	८२	५५	९०	१२७	५२	१३९	४६	९७	५०
६६	६१	६४	१२९	१२६	५७	५४	९५	९२	४९	४४	४७
८७	१३०	८३	५८	८१	१३२	१२५	१४०	४३	१३८	९३	९८
८४	६७	८६	१३१	१२४	३	६	१३३	९४	१३५	४०	१३७
७१	११८	६९	८०	१	८	११	४	१४१	४२	९९	३८
६८	८५	७२	१२३	१०	५	२	७	१३४	३९	१३६	४१
११९	७०	११७	१४४	७९	१२	९	१४२	१०९	१०४	३७	१००
११६	७३	१२०	१३	१२२	१४३	७८	१०३	२८	१०१	११०	१०५
१७	१४	१९	७४	७७	२४	२७	१०८	१११	३४	३१	३६
[illegible]	११५	१६	१२१	२२	११३	७६	२५	१०२	२९	१०६	३३
१५	१८	२१	११४	७५	२६	२३	११२	१०७	३२	३५	३०

प्रदक्षिणाबंधचक्र ९

इस १४४ घरकेबुद्धिबल पटमें चारों तरफ तीन पंक्तिके १०८ घरमें और मध्यके ३६ घरमें दोप्रकारसे विचित्राश्व गति और अखंडाश्व गति चलाई है.

८५	८८	८३	४४	३९	४२	७९	४६	७७	३२	२९	३४
८२	९५	८६	८९	८०	४५	३८	४१	४८	३५	७६	३१
८७	८४	८१	९४	४३	४०	४७	७८	३७	३०	३३	२८
९६	९३	९०	११९	१३८	१४१	१२८	१३१	११६	४९	३६	७५
९१	१००	१३	१४०	१२७	११८	११५	१४२	१२९	५२	२७	५०
१२	९७	९२	१३७	१२०	१३९	१३०	११७	१३२	५५	७४	५३
१०१	१४	९९	१२६	१११	१२४	१३३	११४	१४३	२६	५१	५६
९८	११	१०४	१२१	१३६	१०९	११२	१२३	१३४	७३	५४	२५
१०५	१०२	१५	११०	१२५	१२२	१३५	१४४	११३	२४	५७	६६
१०	५	८	१०३	१०८	१७	२०	६९	७२	६५	६०	६३
७	१०६	३	१६	२१	७०	१	१८	२३	६२	६७	५८
४	९	६	१०७	२	१९	२२	७१	६८	५९	६४	६१

पदकबंधचक्र १०

इस. १४४ घरकेबुद्धिबल पटमें बीचमें पदक एकको भागांश रीतिसे आठ दिशामें अखंडैकाश्व गति चलाई है.

८६	८३	८०	९३	७६	१३१	७०	३९	६२	४३	४६	४१
८१	९४	८५	१३०	७९	९२	७७	१३२	६९	४०	६१	४४
८४	८७	८२	७५	१३४	७१	३८	६३	६०	४५	४२	४७
९५	१२६	१२९	८८	९१	७८	१३३	३८	५३	४८	३१	६६
१२८	८९	७४	१३५	७२	३७	५४	५९	६४	६७	५२	४९
१२५	९६	१२७	९०	१३९	१३६	१४१	३६	५१	३२	६५	३०
९८	११९	१२२	७३	१४२	१	१३८	५५	५८	२९	५०	३३
१२१	१२४	९७	१०८	१३७	१४०	१४३	१८	३५	२२	५७	२८
११८	९९	१२०	१२३	१४४	१९	२	२१	५६	२७	३४	२३
१०५	१०२	१०७	११४	१०९	११२	१५	२६	१७	६	११	८
१००	११७	१०४	१११	१४	११५	२०	३	१२	९	२४	५
१०३	१०६	१०१	११६	११३	११०	१३	१६	२५	४	७	१०

जन्मोपशमसंबंध बंध चक्र ११

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें १ कुं. १४४ दो २ कुं १४३ तीन ३ कुं १४२ यह प्रमाण क्रमसे ४३ कु १०२ पर्यंत संबध करके बाकी ५८ घरकु बि मिळायके भरदेना ऐसी एकाश्व गति चलाई है.

९९	७८	१२५	१३२	९१	८०	१२३	१३०	८९	८२	१२१	६०
१२६	१३३	९८	७९	१२४	१३१	९०	८१	१२२	५९	८८	८३
७७	१००	१२७	२०	१३	९२	१२९	२२	१५	१२०	६१	२४
१३४	१९	१२	९७	१२८	२१	१४	९३	५८	२३	८४	८७
१०१	७६	१३५	१८	९५	१०८	१३७	१६	११९	८६	२५	६२
४६	११	९६	१०९	१३६	१७	९४	१०७	१३८	५७	११८	८५
७५	१०२	४५	१०	१११	१०६	३७	८	११७	२६	६३	५६
४४	४७	११०	१०५	३६	९	१४२	१३९	३८	७	११६	२७
१०३	७४	४३	११२	१४१	३४	३९	११४	१४३	२८	५५	६४
४८	७१	१०४	३५	४०	११३	१४०	३	६	११५	१४४	२९
७३	४२	६९	५०	३३	४	६७	५२	३१	२	६५	५४
७०	४९	७२	४१	६८	५१	३२	५	६६	५३	३०	१

पद्मप्रदक्षिणाबंधचक्र १२

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ३२ घर छोडके बाकी ११२ घरमें प्रदक्षिणा सरीखी चित्रैकाश्वगति चलाई है.

श्री	त्रा	२७	१०	४५	६४	२९	१२	४७	६६	कृ.	पा
सुं.	डा	४४	६३	२८	११	४६	६५	३०	१३	पू	र्ण
६१	२६	९	१०६	८७	७८	९७	१०८	६७	४८	३१	१४
८	४३	६२	७७	९६	१०७	८८	७९	९८	१०९	६८	४९
२५	६०	१०५	८६	श्री	कृ	ष्णा	नू	८९	८०	१५	३२
४७	७	७६	९५	प	चं	द्रे	ण	११०	९९	५०	६९
५९	२४	८५	१०४	नि	र्मि	ता	स्व	८१	९०	३३	१६
६	४१	९४	७५	न	ति:	सु	भा	१००	१११	७०	५१
२३	५८	१०३	८४	९३	७४	१०१	८२	९१	७२	१७	३४
४०	५	२२	५७	१०२	८३	९२	७३	११२	३५	५२	७१
घा	म	३९	४	५५	२०	३७	२	५३	१८	तु	नू.
शा	ज	५६	२१	३८	३	५४	१९	३६	१	सु	ज्ञा

प्राकारबंधचक्र १३.

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ६८ घर छोडके बाकी ७६ घरमें प्राकार रीतिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	१९	५६	२१	५४	२३	५२	..	..	..
..	१८	..	..	..	..	..	..	..	..	२५	..
..	..	६०	५७	२०	५५	२२	५३	२४	५१	..	..
६१	..	१७	•	३७	५८	३५	५०	•	४८	..	२६
१६	..	६२	५९	..	..	..	..	३४	२७	..	४७
६३	..	१५	३८	..	३६	३३	..	४९	४६	..	२८
१४	..	६४	६७	..	३९	४२	..	३२	२९	..	४५
६५	..	१३	७०	..	..	..	..	४१	४४	..	३०
१२	..	६६	•	६८	७१	४०	४३	•	३१	..	३
..	..	६९	७२	९	७४	७	७६	५	२	..	..
..	११	..	..	..	..	..	..	..	..	४	..
..	..	..	१०	७३	८	७५	६	१	..	..	..

पंचसरोवरबंधचक्र १४

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमे ४८ घर छोडके बाकी ९६ घरमें पंचसरोवरके-आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

४७	५६	..	..	६१	५८	७३	६४	..	..	७१	७८
५४	•	४८	५७	•	६३	६०	•	७२	७९	•	६९
..	४६	५५	६२	५९	..	..	७४	६५	७०	७७	..
..	५३	४४	४९	८६	..	..	९१	८०	७५	६८	..
४५	•	५१	८८	•	९०	८५	•	९३	६६	•	७६
५२	४३	..	..	५०	८७	९२	८१	..	..	९४	६७
३३	४०	..	..	८९	३८	१७	८४	..	..	३५	६
४२	•	३४	३९	•	२५	८२	•	१६	५	•	९५
..	३२	४१	२४	३७	..	..	१८	८३	१४	७	..
..	२३	३०	३५	२६	..	..	१३	४	९	१६	..
३१	•	२१	२८	•	३६	१९	०	११	२	•	८
२२	२९	..	..	२०	२७	१२	३	..	..	१०	१

सरोवरबंधचक्र १५

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ७२ घर छोडके ७२ घरमें सरोवरके आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	:	:	:	:	४०	४५	..	..	:	:	:
:	:	:	:	४६	४९	४२	३९	:	:	:	:
:	:	:	५०	४१	४४	३७	४८	३१	:	:	:
:	:	६६	५९	६४	४७	३२	४३	३८	३५	:	:
:	५८	६३	६८	५१	·	:	३६	३३	३०	२५	:
७०	६७	६०	६५	·	..	..	·	२४	२१	३४	२९
५७	६२	६९	५२	·	..	..	·	१७	२६	२३	२०
..	७१	५६	६१	५४	·	·	१५	२२	१९	२८	..
..	..	५३	७२	७	१०	१३	१८	२७	१६	..	..
..	..	..	५५	१२	३	६	९	१४	..	..	..
..	..	..	..	१	८	११	४	..	..	..	..
..	..	..	..	..	५	२	..	..	..	..	..

अष्टोत्तरीबंधचक्र १६

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें घर ३६ छोडके बाकी १०८ घरमें अंबा अष्टोत्तर रीतिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

१७	..	७७	७२	..	१४	६९	..	६३	१२	..	१०
..	७३	१८	१५	७६	७१	१०२	१३	६८	९	६२	..
१९	१६	७५	७८	१०१	·	·	७०	६१	६४	११	८
७४	७९	१००	९१	·	१०३	९६	·	९४	६७	६०	६५
..	२०	८१	·	९७	९०	९३	१०४	·	५८	७	..
८०	९९	·	८३	९२	..	..	९५	५६	·	६६	५९
२१	८२	·	९८	८९	..	..	८६	१०५	·	५७	६
..	४५	५०	·	८४	८७	१०६	५५	·	३५	३२	..
४९	२२	४३	८८	·	५४	८५	·	१०७	३०	५	३४
४४	२५	४६	५१	४०	·	·	५३	३६	३३	२	३१
..	४८	२३	४२	२७	५२	३९	१०८	२९	४	३७	..
२४	..	२६	४७	..	४१	२८	..	३८	१	..	३

नवसरोवरसहितअष्टोत्तरीबंधचक्र १७

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ३६ घर छोडके बाकी १०८ घरमें अष्टोत्तरी रितिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

·	·	४७	३६	४९	··	··	७६	७१	७४	·	·
·	·	४२	५१	४६	··	··	७३	६८	७७	·	·
३९	३२	३५	४८	३७	५०	८५	७८	७५	८०	६७	७०
३४	४३	३८	४१	५२	४५	६२	८७	७२	६९	६४	८१
३१	४०	३३	४४	६१	८६	५७	८४	६३	८२	७१	६६
··	··	३०	५३	५८	·	·	९३	८८	६५	··	··
··	··	२५	६०	२९	·	·	५६	८३	९०	··	··
२०	२३	१६	२७	५४	५९	९४	८९	९२	१०१	९६	९९
१५	२६	२१	२४	१७	२८	५५	४	९५	९८	९१	१०२
२२	१९	१४	९	१२	३	६	१०५	१०८	१०३	१००	९७
·	·	११	१८	७	··	··	२	५	१०६	·	·
·	·	८	१३	१०	··	··	१०७	१०४	१	·	·

पूर्णाश्वद्वयगतिबंधचक्र. १८

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें अश्व द्वय गति चलाई है.

४३	४३	६	६	४१	४१	१	१	३९	३९	३५	३५
७	७	४२	४२	५	५	४०	४०	७२	३६	३८	३८
४४	४४	८	८	७०	७०	२	२	७२	३६	३४	३४
९	९	४५	४५	४	४	७१	७१	३३	३३	३७	३७
४६	४६	१०	१०	६९	६९	३	३	६६	६६	३२	३२
११	११	४७	४७	१४	१४	६७	६७	३१	३१	६५	६५
४८	४८	१३	१३	६८	६८	१५	१५	६३	६३	३०	३०
१२	१२	४९	४९	१७	१७	६२	६२	२९	२९	६४	६४
५०	५०	१८	१८	६३	६१	१६	१६	५९	५९	२८	२८
१९	१९	५१	५१	२२	२२	६०	६०	२७	२७	५८	५८
५२	५२	२१	२१	५४	५४	२४	२४	५६	५६	२६	२६
२०	२०	५३	५३	२३	२३	५५	५५	२५	२५	५७	५७

चित्राश्वद्वयगतिबंधचक्र १९

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें २४ घर छोडके बाकी १२० घरमें चित्राश्व द्वय गति चलाई है

..	..	१३	१३	५२	५२	१७	१७	५०	५०	..	..
..	..	५३	५३	१४	१४	५१	५१	१८	१८	..	..
५४	५४	१२	१२	५९	५९	१६	१६	४९	४९	१९	१९
११	११	५८	५८	१५	१५	६०	६०	२०	२०	४८	४८
५५	५५	१०	१०	·	३१	३१	·	४७	४७	२१	२१
९	९	५७	५७	३२	..	..	३०	२२	२२	४६	४६
५६	५६	८	८	३२	..	..	३०	४५	४५	२३	२३
७	७	३३	३३	·	२९	२९	·	२४	२४	४४	४४
३४	३४	६	६	३८	३८	२७	२७	४३	४३	२५	२५
५	५	३५	३५	२८	२८	३९	३९	२६	२६	४२	४२
..	..	४	४	३७	३७	२	२	४१	४१	..	..
..	..	३६	३६	३	३	४०	४०	१	१	..	..

पुष्पकविमानबंधचक्र २०

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ५८ घर छोडके बाकी ८६ घरमें पुष्पक विमान रीतिसे चित्रेकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	..	..	१	६	..	..	..	..	..
..	..	..	..	..	८	८५	..	..	..	..	..
..	..	..	..	८६	५	२	७	..	..	..	..
५७	..	..	४	९	६६	७५	८४	११	..	..	१८
५०	४१	५८	५५	४८	३	१०	६७	७६	१७	१२	७९
५९	५६	४९	४२	६५			७४	८३	७८	१९	१६
४०	५१	४४	४७	५४			७७	६८	१५	८०	१३
४५	६०	५३	६४	४३			२२	७३	८२	६९	२०
५२	३९	४६	६१	३४	६३	७२	२९	७०	२१	१४	८१
..	..	..	३८	२७	३६	२५	३२	२३	..	..	..
..	..	..	३५	६२	३३	२८	७१	३०	..	..	..
..	..	..	..	३७	२६	३१	२४	..	..	..	..

शिवाकारबंधचक्र . २१

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ३६ घर छोडके बाकी १०८ घरमें लिंगाकार शिवाष्टोत्तर शत रीतिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	..	४६	३१	९४	५७	..	..	..	..
..	..	..	३०	९३	५८	४७	३२	९५	..	..	..
..	..	..	४५	५४	६७	५६	५९	३४	..	..	..
..	..	८९	९२	२९	६०	३३	४८	६९	९६	..	..
९०	२७	४४	५३	६६	५५	६८	६१	३८	३५	१००	९७
..	८८	९१	२८	४३	६२	५१	७०	४९	९८	३७	१०२
..	..	२६	२३	५२	६५	४२	३९	३६	१०१	..	९९
..	२२	८७	७४	२५	४०	६३	५०	७१	७८	१०३	..
..	..	२४	२१	६४	७३	७६	४१	१०४	३		..
..	१०	१३	८६	७५	२०	१७	७२	७७	१०८	७९	..
१२	८५	८	१५	१८	८३	६	१०५	२	८१	४	१०७
९	१४	११	८४	७	१६	१९	८२	५	१०६	१	८०

वृषभाकार बंधचक्र २२

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ४२ घर छोडके बाकी १०२ घरमें वृषभाकार रीतिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	१०१	..	..	..	..	..	..	..	..
:	:	१	४	९९	:	:	:	:	:	:	:
२	५	१००	१३	१०२	:	:	:	:	:	:	:
१७	१४	३	६	..	९८	११	:	:	:	:	:
:	७	१६	१९		९	६०	:	:	:	:	:
१५	१८	६५	८	५४	२०	९७	१०	२३	३४	९५	:
७२	६७	७०	६३	[illegible]	६१	४६	२१	९६	४१	२४	३३
:	६४	७३	६६	६९	५८	५३	४०	४५	२२	३५	९४
७४	७१	६८	५७	६२	५५	४४	४७	४२	३९	३२	२५
:	८२	८५	७६	७९	५०	८९	५२	३१	२८	९३	३६
८४	७५	८०	८७	[illegible]	७७	४८	४३	३८	९१	२६	२९
८१	८६	८३	७८	४९	८८	५१	९०	२७	३०	३७	९२

हस्तिबंधचक्र २७

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ५६ घर छोडके बाकी ८८ घरमें गजके आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	:	:	:	:	:	:	:	:	७	२	१
:	:	:	:	:	:	:	:	:	१०	·	६
:	:	:	:	:	:	:	:	:	३	८	९
:	:	:	:	:	:	:	७८	११	१४	५	१६
:	:	५२	६३	७६	६५	८४	८१	४	१७	८६	१३
५१	६२	४९	६६	५७	८२	७७	७०	७९	१२	१५	:
४८	५३	५८	७५	६४	८५	८०	८३	१८	८७	:	:
६१	५०	४७	५६	६७	७४	७१	८६	६९	२०	:	:
४६	३७	५४	५९	७२	३३	६८	१९	२६	३१	:	:
३९	६०	३५	४४	५५	४२	७३	३२	२९	२४	२१	:
३६	४५	३८	४१	३४	:	:	२५	२२	२७	३०	:
:	४०	:	:	४३	:	:	२८	:	:	२३	:

अश्वबंधचक्र २८

इस १४४ घरकेबुद्धिबलपटमें ७० घर छोडके बाकी ७४ घरमें अश्वाकारसे चित्रैकाश्वगति चलाई है.

:	४	७	..	..	..	..	..	..	..	..	..
:	१	१०	५	८	..	..	..	..	..	..	..
:	६	३	७४	२३	..	..	..	..	..	..	..
२	११	:	९	२६	..	..	..	..	..	..	..
:	:	:	२२	७३	२४	२७	३०	४७	६८	३५	..
.	१५	१२	२५	६२	३१	७२	६९	३४	२९	४६	४९
१९	:	२१	१४	७१	६४	३३	२८	६७	४८	५७	३६
१६	१३	१८	६३	३२	६१	७०	६५	५६	५९	५०	४५
:	२०	:	:	:	:	५५	६०	५३	६६	३७	५८
:	१७	:	:	:	:	:	:	३८	:	४४	५१
:	:	:	:	:	:	३९	५४	४३	५२	:	:
:	:	:	:	:	:	४२	:	४०	:	:	:

हंसबंधचक्र २९

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ५२ घर छोडके बाकी ९२ घरमें हंस आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	६८	..	..	..	..	९	६	..	..	..	..
..	६५	७०	..	..	..		९१	१०	७	..	..
६९	५८	६७	६४	..	..	..	८	५	९२	..	..
६६	७१	६०	५७	..	..	..	३३	९०	..	४	१
५९	५६	६३	८२	..	..	..	८४	३	..	..	..
७२	६१	५४	..	..	८३	८०	८९	१२	११	२	..
५५	४६	..	६२	८१	७८	३१	७६	८५	१६	१३	१८
४८	७३	५०	५३	३२	७५	८६	७९	८८	२५	२०	१५
४५	३४	४७	७४	५१	३०	७७	२६	२१	१४	१७	..
..	४९	५२	३३	४२	२७	२२	८७	२४	३९	..	..
..	४४	३५	..	२९		३७	४०	..	..	..	..
..	..		४३	३६	४१	२८	२३	३८	..	..	..

मयूरबंधचक्र ३०

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ४६ घर छोडके बाकी ९८ घरमें मयूराकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	:	९८	:	:	:	८८	९५	७४	६३	७३	:
:	:		२	:	९६	७९	९०	८७	९४	७५	६४
:	१	:	९७		८९	८६	९३	७६	७२	६२	७१
:	८	३	६	:	७८	९१	८०	८३	७०	६५	६८
:	५	३६	:	:	८५	८२	७७	९२	६७	५६	६१
:	१२	९	४	३५	:	:	८४	८१	५२	६९	६६
:	३७	४०	११	४८	३१	३४	:	:	५७	६०	५५
:	१०	१३	४२	३९	४६	४९	३२	५३	:	५१	५८
:	४१	३८	४७	३०	३३	२४	२१	५०	५९	५४	
:	:	४३	१४	४५	१६	२७	१८	२३	२०	.	.
:	:	:	:	:	२९		२५	:	:	:	:
:	:	:	४४	१५	२६	१७	३८	१९	..	..	..

राजाद्यष्टगतिबंधचक्र ३१

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें राजा पताका अश्वमंत्री गज भट रथ उष्ट्र सहित क्रमसे १८ आवर्तनसे राजाद्यष्ट गति चलाई है.

१०७	११०	१०४	१०५	१२६	१३८	१४२	१२७	८९	८८	९४	९१
१०२	१०८	१०९	१०३	१२५	१२४	१४१	१४०	८७	९८	९२	९३
१०१	१०६	१२०	१२१	१२३	१४४	१३९	१३७	१३६	१००	९०	९६
११८	१११	११४	११९	१३४	१३०	१४३	१३५	९९	८२	९५	९७
११२	११७	११६	१३२	१३३	१२२	७५	७९	८६	८४	७८	६३
११३	११५	१२८	१२९	१३१	७६	८०	८१	८३	८५	७७	४६
३	६	२०	१	३४	३१	४४	७४	७१	६४	६५	४५
५	४	३५	१९	३८	४३	४१	३९	५६	७९	५५	६२
८	२	३३	३६	३७	१८	४०	६०	६६	७३	६१	४७
९	७	३२	२२	४२	३०	२३	२६	७०	५८	६७	५०
११	१४	२१	१७	१५	२७	२९	५६	५९	६८	५४	५२
१३	१२	१०	१६	२४	२५	२८	५७	४८	४९	५१	५३

राजाद्यष्टसमष्टिगतिबंधचक्र ३२

इस १४४ घरके बुद्धिबलके पटमें राजादिकोंकी गति चलाई है.

१९	१८	१६	२२	२१	६	५	११	१०	५	४	२
१७	१४	२६	१	२०	८	१४	७	२०	१	३	६
५	१०	२३	८	४	१८	९	१३	१२	८	७	१३
३	१२	१५	३	२	८	१९	१६	१५	९	११	१२
१	२६	४	९	२	१७	२	१	१	१६	१४	१०
२४	२३	१८	७	१२	४	७	६	५	१९	३	८
१६	१९	२७	६	२३	३	२	३	२	११	६	७
१७	२१	९	२८	९	४	५	१२	१	१०	९	४
१३	२२	२०	१	३२	२५	२४	१७	१६	९	८	१
१५	१४	१०	३	२९	३१	२१	२३	१३	१५	५	७
५	१२	८	७	२७	३०	१९	२२	११	१४	३	६
११	४	६	२	२०	२६	२८	१८	४	१०	१२	२

श्रीकृष्णउलूखलबंधचक्र ३३.

इस १४४ घरके बुद्धिबलके पटमें ३६ घर छोडके बाकी १०८ घरमें श्रीकृष्ण उलूखलाकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	१०५	९८	१०७	१००	१०३	९६	९३	८४	८९	८२	७९
..	१०८	..	१०४	९७	९४	१०१	९०	७७	८०	८५	८८
..	..	६	९९	१०२	..	९२	९५	८६	८३	७८	८१
..	१०	१		..	..	..	..	९१	७६	८७	..
	५	८	११	२	..	..	..	७०	६७	..	..
९	१२	३	१६	७	..	..	६८	७५	७२	..	..
४	१७	१४	२१	२६	१९	७४	७१	६६	६९	..	
१३	२२	२५	१८	१५	४६	२७	३२	७३	५८	५१	५४
..		३८	२३	२०	३३	३०	५९	६४	५५	[illegible]	५७
..	३४	३५	४२	४५	२८	४७	६२	३१	५०	५३	..
..	३९	४४	३७	३४	४१	६०	२९	४८	६३	५६	५९
..	३६		४०	४३	..	..	..	६१	५२	४९	..

सर्वतोभद्रबंधचक्र ३४.

इस १४४ घरके पटमें बीचमें १६ घरमें बेरीज ३५४ होना उसके बाहर चारोतरफके वर्तुलाकार चार चार घरोमें बेरिज २८२ होना पीछे उसके बाहर दोदो पंक्तिमे चारचार घर मिलके बेरीज २८२ होना इस रीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

८६	६५	२०	१११	८४	६७	२२	१२९	८२	४९	२४	१२७
१९	११२	८५	६६	२१	११०	८३	४८	२३	१२८	८१	५०
६४	८७	३८	७	१४०	९९	६८	५	१३०	१०१	१२६	२५
११३	१८	१३९	९८	३७	६	१०९	१००	४७	४	५१	८०
८८	६३	८	३९	१०८	१४१	३६	६९	१०२	१३१	२६	१२५
१७	११४	९७	१३८	७१	३४	१४३	१०६	३	४६	७९	५२
६२	८९	४०	९	१४२	१०७	७०	३५	१३२	१०३	१२४	२७
११५	१६	१३७	९६	३३	७२	१०५	१४४	४५	२	५३	७८
९०	६१	१०	४१	९४	१३५	३२	४३	१०४	१३३	२८	१२३
१५	११६	९५	१३६	११	४२	७३	१३४	१	४४	७७	५४
६०	९१	११८	१३	५८	९३	१२०	३१	५६	७५	१२२	२९
११७	१४	५९	९२	११९	१२	५७	७४	१२१	३०	५५	७६

आद्यंतसंबंधबंधचक्र ३५

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें १ से ६४ का संबंध करके एकाश्व गति चलाई है.

५५	४४	५९	५०	२१	४६	३७	६२
५८	५१	५६	४५	३६	६१	२०	४७
४३	५४	४१	६०	४९	२२	६३	३८
२८	५७	५२	३५	४०	३३	४८	१९
५३	४२	२७	३२	२३	१८	३९	६४
२६	२९	१२	१५	३४	१	४	७
११	१४	३१	२४	९	६	१७	२
३०	२५	१०	१३	१६	३	८	५

पंचसरोवरबंधचक्र ३६

इस ६४ घरके बुद्धिबलके पटमें २४ घर छोडके बाकी ४० घरमें चित्रैकाश्व गति चलाई है.

०	०	११	३४	९	१६	०	०
०	०	८	१७	१२	३५	०	०
२१	१८	०	१०	३३	०	१५	३६
४	७	२०	..	..	१३	३२	२९
१९	२२	५	..	..	३०	३७	१४
६	३	०	२५	४०	०	२८	३१
०	०	२३	२	२७	३८	०	०
०	०	२६	३९	२४	१	०	०

पूर्णताराकल्पतरुबंधचक्र ३७

इस ६४ घरके बुद्धिबलपटमें दंडऔर पार्श्वमें २६० कामिलान होवे उस रीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

११	४६	२१	५२	१३	४४	१९	५४
२२	४९	१२	४५	२०	५३	१६	४३
४७	१०	५१	२४	४१	१४	५५	१८
५०	२३	४८	९	५६	१७	४२	१५
३५	८	२५	६४	२९	४०	५७	२
२६	६३	३६	५	६०	१	३०	३९
७	३४	६१	२८	३७	३२	३	५८
६२	२७	६	३३	४	५९	३८	३१

पार्श्वबेरीजबंधचक्र ३८

इस ६४ घरके बुद्धिबलपटमें पार्श्वरीतिसे २६० कामिलान होवे उसरीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

५४	४३	२२	११	५२	४५	१८	१५
२३	१०	५३	४४	१९	१६	४९	४६
४२	५५	१२	२१	४८	५१	१४	१७
९	२४	४१	५६	१३	२०	४७	५०
३०	५७	२८	५	४०	३	३४	६३
२५	८	३१	६०	३३	६४	३७	२
५८	२९	६	२७	४	३९	६२	३५
७	२६	५९	३२	६१	३६	१	३८

दंडबंधचक्र ३९

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें दंडरीतिसे २६ कामिलान होवे उसरीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

४२	५५	२४	१९	४०	७	२६	५९
२३	२०	४१	५६	२५	५८	३९	६
५४	४३	१८	२१	८	३७	६०	२७
१७	२२	५३	४४	५७	२८	५	३८
५२	४५	१६	९	३६	३	३२	६१
१५	१२	५१	४८	२९	६४	३५	४
४६	४९	१०	१३	२	३३	६२	३१
११	१४	४७	५०	६३	३०	१	३४

पूर्णताराचतुष्कोणबंधचक्र ४०

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें पूर्णतारादिखे वैसी एकाश्व गति चलाई है.

५०	३३	४८	५९	५६	६१	४४	३९
४७	५८	५१	३४	४५	३८	५५	६२
३२	४९	४६	५७	६०	३५	४०	४३
२५	१४	३१	५२	३७	४२	६३	५४
३०	५	२६	१५	१०	५३	३६	४१
१३	२४	२९	६	१९	१६	९	६४
४	२७	२२	११	२	७	२०	१७
२३	१२	३	२८	२१	१८	१	८

द्वात्रिंशत्तारकाबंधचक्र.४१

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें ३२ घरमें चित्रैकाश्व गति चलायके ३२ घरमें चित्रसरीखी एकाश्व गति चलाई है.

२१	३८	५७	१०	१९	४६	५५	१२
५८	७	२०	४७	५६	११	१८	४५
३९	२२	३७	२८	९	४२	१३	५४
६	५९	८	४१	४८	२९	४४	१७
२३	४०	२७	३६	४३	१६	५३	१४
६०	५	६२	१	२६	४९	३०	३३
६३	२४	३	५०	३५	३२	१५	५२
४	६१	६४	२५	२	५१	३४	३१

एकाश्वगतिबंधचक्र ४२

इस ६४ घरके पटसे एक १ से १३ तक ६४ से ५२ तक संबंध करके एकाश्व गति चलाई है.

५१	५४	३९	२६	६१	१४	४१	२४
३८	२७	५२	११	४०	२५	४	१५
५३	५०	५५	६२	१३	६०	२३	४२
२८	३७	१२	५९	१०	३	१६	५
४९	५६	२९	३६	६३	६	४३	२२
३०	३३	५८	९	४६	१९	२	१७
५७	४८	३५	३२	७	६४	२१	४४
३४	३१	८	४७	२०	४५	१८	१

चौसरबंधचक्र ४३

इस ६४ घरके पटमें नरदोंके पटप्रमाण आकारसे एकाश्वगति चलाई है.

२२	२५	२०	२७	५४	३१	३४	२९
१९	५६	२३	४२	४७	२८	५३	३२
२४	२१	२६	५५	६२	३३	३०	३५
५७	१८	४१	४६	४३	४८	६१	५२
४०	४५	५८	६३	६०	५१	३६	४९
१७	१२	१५	४४	३७	८	५	२
१४	३९	१०	५९	६४	३	५०	७
११	१६	१३	३८	९	६	१	४

जवनिकाबंधचक्र ४४

इस ६४ घरके पटमें २४ घर छोडके बाकी ४० घरमें परदेके आकारसे चित्रै-काश्व गति चलाई है.

..	..	३१	१०	..	१८	१३	..
..	९	२८	..	१४	११	..	१९
२७	३०	..	३२	१७	..	१५	१२
६	..	८	२९	..	३५	२०	..
..	२६	५	..	३३	१६	..	३६
४	७	..	२३	४०	..	३४	२१
२५	..	३९	२	..	२२	३७	..
..	३	२४	..	३८	१	..	..

सरोवर बंधचक्र ४५.

इस ६४ घरके पटमें २८ घर छोडके बाकी ३६ घरमें सरोवरके आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	१९	१६	..	..	..
..	..	१५	१०	२५	१८	..	..
..	११	४	१७	२०	३१	२६	..
५	१४	९	..	..	२४	२१	३०
१२	३	६	..	..	२७	३२	२३
..	८	१३	३६	३३	२२	२९	..
..	..	२	७	२८	३५	..	..
..	..	..	३४	१	..	..	..

राजाश्वगतिद्वयबंधचक्र ४६

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें राजा और घोडा दोनोंकी गति चलाई है. इसमें १।३।५ इत्यादि विषमांक घोडोंके और २।४।६ इत्यादिसमांक राजाके जानना.

२७	३०	२९	३२	४१	४८	५१	४६
२८	३३	३४	३१	४२	४७	५२	४५
२५	२६	३७	४०	३९	४४	४९	५०
२२	२१	३८	३५	५६	४३	५४	५३
१७	२४	१९	३६	५५	६२	५९	६०
१८	२३	२०	५७	५८	६१	६४	६३
१३	१६	१५	१०	५	८	७	२
१४	११	१२	९	६	३	४	१

मंत्र्यश्वगतिद्वयबंधचक्र ४७

इस ६४ घरके पटमें मंत्री और घोडा दोनोकी गति चलाई है.

२१	२७	२९	४४	३८	३१	२३	४८
२८	२२	४३	३०	३२	३७	४७	३४
२६	२०	४१	२४	४५	३९	४९	३६
१९	२५	२३	४२	४०	४६	३५	५०
९	१६	१८	५९	६१	५१	५३	६३
१५	१०	६०	१७	५२	६२	६४	५४
१३	८	६	११	५८	४	२	५६
७	१४	१२	५	३	५७	५५	१

उष्ट्राश्वगतिद्वयबंधचक्र ४८

इस ६४ घरके पटमें ऊट और घोडा दोनोकी गति चलाई है.

२८	३४	३६	२६	२४	३८	४०	४५
३३	२७	२५	३५	३७	४४	४६	३९
४	२९	३१	५३	४७	१३	११	४१
३०	३२	५८	४८	५४	५२	५०	१२
२३	५	४३	६१	५१	४९	६३	१०
१७	१९	२१	५९	६२	५५	९	६४
२०	२२	१५	४२	६०	५७	७	२
१४	१६	१८	५६	६	३	१	८

गजाश्वगतिद्वयबंधचक्र ४९

इस ६४ घरके पटमें हाथी और घोडा दोनोंकी गति चलाई है.

३२	४६	३०	२२	४१	१०	१७	२
३१	४५	२९	४७	४२	२३	१८	११
२८	३३	२७	४८	१९	४०	३	१६
४४	५१	५२	४३	२६	३९	८	१५
५३	५४	४९	५०	३७	२४	७	१२
३५	५९	३६	२१	३८	९	१४	५
५७	६०	५५	६२	२५	६४	१३	६
५८	३४	५६	६१	२०	६३	४	१

भटाश्वगतिद्वयबंधचक्र ५०

इस ६४ घरके पटमें प्यादा और घोडा दोनोंकी गति चलाई है

६२	५०	६४	६०	५२	५६	५८	५४
४९	६१	६३	५१	५९	५५	५३	५७
४६	३४	४८	४४	३६	४०	४२	३८
३३	४५	४७	३५	४३	३९	३७	४१
३०	१८	३२	२८	२०	२४	२६	२२
१७	२९	३१	१९	२७	२३	२१	२५
१४	२	१६	१२	४	८	१०	६
१	१३	१५	३	११	७	५	९

अश्वद्वयगतिबंधचक्र ५१

इस ६४ घरके पटमें दो घोडोंकी गति चलाई है.

२८	९	२९	७	५	५	१७	१७
२८	९	२९	७	१६	१६	४	४
१०	२७	८	३०	६	६	१८	१८
१०	२७	८	३०	१५	१५	३	३
२६	११	२४	१४	३१	३१	१९	१९
२६	११	२४	१४	२२	२२	२	२
१२	२५	१३	२३	३२	३२	२०	२०
१२	२५	१३	२३	२१	२१	१	१

अश्वत्रयगतिबंधचक्र ५२

इस ६४ घरके पटमें ४ घर छोडके बाकी ६० घरमें चित्रत्रयाश्वगति चलाई है.

(१५.)	६..	(१७.)	११	(१३.)	८...	१७...	१३
(१८.)	१०	(१४.)	७...	१८...	१२	१२...	९...
५...	(१६.)	१९...	(१२.)	११...	१४...	१४	१६...
९	(१९.)	४...	..	..	(११.)	१०...	१३...
३...	२०..	८	..	..	१७	१५...	१५
(२०.)	२०..	२...	४	७	(५.)	(१०.)	(७.)
१...	५	२	(२)	१८	(८.)	१६	(४.)
१	(१)	११	६	३	(३.)	(६.)	(९)

अश्वचतुष्टयगतिबंधचक्र ५३

इस ६४ घरके पटमें चार घोडोंकी गति चलाई है.

१४	१४	१३	१३	१०	१०	९	९
१४	१४	१३	१३	१०	१०	९	९
१५	१५	१२	१२	११	११	८	८
१५	१५	१२	१२	११	११	८	८
१६	१६	३	३	४	४	७	७
१६	१६	३	३	४	४	७	७
१	१	२	२	५	५	६	६
१	१	२	२	५	५	६	६

शिवाकारबंध चक्र ५४

इस ६४ घरके पटमें २४ घर छोडके बाकी ४० घरमें लिंगाकारसे अश्वगति चलाई है.

..	..	..	२६	३५	..	..	..
..	..	..	३१	२४	..	..	..
..	..	२५	३४	२७	३६	..	..
..	१७	३०	३७	३२	२३	२८	३९
..	..	३३	१८	२९	३८	..	२२
..	७	१६	५	१२	२१	४०	..
..	४	९	४	१९	२	११	..
८	१५	६	३	१०	१३	२०	१

वृषभाकारबंधचक्र ५५

इस ६४ घरके पटमें २४ घर छोडके बाकी ४० घरमें वृषभाकार से अश्वगति चलाई है.

..	..	..	..	..	..	..	..
..	..	१६	७	..	..	..	..
१७	६	३५	२०	..	..	..	..
..	१५	१८	..	८	..	..	..
५	३६	२१	३४	१९	२८	९	२४
..	३३	१४	२९	२२	२५	४०	२७
३७	४	३१	१२	३९	२	२३	१०
३२	१३	३८	३	३०	११	२६	१

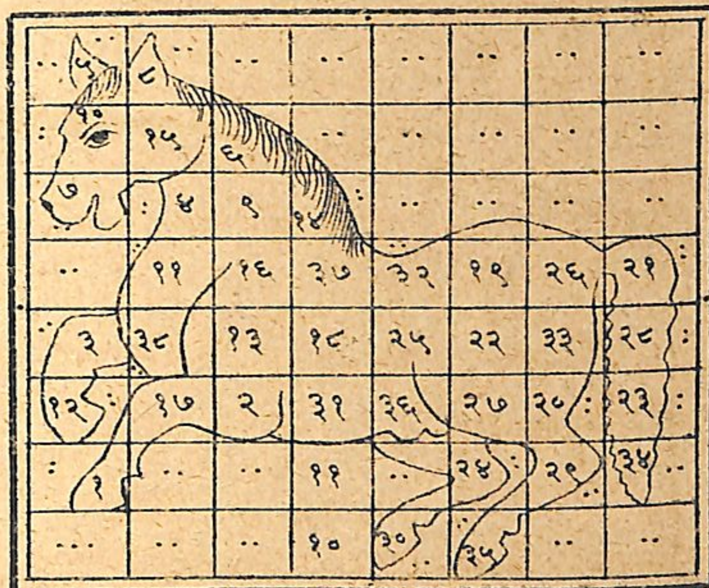
हस्त्याकारबंधचक्र ५६

इस ६४ घरके पटमें २२ घर छोडके बाकी ४२ घरमें हाथीके आकारसे अश्व गति चलाई है.

..	..	..	..	..	३	६	..
..	३०	३९	..	..	..	९	४
४०	..	..	..	..	५	२	७
२९	३८	३१	४२	३५	८	१९	१०
३२	४१	३६	२५	२०	१	१४	..
३७	२८	२१	३४	१५	१८	११	..
२२	३३	२६	..	२४	१३	१६	..
२७	..	२३	..	१७	..	..	१२

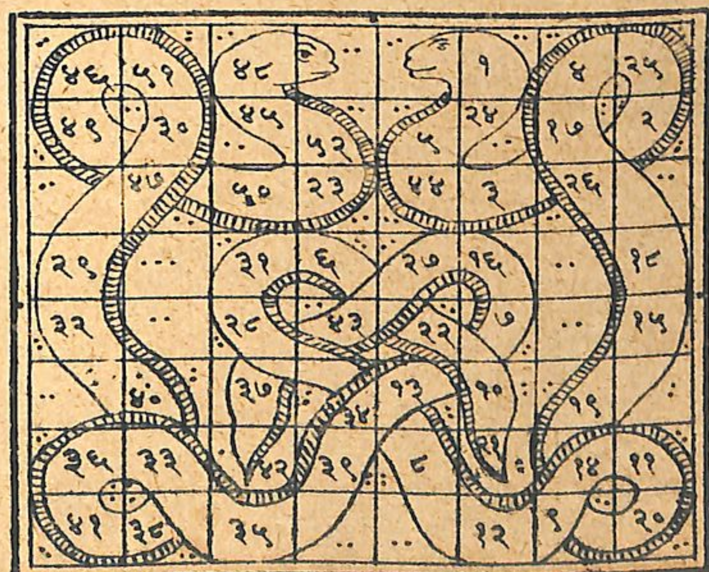
अश्वाकारबंधचक्र ५७

इस ६४ घरके पटमें २६ घर छोडके बाकी ३८ घरमें घोडेके आकारसे चित्रैका गति चलाई है.



सर्पद्वयबंधचक्र ५८

इस ६४ घरके पटमें १२ घर छोडके बाकी ५२ घरमें सर्पबंधाकारसे चित्रैकाश्वगति चलाई है.



फणिधरबंधचक्र ५९

इस ६४ घरके पटमें २० घर छोडके बाकी ४४ घरमें फणिधरके आकारसे चित्रेकाश्व गति चलाई है.

..	..	३०	४३	२८	३९	..	..
..	४४	..	४०	३१	४२	..	..
..	..	..	२९	३८	२७	..	..
१	..	५	३२	४१	२२	..	..
४	..	२	३७	२६	३३	१८	१५
११	..	९	६	२१	१६	२३	३४
८	३	१२	२५	३६	१९	१४	१७
..	१०	७	२०	१३	२४	३५	..

भेरुंडबंधचक्र ६०

इस ६४ घरके पटमें २२ घर छोडके बाकी ४२ घरमें भेरुंडाकार चित्रेकाश्व गति चलाई है.

..	..	१	४	९	६	..	..
..	..	..	७	२	..	..	..
..	४२	३	१०	५	८	३५	..
..	११	१६	४१	३४	२७	२४	..
१५	४०	३१	२६	२३	२०	३३	३६
..	१७	१२	२१	३२	२५	२८	..
..	१४	३९	३०	१९	२२	३७	..
..	..	१८	१३	३८	२९	..	..

दशोत्तरवृद्धिबंधचक्र ६१

इस ६४ घरके पटमें १ एकको दशोत्तर वृद्धिसे ८ दिशामें संबंध लगायके अखंडाश्वगति चलाई है

१६	३७	४६	४३	४८	२७	५२	५५
४५	४२	१५	३८	५१	५४	५९	२६
३६	१७	४४	४७	२८	४९	५६	५३
४१	१४	५	५०	३९	६०	२५	५८
१८	३५	४०	२९	६	५७	६४	६१
१३	३२	२१	४	१	६२	९	२४
३४	१९	३०	११	२२	७	३	६३
३१	१२	३३	२०	३	१०	२३	८

पंचवृद्धिबंधचक्र ६२

इस ६४ घरके पटमें बीचके ८ घरमें पाचकेपाहाडेकी रीतसे वृद्धि करके बाकी ५६ घरमें अखंडैकाश्व गति चलाई है.

३८	४३	१८	२१	१६	४५	५२	४९
१९	२२	३७	४४	५१	४८	१३	४६
४२	३९	२०	१७	३६	१५	५०	५३
२३	३४	२९	४०	२५	१२	४७	१४
२८	४१	२४	३५	३०	६१	५४	११
३३	२	५	२६	७	१०	५७	६०
४	२७	६४	३१	५८	५५	६२	९
१	३२	३	६	६३	८	५९	५६

त्रिसंख्योत्तरपंचोत्तरवृद्धिबंधचक्र ६३

घरके पटमें त्रिसंख्योत्तर वृद्धिकी पंक्ति १ पंचोत्तर वृद्धिकी पंक्ति १ मिलायके अखंडैकाश्वगति चलाई है

५४	४९	५८	६३	२८	३३	४४	३९
५७	६२	५५	५०	४५	४०	२७	३२
४८	५३	६४	५९	३४	२९	३८	४३
६१	५६	५१	४६	४१	३६	३१	२६
५२	४७	६०	३५	३०	२५	४२	३७
१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२
८	११	२	५	२४	२१	१४	१७
३	६	९	१२	१५	१८	२३	२०

विचित्राश्वगतिबंधचक्र ६४

६४ घरके पटमें ८ घर छोडके बाकी ५६ घरमें विचित्राश्वगति चलाई है.

१८	३५	३२	२३	१६	५३	३०	२५
३३	·	१७	५४	३१	२४	·	५२
३६	१९	३४	१५	२२	५५	२६	२९
१३	४२	२१	·	·	२८	५१	६
२०	३७	१४	·	·	७	५६	२७
४३	१२	४१	८	१	४८	५	५०
३८	·	१०	४५	४०	३	·	४७
११	४४	३९	२	९	४६	४९	४

त्रिसंख्योत्तरवृद्धिबंधचक्र ६५

इस ६४ घरके पटमें तीनकेपाहाडेकी एक पंक्ति सहित अश्वगति चलाई है.

४३	३८	६१	५६	४९	३६	२९	५४
६२	५७	४२	३७	६०	५५	५०	३५
३९	४४	५९	४८	३३	३०	५३	२८
५८	६३	४६	४१	२६	५१	३४	३१
४५	४०	२५	६४	४७	३२	२७	५२
२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३
१७	१४	२३	२०	१	४	११	८
२२	१९	१६	१३	१०	७	२	५

द्वादशकोष्ठबंधचक्र ६६

इस ६४ घरके पटमें बीचमेंके १२ घरमें चमत्कारसे घोडेको चलायके चारों तरफ ५२ घरमें अरवडेकाश्व गति चलाई है.

२०	२३	४२	२७	५२	५५	४४	२९
४१	२६	२१	५४	४३	२८	५१	५६
२२	१९	२४	७	१०	५३	३०	४५
२५	४०	५	१२	३	८	५७	५०
१८	१३	२	९	६	११	४६	३१
३९	६२	१५	४	१	३४	४९	५८
१४	१७	६४	३७	६०	४७	३२	३५
६३	३८	६१	१६	३३	३६	५९	४८

अष्टवृद्धिकर्णबंधचक्र ६७

इस ६४ घरके पटमें एक कोनेमें ८ के वृद्धिसे ६४ तक अरवंडैका अश्वगति चलाई है.

५३	२०	५१	३६	५५	६०	४५	६४
३४	३७	५४	१९	४६	६३	५६	६१
२१	५२	३५	५०	५९	४८	१	४४
३८	३३	१८	४७	४०	३१	६२	५७
१७	२२	३९	३२	४९	५८	४३	२
१०	७	२४	५	१४	४१	३०	२७
२३	१६	९	१२	२५	२८	३	४२
८	११	६	१५	४	१३	२६	२९

सव्यापसव्यप्रदक्षिणाबंधचक्र ६८

इस ६४ घरके पटमें चारों तरफकी दो पंक्तिमें सव्य प्रदक्षिणा और पुनः अपसव्य प्रदक्षिणासे अश्वगति चलाई है.

२०	७	३०	४७	१८	९	३२	४५
२९	४८	१९	८	३१	४६	१७	१०
६	२१	५०	५९	५४	५७	४४	३३
४९	२८	५३	५६	५१	६२	११	१६
२२	५	६०	६३	५८	५५	३४	४३
२७	३८	२५	५२	६१	६४	१५	१२
४	२३	४०	३७	२	१३	४२	३५
३९	२६	३	२४	४१	३६	१	१४

राजाश्वगजगतित्रयबंधचक्र ६९

इस ६४ घरके पटमें ४ घर छोडके बाकी ६० घरमें राजा और घोडा और गज यह तीनोंकी गति चलाई है.

२१	२२	२०	३२	३३	३०	३५	३६
१७	२४	२५	२३	३४	३१	४१	३७
१८	१९	२७	२८	२६	३८	४५	३९
१५	१६	१४	..	..	२९	४६	४०
८	१०	९	..	..	५३	४९	४८
५	१३	१२	५९	५५	५४	४४	४७
६	७	११	६०	१	५०	५२	५१
३	४	२	५७	५८	५६	४२	४३

राजाश्वगजमंत्रिगतिचतुष्टयबंधचक्र ७०

इस ६४ घरके पटमें राजा घोडा हाथी प्रधान इनचारोंकी गति चलाई है.

३९	४१	३७	३५	२५	२३	१९	२१
३८	४०	३६	४२	२४	२२	१८	२०
४९	४७	४४	४५	३३	२६	१४	१६
४८	४६	५०	४३	३२	३०	१५	१७
५९	६१	५८	३४	२८	३१	१२	१३
५७	६०	६३	६२	२९	२७	१०	११
५६	५२	५३	६४	४	२	६	८
५४	५५	५१	१	५	३	७	९

राजादिपंचगतिबंधचक्र ७१

इस ६४ घरके पटमें कोणेके ४ घर छोडके बाकी ६० घरमें राजा अश्व मंत्री गज उष्ट्र इन पांचोकी गति चलाई है.

·	१५	१६	२६	२५	२९	२८	··
१४	१२	२३	३८	३९	२७	३६	३१
१३	१७	२४	२२	३७	४०	३५	३०
११	२१	१८	४५	४६	४१	३२	३४
१०	२०	४४	४३	५१	५०	४७	३३
६	९	१९	८	४२	५४	५२	४८
५	२	७	६०	५७	५३	५५	४९
:	४	३	१	५९	५८	५६	··

राजादिषट्गतिबंधचक्र ७२

इस ६४ घरके पटमें कोणेके घर ४ छोडके बाकी ६० घरमें राजा अश्व मंत्री गज उष्ट्र भट यह छै गति चलाई है

·	४९	४८	३२	५५	२५	२४	··
४२	४७	३३	५२	५४	३१	२३	२६
४३	४१	५०	५६	५३	३०	२७	२८
४०	३९	४४	५१	५७	५८	२९	६०
१८	१९	३८	४५	४६	९	५९	१
१७	२१	३४	३६	३७	१०	८	३
२०	२२	१४	३५	१२	६	२	४
·	१५	१६	११	१३	७	५	··

राजादिसमष्टिगतिबंधचक्र ७३

इस ६४ घरके पटमे राजादि षट् समष्टि गतिचलाइ है.

१४	५	४	११	५	१	९	३
६	३	४	१	६	७	५	२
१३	२	७	१२	१०	३	४	१
११	८	८	९	२	६	८	४
१०	१२	३	१	१५	१४	२	१
१६	९	७	१५	१३	९	२	४
५	६	२	१८	१२	१०	६	७
३	४	१७	१	११	५	८	३

शराकारसर्वतोभद्रबंधचक्र ७४

इस ६४ घरके पटमे चतुः शराकार८ घरमें एक पंक्तिको २०८ काजोड बीचके १६ घरमे १५४ काजोड चारोंतरफ २ पंक्तिके घर ८मे २४४ का जोड चारकोणेमे ४ घरमे सर्वतोभद्रसरीखी १२ जोड होवे ऐसी अश्वगति चलाई है.

३६	७	५६	२३	३८	५	५४	२५
५७	२२	३७	६	५५	२४	३९	४
८	३५	१४	४७	३०	६३	२६	५३
२१	५८	३१	६२	१५	४६	३	४०
३४	९	४८	१३	६४	२९	५२	२७
५९	२०	६१	३२	४५	१६	४१	२
१०	३३	१८	४९	१२	४३	२८	५१
१९	६०	११	४४	१७	५०	१	४२

मनोरंजनबंधचक्र ७५

इस ६४ घरके पटमें बीचके १६ घरमे दंड पार्श्व काजोड १५८ होताहै. चारकोणों क घरोमें १२ काजोड होवे एसीरीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

२४	७	३६	५३	२२	९	३४	५५
३७	५२	२३	८	३५	५४	२१	१०
६	२५	४६	२९	६२	१३	५६	३३
५१	३८	६१	१४	४५	३०	११	२०
२६	५	२८	४७	१२	६३	३२	५७
३९	५०	१५	६०	३१	४४	१९	६४
४	२७	४८	४१	२	१७	५८	४३
४९	४०	३	१६	५९	४२	१	१८

जगन्मोहनबंधचक्र ७६

इस ६४ घरके पटमें बिचमें १६ घरमें दंडपार्श्व इत्यादि ५६ प्रकारसे बि १५४ का जोड होवे चारों तरफ २ पंक्ति मिलके १२ खंडमे चार चार घरमे १२२ कीजोड होवे इसरीतिसे चित्रविचित्राश्व गति चलाई है.

१८	७	६०	३९	२८	५	५०	४१
५९	३८	१७	६	४९	४०	२७	४
८	१९	४८	६१	१६	२९	४२	५१
३७	५८	३१	१४	६३	४६	३	२६
२०	९	६२	४७	३०	१५	५२	४३
५७	३६	१३	३२	४५	६४	२५	२
१०	२१	३४	५५	१२	२३	४४	५३
३५	५६	११	२२	३३	५४	१	२४

सिंहलनृपकृतअश्वगतिबंधचक्र ७७

इस ६४ घरके पटमें श्लोकाक्षर क्रमसे अश्वगति चलाई है.

सिं	न	ही	ब	नि	च	प्र	ज्ञा
पा	कं	श्री	दे	म	नो	वि	ल
वा	ह	ल	श्म	हु	नं	तं	ति
मे	वे	तु	ए	प	धा	जि	कु
कु	जि	धा	प	ए	तु	वे	मे
ति	तं	नं	हु	श्म	ल	ह	वा
ल	वि	नो	म	दे	श्री	कं	पा
ज्ञा	प्र	च	नि	ब	ही	न	सिं

श्रीसिंहणमहीपालमेघवीकुंकुबहु ॥ } स. श्लो. ५२९
पदेनवाजिनाङ्गितं चलनंप्रतिवश्मनि ॥ } ५३०

शंकरभट्टकृतअश्वगतिबंधचक्र ७८

इस ६४ घरके पटमें श्लोकाक्षर क्रमसे अश्वगति चलाई है.

नि	ना	शं	त्रि	स	मे	ज	ह्व
क	त्स्व	ध्व	क्षित्	य	णा	स्व	श
रा	नि	रो	ति	ष	भू	रा	निः
वां	श्र	हा	ना	ष्टि	ह	य	गे
गे	य	ह	ष्टि	ना	हो	श्र	वा
नि	रा	भू	ष	ति	रो	नि	रा
श	स्व	णा	य	क्षित्	ध्व	त्स्व	क
ह्व	ज	मे	स	त्रि	शं	ना	नि

नारायणात्स्थरामेशशूजनिःप्रतिसध्वनि ॥ } स. श्लो. ५३१
निःसयशःकरीवाहंस्यगाहासाविभिक्षित ॥ } ५३२

नीलकंठकृतअश्वगतिबंधचक्र ७९

इस ६५ घरके पटमें अंक क्रमसे अश्वगति चलाई है अपने बुद्धिकौशल्यसे इस कोठेके घरोमें अंकलिखना.

हरिकृष्णकृतअश्वद्वयगतिबंधचक्र ८०

इस ६४ घरके पटमें श्लोक क्रमसे दो घोडे की गति चलाई है.

श्री	म	ह	वा	त्य	म	कृ	रो
योः	नं	गौ	ग	रि	त्य	रो	नं
त	जः	कु	त्र	जि	ष्णः	क	रि
लो	र्द्व	म	कृ	त्र	ह	वा	क
त्म	ति	त्प	नो	ग	ष्णः	त	जः
भो	त्प	ति	क	व्यं	त्म	योः	जि
र्वित्	टा	ज्यो	लो	र्द्व	गौ	क	म
न्नो	ज्यो	त्र्यं	र्वित्	टा	कु	नो	श्री

श्रीगौतमकुलोत्पन्नो ज्योतिर्वित्त्र्यंबकटात्मजः ॥
हरिकृष्णः कृतोत्यश्वगमनं वाजिनोर्द्वयोः ॥ ५२५ ॥

अक्षरावलिबंधचक्र ८१.

इस ६४ घरके पटमेंकखघङ ऐसे बत्तीस अक्षरके क्रमसे दो अश्वगति चलाई हैं.

के	श	झं	ना	ग	भ	ट्टा	य
ते	ध	खे	व	भ	रा	घ	बे
षा	जे	था	ढे	पं	च	मी	ढ
दा	णे	स	छ	ल	डा	फ	ङ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सतरंजअश्वगतिबंधचक्र ८२.

इस १०० घरके सतरंज पटमें एक अंकसे १०० अंकतक क्रमसे एकाश्वगति चलाई है. इसके भेद बहुत होते हैं.

१	३२	९९	४८	१५	३०	६३	४६	१३	२८
१००	४९	१६	३१	९८	४७	१४	२९	६२	४५
१७	२	३३	५०	८७	६४	९७	९४	२७	१२
३४	५१	७६	६५	९६	९३	८६	७१	४४	६१
३	१८	७९	८८	७७	७२	९५	९२	११	२६
५२	३५	६६	७५	८०	८३	७०	८५	६०	४३
१९	४	८९	७८	७३	६८	९१	८२	२५	१०
३६	५३	७४	६७	९०	८१	८४	६९	४२	५९
५	२०	५५	३८	७	२२	५७	४०	९	२४
५४	३७	६	२१	५६	३९	८	२३	५८	४१

अथ १०० घरका सतरंजक्रीडापट.

रुखरथ	घोडा	फिल हाथी	कोत वाल	साह जादा	बाद शाह	वजीर	फिल हाथी	घोडा	रथरुख
प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	उर्दा बेगिनी	उर्दा बेगिनी	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा
				घोडा	घोडा				
				घोडा	घोडा				
प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	उर्दा बेगिनी	उर्दा बेगिनी	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा
रथरुख	घोडा	फिल हाथी	वजीर	साह जादा	बाद शाह	कोत वाल	फिल हाथी	घोडा	रुखरथ

अश्वद्वयगमनप्रकारमाहहरिकृष्णः ।

चतुःषष्टिकोष्ठात्मकेपट्टेईशानारभ्यनैर्ऋत्यंतं
श्रीआदिअक्षराणिविलिखेदक्षराणियथा
श्रीमद्दवात्यमकुरोयोःनंगौगरित्यरोनंतजः
कुत्रजिष्णः करिलोर्द्धमकृत्रहवाकत्मति-
त्पनेगिष्णः तजभ्नौत्पत्तिकव्यंतमयोःजि-
वितटाज्योलोर्द्धगौकमन्नोंज्योव्यंविंतटाकु-
नोश्री ततःवक्ष्यमाणश्लोकरीत्याश्वौचालनीयौ ॥
श्रीगौतमकुलोत्पन्नोज्योतिर्विद्व्यंकटात्मजः ॥

हरिकृष्णःकरोत्यत्रगमनंवाजिनो-
र्द्वयोः ॥ ५२४ ॥

इस चौंसट घरके पटमें ईशान कोणेसे लेके नैर्ऋत तक श्री महवा इत्यादि अक्षर लिखने बाद दोनों जनोंने अपने अपने श्रीकार घरसे 'श्री गौतम कुलोत्पन्न' यह श्लोकपढ़ दोनों घोडे चलाना ॥ ५२४ ॥

अथाक्षरावलिबन्धेऽश्वद्वयगतिप्रकारमाह-

केशझंनागभट्टायतेधखेवजराधवे ॥
षाजेथाढे पंचमींढे दाणेसछलडाफङ ॥ ५२५ ॥

इस चौंसट घरके पटमें 'केशझं नागभट्टाय' यह अक्षर बत्तीस लिखे बाद पश्चिम तरफसे वही अक्षर लिखे दोनों जने घोडे चलानेके समय 'क ख ग घ ङ' ऐसे बत्तीस अक्षरके अनुसार अश्व चलावें ॥ ५२५ ॥

शतरंजाभिधेपट्टे चैकादिशतकांतके ॥
कोष्ठकेऽश्वंनयेद्धीमान् नानागतिविशारदः ॥ ५२६ ॥

इस सौ कोष्ठकके पटमें १ से लेके सौ घर पर्यंत अढाई घरके शुमारसे घोडा चलावें ॥ ५२६ ॥

अथ बुद्धिबलखेलचतुर्थप्रकारमाह-

अतःपरंप्रवक्ष्यामिखेलं बुद्धिबलाह्वये ॥
अतरंजमितिख्यातं चतुर्थशतकोष्ठकम् ॥ ५२७ ॥
अत्रसेनाभिधानंचस्थानंचगतिलक्षणम् ॥
पूर्वोक्ताद्यद्विशेषंच तदेवप्रोच्यतेऽधुना ॥ ५२८ ॥
पटेपूर्वापरस्थानेसेनायाःपरिकल्पयेत् ॥
बादशाहस्यनिकटेकोतवालस्यसंस्थितिः ॥ ५२९ ॥
तदंतिकेगजस्थानंतत्समीपेश्वसंस्थितिः ॥
अश्वस्यनिकटेस्थानंरथस्यपरिकल्पितम् ॥ ५३० ॥

नृपस्यवामभागेतु पुत्रस्थानं ततः परम् ॥
प्रधानश्वगजाश्वौचरथस्थानंततःक्रमात् ॥ ५३१ ॥
उभयोः सेनयोर्मध्ये ह्यष्टौ ह्यष्टौ पदातयः ॥
पुत्रपित्रोरग्रभागे ह्युर्दावेगिनिकाद्वयम् ॥ ५३२ ॥
तयोरग्रेस्यंदनौद्वावेवंसैन्यव्यवस्थितिः ॥
अथैषां गतिभेदं च प्रवक्ष्यामि विशेषतः ॥ ५३३ ॥

अब इस बुद्धिबल खेलमें एक अतरंज नाम करके चौथा भेद है सो कहताहूं. इस खेलका जो पट है उसमें सब कोष्ठक १०० हैं ग्यारह रेखा खडी करे ग्यारह रेखा आडी करै तौ सौ कोष्ठक होते हैं और शतरंजमें जो नरदाहै वही इसमें है, परन्तु उसके सिवाय इस अतरज खेलमें प्रत्येक दो तरफ छः छः नरदा ज्यादा हैं उन ज्यादा नरदोंका वर्णन करते हैं—कोतवाल १, शाहजादा १, उर्दा बेगनी २, घोडे २, उर्दा बेगनीको कोई कोई किल माकनीभी कहते हैं. अब मोहोरोंकी जगह कहते हैं राजाके सीधिबाजू पर कोतवाल हाथी घोडा रथ बिठावे राजाके दहिनेबाजू शाहजादा फरजी हाथी घोडा रथ क्रमसे बिठावे दोनों सेनामें रथ घोडा हाथी कोतवाल फरजी इनके आगेके घरोंमें एकेक प्यादा रक्खे बादशाह शाहजादा इनके आगे उर्दा बेगिनी दो बिठावें उर्दा बेगिनीके आगेके दो घरोंमें दो दो घोडे बिठावे ऐसे दोनों बाजूमें सेना बिठावे. अब इनकी चालका भेद बताते हैं ॥ ५२७ ॥ ५२८ ॥ ॥ ५२९ ॥ ५३० ॥ ५३१ ॥ ५३२ ॥ ५३३ ॥

नृपाश्वरथहस्तीनांप्रधानस्यपदातिनः ॥
गतिःपूर्वोक्तसदृशावेगिन्यानृपवद्गतिः ॥ ५३४ ॥

राजा घोडा रथ हाथी वजीर प्यादा इन छः मोहरोंकी गति पहिले खेलोंमें कहीहै वही रीति जानना चाहिये ॥ ५३४ ॥

गजाश्ववद्गतिर्द्वेधाकोतवालस्यकीर्तिता ॥
नृपपुत्रस्यचगतिःसर्ववत्परिकीर्तिता ॥ ५३५ ॥

कोतवालकी गति घोडा और हाथी इन दोनोंके सरीखी है. कौर शाहजादेकी गति सब मोहरोंके सरीखी है. बाकी खेलनेकी रीति सब पहिले सरीखी जानना चाहिये ॥ ५३५ ॥

अथ दिवानेबादशाहखेलनेका पट ।

रथ	घोडा	हाथी	बाद शाह	वजीर	हाथी	घोडा	रथ
प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा
			╳	╳			
			╳	╳			
				बाद शाह			

अथ चित्तभ्रमनृपस्यखेलनंनामपंचमप्रकारमाह ।

चतुःषष्टिपदेपट्टेखेलनंचात्रनिर्दिशेत् ॥
एकभागेस्थितंसर्वसनृपंसर्वसैनिकम् ॥ ५३६ ॥
तेषांगत्यादिकंसर्वपूर्ववत्परिकीर्तितम् ॥
द्वितीयेसंस्थितोराजासतुचित्तभ्रमात्मकः ॥ ५३७ ॥
एकाकीसर्वसेनांगगतिगःपरिकीर्त्तितः ॥
निर्बलीमारणेशक्तः नृपांतिगमनंनहि ॥ ५३८ ॥
शहदानेसमर्थश्चस्वस्योपारितदागमः ॥
समर्थोमातकरणेकदाचिद्धात्यतेपरैः ॥ ५३९ ॥

अब बुद्धिबल खेलमें पांचवाँ भेद बताते हैं इस शतरंजमें एक खेल दिवाने बादशाहका है इस खेलके पटमें एक तरफ सब नरदा रहती हैं एक तरफ केवल अकेला बादशाह रहता है वह दिवाना सब मोहरेकी चाल चलता है

और निर्बली नर्दको मारताहै शह देता है शह उसको लगती है. मात होती है मात करता है परन्तु बादशाहके पासकी शह देना नहीं ॥ ५३९ ॥

(प्राचीनपद्धतिग्रन्थे)

सांप्रतंपूर्वदेशके उष्ट्रस्यगणना-
नास्तिमरुधन्वादिकल्पिता ॥ ५४० ॥

इ० ह० कृ० बृ० ष० मि० क्री० बु० खे० ना० प्रकरणम् ॥ ८ ॥

अब शतरंज पटमें रथ और ऊंटका निर्णय कहते हैं संस्कृतमें चतुरंगिणी सेनामें हाथी १, घोडा २, रथ ३, पैदल ४, यह चार चीजें हैं. उसी तरह शतरंजभी चतुरंगिणी सेना माफक है शतरंजकी प्राचीन जो किताबेंहैं शतरंज दीपक १ गदाधरशास्त्रीकृत विक्रम शके १६२१ में निर्माण किया हुआ शतरंजतसनीफ २ नबाब खानखानाकृत हिजरी सन ९७७ में किया हुआ चीस बुक ३ विलियम साहिब पादरी कृत ईसवी सन् १७४५ में किया हुआ विनोद शतक४देवदत्त कवि कृत सवत्१८७२में बनाया हुआ इत्यादि अनेक किताबें हैं उनमें शावित है. परंतु अब कहीं कहीं शतरंजमें कराम हाथीको ऊंट कहते हैं और जो करीम रथ है उसको हाथी कहतेहैं. न मालूम ऊंट किसने पैदा किया पूर्वदेश अयोध्या काशी प्रांतोंमें किसी मोहरेको ऊंट नहीं कहते हैं बहुत करके ऊंटका रिवाज मारवाड़ मालवा महाराष्ट्र गुजरात इत्यादि देशोंमें ज्यादा है उससे ऐसा मालूम होताहै कि मारवाड़ी खिलाड़ीने ऊंट पैदा किया है ॥ ५४० ॥

इति शतरंजका भेद संपूर्ण भया. प्रकरण ॥ ८ ॥

अथ बालाद्यवस्थाक्रीडामाह ।

श्रीमद्भागवतप्रोक्तं खेलं वक्ष्याम्यतः परम् ॥
बालादीनां खेलनार्थं दृष्टांतं रामकृष्णयोः ॥ ५४१ ॥

अब बाल्यादिक अवस्थाकी क्रीडा कहते हैं–श्रीमद्भागवतपुराणमें श्रीरामकृष्णके जो क्रीडा कही है दृष्टांतसे वही क्रीडा मैं यहाँ कहताहूँ ॥ ५४१ ॥

कौमारं पंचमाब्दातं पौगंडं दशमावधि ॥
कैशोरमापंचदशयौवनंतुततःपरम् ॥ ५४२ ॥

एक वर्षका, बालक कहा जाताहै. पांच वर्ष तक कौमार अवस्था कही जातीहै. छः वर्षसे दश वर्ष तक पौगंड अवस्था कही जातीहै. ग्यारहसे

पंद्रह तक किशोर अवस्था कही जातीहै. उसके ऊपर यौवन अवस्था जाननी चाहिये ॥ ५४२ ॥

तत्रादौपालनेबालः शायितः क्रीडते स्वयम् ॥
दृष्ट्वावस्त्रमयानूर्ध्वंपक्षिणोघूघरादिकान् ॥ ५४३ ॥

एक वर्षका बालक पालनेमें झूलताहै वहाँ कपड़के सींयेहुये पक्षिआदिकोंको देखके मनमें खेलताहै और काष्ठके घूघरे टाचके धावणि आदि पदार्थसे खेलताहै ॥ ५४३ ॥

कालेनव्रजताल्पेनगोकुलेरामकेशवौ ॥
जानुभ्यांसहपाणिभ्यांरिंगमाणौविजह्रतुः ॥ ५४४ ॥

तावंघ्रियुग्ममनुकृष्यसरीसृपंतौघोषप्रघोषरुचिरंव्रजकर्दमेषु ॥
तन्नादहृष्टमनसावनुसृत्यलोकंमुग्धप्रभीतवदुपेयतुरंतिमात्रोः ५४५

पीछे थोड़ेही दिनोंमें घुटण टेकके चलना पाँवके घूंघरेके शब्दसे आनंद पाना किसी समय डरपेसरीखे होयके भयसे माके पास जाना ॥ ५४४।५४५॥

यर्ह्यंगनादर्शनीयकुमारलीलावंतर्व्रजेतदबलाप्रगृहीतपुच्छैः॥वत्सैरि-
तस्ततउभावनुकृष्यमाणौप्रेक्षंत्यउज्झितगृहाजहृषुर्हसन्त्यः॥५४६॥

किसी समय गायके वत्सकी पूंछ पकड़के उसके पीछे खैंचे हुये जाना ॥ ५४६ ॥

अघृष्टजानुभिः षड्भिर्विचक्रमणकन्ततः ॥
स्तेयंभक्ष्यपदार्थानामकाले वत्समोचनम् ॥ ५४७ ॥

पीछे थोड़ेही दिनोंमें पाँवसे चलना खानेके पदार्थोंको चुराके लेना मनमें आवे उसी समय गोवत्सोंको छोड़ना ॥ ५४७ ॥

हस्ताग्राह्येविधिंतत्रकरोत्युलूखलादिभिः ॥
धाष्टर्चेस्थितिःकदाचिद्वैकदाचिन्मृदभक्षणम् ॥ ५४८ ॥

ऊँचे रक्खे हुये पदार्थोंको अनेक तरहसे लेना ढीठ होके खड़े रहना मृत्तिका खाना ॥ ५४८ ॥

कलवाक्यैः स्वकालेनवत्सपालौबभूवतुः ॥
चारयामासतुर्वत्सान्नानाक्रीडापरिच्छदौ ॥ ५४९ ॥

थोड़े थोड़े हरफोंसे भाषण करना गोवत्सोंको चराना अनेक प्रकारसे वहाँ खेलना ॥ ५४९ ॥

क्वचिद्वादयतोवेणुंक्षेपणैः क्षिपतः क्वचित् ॥
क्वचित्पादैः किंकिणिभिः क्वचित्कृत्रिमगोवृषैः ॥ ५५० ॥
वृषायमाणौनर्दंतौयुयुधातेपरस्परम् ॥
अनुकृत्यरुतैर्जन्तूंश्चेरतुः प्राकृतौयथा ॥ ५५१ ॥

वेणु बजाना गेंद आदि पदार्थोंको फेंकना गाय बैल सरीखे शब्द करना कुश्ती खेलना पक्षियोंके शब्द सुनके उनके सरीखे शब्द निकालना ५५०।५५१

फलप्रवालस्तबकसुमनः पिच्छधातुभिः ॥
काचगुंजामणिस्वर्णभूषिताअप्यभूषयन् ॥ ५५२ ॥

फल फूल मोर पिच्छ गेरु कांच गुंजा मणि सुवर्ण इत्यादि पदार्थोंस शरीरको भूषित करना ॥ ५५२ ॥

क्वचिद्वनेभोजनंवैचक्रतुर्बालकैःसह ॥
मुष्णंतोऽन्योन्यशिक्यादीन् ज्ञातानाराच्चचिक्षिपुः ॥५५३॥

वनमें भोजन करना एकेकके पदार्थोंको चोरना मालूम पडे तो दूर फेंकदेना ॥ ५५३ ॥

तत्रत्याश्चपुनर्दूराद्धसंतश्चपुनर्ददुः ॥
यदिदूरंगतः कृष्णोवनशोभेक्षणायतम् ॥ ५५४ ॥
अहंपूर्वमहंपूर्वमितिसंस्पृश्यरेमिरे ॥
केचिद्वेणुंवादयंतोध्मांतः शृंगाणिकेचन ॥ ५५५ ॥

दूरसे आदमी वहाँसे लेके और उससेभी दूर डालना हँसना पीछे देना ऐसे दौड़ते दौड़ते कृष्ण दूर गये ता दूसर बालकम पहिले जायके स्पर्श करता हुआ तुम स्पर्श करतेहो ऐसा कहके खेलना वेणु बजाना शिंग बजाना ५५४॥५५५॥

केचिद्भृङ्गैः प्रगायन्तः कूजन्तः कोकिलैः परे ॥
विच्छायाभिः प्रधावन्तोगच्छन्तः साधुहंसकैः ॥ ५५६ ॥

भ्रमर सरीखा गायन करना कोकिला सरीखा नाद करना पक्षीकी छायाको देखके उसके साथ दौड़ना हंस सरीखा चलना ॥ ५५६ ॥

बकैरुपविशंतश्चनृत्यंतश्चकलापिभिः ॥
विकर्षंतः कीशबालानारोहंतश्च तैर्द्रुमान् ॥ ५५७ ॥

बगुल सरीखा बैठ रहना मोर सरीखे नाचना वृक्ष ऊपर बैठे हुये वानरोंकी पूँछ नीचे लटकरही है उनको धरके वृक्ष ऊपर चढ़ना ॥ ५५७ ॥

विकुर्वंतश्चतैः साकंप्लुवन्तश्चपलाशिषु ॥
साकंभेकैर्विलंघन्तः सरित्प्रस्रवसंप्लुताः ॥ ५५८ ॥

वानरोंके साथ चेष्टा करना मेंढक सरीखे उड़ना ॥ ५५८ ॥

विहसन्तःप्रतिच्छायाः शपंतश्चप्रतिस्वनान् ॥
एवंविहारैःकौमारैःकौमारंजहतुर्व्रजे ॥ ५५९ ॥

छाया देखके हँसना गिरिगफा गंमजगहके शब्दोंको सुनके प्रत्युत्तर देना ॥ ५५९ ॥

नीलायनैःसेतुबन्धैर्मर्कटोप्लुवनादिभिः ॥
ततस्तौरामकृष्णौचपौगण्डवयसिस्थितौ ॥ ५६० ॥

आँख मिचौनीके खेल जल प्रवाहके सेतु बांधके जल रोकना वानर सरीखे कूदना ॥ ५६० ॥

गाश्चारयंतौ सखिभिः नद्यद्रिकाननेषुच ॥
मेघगम्भीरयावाचा नामभिर्दूरगान्पशून् ॥ ५६१ ॥

अब पांच वर्षकी उमरके ऊपर वनमें गाय चराना दूरसे गायोंके नाम लेके बुलाना ॥ ५६१ ॥

क्वचिदाह्वयसिप्रीत्यागोगोपालमनोज्ञया ॥
चकोरक्रौंचचक्राह्वभारद्वाजांश्चबर्हिणः ॥ ५६२ ॥
अनुरौतिस्मसत्त्वानां भीतवद्व्याघ्रसिंहयोः ॥
क्वचित्पल्लवतल्पेषुशयनंश्रमयोगतः ॥ ५६३ ॥

पक्षियों सरीखे शब्द करना घास पत्तोंकी शय्या करके सोना ५६३।५६२॥

नर्तनंगायनंक्वापि वल्गनंयुद्धखेलनम् ॥
फलानांपातनंचैव कन्दमूलफलाशनम् ॥ ५६४ ॥

नाचना गाना आलिंगन करना लडना वृक्षोंके ऊपरसे फल गिराना कंद मूल फल भक्षण करना ॥ ५६४ ॥

प्रवालबर्हस्तबकस्रग्धातुकृतभूषणम् ॥
वेणुपाणितलैःशृंगैरन्यैर्वाद्यविवादनम् ॥ ५६५ ॥

ताली बजाना अनेक तरहके दूसरे वाद्य बजाना ॥ ५६५ ॥

भ्रामणैर्लंघनैःक्षेपैरास्फोटनविकर्षणैः ॥
क्वचिद्बिल्वैः क्वचित्कुंभैः क्वचामलकमुष्टिभिः ॥५६६ ॥

एकेकका हाथ धरके फिराना उसके ऊपरसे कूदना दंड ठोंकना खेंचना बीज फलादिकोंसे खेलना ॥ ५६६ ॥

अस्पृश्यनेत्रबंधाद्यैःक्वचिन्मृगखगेहया ॥
क्वचिच्चदर्दुरप्लावैर्विविधैरुपहासकैः ॥ ५६७ ॥

हरिण सरीखे और पक्षि सरीखे खेल खेलना ॥ ५६७ ॥

कदाचित्स्यंदोलिकयाकर्हिचिन्नृपचेष्टया ॥
एवंलोकप्रसिद्धाभिः क्रीडाभिश्चेरतुर्वने ॥ ५६८ ॥

किसी समय वृक्षके ऊपर डोरीका झूला बांधके खेलना किसी समय राजा प्रधान चोपदार सिपाही चोर ऐसे बनके खेल खेलना. ऐसे २ लोगोंमें अनेक प्रसिद्ध खेल हैं ॥ ५६८॥

अथ वाह्यवाहकक्रीडामाह ।

श्रीभागवते । तत्रोपहूयगोपालान् कृष्णः प्राह विहारवित् ॥
हेगोपाविहरिष्यामोद्वन्द्वीभूय यथायथम् ॥ ५६९ ॥

अब वाह्य वाहक खेल कहते हैं--एक समय श्रीकृष्णभगवान् खेलनेके वास्ते गोपालोंको बुलायके कहने लगे कि अपन जुगल होयके खेलेंगे ॥ ५६९ ॥

तत्रचक्रुःपरिवृढौगोपारामजनार्दनौ ॥
कृष्णसंघट्टिनःकेचिदासन्रामस्यचापरे ॥ ५७० ॥

तब वे सब अच्छा कहके राम और कृष्ण इन दोनोंको नायक बनायके कितनेक कृष्णके तरफ भये कितनेक रामके तरफ भये ॥ ५७० ॥

आचेरुर्विविधाःक्रीडावाह्यवाहकलक्षणाः ॥
यत्रारोहंतिजेतारोवहंतिचपराजिताः ॥ ५७१ ॥

पश्चात् खेलको आरंभ किया जिस खेलमें जीताहुआ आदमी कांधे ऊपर बैठताहै हाराहुआ आदमी अपने कांधे ऊपर बिठाताहै उसकी हार जीतका लक्षण कहतेहैं एक दीवारके निकट सात गर्त्त छोटे करे उसको प्राकृतमें अगेल कहतेहैं पीछे एक तरफके आदमी हाथमें गेंद लेके उन सातों गर्तमें डाले जहां सातोंमें गेंद पड़चुका वह जीता वह सामनेवाले आदमीके कांधे ऊपर बैठकर जहांतक नियम किया होवे वहाँतक लेजावे बाद वह गेंद डाले ॥ ५७१ ॥

रामसंघट्टिनोयर्हिश्रीदामावृषभादयः ॥
क्रीडायांजनितस्तांस्तानूहुःकृष्णादयोनृप ॥ ५७२ ॥

रामके तरफके जब जीते तब कृष्णादिक सब उनको कांधेपर बिठाते भये ॥ ५७२ ॥

उवाहकृष्णोभगवान्श्रीदामानंपराजितः ॥
वृषभंभद्रसेनस्तु प्रलंबोरोहिणीसुतम् ॥ ५७३ ॥

अब काष्ठ स्पर्शकी क्रीडा कहतेहैं--एक आदमी पहिले छूटा खड़ा रहे और सब लकड़ेको स्पर्श करके खड़े रहें और फिरते जावें लकड़े केरी बंबं ऐसा कहते जावें पीछे छुटे आदमी जो काष्ठ स्पर्श रहित होवें उनमेंसे एकतो स्पर्श करे तो उसके शिरपरका राज्य उसके शिरपर जाताहै. और यह पहिला काष्ठ स्पर्श करके रहे ॥ ५७३ ॥

अथ काष्ठस्पर्शक्रीडा।

काष्ठस्पर्शमयीक्रीडाकाष्ठस्पर्शाज्जयोमतः ॥
यःकाष्ठस्पर्शरहितः राज्यंतन्मस्तकोपरि ॥ ५७४ ॥

अथ काष्ठकीलक्रीडा।

हस्तमात्रेणदण्डेन चतुरंगुलकीलकम् ॥
गृहीत्वाभूमिगर्त्ताच्चयावत्सत्त्वंहिनिक्षिपेत् ॥ ५७५ ॥

पश्चात्परेणतत्कीलंगृहीत्वापूर्वगर्तके ॥
निक्षेपणीयमाद्येनदण्डेनगणनंपुनः ॥ ५७६ ॥
कीलगर्तांतरालेवैगणनादशकावधि ॥
दशकांतेकीलकस्यताडनंदूरगंभवेत् ॥ ५७७ ॥
यावच्चदशगावृद्धिस्ताडनंतावदेवहि ॥
संघट्टिभिश्चकर्तव्यं तदन्तेचपराजितैः ॥ ५७८ ॥
गृहीतकीलैर्गंतव्यंयावद्गर्तेहिशीघ्रतः ॥
श्वासेनैकेनचतथाश्वासभंगे पुनः पुनः ॥ ५७९ ॥
संघट्टिभिस्ताडनंचानयनंचपराजितैः ॥
यावद्गर्तेकीलकेऽस्यनस्पर्शस्तावदेवहि ॥ ५८० ॥

अब गिल्ली दांडूका खेल कहता हूँ—यह खेल जगत्में प्रसिद्ध है सब छोकरे खेलते हैं इस वास्ते वर्णन नहीं किया।५७४।५७५।५७६।५७७।५७८।५७९।५८०॥

बीडुखो खेलनं चैव ह्यष्टाधिकनरैर्भवेत् ॥
द्वाभ्यांचैवसमूहाभ्यां स्थितिभ्रमणयोगतः ॥ ५८१ ॥

अब बिडुखो नामकरके जो खेल है सो आठ आदमियोंसे जितने ज्यादाहों उन सबसे होताहै आठ आदमियोंसे कम होवे तो नहीं होताहै और इसमें दो नायक होते हैं उसमें एक बाजूके आदमी पंक्तिसे बैठें एक स्पर्श करनेके वास्ते फिरे अब सामनेवाले जिसमें उसका स्पर्श न होवे इस रीतिसे वे पंक्तिके चारों तरफ फिरे ॥ ५८१ ॥

सर्वेषां स्पर्शयोगेनमारणत्वाज्जयो मतः ॥
तथैवगुटिकाखेलो भूमिगर्तद्वयान्वितः ॥ ५८२ ॥

जब एकको स्पर्श होवे तब खो पकती कहतेहैं जो बीचमें बैठेहैं उनमेंसे एकको "बिडुखो" ऐसा कहके उसको फिराने लगें आप बैठें जितने आदमियोंको स्पर्श किया उतने मरे जाने. एक रहा होवे तो बलिबकरा जानके छोड़ देवे ऐसेही सबोंको स्पर्श करनेसे जय जानना चाहिये. ऐसा गुटिका खेल कहते मंजोका खेल खेलतेहैं उसमें दो अगेला कहते जमीनमें छोटे गढ़े करतेहैं जिसने अपने मंजेसे दूसरेके मंजेको चोट मारी वह जीता ॥ ५८२ ॥

कंदुकक्रीडनंचैवसमूहाभ्यांहिसंस्मृतम् ॥
सप्तेष्टिकासमूहस्यपातनाच्चपराजयः ॥ ५८३ ॥

अब गेंदका खेल कहते हैं–दोनों जुगस आदमी आमने सामने खड़े रहके बीचमें ईटानंग ७ का एकेकके ऊपर एक ऐसा निंगोरचा रखके हाथमें कपड़ेका गेंद लेके उस निंगोरचेको गिरानेके वास्ते बड़े जोरसे गेंदको सात वार फेंके सामने वाले गेंद देते जावे सात बारमें निंगोरचा न गिरातो सामने वाले सात बार गेंद फेंके जिसके तरफसे निंगोरचा गिरा उस तरफके मनुष्य उस गेंदको पाँवसे दूर फेंकते जावे और उनका एक आदमी निंगोरचा रचना गेंद निंगोरचे खड़े करनेतक पास न आवे तो खेल जीता जाने और जो कभी निंगोरचा गिरा तो उसी समय गेंद सामने वाला निंगोरचेके पास लाया तो खेल हारा जाने ॥ ५८३ ॥

यदितेनैवचपुनःसमूहः स्थापितस्तदा ॥
जयस्तस्यविनिर्दिश्योदंडाभ्यांखेलनं तथा ॥ ५८४ ॥

जो खेल दूसरा खेलें गेंद डाले और एक खेल दंडोंसे विद्याशालाके छोकरे खेलतेहैं वह खेल श्रावण भाद्रपद महीनेमें और गणेशचतुर्थीके दिन प्रसिद्धहै ॥ ५८४ ॥

मल्लक्रीडाखेलनार्थंकार्यामल्लसभाशुभा ॥
रंगैर्नानाविधैरम्यारंगद्वारः सुशोभितः ॥ ५८५ ॥

अब मल्लकुश्ती खेलनेके वास्ते उत्तम सभास्थल बनावे नाना प्रकारके रंगोंसे दीवार पै चित्र निकाले मल्लसभाका जो दरवाजाहै उसकोभी सुशोभित करे ॥ ५८५ ॥

मंचाश्चालंकृताः स्रग्भिः पताकाचैलतोरणैः ॥
स्थापनीयामल्लगर्तस्यासमंतात्सुशोभनाः ॥ ५८६ ॥

लोगोंके बैठनेके वास्ते काष्ठके कोंच अथवा कुर्सियां रक्खें मंचोंको पुष्पमाला पताका वस्त्रके तोरणसे सुशोभित करके कुश्ती खेलनेकी जगहके चारों तरफ रक्खें ॥ ५८६ ॥

चतुरस्रोमल्लगर्त्तः नृपहस्तामितः स्मृतः ॥
तन्मध्येवालुकारम्याक्षेपणीयाऽतिसूक्ष्मका ॥ ५८७ ॥

अब कुश्ती खेलनेका जो गर्त्तहै सो सोलह हाथका लंबा चौड़ा कर उसमें बारीक रेती बिछावे ॥ ५८७ ॥

गर्त्तांतिभागेस्थाप्यानिमल्लोपकरणानिच ॥
बाहुवज्रमयौकर्त्तुंमुद्गरौद्वौस्वयोग्यकौ ॥ ५८८ ॥
पादयोर्निश्चलत्वेनस्थितिंकर्त्तुं करेलकम् ॥
अष्टांगदमनार्थंवैमल्लस्तंभः सुशोभनः ॥ ५८९ ॥

और कुश्तीकी जगहके पास मल्ल खेलके पदार्थ रक्खे सो कहतेहैं. काष्ठकी जोडियां फिरानेके वास्ते जिनके फिरानेसे बाहु वज्र सरीखे होतेहैं. काष्ठके करेल जिनके फिरानेसे पाँव मजबूत जमावटसे रखनेकी सामर्थ्य होती है मल्लस्तंभ जिसके ऊपर आडे टेढे चढ़ने उतरनेसे शरीरके आठ अंगकी नसें खुली होतीहैं जिससे कुश्तीमें शत्रु अपना शरीर दबावे तो भी उसको इजा होवे नहीं और पकड़नेकी सामर्थ्य होतीहै ॥ ५८८ ॥ ५८९ ॥

लोहमयीशृंखलाचकाष्ठदंडेनसंयुता ॥
शत्रुगणस्यनाशार्थंकाष्ठयुग्मंसगोलकम् ॥ ५९० ॥

और केवल हाथोंकी नसें खुली करनेके वास्ते लोहेकी रेजम रक्खे और छडि पट्टा खेलनेके वास्ते दो लकडियाँ उसके दोनों मुँहपर कपड़ेका गेंद लगाया हुआ होवे ॥ ५९० ॥

ग्रीवाबलसमृद्ध्यर्थंचक्रं पाषाणसंभवम् ॥
मध्यच्छिद्रेणसंयुक्तं तथागोलश्चतन्मयः ॥ ५९१ ॥

गर्दन और खवेकी बलवृद्धि होनेके वास्ते पत्थरका चाक रक्खे. गोला, पत्थरका या लोहेका बनायके रक्खे जिस गोलेको जमीनपर फेंकनेसे आदमीके सामर्थ्यकी परीक्षा होतीहै ॥ ५९१ ॥

सर्वनाडिसमूहस्य बलंकर्तुंविशेषतः ॥
द्वेचेष्टिका स्थापिनीयाभूमिगर्तेनसंयुता ॥ ५९२ ॥

सब शरीरमें सामर्थ्य लानेके वास्ते जमीनमें गढा करके दो बाजू हाथ रखनेके वास्ते ईट रक्खे ॥ ५९२ ॥

एवमादिरनेकानिमल्लोपकरणानिच ॥
स्थापनीयानिपश्चाद्वैमल्लक्रीडांसमारभेत् ॥ ५९३ ॥

ऐसे दूसरे अनेक पदार्थ रखके तत्पश्चात् वस्तादको सलाम ऊर्फ नमस्कार करके कुश्ती खेले ॥ ५९३ ॥

तदुक्तं श्रीभागवतेभगवान्मधुसूदनः ॥
आससादाथचाणूरंमुष्टिकंरोहिणीसुतः ॥ ५९४ ॥

उस कुश्तीके जो दाँव पेचहैं सो श्रीभागवतमें कहेहैं कंसराजाकी मल्ल-सभामें श्रीकृष्ण चाणूर मल्लसे बलराम मुष्टिक मल्लसे मल्ल कुश्ती करते भये ॥ ५९४ ॥

हस्ताभ्यांहस्तयोर्बध्वापद्भ्यामेवचपादयोः ॥
विचकर्षतुरन्योन्यंप्रसह्यविजिगीषया ॥ ५९५ ॥

उसका वर्णन--हाथोंसे हाथोंकी गांठ बांधके पाँवोंसे पाँव भिड़ायके परस्पर जीतनेके वास्ते खेंचने लगे ॥ ५९५ ॥

अरत्नीद्वेह्यरत्निभ्यां जानुभ्यांचैव जानुनी ॥
शिरःशीर्षोरसोरस्तावन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥ ५९६ ॥

लंबे हाथ करके कनिष्ठांगुलीसे कनिष्ठांगुली मिलाने लगे घूटनसे घूटने भिड़ाने लगे मस्तकसे मस्तक छातीसे छाती भिड़ायके परस्पर मारने लगे ॥ ५९६ ॥

परिभ्रामणविक्षेपपरिरंभावपातनैः ॥
उत्सर्पणापसर्पणैश्चान्योन्यंप्रत्यरुंधताम् ॥ ५९७ ॥

कभी कभी हस्तादिक धरके चारों तरफ फिराते कभी विक्षेप कहे सामने हटाने कभी परिरंभ कहते दोनों हाथसे दबाते कभी अवपातन कहते नीचे गिराते कभी उत्सर्पण कहते शत्रुको छोड़के आगे खड़े रहते कभी अपसर्पण कहते शत्रुके पीछे जायकें खड़े रहते इन उपायोंसे परस्पर रोकने लगे ॥ ५९७ ॥

उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैःस्थापनैरपि ॥
परस्परंजिगीषंतावपचक्रतुरात्मनः ॥ ५९८ ॥

और किसी समय उत्थापन कहते घूटन और पाँव इन दोनोंको मिलायके नीचे गिरायके उठाना किसी समय उन्नयन कहते दो हाथसे उठायके ले जाना चालन कहते कंठ धरा होवे वहांसे छुड़ाना स्थापन कहते हाथ पाँवका गोला करना ऐसे अनेक प्रकारसे परस्पर जीतनेके वास्ते देहको कष्ट देते भये ॥ ५९८ ॥

आस्फोटनं प्रकुर्वंतौ वारं वारमनेकधा ॥
एवंसंक्षेपतः प्रोक्ता मल्लक्रीडाऽतिगह्वरा ॥ ५९९ ॥

और वारंवार अनेक प्रकारसे बाहुके ऊपर दूसरे हाथके तलसे शब्द करते भये जिसको प्राकृतमें खंभ ठोंकना कहतेहैं. ऐसी संक्षेपसे मल्लक्रीडा मैंने वर्णन की इस क्रीडाके दूसरे अनेक भेद बड़े कठिन हैं ॥ ५९९ ॥

अथ चौरपालवनक्रीडा ।

कदाचिद्बालकाः सर्वे भ्रमंतश्चाद्रिसानुषु ॥
चक्रुर्नीलायनक्रीडाश्चोरपालापदेशतः ॥ ६०० ॥

अब वनक्रीडा कहते हैं. किसी समय सब बालक वनमें पशु चरानेके लिये नदी पर्वत शिखरोंके ऊपर फिरते २ चोर मालिक इस निमित्तसे निलायन कहे छुपनेकी क्रीडा करने लगे ॥ ६०० ॥

तत्रासन्कतिचिच्चोराः पालाश्चकतिचिन्नृप ॥
मेषायिताश्च तत्रैके विजह्रुरकुतोभयाः ॥ ६०१ ॥

तब उसमें कितनेक चोर भये कितनेक पालक भये कितनेक बकरे आदि पशु भये पीछे ये चोर बकरेको चोरने लगे मालिक ढूँढतेहैं ऐसा चोरका खेल करते भये ॥ ६०१ ॥

अथ जलक्रीडामाह ।

प्रोत्फुल्लोत्पलकह्लारकुमुदांभोजरेणुभिः ॥
वासितामलतोयेषु कुज न्द्विजकुलेषु च ॥ ६०२ ॥

अब जलक्रीड़ा कहतेहैं--जहां प्रफुल्लित कमोदनी कमल कल्हार कुमुद आदि अनेक सुगंधवान् पुष्पोंके केसरोंसे सुगंधित भयाहै जल जिनका और अनेक पक्षीगण जहां विचित्र २ शब्द कररहेहैं. ऐसे तालाब सरोवर कुंड नदी

इत्यादि स्थलोंमें यदि ऐसा जलाशय अनुकूल न होवे तो अपन बगीचोंमें अच्छे रंगका जल बनायके उसमें सुगंधित पदार्थ डालके बड़े बड़े पात्र भरके रक्खे अथवा चूनके बँधाये हुये हौदोंमें (ऊर्फ कोठी फ़वारा जिसको कहते हैं) ऐसा जल बनायके ॥ ६०२ ॥

विजहारविगाह्यांभोह्रदिनीषु महोदयः ॥
कुचकुंकुमलिप्तांगः परिरब्धश्चयोषिताम् ॥ ६०३ ॥

पीछे नदी तालाव गहरा होवे तो उसमें प्रवेश करके स्त्रियोंके साथ खेले जैसे श्रीकृष्ण भगवान् गोपियोंके स्तनपै जो केशर लगाहै सो स्त्रियोंके आलिंगन करनेसे वह स्तनका केशर जिनके शरीरको लिप्तमान भयाहै ऐसे होकर क्रीडा करतेभये ॥ ६०३ ॥

सिच्यमानोऽच्युतस्ताभिर्हसंतीभिः स्मरेचकैः ॥
प्रतिसिंचन् विचिक्रीडेयक्षीभिर्यक्षराडिव ॥ ६०४ ॥

और हास्य करती जातीहैं हाथमें पिचकारी लेके गोपियां जल सिंचनकरतीहैं जिनके ऊपर. और भगवान्भी उन स्त्रियोंके ऊपर सिंचन करते भये ॥ ६०४ ॥

ताः क्लिन्नवस्त्रविवृतोरुकुचप्रदेशाः
सिंचंत्यउद्धृतबृहत्कबरप्रसूनाः ॥
कांतंस्मरेचकजिहीर्षतयोपगूह्य
जातस्मरोत्सुकलसद्वदनाविरेजुः ॥ ६०५ ॥

पीछे जिनके सब वस्त्र भीग गयेहैं उससे स्तन ऊरू जिनके शैत्यसे संकुचित होगयेहैं जिनके केशसे पुष्प बिखर रहेहैं और श्रीकृष्णके आलिंगन करनेसे जिनका मुखारविंद प्रसन्न भयाहै ऐसी गोपियाँ जलक्रीडाके समय शोभने लगीं ॥ ६०५ ॥

कृष्णश्चतत्स्तनविषज्जितकुंकुमस्रक्
क्रीडाभिषंगधुतकुंतलवृंदबंधः ॥
सिंचन्मुहुर्युवतिभिः प्रतिषिच्यमानो
रेजेकरेणुभिरिवेभपतिः परीतः ॥ ६०६ ॥

और श्रीकृष्णभी गोपियोंके स्तन संलग्न केशरसे पुष्पमाला जिनकी रक्त भई हैं आलिंगनसे केशसमूह जिनके कंपित भयेहैं वारंवार स्त्रियाँ जिनके

ऊपर जलसिंचन करती हैं ऐसे भगवान् शोभते भये और जलक्रीडा करते भये ॥ ६०६ ॥

नटानांनर्तकीनांचगीतवाद्योपजीविनाम् ॥
क्रीडालंकारवासांसि कृष्णोदात्तस्यचस्त्रियः ॥ ६०७ ॥

इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मितेक्रीडाकौशल्याध्याये बालकौमारपौगंडकैशोरावस्थाक्रीडाभेद-वर्णनं नामप्रकरणम् ॥ ९ ॥

जलक्रीडा करनेके पश्चात् श्रीकृष्ण और गोपियाँ सबोंने उस क्रीडाके वस्त्र नटादिकोंको दे दिये ॥ इति जलक्रीडा भेद वर्णन पूरा भया ॥ ६०७ ॥

इति बाल कुमार पौगंड किशोर अवस्थाके जो क्रीडाके भेदहैं सो संपूर्ण भये. प्रकरण ९ ॥

अथ रासक्रीडामाह ।

भगवानपितारात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ॥
वीक्ष्यरंतुंमनश्चक्रेयोगमायामुपाश्रितः ॥ ६०८ ॥

अब रासक्रीडा कहते हैं--भगवान् श्रीकृष्ण शरदृतुकी रात्रियोंको मल्लिका पुष्पसे प्रफुल्लित देखके योगमायाका आश्रय करके रासक्रीडा खेलनेका आरंभ किया अर्थात् रासक्रीडा जो है सो शरदृतुकी रात्रियोंमें बहुत आनंदकारक दीखतीहै इस वास्ते सांप्रत कालमें भी आश्विन शुद्ध १ से रास पौर्णिमा पर्यंत सबस्त्री पुरुष अपने समूहमें रासक्रीडाके ठिकाने गरभा गाते हैं ॥ ६०८ ॥

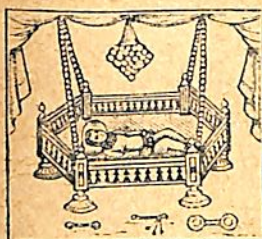
नद्याः पुलिनमाविश्यगोपीभिर्हिमवालुकम् ॥
रेमेतत्तरलानंदीकमलामोदवायुना ॥ ६०९ ॥

अब श्रीकृष्ण यमुनाजीके तटपर उत्तम रेती बिछी हुई है. जहां कमलका सुगंध वायु चल रहाहै वहां गोपियोंके साथ ॥ ६०९ ॥

तत्रारभत गोविंदो रासक्रीडामनुव्रतैः ॥
स्त्रीरत्नैरन्वितः प्रीतैरन्योन्याबद्धबाहुभिः ॥ ६१० ॥

परस्पर हाथ धरके रास क्रीडाका आरंभ करते भये ॥ ६१० ॥

बालपालना. बालक्रीडा. गोवत्सपुच्छाकर्षण क्रीडा. चौर्यक्रीडा.





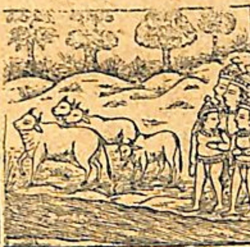

पशुवत् गमन क्रीडा. नृत्यादि क्रीडा. वाद्यवाहक क्रीडा.





वानरपुच्छग्रहणक्रीडा. निलायन क्रीडा. गोचारण क्रीडा. पक्षिवत् नादादिक्रीडा



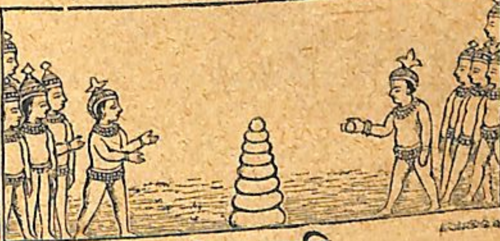



बिडूखो खेल. गिल्लि दांडूका खेल.

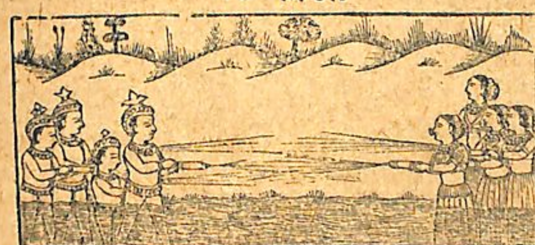
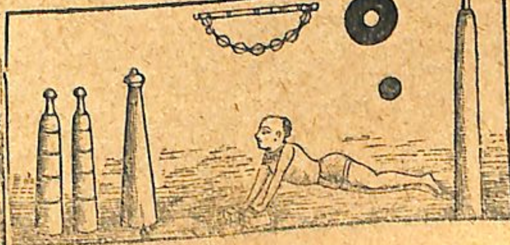



आंदोलन क्रीडा. नृपवत् क्रीडा. कंदुक क्रीडा.

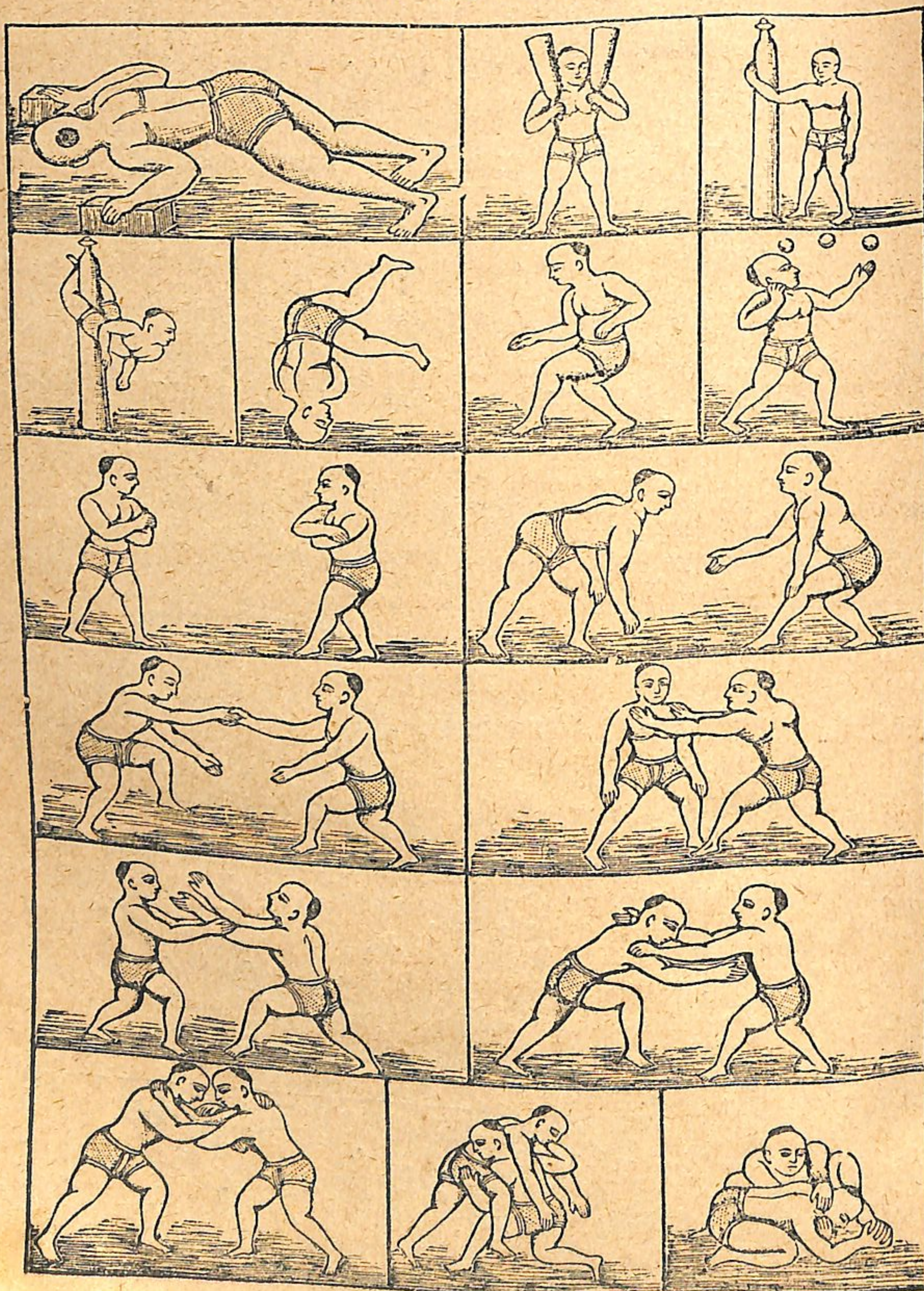




जल क्रीडा. मल्लोपकरणानि.

मल्लक्रीडा (कुस्तीके दाँव.)



रासोत्सवः संप्रवृत्तो गोपीमंडलमंडितः ॥
योगेश्वरेणकृष्णेनतासांमध्येद्वयोर्द्वयोः ॥ ६११ ॥

वह कैसा रास था कि, जितनी गोपियोंकी संख्या उतनेही स्वरूप भगवान्ने धारण करके ॥ ६११ ॥

बाहुप्रसारपरिरंभकरालकोरुनीविस्तनालभननर्म-
नखाग्रपातैः ॥ क्ष्वेल्यावलोकहसितैर्व्रजसुंदरीणा-
मुत्तंभयन्रतिपतिंरमयांचकार ॥ ६१२ ॥

पीछे अपना हाथ लंबा करके स्त्रियोंको आलिंगन करना, उन्होंके हाथ केश जांघ कटि व स्तनोंको स्पर्श करना, विनोदका भाषण करना, नखके अग्र भाग चूमना, क्रीडासे देखना, हँसना इत्यादि चेष्टासे स्त्रियोंके कामदेवको जागृत करके क्रीडा करते भये ॥ ६१२ ॥

पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्भ्रूविलासै-
र्भज्यन्मध्यैश्चलकुचपटैः कुंडलैर्गंडलोलैः ॥
स्विद्यन्मुख्यः कबररशनाग्रंथयः कृष्णवध्वो
गायंत्यस्तं तडितइवतामेघचक्रे विरेजुः ॥ ६१३ ॥

अब क्रीडाका स्वरूप कहतेहैं—पाँव नचाके रखते जाना, हाथ नचाना, हास्य सहित भृकुटी नचाना, कटिसे लचकना, स्तनोंके ऊपरका वस्त्र निकालना, गालपर कुंडल हिलाना, ऐसे ऐसे नृत्य और गायन करतीहैं. ऐसी गोपियां शोभती भई ॥ ६१३ ॥

कर्णोत्पलालकविटंककपोलघर्म-
वक्त्रश्रियो वलयनूपुरघोषवाद्यैः ॥
गोप्यः समं भगवता ननृतुः स्वकेश-
स्रस्तस्रजो भ्रमरगायकरासगोष्ठ्याम् ॥ ६१४ ॥

और कानमें कमलपुष्प धारण कियेहैं केशोंका समूह गालके ऊपर जो पसीना आया था मुखकी शोभा और कंकण पाँवमें जेवर पहिनेहैं उन्होंका शब्द इत्यादि प्रकारसे भगवानके साथ सब गोपियाँ नृत्य करने लगीं ॥ ६१४ ॥

उच्चैर्जगुर्नृत्यमानारक्तकंठ्योरतिप्रिया: ॥
कृष्णाभिमर्शमुदिता यद्गीतेनेदमावृतम् ॥ ६१५ ॥

कृष्णस्पर्शसे आनंदित भई गोपिकायें नृत्य करती जातीहैं और उच्च-स्वरसे गायन करती जातीहैं ॥ ६१५ ॥

काचित्समं मुकुंदेन स्मरजातीरमिश्रिता: ॥
उन्निन्येपूजितातेनप्रीयतासाधुसाध्विति ॥ ६१६ ॥
तदैवध्रुवमुन्निन्ये तस्यै मानं च बह्वदात् ॥ ६१७ ॥

उस समय श्रीकृष्ण उनको बहुत सन्मान देते भये और ध्रुव ताल गाते भये ॥ ६१६ ॥ ६१७ ॥

अत: परं महाराष्ट्रभाषाप्रबंधेनाटिपरीगोपद्वयक्रीडामाह ।
टिपरी१ली गजाननाची करुन स्तुती,खेळखेळती मंदगती॥
गजाननातें आधिनमुनी, जायपदांबुजवंदोनी ॥ ६१८ ॥
गोपीम्हणतीएकमेकीला, गुणरूपेंहरिभुलवीला ॥
राधाचिमणीठकीसगुणी, खेळखेळती कुंजवनीं ॥ ६१९ ॥
चक्राकारेंनित्यनाचती, चक्रधराचेंयशगाती ॥
गोपीम्हणतीएकमेकीला, अम्हांधीनहाहरिझाला ॥
झालुनेसुनी अंजरी, कृष्णवाजवीखंजरी ॥ ६२० ॥
टिपरी दुसरी–धिन्नक धिन्नक धिन्नाधिन् ॥
धिन्नकधिन्नकधिन्नाधिन् ॥ ६२१ ॥ धृ० ॥
पुनरपिघेउनगोपिहरी, रासानंदें क्रीडाकरी ॥
कायवर्णुत्यासुखराशीं, रास खेळती कृष्णाशीं ॥ ६२२ ॥
आनंदझालामानसीं, हरिकृपेनें सर्वांसीं ॥
सहामहिन्याची रात्रकरी, गोपिहेतुन मूरारी ॥ ६२३ ॥

सुगंधद्रव्यअपरमित, गुलालगोपी उडवीत ॥ ६२४ ॥
टिपरीतिसरी—एक टिपरीचे दुसरिसमारगे ॥
तिसरिस देउन चवथी फिरगे ॥
पांचविसदेउन सहाविसमारगे ॥
सातवी बदलु ॥ ६२५ ॥ धृ० ॥
हरिसिखेळतां आनंदचित्ता हरिगुणगातां अगणितरे ॥
लिहावयाधरणीनपुरे अशि हरि माया ॥ ६२६ ॥
ऐकतांचिकानिंमधुरमधुरध्वनी वादन करि ॥
प्रेमभरें भुलल्यागोपीगोपसारे अशि हरिमाया ॥ ६२७ ॥
टिपरी—चवथी—व्रजयुवतीटिपऱ्याखेळती॥हरिपाहती आनंदेंनाचती
आनंदितहरिगुणगाती॥ धन्यजयाचीहरिसंगती॥१॥६२८॥
डाविकडेजातीरागावतीअती ॥
हरिहंसतीमगरागसोडिती ॥
त्यासुमतीगोविंदेंप्रीतीनाचती ॥
अतित्यागजगतीहरिपाहुनत्याहीहंसताती ॥ ६२९ ॥
हरिपायींमनकेलेंअर्पण ॥ नकोआम्हांधनयाविण ॥
आवडेहाचिमान॥ हानिश्चयआमुचाजाण॥ ६३० ॥
इंद्रादिकानतेआम्हांसाधन॥कृपाघनजाणोनिमन ॥
आनंदघनशांतवीमन ॥ कुंजवनरमणीयघन ॥ ६३१ ॥
नंदवनयाहुनिव्रजयुवती० ॥ १ ॥

अब टिपरी कहतेहैं हाथमें दंडे लेके खेले उसको महाराष्ट्र भाषामें टिपरीका खेल कहतेहैं वह टिपरीका खेल ऐसाहै कि दोनों हाथोंमें एकेक दंडा लेके मंडलाकार खड़े रहकर मुखसे गायन करते जावें पाँवसे नाचते जावें हाथसे निकट वाले आदमीके दंडेसे अपना दंडा बजाते जावें दूसरे चार आदमी बीचमें बैठकर मृदग ताल मुरज वाद्य बजाते जावें इसको टिपरीका खेल कहतेहैं अब यहां प्राकृत भाषाका गायन रक्खा संस्कृत नहीं किया इसका

रण यह कि राग गानेको संस्कृत पद्यमें बड़ा कठिन पड़ताहै इस वास्ते एक महाराष्ट्र भाषामें गायन बताया वैसाही अपनी अपनी देश भाषामें गायन समझ लेना ॥ ६१८ ॥६१९॥ ६२० ॥६२१॥६२२॥ ६२३ ॥ ६२४ ॥ ॥६२५॥ ६२६ ॥ ६२७ ॥ ६२८ ॥ ६२९ ॥ ६३० ॥ ६३१ ॥

अथ गोपक्रीडा ।

नमुनीहारीवदतिकुमारी ॥ लाजभारीखेळतीपोरपोरी ॥ ६३२ ॥
सोडुनिलाजेलाकसादंगझाला ॥
हरिलाचुकलामुकलाभुलला ॥ नमु० ॥ १॥६३३ ॥
गुराखिपोरेमोठींचतुरें ॥धीटफारदेतीमारजार॥नमु०॥२॥६३४॥
जासिखेळतोतोगुरेंराखि ॥
सदाचारिततसाचयेतपीत ॥ नमु० ॥ ३ ॥ ६३५ ॥
घाणेरडे हिंगटपोर॥उचमळरे दुरसरे जारेसारे॥नमु० ॥ ६३६ ॥
तुम्हांसमोदयेतमिलिंदा॥परगंधफिरवितमंदमंद॥नमु०॥६३७॥
हातपायवांकडेशेंबडेचिकडे ॥
चुकतीगडेपलिकडे इकडे तिकडे ॥ नमु० ॥६३८॥
असोअळअमुचेकायहोतुमचे ॥
परवयाचेआर्जिवज्याचेंत्याचें॥ नमु० ॥ ७ ॥६३९॥

गोपदुसरा ।

लालपदरआम्हीहातिंधरितों ॥ गोपानेपहाकसाजातों ॥
गंडेरिगोपातेंकरितों॥तुम्हींअपसव्य करुनीचाला॥नमु०॥ ॥६४०॥
सफेतआमुचाकरिपदर ॥ जातोआंतुनपणलागेनजर ॥
पहाकसेआमुचेपदर॥असाजाचुकूनकाघराला॥नमु०॥ ६४१ ॥

दिमाकउगीचयापोरास ॥ कोणघेतहोते खेळास ॥
हरिनें आर्जविलेंआह्मांस।म्हणूनव्यर्थराहणें आह्मांला॥नमु०॥६४२॥
कायपोरेंआम्हांखेळानव्हतीं ॥ आम्हांसिबहुहरिआर्जविती॥
म्हणुनीधरिलीतुमचीसंगती ॥ कृष्णाकडेपाहणेंआम्हाला ॥६४३ ॥
कसाआवडतोनकळेहरी ॥ पोरेंआठाँठायींवांकडीं ॥
हरिसमजुतकरिएकपरी ॥ शेंबडी लेंबडी पोरेंखेळायाला ॥ ६४४ ॥

गोफतीसरा ।

दुरंगकट्यारीगोपकरायालाशिकलोंआम्हींनी ॥
तुम्हींकितीचुकवितांपरिनचुकूंसुंदरी ॥ ६४५ ॥
कृष्णाकडेपाहुनभुलल्या चित्तनाहींटिपरीवरी ॥
टिपऱ्यामारतांतुम्हींआमुच्याहातावरी ॥ ६४६ ॥
लटकेचआळघालितांतुम्हींगोपानो आम्हांवरी ॥
दांडगाई धक्केसोसावेकितीतरी ॥ ६४७ ॥
शेंबडेघाणेरडे गोपआम्हांपाहुनयेतओकारी ॥
कसेंरहावें कृष्णाचियेशेजारीं ॥ ६४८ ॥
विष्णुदासम्हणेऐकुनिगोपीरागवल्याभारी ॥
घेऊननिघाल्याकृष्णातेंघरीं ॥ ६४९ ॥ दुरंगकटचारी० ।

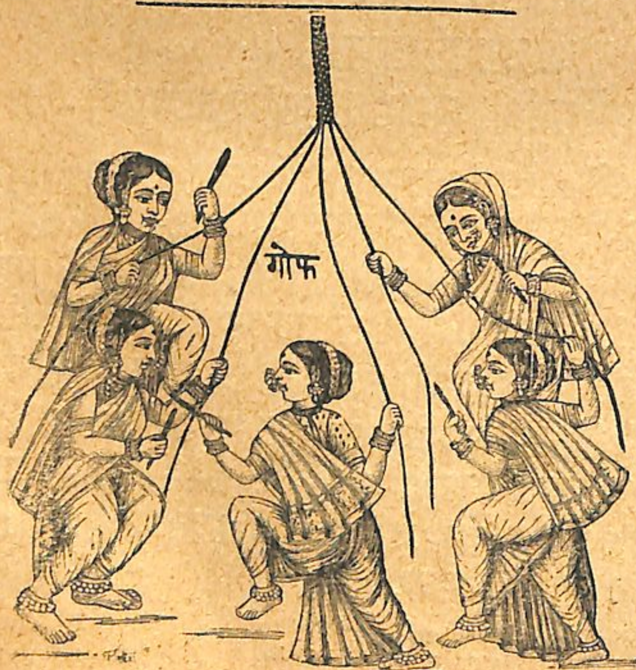
अब गोफका खेल कहतेहैं–ऊंचे मंडपके मध्यभागमें लाल, सपेद, पीत, हरितादिवर्णोंके रज्जुके मुख एक ठिकाने बांधके बाद जितने रंगकी रज्जु हैं उतनीही स्त्रियोंके हाथमें रज्जुका छेडा देके नमुनी हारी वदती कुमारी यह महाराष्ट्र भाषाके ध्रुवपदके गायन रीतिसे गोफकी गुँथावन आवे उस रीतिसे गायन करते जावे और फिरते जावे उससे ऊपर गोफ तय्यार होता आवे उसको गोफकी क्रीडा कहते हैं यहां गायन महाराष्ट्र भाषामें बताया है स्वस्व देशका गायन इसी प्रकार निकाललेना ॥ ६३२ ॥ ६३३ ॥ ६३४ ॥ ६३५ ॥ ६३६ ॥ ६३७ ॥ ६३८ ॥ ६३९ ॥ ६४० ॥ ६४१ ॥ ६४२ ॥ ६४३ ॥ ३४४ ॥ ६४५ ॥ ६४६ ॥ ६४७ ॥ ६४८ ॥ ६४९ ॥

इति गोफक्रीडा ।


रासटिपरी खेल


फुगडी.


फुगडी.


गोफ






हळूरा.









स्त्रीखेल फुगडीखेलस्त्रिविधः परिकीर्तितः ॥
प्रथमास्थितिरूपाच हस्तैकेनद्वितीयका ॥ ६५० ॥

अब और स्त्रियोंके खेलमें फुगडी नाम करके जो खेलहै सो तीन प्रकारकाहै एक बैठीफुगडी, दूसरी परस्पर एक हाथ धरके फिरना ॥ ६५० ॥

तृतीयादंडरूपाच ह्येकीबेकीतथापरः ॥
कुक्कुटाख्यस्तथाखेलः झटीझुन्नातथैवच ॥ ६५१ ॥
पिंगाझीमाऽथगरबाः पाचिकाख्योहलूरकः ॥
हंबोडाख्यस्तथाखेलः सर्वैगानसमन्विताः ॥ ६५२ ॥

तीसरी दो हाथ धरके फिरनेकी फुगडी. एकीबेकीकाखेल—यह खेल बहुधा गुजराती लोगोंमें शादी करके घरमें आये बाद कुलदेवताके सामने वर कन्या दोनों खेलते हैं. उसका कारण यह है कि, उस खेलमें जो जीता वह संसारमें जीतेगा यह परीक्षाहै. इस वास्ते दोनोंजने द्रव्यकी थैली अपने पास जुदी जुदी रक्खैं बाद उसमें से मुष्टि भरके लेवे और सामनेवालेको पूँछे कि एकी है या बेकी ? तब सामने वालेने दोमेंसे एक बात कही उसी प्रकार मुष्टिमें से निकला तो वह ले जावे फिर मुष्टी बांधके खेले और विपरीत निकला तो जितना द्रव्य निकला होवे मुष्टिमें से उतना

नदेवे दाँव जो जीता वही खेल और गायन करके खेलनेकी क्रीडा कुकडा, झटी, झुन्ना, पिंगा, झीमा, गरबा आदि बहुत हैं ॥ पाचिकाका जो खेलहै सो पाँच या सात नंग या नव लाखके या कोई भी सोना रूपा धातु इत्यादिके बनाये हुये चतुरस्र लेके उससे दोजने खेलतेहैं उसमें पहिले एक व पाचिके दो हाथोंसे उछालके जमीनपर डालना पीछे जमीनपरसे एकेकलेते जाना उसके जो १७ शब्द हैं सो गुजराती भाषामें लिखते हैं अन्य भाषा अपनी अपनी जान लेना. अब वो पाचिकुं काके नाम १ चकली, २ बीयाबली, ३ तिल्लातली, ४ चारचंगोटी, ५ पाँचे पडिया, ६ छःका दाँव नहींहै, ७ सातवां इसेजा, ८ आठवां इरेजा, ९ ओग-नगोटी, १० बीस बाईमोटो, ११ वीसपरएक, १२ गंगागणेश, १३ गंगानि-माटि, १४ केसरछाटि, १५ वहुरे वहु, १६ कोटिमानाघड, १७ कोटिमानाघड तोसडीगया १८ बहुना कुळाबळीगयाऐसे १७ शब्द हैं वहांतक खेलनेसे दाँव पूरा हुआ जानना यह खेल राजमान्य है. काय सोजेविवाह शादिमें वरके घरसे रूपे सोनेके पाचिके बनायके वधूके घरको भेजतेहैं. अब हलूराका जोखेलहै सो ऐसा कि, आमने सामने स्त्रियोंका समूह पंक्तिरूप खडे रहके गाते गाते एक पंक्तिने दूसरेके सामने आयके मिलापकरके पीछेके पाँवसे गाते गाते अपनी जगहपर जायके खडे रहना बाद दूसरी पंक्तिकी स्त्रियोंने भी इसीरीतिसे करना. अब हंबोडाखेल—यह खेल दोनों स्त्रियोंने आमने सामने दोहाथसे दोहाथपर ताली मारते जाना गाते जाना कूदते जाना यह सब स्त्रियोंके खेलहैं गायन सहितहैं ॥ ६५१ ॥ ६५२ ॥

गायनं देशभेदेन बहुधा परिकीर्तितम् ।
तस्मादत्रनवक्ष्यामिग्रंथबाहुल्यकारणात् ॥ ६५३ ॥

इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मितेक्रीडाकौशल्याध्यायेस्त्रीक्रीडाभेदव-र्णनंनामदशमंप्रकरणम् ॥ १० ॥

अब गायनके प्रकार देशभाषाके भेदसे बहुतहैं सो ग्रंथविस्तार भयसे यहां नहीं लिखताहूं ॥ ६५३ ॥

इति स्त्रीक्रीडाके भेद संपूर्ण भये प्रकरण ॥ १० ॥

अथ जूवाँ खेलनेका पट.



अथ लंका खेलखेलनेका पट.



अथ तीन फाँसेके खेलमें फाँसेके २० दाँवके चिन्ह.

पूर्व भागके दाँव ५		दक्षिण भागके दाँव ५	
५	यह पांचके दाँवमें फाँसे-का चिन्ह पू० १	६	यह छके दाँवमें फाँसेका चिन्ह द० जानना. ६
९	यह नवके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पू० २	१०	यह दसके दाँवमें फाँसेका चिन्ह द० जानना. ७
९	यह नवके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पू० ३	१०	यह दसके दाँवमें फाँसेका चिन्ह द० जानना. ८
१३	यह तेराके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पूर्वमें जान० ४	१४	यह चौदाके दाँवमें फाँसे-का चिन्ह द० जानना. ९
१३	यह तेराके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पू० जानना ५	१८	यह अठारहके दाँवमें फाँ-सेका चिन्ह द० जानना. १०

पश्चिम भागके दाँव ५	उत्तर भागके दाँव ५
३ यह तीनके दाँवमें फाँसेका चिन्ह प० जानना. ११	८ यह आठके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उत्तम जानना. १६
७ यह सातके दाँवमें फाँसेका चिन्ह प० जा० १२	८ यह आठके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उ० जा० १७
११ यह ग्यारहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह प० जा० १३	१२ यह बारहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उ० जा० १८
११ यह ग्यारहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह प० जा० १४	१२ यह बारहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उत्तरमें जा० १९
१५ यह पंधराके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पश्चिममें जानना. १५	१६ यह सोलहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उ० जा० २०

अथ गिर्दि खेलनेके दाँव १० का चिन्ह.

यह दोनों दाँव जीतनेके जानना.	यह दोनों दाँव हारनेके जानना.
१२ ८	६ २

यह छः दाँव निरर्थक जानना.

४ ५ ७ ७ ९ १०

अतःपरंप्रवक्ष्यामिद्यूतखेलंदुरोदरम् ।
दुरोदरोद्यूतकारेपणेद्यूतेदरोदरम् ॥ ६५४ ॥

अब स्त्रीक्रीडा होने बाद जूवेका खेल कहताहूं जिसको शास्त्रमें दूरोदर कहते हैं। दूरोदरकहते दुष्ट कपटरूपहै उदर अंतरभाग जिसका उसको दूरोदर कहतेहैं. दूरोदर जूवेका नामहै अर्थात् बाजी लगानेकानामहै और

जूवा खेलने वालेकाभी नाम है परंतु जूवेके ठिकानेपर नपुंसक 'दूरोद
शब्दहै बाकी पुल्लिंग है ॥ ६५४ ॥

बहवोद्यूतभेदाश्चतत्राद्यंप्रवदाम्यहम् ।
पाशकत्रयसंसाध्यपाशकाभ्यांद्वितीयकम् ॥ ६५५ ॥

जूवेके खेलनेके प्रकार बहुतहैं उसमें तीन फाँसेसे जो खेलसो पहिला, दो फाँसोंसे खेलनेका खेल दूसरा ॥ ६५५ ॥

अंगुलीपर्वमात्रस्यचतुर्थांशेनसुंदरम् ।
चतुरस्रंपाशकंवैकुर्याल्लक्ष्मचपूर्ववत् ॥ ६५६ ॥

अब जूवाखेलनेका फाँसा कैसा करना सो कहते हैं अपनी अंगुलिका जो पर्व है उसके चतुर्थभाग जितना लंबा चौंडा शोभायमान फाँसा करना उसके चारों तरफ जो चिह्न करे सो प्रथम द्यूत प्रकार जो कहाहै उसमें जो दो फांसेकी क्रीडामें फांसा कहाहै उसी तरह चिह्न करे ॥ ६५६ ॥

पाशकद्वयक्रीडोक्तंखेलनार्थंसुयंत्रकम् ॥
वर्तुलंतत्रकुर्वीत तुर्यभागसमन्वितम् ॥ ६५७ ॥

अब तीन फांसेकी क्रीडा खेलनेके वास्ते बड़ा उत्तम वर्तुलाकार यंत्र निकाले पीछे उस वर्तुलमें चार भाग दिखानेके वास्ते विदिशासे चार रेखा खेंचे ॥ ६५७ ॥

पाशकत्रयक्रीडायांडावाविंशतिसंख्यया ॥
यथाभागंचतुर्दिक्षुडावसंख्यांविनिर्दिशेत् ॥ ६५८ ॥

अब इस तीन फांसेकी क्रीडामें जो दाँव लेनेके हैं सो बीस तरहसे हैं जादा कम नहीं होतेहैं सो बीस दाँव चार भागमें पाँच पाँच विभाग करके यंत्रमें लिखदेवे ॥ ६५८ ॥

विश्वौद्वौपंचनंदौद्वौपूर्वभागेस्थिताइमे ॥
अष्टादशमनुस्कंददिग्द्वयंदक्षिणेइमे ॥ ६५९ ॥

अब चार विभागमें कौनसे दाँवहैं सो कहतेहैं पूर्व दिशाके भागमें १३ । १३ । ५ । ९ । ९ यह पाँच दाँव लिखे. दक्षिणदिशाके भागमें १८ । १४ । ६ । १० । १० यह पाँच दाँव लिखे ॥ ६५९ ॥

त्रिसप्ततिथिरुद्राश्चतथारुद्राश्चपश्चिमे ॥
द्वौवसूद्वौरवीचैवनृपसंख्यातथोत्तरे ॥ ६६० ॥

पश्चिम दिशाके भागमें ३ । ७ । १५ । ११ । ११ यह पाँच दाँव लिखे उत्तर दिशाके भागमें ८ । ८ । १२ । १२ । १६ यह पाँच दाँव लिखे॥ ६६०॥

संस्थाप्यैवंवेददिक्षुप्रसंख्यांपश्चात्कार्यासंस्थितिस्तेषुसर्वैः ॥
स्वंस्वंद्रव्यंस्थापयेत्स्वस्वभागेपाशानादौप्रक्षिपेदुत्तरस्थः ॥६६१॥

इस रीतिसे चार दिशामें बीस दाँव लिखके एक एक विभागमें एक एक पुरुष बैठके अपना अपना जो हारने जीतनेका धन होवे वह अपनी दिशाके विभागकी रेखाके भीतर रक्खे रेखासे लगावे नहीं, लगाया तो दूसरेका भाग लागू होता है बाद पहिला फांसा उत्तर दिशाका डाले पूर्व दिशा छोड़के उत्तर दिशासे पहिले चले इसका कारण यहहै कि यह खेल धनलोभ का है और उत्तर दिशामें कुबेरके नवनिधिहैं सो पहिले उनका आवाहन कियाहै ॥ ६६१ ॥

पाशप्रक्षेपणेजातेयदंकास्तत्रचाग्रतः ॥
तद्विभागस्थितेनैवपुरुषेणविशेषतः ॥ ६६२ ॥

अब फांसे तीन डाले तब जो दाँवका अंक आया तीन फांसे मिलके वह अंकसंख्या जिसके विभागमें होवे उस विभागमेंके बैठने वाला आदमी॥ ६६२॥

पाशप्रक्षेपकथनंसर्वंग्राह्यमसंशयम् ॥
यदिप्रक्षेपकस्यैवडावस्तत्रपतेत्तदा ॥ ६६३ ॥

फांसे डालनेवालेके घरमें ऊर्फ विभागमें जितना धन रक्खा होवे वह सब लेजावे उसमें संशय नहीं है और जो कभी जिसने फांसेडाले उसके घरका दाँवका अंक आया तो ॥ ६६३ ॥

चतुर्भागस्थितंद्रव्यंसर्वंग्राह्यमसंशयम् ॥
फकिनीवर्त्तिकाख्यौद्वौ खेलौचात्रप्रकीर्तितौ ॥ ६६४ ॥

वह चारोंभागमें चारों जनोंने जो द्रव्य रक्खाहै सो सब द्रव्य ले लेवे उसमें संशय करे नहीं अब इस तीन फांसेके खेलमें एक फकिनी खेल है फकिनी खेलका निर्णय ऐसाहै कि, जिसके दिलमें आवे वह चार घरमेंसे कोई भी एक घरमें जितना दिलमें आवे उतना धन फेंकै बाद फांसेमें घरका दाँव आवे तो फाँसे खेलने वालेके पाससे उतनीसंख्या तुल्य धन लेवे और जो कभी दूसरे घरका दाँव पडा तो उतना धन देवे परंतु जिसके घरमें इसने धन फेंकाहै उस घरवालेसे बोल चाल कर लेवे अथवा घरवाला बंदरहे

अथवा दोनों अपने अपने समान धन लेवें देवें. अब वर्त्ति खेलका निर्णय ऐ कि वर्त्तिका दाँव खेलनेका कारण यहहै कि, धन बहुत लेनेकी इच्छा वास्ते अगर चार आदमी अथवा पाँच पचीस आदमियोंकोभी खेलना हैं तो वर्त्तिका डाव खेलैं. वर्ति का लक्षण ऐसाहै कि, आप जिस घरमें बैठो वहाँ भी धन रक्खे और दूसरेको भी कहै अथवा मैं तुम्हारे तरफसे अर्थात् तुम्हारे वर्त्ति तुम्हारे घरमें बैठाताहूं बाद दाँव पडे वैसा लेना देना जानना एक घरमें दो चार ऐसे भागीदार होसकते हैं ॥ ६६४ ॥

अथ द्वितीयोद्यूतखेलः ।

गिर्दिखेलोद्वितीयस्तुपाशकाभ्यांप्रकीर्तितः ॥
क्रीडाकर्तुर्नसंख्यात्रद्वौडावौजयकारकौ ॥ ६६५ ॥

अब जुवा खेलनेका दूसरा भेद बताते हैं इस दूसरे खेलका नाम गिर्दि है यह खेल दो फाँसेसे खेला जाताहै और इस खेलमें खेलनेवाले पुरुषों की संख्याका कुछ नियम नहींहै जितने खेलना चाहे उतने खेल सकतेहैं और इस गिर्दि खेलमें जीतनेके दो दाँव हैं ॥ ६६५ ॥

पराजयकरौद्वौचशेषाः सर्वेनिरर्थकाः ॥
षट्द्वयंचतुःसंख्याद्वयंचेमौजयावहौ ॥ ६६६ ॥

हारनेके दाँव दो हैं. बाकी सब दाँव पड़े तो व्यर्थ जानै उसका वर्णन दोछक्के बारहका ? दोचौवे अठ्ठाका? ऐसे यह दो दाँव जीतनेके जानै॥ ६६६ ॥

त्रित्रिसंख्यायुतंचैकंह्येकेकेनद्वितीयकम् ॥
एतौपराजयकरावूर्ध्वपाशोद्वयोः समः ॥ ६६७ ॥

अब तीन तीन छक्का एकेकसे दूवा ऐसे यह दोनों दाँव हारनेके जानै अब जो कभी एक फाँसा जीतनेका या हारनेका पड़े और एक फाँसा खडागिरै तो दूसरे के समान जानै हारनेमें हार सरीखा और जीतनेमें जीत सरीखा जानै दोनों खड़े गिरें तो दूसरी बार दाँव डालै ॥ ६६७ ॥

पाशप्रक्षेपसमयेवक्तव्यंस्पष्टभाषया ॥
अहंतवधनंजेतादास्येइतितथापरः ॥ ६६८ ॥

फासे डालतेसमय बडेशब्दसे स्पष्टमालूम होवे वैसा सामने वाले को जतावे कि यह तेरा धन मैं जीतता हूं तब उस धनका मालिक कहै कि मैं हारताहूं बाद फांसा डालै उसमें जो जीतका दाँव आवे तो वह सब धन

देना अगर हारका दाँव आया तो जितना धन उसने रक्खा है उतना धन अपने पाससे देना और जो फालतु दाँव पडे तो लेना देना कुछ नहीं पीछे दूसरेने फाँसाडालना. फाँसा सबोंने डालना परंतु हारजीतका शब्द स्पष्ट कहदेना मुख्यममें फासा डालना नहीं ॥ ६६८ ॥

चर्मपट्टिकयाचैवंखेलश्चैवतृतीयकः ॥
एवंद्यूतविभेदाश्चबहवः संतिभूतले ॥ ६६९ ॥

अब जूवेके खेलमें एक तीसरा भेद है—चमड़ेकी लम्बी पटा कपड़े सरीखी बनायके उसको गुन करके बीचमें दूसरेके हाथसे शलाका रखवायके दोनों छेडे समान करके वो शलाका को चर्मपट्टीका बत्तीसरीखा बल देना बाद सामनेवालेको फँसाना होवे तो खोलनेके वक्त शलाका पट्टीके अन्दररलना. छोडदेना होवे तो शलाका पट्टीसे बाहर निकालना. यह खेल सब वो छेडेके वहाँ ध्यान रखना मुख्य है. यह कपटरूप खेल है ऐसे जगत् में बहुत खेल हैं ॥ ६६९ ॥

तेसर्वेकपटप्रायाः पूर्वौद्वौसत्यरूपकौ ॥
पाशकांस्तत्रकुर्वंतिकृत्रिमान्केपिदुर्जनाः ॥ ६७० ॥

वे सब कपटरूप हैं और यह तीन फाँसेका जूवा दो फाँसेका गर्दिजूवा सत्यरूप है यहाँ हारना जीतना फाँसेके आधीन है परंतु इसमेंभी कितनेक दुर्जन लोक पारा भरके कृत्रिम फाँसे बनायके अपने पास रखते हैं जीतने के वक्त किसीको न मालूम होवे वैसी तजवीज से कपट का फाँसा निकाल के डालते हैं ॥ ६७० ॥

लंकाखेलंप्रकुर्वंतिद्यूतवत्केपिमानवाः ॥
मुष्टेः प्रयोजनंतत्रचैकद्वित्रिचतुर्थकैः ॥ ६७१ ॥

जूवे सरीखा एक लंका नामका खेल कितनेक लोक खेलते हैं इस खेल में फाँसेका प्रयोजननहीं है मुष्टि भरके कोईभी पदार्थ लेके चारके सामने मठि छोडना ऐसा मुष्टिका प्रयोजन है ॥ ६७१ ॥

शेषकैः स्वस्वभागस्थपुरुषाच्चधनंहरेत् ॥
लंकादूवातथातीयापटश्चैवचतुर्थकः ॥ ६७२ ॥

इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मितेक्रीडाकौशल्याध्यायेदुरोदरद्यूत
वर्णनंनामएकादशप्रकरणंसंपूर्णम् ॥ ११ ॥

उसका बयान प्रथम जूवेके खेल सरीखा चार विभागसहित वर्तु निकालके उसके चारविभागमें पूर्वमें लंका, दक्षिण में दूवा, पश्चिम में ती उत्तर में पट ऐसा लिखके चार आदमीने चार ठिकाने ऊपर बैठना. दो अग तीन आदमीसे खेलना मध्यम है. अब पाहिले अपनी अपनी धनकी थैली भरके अपने अपने पास रखना बाद चारोंमें से कोईने विबोधन जो रुपये पैसे कवडियाँ बदाम कंकरी होवे उसमें से मूठीभर लेके बीचमें रखनी बाद तीनों जनोंने दिलमें आवे उस घरमें बैठना परंतु एकघर खाली रखना बाद मुठ्ठी खोलना एक निकले तो लंकास्थान में बैठाहुवा जीतिगा कहते वो स्थान में जितना धन रक्खा होवे उतना धन मुष्टि भरने वालेके पाससे लेना बाद मूठी उसने भरना वैसा मूठीमें से २ अगर ३ निकले तो लंकास्थान सरीखा जानना और जो कभी मूठिमें से ४ निकले तो पट की जगे ऊपर जिसने दाँव रक्खाहोवे वो जीते. अगर पटकी जगे ऊपर किसीने भी दाँव न रक्खा होवे तो मुठीभर नार अदमी सबोंके दाँवका रक्खाहुआ धन जीत लेजावे. अब मुष्टि में से ५। ९। १३। १७ २१। २५। निकले तो लंकावाला लेवै, मुष्टिमें से ६। १०। १४। १८। २२। २६ निकले तो दूवा वाला लेवे, मुष्टिमें से ७। ११। १५। १९। २३। २७ निकले तो तीये वाला लेवे, मुष्टिमें से ८। १२। १६। २०। २४। २८ निकले तो पटवाला लेवे अर्थात् चारका भाग देवे इस खेलमें जिसका धन खूट गया उसे हाराजानै ॥ ६७२ ॥

इति क्रीडाकौशल्याध्यायमें जुवेंका खेल संपूर्ण भया. प्रकरण ॥ ११ ॥

अथ द्यूतसमाह्वयविधिनिषेधप्रकरणम्।

तत्रद्यूतसमाह्वयस्वरूपं मिताक्षरायां नारदः।
अक्षबन्धशलाकाद्यैर्देवनंजिह्मकारितम् ॥
पणक्रीडावयोभिश्चपदंद्यूतसमाह्वयम् ॥ ६७३ ॥

अबद्यूत और समाव्हयका स्वरूप लक्षण कहतेहैं व अक्ष कहते पाशक;बन्ध कहते चर्म पट्टिका; शलाका कहते हाथी दाँतादिककी कीहुई लंबी चतुरस्र शलाका आदि शब्द करके हाथी घोडा, रथ, वाघ और बकरी इत्यादि क्रीडापदार्थ इन प्राणरहित पदार्थोंसे जो पण बांधके कपटपूर्वककी जो क्रीडा उसको द्यूतक्रीडा कहते हैं और वयोंभिः कहते पक्षियोंसे कबूतर कूकडे आदि पक्षियोंसे चशब्दे से मल्ल मेषादिकसे जो पण बांधके क्रीडा किये उसकोसमाह्वयक्रीडा कहते हैं ॥ ६७३ ॥

मनुनाअध्याय ९ श्लोक २२३

अप्राणिभिर्यत्क्रियतेतल्लोकेद्यूतमुच्यते ॥
प्राणिभिःक्रियमाणस्तुसविज्ञेयः समाह्वयः ॥ ६७४ ॥

प्राणरहित पदार्थोंसे जो क्रीडा करते हैं उसको लोकमें द्यूत कहते हैं और प्राणसहित मेषकुक्कुटादिकों से जो क्रीडा करैं उसको समाह्वय जानै ॥ ६७४ ॥

अथद्यूतसमाह्वयनिषेधः मनुराह अध्याय ९ श्लोक २२१

द्यूतंसमाह्वयंचैवराजाराष्ट्रान्निवारयेत् ॥
राजांतकरणावेतौद्वौदोषौपृथिवीक्षिताम् ॥ ६७५ ॥

अब द्यूत समाह्वय इन दोनोंका निषेध कहतेहैं. द्यूतका खेल और समाह्वयका खेल इन दोनोंको राजा अपने राज्यमेंसे निकालदेवे कारण यह कि, दोनों राजाके विनाश करनेवाले हैं ॥ ६७५ ॥

प्रकाशमेतत्तास्कर्यंयद्देवनसमाह्वयौ ॥
तयोर्नित्यंप्रतीघातेनृपतिर्यत्नवान्भवेत् ॥ ६७६ ॥

और यह द्यूतसमाव्हय दो खेल प्रत्यक्ष चौरकर्म हैं इस वास्ते राजा इन दोनोंके निवारण करनेमें प्रयत्न रक्खै ॥ ६७६ ॥

द्यूतंसमाह्वयंचैवयः कुर्यात्कारयेतवा ॥
तान्सर्वान्घातयेद्राजाशूद्रांश्चद्विजलिंगिनः ॥ ६७७ ॥

द्यूतसमाव्हय यह दोनों खेल जो आदमी स्वतः करताहै अथवा द्यूत सभाध्यक्ष होयके दूसरे लोगोंके हाथसे करवाताहै और जो शूद्र ब्राह्मणका वष लेके फिरतेहैं इनसब लोगोंको राजा दंड देवै ॥ ६७७ ॥

तत्रकारणमाह—एतेराष्ट्रेवर्तमानाराज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः ॥
विकर्मक्रिययानित्यंबाधंतेभद्रिकाः प्रजाः ॥ ६७८ ॥

दंड देनेका कारण यहहै कि, ऐसे लोग गुप्तचोर होयके राजाके राज्यमें रहेंगे तो वे अपने कपटरूपी कर्मसे जो सज्जन सात्विक लोगहैं उन्होंको दुःख देवेंगे ॥ ६७८ ॥

द्यूतमेतत्पुराकल्पेदृष्टंवैरकरंमहत् ॥
तस्माद्द्यूतंनसेवेतहास्यार्थमपिबुद्धिमान् ॥ ६७९ ॥

यह द्यूत अतिनिषिद्धहै ऐसा नहीं है; किंतु पूर्व कल्प कहते पूर्वयुगमें भी

द्यूत खेल वैर करनेवालाहै ऐसा देखा इस वास्ते बुद्धिमान् पुरुष हास्य दमें भी द्यूतका सेवन न करैं ॥ ६७९ ॥

प्रच्छन्नंवाप्रकाशंवातन्निषेवेतयोनरः ॥
तस्यदंडविकल्पः स्याद्यथेष्टंनृपतेस्तथा ॥ ६८० ॥

जो कोई पुरुष द्यूतकर्मको गुप्तरीतिसे अथवा प्रकटरूपसे सेवनकरेगा तं उसको राजाके दिलमें जो आवे वह दंड होवेगा ॥ ६८० ॥

अथद्यूतसभाधिकारिणोवृत्तिमाह व्यवहाराध्याये याज्ञवल्क्यः-
ग्लहेशतिकवृद्धेस्तुसभिकः पंचकंशतम् ॥
गृह्णीयाद्धूर्तकितवादितराद्दशकंशतम् ॥ ६८१ ॥

खेलनेमें दोनों जनोंने परस्पर संमतिसे जयका जो पण बांधा उसको ग्लह कहते हैं और खेलने वाले मनुष्योंको बैठनेके वास्ते सभास्थान जिसका है उसको सभिक कहते हैं और खेलनेके फाँसे आदि जो पदार्थ हैं उनका संपादन करनेसे जो अपनी उपजीविका चलाताहै, उसको सभापति कहतेहैं इस वास्ते द्यूत सभापतिकी वृत्ति कहते हैं--सभापति जो आदमी सौ रुपया अथवा सौसे ज्यादा पण जीते तो उसके पाससे वीसवाँ भाग लेवे और जो सौ रुपया के अंदर जीताहोवे उसके पाससे दशवाँ भाग लेवे॥६८१॥

क्लृप्तवृत्तिना सभिकेन किंकर्तव्यंतत्राह-
ससम्यक्पालितोदद्याद्राज्ञेभागं यथाकृतम् ॥
जितमुद्ग्राहयेज्जेत्रेदद्यात्सत्यंवचः क्षमी ॥ ६८२ ॥

सभापति भाग लेके क्या करै सो कहते हैं--राजा, खेलनेवाले जो कपटी लुच्चे घातकी होवें उन लोगोंसे सभापतिका रक्षण करै सभापति राजाको यथायोग्य द्रव्यांश देवे और जो आदमी हाराहै उसके पाससे अनेक प्रकारसे द्रव्य वसूल करके जो आदमी जीताहै उसको दिलवावे और द्यूत खेलनेवाले मनुष्यों को विश्वासके वास्ते अपना सत्य वचन देवे और क्षमा रक्खे ॥ ६८२ ॥

अथयदापुनः सभिकोदापयितुंनशक्नोतितदाराजादापयेदित्याह ।
प्राप्तेनृपतिनाभागेप्रसिद्धेधूर्तमंडले ॥
जितंससभिकेस्थानेदापयेदन्यथानतु ॥ ६८३ ॥

...ब जो कभी हारनेवाला आदमी धूर्त्तहै पणकिया हुवा द्रव्य देता नहीं ...भापति भी दिलानेको समर्थ नहींहै तो राजा वह धन दिलवावे परंतु ...ह खेल जो प्रकट होवे और सभापति की मार्फतसे राजाको उसमें का द्रव्य भाग मिलता होवे तो राजा जीतने वाले आदमी हों उनको द्रव्य दिलवावै और जो कभी वह खेल गुप्त करते होवें, सभापतिकी साक्षी न होवे, राजाको भाग मिलता न होवे तो राजा द्रव्य दिलवानेका प्रयत्न करै नहीं, उलटा दोनोंको दंड देवे ॥ ६८३ ॥

अथजयपराजयविप्रतिपत्तौ निर्णयोपायमाह ।

द्रष्टारोव्यवहाराणांसाक्षिणश्चतएवहि॥
राज्ञासचिह्नंनिर्वास्याः कूटाक्षोपधिदेविनः ॥ ६८४ ॥

द्यू के देखनेवाले और उसमें हार जीतकी साक्षी देनेवाले उन्हीं लोगोंको करै वहाँ श्रुताध्ययन संपन्न लोगोंका प्रयोजन नहीं है और जो कोई मणि मंत्र औषधादिकसे दगा करके खेलतेंहैं उन लोगोंको शरीरके ऊपर श्वपदादिकसे चिह्न करके अपने राज्यमें से निकाल देवे ॥ ६८४ ॥

नारदेननिर्वासने विशेषउक्तः ।

कूटाक्षदेविनः पापान्राजाराष्ट्राद्विवासयेत् ॥
कंठेक्षमालामासज्यसह्येषांविनयः स्मृतः ॥ ६८५ ॥

राज्यमें से निकालते समय उन धूर्त खेलने वाले मनुष्योंके गलेमें रुद्राक्ष माला पहनायके निकाल देवे वह उनकी नम्रता कही जाती है ॥ ६८५ ॥

याज्ञवल्क्यः ।

द्यूतमेकमुखंकार्यं तस्करज्ञानकारणात् ॥
एषएवविधिर्ज्ञेयः प्राणिद्यूतेसमाह्वये ॥ ६८६ ॥

द्यूतजो खेलै वह राजसाक्षि पूर्वक जो सभाहै उसमें खेलै कारण कि जो खेलनेमें हारताहै वह द्रव्य लाताहै सो चोरी करके लाताहै अथवा अपना पैदा किया हुआ द्रव्य लाताहै उसका ज्ञान होनेके वास्ते एक मुख द्यूत करै और सभापतिका जो भाग पहिले कहा है कि बीसवाँ भाग तथा दशवाँ भाग सभापति द्यूत क्रीडामें लेवे वही भाग मल्लमेषादि क्रीडामें लेवे ॥ ६८६ ॥

साक्षिणांपरस्परविरोधेनिर्णयमाह–बृहस्पतिः

उभयोरपि संदिग्धौकितवास्युः परीक्षकाः ॥
यदा विद्वेषिणस्तेतुतदाराजाविचारयेत् ॥ ६८७ ॥ इति ।

द्यूत खेलमें जयाजय निर्णय के समय द्यूत करनेवाले मनुष्य साक्षी देवें और जो कभी उसमें द्वेषके लिये कोई सत्य भाषण न करे तो पीछे राजा वहां विचार करै ॥ ६८७ ॥

मेषकुक्कुटादीनांजयपराजयौ तत्स्वामिनोरित्याह ।

द्वंद्वयुद्धेनयः कश्चिद्वसादमवाप्नुयात् ॥
तत्स्वामिनापणोदेयोयस्त्वत्रपरिकल्पितः ॥ ६८८ ॥

पशुपक्षीके यद्धमें जो जय पराजयका पण लेवे देवे व उसके स्वामीका अधिकार है ॥ ६८८ ॥

परिहासकृतंयच्चयच्चाप्यविदितंनृपे ॥
तत्रापिनाप्नुयात्काममथवानुमतं तयोः ॥ ६८९ ॥ इति ॥

अब जो खेलनेमें हास्य करके पण बांधा होवे तो वह पणका द्रव्य प्राप्त होता नहींहै ॥ ६८९ ॥

ननुद्यूतंसमाह्वयंचैवयः कुर्यात्कारयेतवाइति १ हास्यार्थमपिबुद्धिमान्इति २ प्रच्छन्नंवाप्रकाशंवाइत्यादिवचनैर्मनुनासर्वप्रकारेण द्यूतसमाह्वययोर्निषेधः प्रतिपादितः । किंचदापयेदन्यथानतुइति १ एषएवविधिर्ज्ञेयः प्राणि द्यूतेसमाह्वये इत्यादिवचनैः १ श्रीयाज्ञवल्क्येनद्यूतसमाह्वययोविधिर्दर्शितःतत्रविधिनिषेधयोर्निर्णयमाह यानिनिषेधपराणिमनुवाक्यानितानिकूटाक्षदेवनविषयतयाराज्ञाध्यक्षसभिकरहिततयावायोज्यानिअतएवबृहस्पतिः–

द्यूतंनिषिद्धंमनुनासत्यशौचधनापहम् ॥
अभ्यनुज्ञातमन्यैस्तुराजभागसमन्वितम् ॥ ६९० ॥

सभिकाधिष्ठितंकार्य्यंतस्करज्ञानहेतुकम् ॥ ६९१ ॥
इतिहरिकृष्णविनिर्मितेक्रीडाकौशल्याध्यायेद्यूतसमाह्वय
विधिनिषेधवर्णनंनामद्वादशप्रकरणं संपूर्णम् ॥ १२ ॥

अब यहां शंका ऐसी होतीहै कि मनुस्मृतिमें तो द्यूतादि क्रीडाको किसी प्रकारसे न करै और न करवावै ऐसा कहाहै और याज्ञवल्क्यस्मृतिमें द्यूत सभापतिकी साक्षीसे द्यूत करना राजाको भाग देना. राजा पणका द्रव्यदिलवावे ऐसी विधि कहीहै तब यहाँ निर्णय कैसा करै इसके ऊपर बृहस्पति स्मृतिमें कहाहै कि सत्यता शुद्धता और धन इन्होंका नाश करनेवाला द्यूतहै इस वास्ते करै नहीं ऐसा मनुने निषेध किया और दूसरे ऋषियोंने सभापतिकी मार्फतसे राजभाग सहित द्यूत करना ऐसी आज्ञा रूप विधि कहीहै उसका कारण यह है कि इस खेलके करनेसे अपने राज्यमें चोर कौनहै और शाहकौन है उसका ज्ञान होताहै. इसवास्ते द्यूतका विधि बताया ॥ ६९० ॥ ६९१ ॥

इति द्यूतसमाह्वयविधिनिषेधप्रकरणम् ॥ १२ ॥

मेषादिकांनांराशीनांपत्रक्रीडासुशोभना ॥
दशावतारवत्सातुविज्ञेयाबुद्धिमत्तरैः ॥ ६९२ ॥

मेषादि बारह राशिका जो गंजीफाका खेल है सो दशावतारी खेल सरीखा जानै ॥ ६९२ ॥

मल्लक्रीडाविशेषश्चतथान्येपिविशेषकाः ॥
ग्रंथगौरवभीत्यात्रनमयाप्रतिपादिताः ॥ ६९३ ॥

और इस ग्रंथमें मल्लक्रीडा मैंने थोडेमें वर्णन कियाहै. इसका दूसरा विशेष भेद अन्य ग्रंथमें बहुतहै. वैसेही दूसरे खेलोंके भेदभी बहुतहैं परंतु ग्रंथ बहुत बडा होनेके कारण वे विशेष मैंने यहाँ प्रतिपादन नहीं किये ॥ ६९३ ॥

एवंनानाविधाक्रीडाभेदाः संतीहभूतले ॥
कुर्वंतिकारयिष्यंतिकरिष्यंतितथापरे ॥ ६९४ ॥

ऐसे क्रीडाके भेद जगतमें बहुतहैं और लोग नवीन खेल बना रहेहैं पंच खेल गंजीफा वीर विनोद शतरंज इत्यादि और कितनेक लोग आगे अपनी बुद्धिसे खेल बनावेंगे ॥ ६९४ ॥

अत्रावशिष्टोयः कश्चित्क्रीडाभेदः सुशोभनः ॥
ज्योतिषार्णवशेषाख्यग्रंथेपूर्णोभविष्यति ॥ ६९५ ॥

अब इस क्रीडाध्यायमें जो कोई क्रीडाका उत्तम भेद रहगया होवे वह भेद ज्योतिषार्णव शेष नाम करके ग्रंथमें संपूर्ण होवेगा ॥ ६९५ ॥

अथ ग्रंथालङ्कारः ।

श्रीमद्वाजसनेय गौतम कुलोत्पन्नोतिविद्यावतां
मान्यो गुर्जरपंडितोपपदकौदीच्यःसहस्राह्वकः ॥
जोतिःशास्त्रविशारदोति मतिमान् श्रीवेङ्कटाख्योद्विज-
स्तज्जोहं हरिकृष्ण संज्ञिक इमं चक्रे विदांप्रीतये ॥६९६॥

अब ग्रंथकर्त्ता पुरुषका वंशादिक और ग्रंथ निर्माण काल और मूल श्लोक संख्या कहते हैं-श्रीमच्छुक्क यजुर्वेदीय वाजिमाध्यंदिनी शाखामें गौतम गोत्रोत्पन्न विद्वान् लोगोंको मान्य गुर्जर देशके ब्राह्मण पण्डित जिनकी अवटंक है, अवटंक कहते उपपद है. ऐसे ज्योतिष शास्त्रमें बडे कुशल बुद्धिमान् वेंकटराम करके ब्राह्मण भये उनका पुत्र हरिकृष्ण नाम करके मैं विद्र जो ज्ञानी हैं उनकी प्रीतिके वास्ते इयं कहिये यह क्रीडाध्याय करताहूं ॥ ६९६ ॥

दक्षिणेषु महाराष्ट्र देशेस्ति नगरं बृहत ॥
औरंगाबाद नाम्ना वै ख्यातं तत्र जनिर्मम ॥ ६९७ ॥

मेरा जन्म दक्षिण महाराष्ट्र देशमें औरंगाबाद करके बडा शहर है वहाँ भया है ॥ ६९७ ॥

ज्योतिषार्णव मध्यस्थे षष्ठे मिश्राख्यसंज्ञके ॥
अध्यायशतसंयुक्ते स्कंधे वै परमाद्भुते ॥ ६९८ ॥

और मैंने जो बृहज्ज्योतिषार्णव अष्टस्कन्धात्मक बनायाहै उसमें परमअद्भुत पदार्थ वर्णन किये हैं. और अध्याय जिसके १०० हैं ऐसा जो छठा मिश्रस्कंध है ॥ ६९८ ॥

तत्र विंशतिमेऽध्याये क्रीडाकौशल्य निर्णयः ॥
संपूर्णतामगाच्छाके शालिवाहन संज्ञके ॥ ६९९ ॥

उसके बीसवें अध्यायमें खेलनेकी कुशलता का निर्णय बताया है.

अध्याय शालिवाहन शके १७९३ के माघ मास कृष्णपक्ष तिथि ८ के दिन भया है ॥ ६९९ ॥

त्रिनंदमुनिचंद्रेच (१७९३) माघकृष्णाष्टमी दिने ॥
गणिता मूलपद्यानां संख्या सप्तशतानि च ॥ ७०० ॥

इस अध्यायमें केवल मूल श्लोक संख्या ७०० है भाषाटीका संख्या है ॥

इति श्रीमज्ज्योतिर्वित्कुलावतंसश्रीवेङ्कटरामात्मज हरिकृष्ण विनिर्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवे षष्ठे मिश्रस्कंधे विंशतिमे क्रीडाकौशल्याध्याये ग्रंथालंकारवर्णनं नाम विंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥

समाप्तोऽयं क्रीडाकौशल्याध्यायः ।

इति श्रीहरिकृष्णकृत बृहज्ज्योतिषार्णवमिश्रस्कंधमें खेलनेका निर्णयाध्याय २० वाँ समाप्त भया ॥

